ੴ

स्री सतगुरु राम सिंघ जी सहाय

नामधारी नितनेम

प्रकाशक :

विश्व नामधारी संगत

श्री भैणी साहिब

पंजाब

तीसरी बार: 2018, जून

मिलने का पता:

1. प्रबंधक
   गुरुद्वारा श्री भैणी साहिब–141126
   लुधियाना (पंजाब)
2. सतिजुग
   नामधारी गुरुद्वारा
   रमेश नगर, नई दिल्ली–110015
3. नामधारी सूबे एवं जत्थेदार साहिबान

लिप्यंतरण:

डा. देवन्द्र सिंह उसाहन

प्रकाशक:

विश्व नामधारी संगत

श्री भैणी साहिब–141126

लुधियाना, पंजाब

प्रिंटर:

प्रिंटवैल

146, इंडसट्रीयल फ़ोकल पुआंडट, अमृतसर

विषय-सुची

	पृष्ठ
रहित नामा पातशाही 12	1
जपु	5
शबद हजारे	28
जापु	37
शबद हजारे पा: 10	65
रहिरास	73
कीरतन सोहिला	102
अनंदु	107
सुखमनी	126
छंत घर 4	232
आसा दी वार	242
अकाल उसतत	286
चंडी चरित्र दूसरा	373
चंडी दी वार	430

उग्रदंती	457
बारह माह	476
शसत्र नाम माला	487
स्वैये कलिकी अवतार	493
सूही महला 4	500
रामकली की वार	503
रामकली सद	510
बसंत की वार	514
सलोक महला 9	516
रागमाला	528
हिकायत पातशाही 10	532
अरदास पातशाही 12	535

अमृत तैयार करने के लिए बाणीआं

बाणी	पृष्ठ
1. जपु	5
2. जाप	37
3. चौपई–पुनि राछस से मसतु सुभ मसतु तक	85
4. दस स्वैये पा: 10	493
5. अनंदु	107

हवन करने के समय के लिए बाणीआं

बाणी	पृष्ठ
1. जपु	5
2. जाप	37
3. चौपई–पुनि राछस से मसतु सुभ मसतु तक	85
4. अकाल उसतत	286
5. चंडी चरित्र दूसरा	373
6. उग्रदंती	457

अमृत तैयार करने की विधि

सोध (शुद्ध) मर्यादा को धारण करने वाले पांच सिंघ स्नान करके प्रथम मर्यादा अनुसार कड़ाह प्रसाद तैयार करें। जहां अमृत तैयार करना हो, वह स्थान सोध (शुद्ध) जल से साफ करके पवित्र किया गया हो। कड़ाह प्रसाद पास रख कर कमर–कस्से सजाए हुए हों, उन में से चार सिंघ पोथियों में से वाणियां पढ़ें–1. जपु, 2. जापु, 3. चौपई (पुन राछस), 4. दस स्वैये पा. 10 (स्रावग सुध समूह), 5. अनंद। बाटे में सोध का जल डाल कर उस में बताशे (यदि न मिलें तो गुड़) डाल कर पांचवां सिंघ उस में खण्डा फेरे, उस में निगाह रखे और भजन करें। वाणियों का पाठ आरंभ करने और समाप्ति समय अरदास की जाए। अमृत बनाते समय कोई सिंघ वचन (शब्द) न बोले।

अमृत पान करने की विधि

अमृत पान करने वाला सिंघ, जिस ने पहले वस्त्र धो कर पवित्र किए हों, पांच ककार को धारण करने वाला हो, केशी स्नान करके वस्त्र पहन कर उपस्थित हो। अमृत पान कराने वाले दो सिंघ हों। एके के हाथ में बाटा हो और दूसरा सिंघ अमृत पान कराए। अमृत पान करवाने वालो और अमृत पान करने वालों के कमर कस्से तथा सफाजंग सजाए हुए हों। हाथ धोकर पांच बार अंजुलि से आचमन (अमृतपान) करें। अमृतपान करवाने वाला सिंघ प्रत्येक आचमन पर कहे–बोल, वाहिगुरू जी का ख़ालसा,

स्री वाहिगुरु जी की फतह। अमृतपान करने वाला कहे वाहिगुरु जी का खालसा स्री वाहिगुरु जी की फतह। इस के पश्चात् पांच बार थोड़ा थोड़ा अमृत केशों में डाला जाए तथा फिर पांच बार आँखों पर छिंटें डाले जाएं। हर बार अमृत पान करवाने वाला फते बुलाये और साथ ही अमृतपान करने वाला।

माईयां (स्त्रियां) अमृतपान करते समय कमर–कस्सा और सफाजंग न सजाएं, केवल फते के उत्तर में हर बार सति श्री अकाल ही बुलाएं।

(यह मर्यादा सतिगुरु राम सिंघ जी की बतलाई हुई है।)

हवन करने की विधि

सोध मर्यादा के धारण करने वाले सात सिंघ केशी स्नान करके पवित्र आसन विछाकर कमरकस्से लगाकर सफाजंग सजा कर बैठें। हवन छत पर न किया जाए।

हवन करने वाला स्थान छत के बगैर हो, वह स्थान साफ करके, सोध जल से धोकर पवित्र किया गया हो। हवन के लिए लकड़ियां बेरी अथवा पलाह की हों। एक बर्तन में घी और हवन सामग्री मिलाकर और गड़वे में पवित्र जल रखा हो। हवन कुण्ड में लकड़ियां चिन कर अग्नि प्रज्वलित की जायें। फूँक न मारी जाये। सोध की रूमाली में शुष्क नारियल धोकर, लपेट कर हवन कुण्ड में लकड़ियों पर तब रखा जाए जब अरदास करने वाला सिंघ कहे कि–इस निमित्त हवन करने लगे हैं और उस समय ही

पांच सिंघ हवन की बाणियां जपु, जापु, चण्डी दी वार, उग्रदंती, अकाल उसतत, चण्डी चरित्र दुसरा और चौपई (पुन राछस का काटा सीसा से समाप्त मसतु सुभ मसतु तक) का पाठ पोथियों से आरंभ कर दें। छटा सिंघ सामग्री की आहुति डाले। सातवां साथ ही अग्नि पर जल का छींटा दे, थोड़ा थोड़ा। छठा और सातवां सिंघ जिहवा हिला कर भजन करे और कोई वचन (शब्द) न बोला जाए। हवन की समाप्ति के समय मनोरथ की पूर्ति के लिए अरदास की जाये।

गुर कृपा से जाना

सिरजनहार की सिरजना, मनुष्य ने ब्रह्माण्ड को खोजने (जानने) का बड़ा प्रयत्न किया है, मनुष्य सदियों से ही नहीं, हज़ारों–लाखों वर्षों से यह जानने के लिये तप, साधना, चिन्तन और खोज करता रहा है कि सृष्टि, इस का समूचा वायू–मंडल, आकाश, चन्द्रमा, तारे, ग्रह, सूर्य, बात क्या समूचा ब्रह्माण्ड कैसे बना और इसे किसने बनाया?

ऋषियों, मुनियों, साधकों आदि ने, जिसने सब कुछ बनाया है, उसे कर्त्ता–पुरख कहा है, खण्ड–ब्रह्माण्ड, जल–थल, वन–वनस्पति, जीव–जन्तुओं का कर्त्ता।

जब मनुष्य के ध्यान में दृष्टिगोचर जगन नहीं था तब कर्त्ता पुरख शून्य समाधि में था, निर्गुण रूप में–

अरबद नरबद धुंधूकारा।
धरणि न गगना हुकमु अपारा।

न दिनु रैनि न चंदु न सूरजु
सुंन समाधि लगाइदा। (मारू महला पहला)

इस शुन्य–समाधि की स्थिाति में सर्गुण रूप हो कर उस ने सृष्टि की रचना की। यहूदी धर्म के आधर ग्रंथ तौरेत में लिखा है, 'उसी (परमेश्वर) ने पृथ्वी को अपनी क्षमता (समार्थ्य) द्वारा बनाया। उस ने जगत को अपनी बुद्धि द्वारा स्थिर किया और आकाश को अपनी कला प्रवीणता से ताना।'

सतिगुरु साहिबान ने उस सृजनात्मक शक्ति को ओंकार लिखा है। उस ने जगत का सृजन किया है। परन्तु जगत की रचना किस समय, दिन, तिथि, वार अथवा ऋतु में हुई इस सम्बन्धी चिन्तन–मनन के पश्चात् यह ही निष्कर्ष निकलता है–

जा करता सिरठी कउ साजे
आपे जाणै सोई।। (जपु–सतिगुरु नानक देव जी)

उसी कर्त्ता–पुरुख ने प्रकृति की सृजना की, तीन गुण रचे–सतो, तमो तथा रजो और जीव की रचना की। समूचा प्रसार पुरुष और प्रकृति के संयोग में हुआ।

जीवों की 84 लाख योनियां बनीं जिन में मनुष्य श्रेष्ठ बना:

अवर जोनि तेरी पनिहारी।
इसु धरती महि तेरी सिकदारी।

(आसा महला 5)

मनुष्य को इस बात का ध्यान करवाते रहने के लिए

कि तू सिरजनहार की रचना है उसे मत भूल, समय समय पर देवी–देवते, पीर–पैगम्बर हुए, परन्तु उन्होंने पारब्रह्म परमेश्वर की सर्वोच्चता बतलाने के स्थान पर अपनी पूजा करवानी आरम्भ कर दी।

सभ अपनी अपनी उरझााना।

पारब्रह्म काहूं न पछाना। (विचित्र नाटक)

जिस के परिणाम स्वरूप मनुष्य भटक गया। वह अपने मूल से टूटा रहा और काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार में ग्रस्त रहा।

श्री सतिगुरु गोबिंद सिंह जी ने इस सम्बन्ध में विस्तार–पूर्वक लिखते हुए अपनी कथा में कहा है कि अकाल पुरख (पुरष) ने उन्हें धरती पर धर्म चलाने और लोगों को (निराकार को भूलने) के दुष्कर्म करने से रोकने के लिए भेजा था। क्योंकि जो व्यक्ति निरंकार को भूल जाता है वह और भी अधिक दुष्कर्म करने लग जाता है।

श्री सतिगुरु गोबिन्द सिंह जी की पारिवारिक पृष्ठभूमि और सतिगुरू नानक देव जी की पारिवारिक पृष्ठभूमि एक ही थी। आप त्रेता के अवतार सूर्यवंशी भगवान रामचंद्र के अंश वंश में से थे। लव के पुत्र पोत्रों में एक सोढी राय हुए जिन की संतान सोढी कहलाई और राज्य करती रही। कुश की आगामी पीढ़ियों ने काशी जाकर चारों वेदों का अध्ययन किया और वेदी कहलाए और–

तिन बेदीयन के कुल बिखे

प्रगटे नानक राइ।

सभ सिक्खन को सुख दए
जह्ह तह्ह भए सहाइ। (विचित्र नाटक)

श्री सतिगुरु नानक देव जी के अवतार धारन करने से पूर्व आध्यात्मिक मानव–मूल्यों और संसार की मूल सभ्यता के केन्द्र भारत का पतन हो चुका था। राजनैतिक दृष्टि से काबुल, कंधार अथवा समरकन्द की ओर से आने वाले हमलावर (आक्रमणकारी) यहां के शासक बन बैठे जिन के वंशजों के वंशज राज्य करते रहे। वे वंश थे, ख़िलजी, तुग़लक, गुलाम, लोधी आदि। उन्होंने भारत पर अत्याचार किए। यहां के मंदिरों को ध्वस्त किया। कीमती सामान लूटा। धर्म, कर्म, यज्ञ–हवन आदि करने वाले लोगों पर अत्याचार किए। उन्हें मुसलमान बनने के लिये विवश किया। ज्ञानी ज्ञान सिंह जी ने लिखा है–

हिंदुन को दुख दए महाए।
देवन के मंदिर गिरवाए।
घोर नाथ से अउघड़ साधू।
पंडित दत से सुमत अगाधू।
मरवा चीलन को खुलवाए।
केचित मे खैं ठोक सुकाए।
केचित कच्चे चंम मढ़ाए।
केचित कुत्तिओ से तुड़वाए।
तुरक होवणा जिनै न मानिओ।
तिन तिन कौ अति दै दुख हानिओ।
गो गरीब को बध कर सूटैं।

धनी देख ताका धन लूटैं।
यग हवन कोई करन न पाए।
करै जु तहि दुख देत महाए।
सुंद्र पिखै जाहि की तरनी।
पकर करै बल सों जिन घरनी।

(पंथ प्रकाश ज्ञानी ज्ञान सिंहः अध्याय–3)

यह स्थिति मुगल हमलावर (आक्रमणकारी) बाबर समय भी थी। वे तो हिन्दुओं की क्या, मुसलमानों की इज्जत के भी सगे नहीं थे। उस समय मुसलिम महिलाएं भी शारीरिक और मानसिक दुख (पीड़ा) भोगती रहीं।

इस दुदर्शा की पृष्ठभूमि में भारत का बाहुबल, बुद्धि और अध्यात्मिक बल रखने वाले वर्गों का हथियार गिरा देना था।

यहां राज्य–तन्त्र और फ़ौजी शक्ति मुसलमान शासकों की अधीनता स्वीकार कर चुकी थी। पंडित (बुद्धिमान) भी उन से पीछे नहीं रहे। उन्होंने तो बल्कि कहाः

नील बसत्र ले कपड़े पहिरे
तुरक पठाणी अमलु कीआ। (महला 1)

और

खत्रीआं त धरमु छोड़िआ
मलेछ भाखिआ गही। (महला 1)

उनके हिन्दु मर्यादा के धारण करने वाले पाखण्ड के बारे में पहले पातशाह लिखते हैंः–

गऊ बिराहमण कउ करु लावहु

गोबरि तरणु न जाइ।
धोती टिका तै जपमाली
धानु मलेछां खाई।
अंतरि पूजा पड़हि कतेबा
संजमु तुरका भाई। (आसा दी वार)

वे पंडित, तुर्कों को खुश करने के लिये केवल मुसलिम धर्म ग्रंथ ही नहीं पढ़ते थे बल्कि सामी धर्मों के चारों कतेबः तौरेत, जब्बूर, इंज़ील और कुरान पढ़ते थे ताकि अपनी वफादारी का पक्का सुबूत (प्रमाण) दे सकें।

अध्यात्मिक चिंतन करने वाले लोग पहाड़ों पर चले गए। देश की दुर्दशा के सम्बन्ध में सतिगुरु नानक देव जी ने लिख–

कलि काती राजे कासाई
धरमु पंख करि उडरिआ।
कुड़ अमावस सचु चंद्रमा
दीसै नाही कह चड़िआ।
हउ भालि विकुंनी होई।
आधेरै राहु ना कोई।

इसी अधोगति में से लोगों को निकालने के लिये, धरती के मनुष्यों को सत्य मार्ग पर लाने के लिये, सतिगुरु जी ने उदासियां (यात्राएं) की। सांसारिक जीवों को धर्म का मार्ग दिखलाया और अकाल पुरुष से साक्षात्कार करवाया। भाई गुरदास जी ने उन के उपदेश के प्रभाव सम्बन्धी लिखा है–

सुणी पुकारि दातार प्रभु
गुरु नानक जग माहि पठाइआ।
चरण धोई रहरासि करि
चरणाम्रितु सिखां पीलाइआ।
पारब्रहम पूरन ब्रहम
कलिजुगि अंदरि इक दिखाइआ।
चारे पैर धरम दे
चारि वरनि इक वरनु कराइआ।
राणा रंकु बराबरी
पैरी पवणा जग वरताइआ।
उलटा खेलु पिरंम दा
पैरा उपरि सीस निवाइआ।
कलिजुग बाबे तारिआ
सतिनामु पड़ि मंत्र सुणाइआ।
कलि तारण गुरु नानकु आइआ।

सतिगुरु जी ने ग़रीब, कमज़ोर तथा सच्चे–सुच्चे लोगों पर कृपा की, अन्ध विश्वासियों को ज्ञान दिया, बुद्धिजीवियों के साथ गोष्ठियां की, जीव–कल्याण के लिये उपदेश दिया। आप के पैरोकारों की एक जमात तैयार हो गई जिसे सदैव मार्ग–दर्शन की आवश्यकता थी। इस जमात के कल्याण के लिए आप ने अपने आज्ञाकारी सिक्ख भाई लहणा जी को गुरुगद्दी सौंप (अर्पित कर) के इस असार संसार से विदा ली। केवल रूप बदल गया ज्योति वही रही और भाई लहणा जी सतिगुरु अंगद देव जी के रूप में सिक्ख

सेवकों पर बख्शिश करने लगे–

लहणे दी फेराईऐ नानका दोही खटीऐ।
जोति ओहा जुगति साइ
सहि काइआ फेरि पलटीऐ।

(रामकली की वार राई बलवंडि तथा सतै डूमि आखी)

यह ज्योति गुरू अमरदास और उस से आगे भी काया पलट कर आती रही। यह निरंजनी ज्योति (निरंजन की) थी जो युगों–युगान्तरों से मानवता के कल्याणार्थ, जीवन मात्र के भले के लिये, सृष्टि के उद्धान हेतु प्रकट होती रही। इस सम्बन्ध में बाणी में लिखा है–

सतिजुगि तै माणिओ,
छलिओ बलि बावन भाइओ।
त्रेतै तै माणिओ,
रामु रघुवंसु कहाइओ।
दुआपुरि क्रिसन मुरारि,
कंसु किरतारथु कीओ।
उग्रसैण कउ राजु
अभै भगतह जन दीओ।
कलिजुगि प्रमाणु नानक
गुरु अंगदु अमरु कहाइओ।
स्री गुरु राजु अबचलु अटलु,
आदि पुरखि फुरमाइओ।

सतिगुरु साहिबान ने प्राणी मात्र के भले के लिये उपदेश दिया, खसम की वाणी द्वारा ज्ञान दिया और सिक्खों को

उपदेश दिया कि सतिगुरु की बाणी को सत्य मानों क्योंकि वह करता (कर्त्ता) के मुख से निकली हुई है–

सतिगुर की बाणी
सति सति करि जाणहु
गुरसिखहु हरि करता
आपि मुहहु कढाए। (महला 4)

सतिगुरु की वाणी के अतिरिक्त अन्य वाणी कच्ची है:

सतिगुरु बिना होर कची है बाणी।
बाणी ता कची सतिगुरू बाझहु
होर कची बाणी। (महला 3)

कच्ची और सच्ची वाणी का भ्रम दूर करने के लिए, सतिगुरू साहिबान ने समय समय पर बाणी की रचना करने के साथ–साथ अपने समकालीन और पूर्वकालीन भक्तों की वाणी एकत्रित की। सतिगुरु अर्जुन देव जी ने इस समस्त वाणी का सम्पादन किया। गुरुमति विचारधारा की प्रौढ़ता करती हुई भट्टों और कीरतनियों की वाणी को इस में शामिल किया। आप ने गुरू वाणी का ग्रंथ तैयार किया जिसे पोथी साहिब, बीड़, श्री आदि ग्रंथ साहिब, सवारा साहिब, दरबार साहिब आदि नामों से लिखा जाने लगा।

सतिगुरु जी ने इस के अर्थों, लगों–मात्राओं को समझ कर शुद्ध पाठ करने की शिक्षा दी। वाणी का शुद्ध पाठ सुनाने वालों को सतिगुरु साहिबान द्वारा इनाम, भेंट, मान, प्रशंसा मिलने लगे। छठे पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद जी

तो, 'सूरज प्रकाश' अनुसार जपु जी के शुद्ध पाठ को सुन कर एक सिक्ख गुपाले को अपनी गद्दी देने के लिए तैयार हो गए। परन्तु उस सिक्ख के मन में केवल बढिया घोड़ा लेने की भावना पैदा हुई जिसे सतिगुरु जी ने पूरा कर दिया।

गुरबाणी देहधारी गुरु की रचना है। गुरबाणी में वर्णित की गई, गुरु या सतिगुरु की स्तुति देहधारी सतिगुरु पर ही उचित घटती है इस लिए गुरबाणी गुरु का विकल्प नहीं हो सकती। इसका निर्णय ऐतिहासिक तौर पर, आठवें सतिगुरु श्री गुरु हरिकृष्ण जी के समय ही हो गया था।

सीतला निकलने के कारण आप का बाल्यावस्था में ही शरीर अस्वस्थ्य रहने लगा। आप जी की हज़ूरी (उपस्थिति) में बैठे दिल्ली की संगत के मुखिया भाई गुरबख्श ने प्रार्थना की:

आगै भए सपत गुर जोइ।
दास किधौ लाइक सुत होइ।
सभ बिध ते समरथ तिस करकै।
गुरता गादी पर बैठरकै।
बहुर चहै प्रलोक पिआना।
करत रहै जन गन दुख हाना।

(गुर प्रताप सूरज)

इस लिए कृपा करके हमें सतिगुरु के दामन से जोड़ दो। सिक्खों की भावना को ध्यान में रखकर सतिगुरु जी ने सिक्खों में देहधारी गुरु प्रति श्रद्धा की मात्रा जानने के

लिये वचन किया–

गुरगादी अविचल जग माहीं।
वधहि प्रताप मिटहि किम नाहीं।
मनो कामना संगत पावहि।
लै गुर ते उपदेस कमावहि।
गुरु ग्रंथ साहिब सभ केरा,
जो हमरो चहि दरसन हेरा। (गुर प्रताप सूरज)

परन्तु सिक्खों को पता था पहले ही गुरु अंश ने गुरगद्दी पर संतान होने का अधिकार समझ के दुबिधा खड़ी कर दी थी। गुरुगद्दी के दावेदारों की गणना और अधिक हो गई थी। श्री आदि ग्रंथ साहिब की बीड़ कोई भी लिखवा कर उस को मान कर प्रकाश करके, उस के सहारे अपनी मान–प्रतिष्ठा, रोज़ी–रोटी का मार्ग बना सकता था और गुरगद्दी को हास्यस्पद बना सकता था। इस लिए भाई गुरबख्श ने फिर प्रार्थना की कि सिक्खों की भलाई देहधारी गुरू के दामन से जोड़ने में ही हो सकती है। क्योंकि–

बिन गुर संगत ह्वै थिर कोइ न।
जथा न्रिपत बिन सैना होइ न।
जो गुरु ग्रंथ आप ने भनयो।
सो सगरे सिखन हू सुनयो।
लिख लै है अब सोढी सारे।
बैठहि मानी गुर होइ भारे। (गुर प्रताप सूरज)

सतिगुरु सच्चे पातशाह जी ने सिक्खों की इन प्रार्थनाओं पर खुशी प्रकट की और–

बाबा बासहि जि ग्राम बकाले।
बनि गुर संगत सगल समाले।

कह कर गुरगद्दी दी।

नौवें पातशाह ने भोरे (तैखाना) में बैठकर कई वर्ष तपस्या की, दान–पुण्य किये। गद्दी नशीन होने के पश्चात् आप ने बंगाल, आसाम तक के उत्तर–पूर्वी भारत का भ्रमण किया। पटने शहर में, आप के गृह में दसवें पातशाह प्रकाशमान हुए। आप ने अन्याय और अत्याचार को जड़ से नष्ट करने के लिये, सनातम धर्म की रक्षा के लिये, भारतियों को औरंगज़ेब द्वारा मुसलमान बनाने से बचाने के लिये 1675 ई. (1732 वि.) को शहादत दी।

दसवें पातशाह ने गुरगद्दी को सुशोभित किया। आप ने शास्त्र विद्या गृहण की। शस्त्र विद्या में प्रवीणता प्राप्त की। भारत की अधोगति के बारे में चिन्तन किया। वीर रस प्रधान तथा अध्यात्मिक वाणी की रचना की। अच्छे कवियों और शस्त्रधारियों पर बख्शिश की। ख़ालसा पंथ की साजना की और जालिम सरकार से लोहा लेने की तैयारी की। युद्धों में आप के साथ केवल मुगल फ़ौज ही नहीं लड़ी, जिन के अधिकारों के लिए आप लड़े वे हिन्दु राजे विशेष करके बाईधार के पहाड़ी राजे भी आप के विरुद्ध लड़े। सतिगुरु जी रणनीति और राजनीति अनुसार भंगाणी, आनन्दपुर के किले, चमकौर की गढ़ी और खिदराणे की ढाब आदि स्थानों पर जंग करते रहे। बादशाह को ज़फ़रनामा लिखकर उसके झूठे होने का पर्दाफाश करते

रहे। ज़ालिम साम्राज्य की ईंट से ईंट बजाने के लिये बंदे को तैयार करते रहे।

चमकौर की गढ़ी में से निकल कर माछीवाड़े के जंगलों को पार करके, उच्च के पीर बन कर ढिलवीं पहुंचने के समय मुगल फ़ौज और उसके गुप्तचरों को भ्रम में रखने के लिये सतिगुरू जी ने प्रथम वार नीले या सुरमई वस्त्र पहने। यद्यपि आप भी जानते थे कि सतिगुरु नानक देव जी ने लिखा है कि नीले वस्त्र पहनना तुर्कों पठानों अथवा मलेच्छों का पहरावा है फिर भी सोढी कउल राय ने ढिलवीं पहुंचने पर आप से प्रार्थना की कि "यह क्या खेल (क्रीड़ा) है? सच्चे पातशाह जी! आप ने तुर्की पहरावा क्यों धारण किया है। आप ने इसे नीति और समय की आवश्यकता बतलाई और साथ ही केशी स्नान करके श्वेत वस्त्र पहन कर अंगीठा जला कर, लीर–लीर (तार तार) करके उस में नीला वस्त्र जलाते हुए यह पंक्ति पलटाई–

नील बसतर ले कपड़े पहिरे।
तुरक पठाणी अमलु कीआ।

इसी की गवाही मैकालिफ ने दी है।

इस सम्बन्धी कान्ह सिंह नाभा ने लिखा है:–

यहां (ढिलवां कलां) कलगीधर, सोढी साहिब कौल जी के घर विराजमान थे। कौल जी की प्रार्थना मान कर माछीवाड़े वाला नीला पहरावा उतार कर श्वेत वस्त्र धारण किये। गुरु साहिब ने नीली चादर अग्नि में जलाते समय वचन किया:–

'नील वसत्र ले कपड़े फाड़े
तुरक पठाणी अमल गइआ। (महान कोष)

ज्ञानी करतार सिंह कलासवालिए, हैड ग्रंथी (मुख्य ग्रंथी) श्री दरबार साहिब अमृतसर की काव्य रचना में इस सम्बन्धी लिखा है:–

केस हरे कर के चोजी सतिगुरु जी
चल पास अंगीठे दे जावंदे ने।
लीरां करके नीली पुशाक दीआं
विच अग्ग दे पा जलांवदे ने।
नाले फूकदे जांदे पुशाक तांई।,
नाले तुक इह पढ़ सुनांवदे ने।
यथा नील बसतर लै कपड़े फाड़े
तुरक पठाणी अमल गइआ।
सुण कउल जी ने पासों टोक कीती,
शबद उलटने किस तरहां भांवदे ने?
राम राइ ने तुक उलटाई है सी
गुरू ओस नूं मुख न लांवदे ने।
तुसां पहिरे दे था फाड़े अखया ए
गया कीआ वी उलट दिसांवदे ने।
शबद उलटिआ वार परवार सारा
'स्री' कलगीधर बतांवदे ने।
शबद उलटे बिनां करतार सिंघा
काबू तुरक न किसे दे आंवदे ने।

(दशमेश प्रकाश)

श्री सतिगुरु गोबिंद सिंह जी ने तुक यद्यपि पलटाई (बदली) परन्तु बीड़ में तुक (पंक्ति) जैसे की तैसी रही, पलटाई (बदली) हुई तुक चढ़ (अंकित) न हो सकी क्योंकि उस के पश्चात् कोई बीड़ न तैयार हुई, न उच्चारण की गई। बीड़ में नौवें पातशाह की बाणी अंकित करके आप जी पहले ही आनंदपुर साहिब में 1732 वि. (1675 ई.) को कार्य पूर्ण कर चुके थे। इस का प्रमाण 23 पौष 1732 की लिखी हुई एक बीड़ है जो शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की सिक्ख रैफरैंस लाइब्रेरी में पड़ी देखी गई।

दमदमा में दशम पातशाह द्वारा भाई मनी सिंह जी के हाथों बीड़ का लिखवाया जाना भी कुछ समय से प्रचलित है। वार्ता बनाई गई है कि सतिगुरु जी ने (1762 वि.) 1705 ई. में धीरमल से बीड़ मंगवाई तब उस ने ताना मारा कि यदि वह गुरू है तो स्वयं ही आत्मिक शक्ति से बीड़ का उच्चारण क्यों नहीं कर लेता। तब सतिगुरु जी ने बीड़ का उच्चारण किया।

परन्तु यह धारणा गलत है। यदि यह ठीक होती तो 'गुर बिलास' के कर्त्ता भाई सुक्खा सिंघ, 'श्री गुरु प्रताप सूरज' के रचनहार भाई संतोख सिंघ इस का उल्लेख अवश्य करते। ज्ञानी ज्ञान सिंघ जी ने 1879 में प्रकाशित 'श्री गुरु पंथ प्रकाश' में भी इस सम्बन्धी कुछ नहीं लिखा। हां, आगामी संस्करणों में मालूम नहीं किस विवशता से यह प्रसंग बनाकर पेश किया।

मास्टर ज्ञान सिंघ निहंग ने इस सम्बन्धी ख़ालसा

गुरमति प्रकाश में लिखा है:–

"सन् 1889 को श्री अकाल तख्त बुंगा और गुरु काशी दमदमा (साबो की तलवंडी) के पुजारियों ने मिल कर यह साखी (वार्ता) बनाई।"

कुइर सिंघ ने गुर बिलास, भाई मनी सिंघ से प्रसंग तथा साखियां (वात्ताएं) सुन कर लिखा। उस में भी इस का कोई उल्लेख नहीं। भला यह कैसे सम्भव है कि जिस भाई मनी सिंघ के बारे में कहा गया है कि उस ने सतिगुरु द्वारा उच्चारण की गई बीड़ लिखी, वह यह महत्वपूर्ण घटना न लिखवाते। एक बात और बाबा धीर मल्ल तो औरंगजेब द्वारा दिए गए कष्टों को सहन न करते हुए 1734 वि. में गढ़ रणथंबौर में गुरपुरी सिधार गए थे। ज्ञानी गरजा सिंघ ने गुरु की साखियां में लिखा है, "बाबा जी को दुष्टों ने बहुत कष्ट दिए। इसी गढ़ में साल सतारा सौ चउतीस मंगसर (माघ) सुदी दूज शुक्रवार के दिवस, इस फानी संसार से डेढ़ पहल दिवस चढ़े गुरपुरी सिधार गए।"

(सम्पादक प्यारा सिंघ पदम)

यह बीड़ उच्चारण करने की साखी श्रद्धावश, सहज स्वभाव सिक्खी के भले के लिए नहीं रची गई बल्कि अंग्रेज़ शासकों ने अपने वफादार सिक्खों को देहधारी गुरु से विमुख करने और 'ग्रंथ गुरु' का अनुयायी बनाने के लिये रची।

शमशेर सिंघ अशोक ने पंजाब की लहरों में भाई गुरमुख सिंघ के सिंघ सभा के नियम लिखे हैं:

1. श्री गुरू सिंघ सभा में कोई बात

सरकार से सम्बंधित नहीं की जायेगी।

2. ख़ैरखाही कौम, फरमा बरदारी सरकारी।

3. अंग्रेज़ी हुकूमत (शासन) से जुड़कर चलना आदि।

खालसा दीवान (सिंध सभा) लुधियाना ने अपने सहयोगियों को यह बात गांठ बांध लेने के लिये कही,

– सूर ससी वायू प्रिथवी
आप तेज लौ काइम।
ब्रिटिश राज का शाही झंडा
करे तरक्की दाइम।
– निमक हलाल नाथ का करीऐ,
मरन जीवन असिधुज पै धरीऐ।

(सिक्ख इतिहास ते कूके, लेखक अमर भारती)

1708 ई. में नांदेड़ में कुछ होने सम्बन्धी एक धारणा है कि दशम पातशाह, अपने तैयार किये गए अंगीठे में जा बैठे, अंगीठे को अग्नि दी गई, लपटे उठीं और दशमेश इस असार संसार से सदा के लिए अदृश्य (अलोप) हो गए।

श्री सतिगुरु गोबिंद सिंह जी ने 'गुरु ग्रंथ साहिब' को 1765 वि. (1708 ई.) को गद्दी दी और दोहरा उच्चारण किया:

आगिआ भई अकाल की
तबी चलाइओ पंथ।
सभ सिखन को हुकम है
गुरू मानीओ ग्रंथ।

इस तथा अन्य दोहरों को आज कई गुरुद्वारों में अरदास के बाद भोले–भाले परन्तु अनजान सिक्खों द्वारा इसे गुरुबाणी समझ कर पढ़ा जाता है। किसी सिक्ख को यह नहीं बतलाया जाता कि यह भाई प्रहलाद सिंह के रहितनामे में अंकित है जो उस ने ख़ालसा पंथ की साजना से चार वर्ष पूर्व लिखा था। इस सम्बन्धी भाई कान्ह सिंह नाभा ने लिखा है, रहितनामे का आरंभ इस दोहे से होता है:

"अबचल नगर बैठे गुरु
मन महि कीआ बिचार।
बोलिआ पूरा सतिगुरु
मूरत स्री करतार।"

रहितनामा लिखने का वर्ष बताया है:

"संमत सत्रहि सै भए
बरख बवंजा निहार।
माघ वदी तिथि पंचमी
वीरवार सुभ वार।"

इस ने यह विचार नहीं किया कि सम्वत् 1752 में गुरु साहिब अबचल नगर नहीं पधारे थे और न ही उस समय ख़ालसे की रचना की थी। इसी रहितनामे के ये वाक्य है:

अकाल पुरख के हुकम
ते प्रगट चलायो पंथ।
सभ सिक्खन को हुकम है
गुरु मानिओ ग्रंथ।

गुरू खालसा मानीओ प्रगट

गुरु की देह..... (महान कोष पृष्ठ 796, संस्करण 1981)

इस अनुसार न ग्रंथ गुरु बनता है न ख़ालसा पंथ।

सतिगुरु जी के पास नांदेड़ में कोई श्री आदि ग्रंथ साहिब की बीड़ नहीं थी इस लिये गद्दी देने का प्रश्न ही नहीं उठता था। क्योंकि इस का निर्णय नौवें पातशाह को गद्दी देते समय ही हो गया था कि यदि ग्रंथ को गद्दी दी गई तो सभी लिख कर घर घर में ग्रंथ साहिब को रख लेंगे।

क्योंकि गद्दी श्री आदि ग्रंथ साहिब को दी नहीं गई थी इसी कारण शहीद सिक्ख मिशनरी कालेज के प्रिंसीपल गंगा सिंघ ने स. आसा सिंघ के प्रश्न:

दशमेश जी ने यदि कभी गुरूआई (गुरगद्दी) गुरु ग्रंथ साहिब को दी है तो कहां?

के उत्तर में स्पष्ट लिखा:

"दसम जी ने कभी गुरिआई
गुरु ग्रंथ साहिब को नहीं दी।"

(रसाला अंम्रित मार्च, 1936)

एक बात ओर यदि 1708 ई. में गुरूआई दी होती तब प्रत्येक हस्तलिखित बीड़ पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब लिखा जाता। कर्म सिंह पटवारी ने श्री दरबार साहिब अमृतसर के तोशेखाने में 1730 से 1881 तक के समय की दस हस्तलिखित बीड़ों के दर्शन किये हैं। वे गुर इतिहास जानकारी पुस्तक में लिखते हैं कि बीड़ों के सिरलेख (शीर्षक),

सूची पोथी का ततकरा (अनुक्रम) पोथी साहिब, सूची प्रती (प्रति), ग्रिंथ जी, ग्रंथ साहिब आदि लिखे हैं। भाई मनी सिंघ शहीद ने सिक्ख भगत माला में कहीं भी गुरु ग्रंथ साहिब नहीं लिखा बल्कि ग्रिंथ व ग्रंथ लिखा है। जैसेः

—ते गिरंथ जी विच्च सलोक है....

—कथा गिरंथ जी दी प्रीत करके सुणनी।

—ते गिरंथ दी बाणी पढ़े। (आदि)

मैकालिफ रचयिता 'सिक्ख धर्म (रिलीज़न)' भी केवल ग्रंथ साहिब लिखता है। भाई वीर सिंघ स्वयं भी मैकालिफ का संदर्भ देते हुए ग्रंथ साहिब लिखते हैं। कई स्थानों पर पवित्र पुस्तक पर ही नहीं, प्रैस द्वारा छपे ग्रंथों पर भी पहले आदि ग्रंथ साहिब जी लिखा जाता रहा है। क्योंकि सिक्खों में दो धर्म ग्रंथ स्वीकृत हैं, एक को आदि ग्रंथ तथा दूसरे को दसम ग्रंथ (दसवें पातशाह का) लिखा जाता है। इन दोनों का गुरुगद्दी से कोई सम्बन्ध नहीं। पंजाबी यूनिवर्सिटी (विश्वविद्यालय) की पुस्तक गुरु गोबिंद सिंह में डा. जे.एस. ग्रेवाल तथा डाक्टर एस.एस. बल ने लिखा हैः

खालसा पंथ अथवा आदि ग्रंथ को गुरगद्दी सौंपना—यह सब महत्वपूर्ण और परस्पर सम्बन्धित बातें समकालीन गवाहियों में से कहीं भी नहीं मिलती।

ग्रंथ साहिब को भला 1708 में सतिगुरू जी गद्दी देते भी क्यों? जब कि वह स्वयं 1812 ई. तक पंच भैतिक शरीर में रहे। हां 1708 में उनहोंने नर—नाटक अवश्य किया, नीति वश।

जो पठान भाई– जमशेद खां और अताउला खां सतिगुरु जी पर घातक आक्रमण करने के लिए नादेड़ में मीठे बनकर रहते रहे, वे बहादुर शाह के भेजे हुए थे। उन में से जमशेद खां ने मौका (अवसर) देख कर, सतिगुरु जी को विराजमान समझ कर, कमर पर छुरे का प्रहार भी किया परन्तु वह सतिगुरु जी की तलवार से खत्म हो गया। दूसरा भागता हुआ सिक्खों ने मार दिया। बहादुर शाह ने शोक प्रकट करने के लिये 28 अक्तूबर 1708 को मातमी खिल्लअत जमशेद खां के पुत्र को भेजी। इस में लिखा है:

बजां कुशता बूद खिलअत मातमी
बि पिसर खान मज़कूर मुरमत शुद।

पठानों की नहीं, बादशाह की बदनियती के कारण सतिगुरु जी ने नादेड़ से छिप कर जाने का नाटक किया। सिक्ख इतिहासकार कवि सुक्खा सिंघ, भाई संतोख सिंघ, ज्ञानी ज्ञान सिंघ और महंत सुमेर सिंघ अपने ग्रंथों में एक ओर दमदमी बीड़ उच्चारण बारे, श्री आदि ग्रंथ साहिब को गुरूआई देने सम्बन्धी तथा 'आगिआ भई अकाल की' दोहरा के उच्चारण सम्बन्धी मौन हैं। दूसरी ओर लिखते हैं, आज्ञा अनुसार सिक्खों ने कनात के भीतर चिता बनाई। सतिगुरु जी ने आधी रात स्नान करके शस्त्र–वस्त्र सजाये, आप ने चिता से बाहर खड़े होने का आदेश दिया। अग्नि प्रकट की, लाटें (ज्वालाएं) निकली, सिक्ख विलाप करने लगे।

कवि सेनापति इस घटना का चरित्र लिखता है। वह

सतिगुरु जी का समकालीन ही नहीं, दरबारी कवि भी था। शमशेर सिंघ अशोक ने सेनापति की काव्य रचना 'स्री गुरु सोभा' सम्पादित की है। इस में नादेड़ नर नाटक सम्बन्धी लिखा है:

देखन कउ यो ही भई,
जानत सगल जहान।
किया चरित्र करतार को,
नहि कहि सकत बखान।

अगले दिन 8 अक्तूबर 1708 को, दिन निकलते ही सिक्खों को साधू मिले और उन्होंने बतलाया कि सतिगुरु जी उन्हें घोड़े पर सवार मिले थे। सिक्खों ने सतिगुरु जी को अग्नि भेंट हुआ समझ कर अंगीठे की पड़ताल की परन्तु उस में कोई अस्थि न मिली। उन्होंने अस्तबल में देखा, वहां कुमैत घोड़ा भी नहीं था।

साधुओं के मिलाप बारे में इतिहासकारों में अंतर है। परन्तु सिक्खों को यह ध्यान ही नहीं आया कि किसी के सन्मुख सतिगुरु जी ने शरीर को नहीं त्यागा। उन्होंने सतिगुरु जी की मृतक देह को चिता पर नहीं रखा और किसी ने अग्नि भेंट भी नहीं किया। फिर सतिगुरु जी ने आत्मघात तो नहीं करना थ न। उन्होंने तो नर नाटक किया था। हज़ूर साहिब में उसी दिन से सतिगुरु जी की प्रतीक्षा में घोड़े रखे जाते हैं। किसी अन्य सतिगुरु जी की प्रतीक्षा में घोड़े नहीं रखे जाते। कारण सिक्खों को विश्वास था कि दशम पातशाह ने पंच भौतिक शरीर नहीं त्यागा।

उस के पश्चात् सतिगुरु जी ने पूरे सितारे के किले में से घोड़ों की रकाबें पकड़ा कर बाला राओ और रुसतम राओ को निकाला जिस की समृति में मनमाड़ में गुरुद्वारा है। आप 47 वर्ष भादरे, 6 वर्ष जींद, 12 वर्ष पटियाले और 39 वर्ष नाभे रहे। आप बाबा अजापाल सिंघ के नाम से भ्रमण करते रहे और इच्छा अनुसार जंगों युद्धों में सहायता करते रहे।

भाई कान्ह सिंघ नाभा ने नाभे की झिड़ी में अंतिम वर्षों में बाबा अजापाल सिंघ की सेवा करते रहे, अपने परदादे बाबा सरूप सिंह के संदर्भ से लिखा है, "बाबा अजापाल सिंघ जी गुरु गोबिन्द सिंघ ही थे क्योंकि प्रत्यक्ष रूप में साहिब श्री कलगीधर जी हज़ूर साहिब में ज्योति ज्योति नहीं समाये। (मासिक पत्र फुलवाड़ी 1926)

बाबा अजापाल सिंघ सम्बन्धी, भाई कान्ह सिंघ के चाचा भाई बिशन सिंघ की लिखी हुई साखियां, भाई कान्ह सिंघ के पुत्र भगवंत सिंघ हरी जी से सतिगुरु प्रताप सिंघ जी ने 1940 में मंगवाई और 14 से 23 साखियां के ब्लाक बनवाये। वैसे भाई कान्ह सिंघ नाभा के महान् कोष में से, बाबा अजापाल सिंह और भादरे सम्बन्धी पढ़ते हुए सतिगुरु जी के बारे में जानकारी स्पष्ट हो जाती है।

सूझवान और श्रद्धावान सिक्खों को कोई भ्रम नहीं रह गया था कि गुरू गोबिन्द सिंघ ही बाबा अजापाल सिंघ के नाम के अधीन सिक्खों को दर्शन देते रहे थे।

आप ने इच्छानुसार काया पलटने से पूर्व गुरगद्दी की

अमानत (धरोहर) हरो नदी के तट पर तपस्या कर रहे, सतिगुरु बालक सिंघ को सौंपी। आप ने वचन किया कि मेरा ही अवतार गुरु राम सिंघ होगा, यह गद्दी उसे देना उसी की अमानत है। ज्ञानी ज्ञान सिंघ लिखते हैं:

बालक म्रिगेस तै विसेस उपदेस नाम,
यदी नर नारी लै अपारी भव तै तरे।
और इलहाम करतार कई बार दयो,
नाम दै उधार करि जीवन का तूं खरे।
ऐसे गुर दसम दरस दै जो कहयो तांहि,
मेरो अवतार'अंस राम सिंघ ह्वै भरे।
यांहि हेत तांहि, नांहि और कांहि मांहि,
निज शकति रखाई, गुरु वाक दिढ थे धरे।

सतिगुरु बालक सिंघ को गद्दी दे कर, दसवें पातशाह ने श्री आदि ग्रंथ साहिब में वर्णित गुरु अथवा सतिगुरु की महानता का ही पक्ष उजागर किया था।

गुरवाणी में अंकित हैं:

– **सतिपुरखु जिनि जानिआ**
सतिगुरु तिस का नाउ। (सुखमनी)

– **गुर रसना अंम्रितु बोलदी**
हरिनाम सुहावी। (महला 5)

– **हरि जुगह जुगो जुग**
जुगह जुगो सद पीड़ी गुरू चलंदी।
(महला 5)

और पीढ़ी मनुष्यों की ही चलती है।

गुरु, शास्त्रों के अनुसार अज्ञानता के अन्धकार को दूर करता है, वह तत्वज्ञान देता है। वह धर्म उपदेष्टा (उपदेशक) और धर्माचार्य होता है।

— **गुर दाता समरथ समाइ।** (महला 5)

चौथे पातशाह मलार राग के एक शब्द मे सतिगुरु को हरि का नाम दृढ़ करने वाला लिखते हैं। सिक्ख को निर्जीव की पूजा करने से वर्जित करते हैं। वे सतिगुरु को वस्त्र तथा भोजन आदि भेंट करने की शिक्षा देते हैं। आप जी की वाणी में लिखा है:

भरमि भूले अगिआनी अंधुले
भ्रमि भ्रमि फूल तोरावै।।
निरजीउ पूजहि मड़ा सरेवहि
सभ बिरथी घाल गवावै।।
ब्रहमु बिंदे सो सतिगुरु कहीऐ
हरि हरि कथा सुणावै।।
तिसु गुर कउ छादन भोजन पाट पटंबर
बहु बिधि सति करि मुखि संचहु
तिसु पुंन की फिरि तोटि न आवै।।
सतिगुर देउ परतखि हरि मूरति
जो अंम्रित बचन सुणावै।। (मलार महला 4)

निस्संदेह ऐसा सतिगुरु देहधारी ही हो सकता है। इसीलिए लिखा है:

हरि नामु दीआ गुर परउपकारी
धनु धंनु गुरु का पिता माता। (महला 3)

दसवें पातशाह ने पिता–माता वाले सतिगुरु वालक सिंघ को गुरगद्दी दी। उसी गुरगद्दी को 1841 ई. में सतिगुरु राम सिंघ जी ने सुशोभित किया। उस समय तक सिक्खी में गिरावट आ चुकी थी, उस में कितनी गिरावट आ गई थी? ज्ञानी ज्ञान सिंघ के शब्दों में:

औरैं रीत औरैं मीत औरै परतीत प्रीति
खान, पहिरान ग्यान मान औरे जन कै।
डारे दसतारे साफ़े भाऐ है संभारे अच्छै,
कच्छै तज गए धोती सुथू संग तन कै।
धारे है गरारे तंबे तहिमत अधिक लंबे
जिन देख मिसी गऊ कंबै तुरक गन कै।
सिखी दशमेश की सु की अपर देस दी
असिखी भरी पेशगी छिनार बन ठन कै।

दुखी होकर ज्ञानी जी यह भी लिखते हैं:

हाए वे कसाई रहे सिक्खी गऊ घाए हैं।

सिक्ख बुरी तरह पतित हो चुके थे। वे नशा करने वाले और विषयी हो चुके थे। धर्म कर्म त्याग चुके थे। उन में से सतिगुरु राम सिंघ जी को केवल ढाई सच्चे शुद्ध रूप में सिक्ख मिले।

बाबा जमीअत सिंघ गिल्ल आधे सिक्ख थे और बाबा जमीअत सिंघ (कान्हा काछा) तथा स. लहिणा सिंघ (घरजाख) पूर्ण।

तेगें मार कर, प्राणों को निछावर कर के सिक्खों ने राज्य प्राप्त किया था। वे भी महाराजा रणजीत सिंघ के

पश्चात् मिट्टी में मिलने लगा। उस राज्य में गऊ हत्या नहीं थी, वैसे मृत्यु दण्ड दिया जाता था। प्रजा सुखी थी परन्तु वह राज्य परस्पर लड़ाई के कारण विनाश के अन्धकूप में डूब गया, हालात ऐसे हो गयेः

पिछों इक सरकार दे खेड चली,
पई नित हुंदी मारो मार मीआं।
सिंघां मार सरदारां दा नास कीता,
सभो कतल होए वारो वार मीआं।
सिर फ़ौज दे रिहा न कोई कुंडा,
होए शुतर जिउं बाझ मुहार मीआं।
शाह मुहंमदा फिरन सरदार लुकदे,
भूतमंडली होई तिआर मीआं।

इस भूत मंडली ने जब 23 नवंबर 1845 को फ़रंगी के साथ एलाने जंग किया तब सतिगुरु जी ने सिक्ख सरदारों की बदनियती देख कर युद्ध जीतने के लिए अरदास नहीं की। बंदूक दरिया में फैंक कर, बल्कि नौकरी छोड़ कर आप श्री भैणी साहिब लौट आए। आप ने अपने हाथों से परिश्रम किया, अकाल बुंगे बैठकर तप किया, देश की दुर्दशा के कारणों सम्बन्धी चिंतन किया, सुप्त स्वाभिमान को जगाने के लिए देश भक्ति और प्रभु–भक्ति के शस्त्र संभाले, नाम बाणी का प्रचार प्रसार किया। इस सम्बन्धी भाई कान्ह सिंघ लिखते हैंः

विसय अगनि कर
तपत रिदे जिन नामाम्रित दे ठारे।

गुरमत दे अनुरागी कीते
पामर पापी भारे।
भंग शराब अफीम छुड़ा के
नशा प्रेम दा दिता।
मंग खाण नूं खंडन कीता
दस धरम दा कित्ता।
फुट ईरखा वैर भाव
अर नफ़रत मनो हटाई।
मुदिता मैत्री करुणा
द्रिढ़ कर सिखां चित्त वसाई।

..

..

बाल अवसथा विच व्रिजेश ने
अदभुति मूरति चीनी।
सिर ते खंडा हथ्य सिमरनी
चढ़िआ बांकी चीनी।
जिस दी मिठी वाणी
अगे फिकी लगे चीनी।
दरशन करके नेत्र विगसदे
जिउ रवि पिख गुलचीनी।

ज्ञानी ज्ञान सिंह जी लिखते हैं कि सतिगुरु जी के संत ख़ालसे-नामधारी सिक्खों की मर्यादा सिक्खी की मर्यादा तथा आवश्यकता अनुसार थी। सतिगुरु जी गुर-मंत्र देते थे, कलाम नहीं:

कोऊ जो कहित ये
कलाम दीनी सय्यदानी
सोऊ सभि कूर हम पेखयो अजमाइ कै।

सतिगुरु जी द्वारा दिए कान में गुर–मंत्र को जपने और उपदेश मानने से सिक्खी का कैसे कायाकल्प हो गया:

पाइ एह हुकम प्रमेस का बिसेस फिर,
राम मिरगेस उपदेस दैन लागिओ।
हुक्के छडवाए रखवाए केस मोनियों के
सुदा छकि थाए सिक्ख भाग
जिनै जागिओ।
फैलयो जस भारी सिक्ख थीए
तांहि के अपारी,
सिंघ पंथ बिरधाइओ
नाम रस पागिओ।
फीम भंग पोसत
शराब मास चोरी जारी,
ठग्गी तजि थीए संत सतिजुग आगिओ।

(पंथ प्रकाश–ज्ञानी ज्ञान सिंघ)

सतिगुरु जी ने अध्यात्मिक, सदाचारक, राजनैतिक आदि प्रत्येक पक्ष में क्रान्ति ला दी। अन्य विशेष व्यक्तियों ने तो आप की शोभा की ही। अंग्रेज़ शासक जो आप के हाथों से राज्य–भार छिने जाने का भय अनुभव करते थे, ने भी लिखा कि आप अंग्रेजी शासन के वफादार नहीं थे, आप का लोगों में आदर (सम्मान) गुरु, सतिगुरु और

सतिगुरु सच्चे पातशाह के रूप में था। आप को सिक्ख गुरु नानक और गुरु गोबिंद सिंह का अवतार मानते हैं।

इन्साईकलोपीडिया ब्रिटेनिका में श्री सतिगुरु राम सिंघ के सिंघों (नामधारी सिक्खों) सम्बन्धी लिखा है:

अकाली अपना प्रभाव गंवा बैठे थे। कूकों (नामधारी सिक्खों) की संख्या यद्यपि कम थी (सतिगुरु जी के प्रदेश गमन के पश्चात्) पर वे अपने दृढ़ निश्चय के प्रति निष्ठावान रहे।

लेटी–जिज्ञासू शीर्षक अधीन लिखा है, "सिक्खी जब पुनः पलरने लगी तब इस के सभी वर्ग समानरूप से पुनः सजीव हुए। इस का श्रेष्ठ उदाहरण कूकों ने पेश किया। वे (गुरु) गोबिन्द सिंघ के नैतिक मूल्यों के दृढ़ अनुयायी है। कूके की निशानी सीधी दस्तार, मनकों वाला हार अथवा ऊन की माला है, जो आरम्भिक रूप में तपस्या के अनुशासन की सूचक है। (पृष्ठ 248 जिल्द 20 संस्करण 1965)

सतिगुरु राम सिंघ और नामधारी सिक्खों सम्बन्धी सय्यद मोहम्मद लतीफ ने लिखा:

(गुरु) राम सिंघ और उस के श्रद्धालुओं के मुद्दे केवल धार्मिक नहीं थे बल्कि एक धार्मिक, सुधारक एवं नैतिक शिक्षाओं के रूप में उन्होंने गहरे राजनैतिक मनसूबे बनाये।

इन्साईक्लोपीडिया ब्रिटेनिका में लिखा है:

(गुरु) राम सिंह सिक्ख दार्शनिक एवं सुधारक और अंग्रेज़ व्यापारियों के साथ तथा नौकरियों के प्रति असहयोग तथा बहिष्कार को राजनैतिक हथियार बना कर उपयोग करने वाला पहला भारतीय है।

(Guru) Ram Singh sikh philosopher and reformer and the first Indian to use non-co-operation and boycott of British merchandise and service as a weapon of political power.

(Vol-8, page 142)

बहिष्कार एवं स्वदेशी के साथ सतिगुरु जी ने निजी डाक–प्रबन्ध भी चलाया जिस ने अंग्रेज़ सरकार को नामधारियों की गुप्त गतिविधियों को समझने का अवसर शीघ्र नहीं दिया।

सतिगुरु जी ने स्त्रियों को मारना, बेचना, बाल–विवाह, वट्टा करना (बहनोई की बहन से अपनी शादी) तथा सती प्रथा बंद करवाई और विधवा विवाह आरम्भ किये।

गुलाम भीख जलंधरी ने आप के प्रभाव के सम्बन्ध में लिखा है:

"गांव के गांव और मौज़े के मौज़े कूके हो गये। जिस वक्त गुरु नानक देव जी मौजूद थे, ने सिलसिला अरशाद शुरू किया उन्हीं को नसीब न हुआ कि दस वर्ष में भी एक हज़ार आदमी उन के चेलों में होता। उन के मजहब का अरूज पिछले मनसद नशीनों के वक्त में हुआ। इस मूजिद की ज़िंदगी में लाखों कूका (सिक्ख) हो गये।"

अजिते रंधावे की साखी, सौ साखी, गुरिंड नामा, सूरज प्रकाश आदि रचनाओं में आप के बारे में भविष्य वाक्य लिखे हुए थे कि आप अनंत शक्ति वाले, सभी के सिरमौर

(सिरताज), बारहवें सतिगुरु हैं। आप के समकालीन सिक्खों ने इसी रूप में आप के प्रति श्रद्धा रखी।

बाबा निहाल सिंघ कलसीआ ने उर्दू पुस्तक खुरशीद ख़ालसा में आप को सिक्ख परम्परा का बारहवां गुरु माना है। सिंघ सभा ने इस का विरोध किया और लाहौर दीवान में बहिष्कार (बाईकाट) का प्रस्ताव रखा, तब बाबा खेम सिंघ बेदी ने इस पुस्तक का समर्थन किया।

सतिगुरु जी ने पंजाब में से लगभग लुप्त हो चुकी सिक्खी की मर्यादा के साथ पुनः स्थाप्ति करने के लिये श्री हज़ूर साहिब जहां अभी पुरातन लंगर की मर्यादा प्रचलित थी, से भाई राए सिंघ द्वारा मर्यादा मंगवाकर सिक्खी में वही लंगर की मर्यादा प्रचलित की।

अनपढ़ता और नासमझी के कारण श्री आदि ग्रंथ साहिब की बीड़ों का अनादर होता था। गुरुबाणी का पाठ नहीं होता था, उन पर धूल जम चुकी थी। आप ने झाड़–पोंछकर साफ करके पवित्रता से धर्मशालाओं में बीड़ों का प्रकाश करवया। आप ने श्री भैणी साहिब में 25 दरबार साहिब प्रकाश करे, स्वयं बैठकर पाठियों के पाठ शुद्ध किये। पाठों की शुद्धि के लिए संथा देने का क्रम आज भी जारी है। श्री सतिगुरु जगजीत सिंह जी श्री आदि ग्रंथ साहिब, श्री दशम ग्रंथ साहिब के प्रामाणिक एवं शुद्ध पाठी तैयार करने के लिये संथा देते, दिलवाते रहे हैं, पाठ प्रतियोगिताएं करवाते रहे हैं और शुद्ध पाठ करने वालों को मान देते रहे हैं।

आप जी शुद्ध पाठ ही नहीं, गुरुवाणी का संबंधित

रागों के अनुसार शुद्ध गायन करने की शिक्षा स्वयं देते और उस्तादों से दिलवाते रहे हैं। श्री भैणी साहिब के संगीत विद्यालय में शास्त्रीय संगीत और गुरमत संगीत का संगम हुआ है। श्री सतिगुरु जगजीत सिंह जी ने प्राचीन रीतियों को प्रचलित किया और नई रीतियों का शिक्षण दिया है।

आम तौर पर पाठी, गुरबाणी में प्रयुक्त मात्राओं का वैयाकरणिक दृष्टि से प्रयोग करने में अनभिज्ञ होते हैं। इस लिए वे मनु, मन, मनि, नेह, नेहु, पावह, पावहि, गावै गावहि, गावीऐ, हुकम, हुकमु, हुकमि, हुकमी, गुरू, गुर, गुरु, के, कै आदि में प्रयुक्त मात्राओं का शुद्ध उच्चरण नहीं करते जिससे कई बार अर्थ बदल जाता है। गलत उच्चारण प्राय: 'औंकड़' (ु), 'सिहारी' (ि), 'लां' (े), 'दुलां' (ै) का होता है।

सतिगुरू गोबिंद सिंघ जी से सम्बन्धित साखी है कि आप ने, 'करते की मिति करता जाणै कै जाणै गुरु सुरा।" में 'कै' को 'के' पढ़ने वाले को सज़ा दी। आप ने सिक्खों को समझाया कि 'के जाणै' का अर्थ क्या जानता है और 'कै जाणै' का अर्थ या जानता है, बनता है। भाव कर्त्ता की मित या वह आप जानता है अथवा सतिगुरु।

सतिगुरु जी गुरबाणी का पाठ करने वाले को प्रत्येक लग-मात्रा का शुद्ध उच्चारण करने का आदेश करते हैं।

नामधारी सिक्ख, गुरबाणी का आदर करने के लिये यदि जंगल-पानी शौच आदि जा कर ओएं हों तब केशी स्नान करके पाठ करते हैं, नहीं तो जोड़े (जूते) उतार कर

पांच स्नाना करके (दो हाथ, दो पैर तथा मूँह धोकर) पाठ करने के लिये बैठते हैं, वे अरदास करते हैं, "हे महाराज जो तैं गुरु रूप धार के हुकम दित्ता है ग्रंथ साहिब में सो आपणा हुकम सदा ई मनाई।"

नामधारी सिक्खों का केशों सहित स्नान, कान में गुरमंत्र, सुच सोध रखणा, भजन बंदगी करना, देहधारी गुरु की आज्ञा में रहना सब गुरुबाणी के अनुसार है।

सीधी दस्तार सहित गुरमुख जैसा पहरावा पहनना, पांच ककारों को धारण करना, सुच सोध रखना, ऊन की माला पहनना, नशों से मुक्त पूर्ण शाकाहारी होना, जीव के कल्याणार्थ यत्नशील रहना, नीले काले वस्त्र न पहनना, इधर–उधर से खाना खाने से संकोच करना, नामधारी सिक्खों की पहचान है।

उन्हीं के नितनेम में श्री आदि ग्रंथ साहिब तथा श्री दसम ग्रंथ की वाणियां शामिल हैं। ये वाणियां पढ़ने की आवश्यक्ता अमृत तैयार करने, हवन करने, वरनी करने के समय भी होती हैं। नित्य उपयोग में आने वाली वाणियों का नित्य अभ्यास करने के लिये, नितनेम करने के लिये, जिन वाणियों की आवश्यकता रहती है उन्हीं का 'नामधारी नितनेम' नाम से गुटका श्री सतिगुरु जी की आज्ञा अनुसार तैयार किया जाता रहा है। 'नामधारी नितनेम' का वर्तमान संस्करण भी सतिगुरु सच्चे पातशाह जी की आज्ञा अनुसार तैयार किया गया है इस गुटके के हिन्दी में लिप्यंतरण करने का कार्य सतिगुरु सच्चे पातशाह जी की आज्ञा से

डा. देवेन्द्र सिंह उसाहन ने बहुत परिश्रम एवं श्रद्धा से किया है।

गुरु की कृपा से अकाल पुरख की समझ आती है। उसी की कृपा से गुरबाणी के अर्थ समझ आते हैं।

यह आशा की जाती है कि भारतीय अध्यात्मिक परम्परा सम्बन्धी, सिक्ख पृष्ठभूमि और गुरबाणी के शुद्ध पाठ तथा अर्थ बोध सम्बन्धी लिखी यह जानकारी गुरुबाणी का पाठ करने वालों को सही दिशा देगी।

बसंत पंचमी 2057 वि. **–तारा सिंह अनजान**

रहितनामा

पातशाही १२

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

लिखतुम राम सिंघ, होर संबूह खालसा जी भैणी दा, संबूह खालसे जी को स्री वाहिगुरु जी का खालसा स्री वाहिगुरु जी की फते बुलाई प्रमान करनी जी।

होरु रहितनामा संबूह संगत दे वासते लिखिआ भैणी ते। पिछली रात उठके गड़वा लजाइ कर मदाने होइ औणा। दो वारी गड़वा माजना। मदान बसत्र लाहि के जाना, दातन करनी, फेर इशनानु करना। बाणी पड़नी, जे कंठ

ना होवे ता कंठ कर लैणी । सरब माई बीबी सरब बुढे बाले ने। जपु, जापु, दुहा दे हजारे कंठ करने। रहिरास, आरती सोहिला एतनी ता जरूर ही कंठ करनी ते सील संतोखु सभ ने रखना । भजनु अठे पहर करना गुरु सचे दा । होरु पराई धी भैण आपणी जानणी । पराइआ हकु गुरु जी ने अगे ही लिख छडिआ है "हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ"। जो कोई भजनु पुछ के ना करुगा उस दा मूह दुही जहानी काला होऊगा। होरु जी किसे ने मंदा फिका नहीं बोलणा। खिमा करनी, बोलु कुबोलु सहि जाणा सभ दा। जो कोई मारे कुछु ता भी खिमा करनी, तुसा दा रछक गुरू है हरि बखत । तुसी बहुत आपणी भलाई छपाउण दी करनी हरि

बखत। दुवानु लाउुणा, हर दिन सबदु कीरतनु करना। जे कर जग करना होवे ता चौका देणा। भाडे कोरे लिआउणे। चौके बिच चरन धोइ के बड़ना। अर होम बी करना। पहले चौका देणा होम दी जगा, लकड़ी होम विच पलाह दी पाउणी जाँ बेरी दी पाउणी। फूक नही मारनी, होम दी अग नू पखी नाल झलणा। पंज आदमी होम विच पोथीआँ उतो बाणी पढ़नी चउपई, जपु, जापु, चंडी चरित्र दूसरा, अकाल उसतत[१] छेवाँ आदमी[२] अहूतीआँ पावे सतवाँ मगरों नाल ही जल दा छिटा देवे थोड़ा थोड़ा। जो कोई मंदा करमु करे जारी चोरी ता किसे ही था दुवानु

१. 'चंडी दी वार' तथा उग्रदंती ये बाणियां हवन समय पढ़न का हुकम स्री सतिगुरू हरी सिम्घ जी ने दिया था।
२. यह भजन भी करें।

विच नही बड़न देणा। जेकर जोराबर होवे ताँ सभना ने एहु अरदास करनी जी एहु आदमी एथे आउण जोगा ई ना रहे। होर जी मेरी मत बहुत थोड़ी है तुसी आप ही सभ कुछ समझ लैणा जी। होर जी सभने हथ जोड़ने परमेसर अगे जो हे महाराज! साडा धरमु बणिआ रहे जी। होर कछा रखणीआँ, पउचा पा के पउचा लहुणा। होर जी, किसे दा मंदा करम छपाउणा नही किसे ने। होर जी, किसे ने धी भैण दा पैसा नही लैणा, बटा नही करना। सदा गुरु गुरु जपदे रहिणा। सारे बहीर नू एहु हुकम सुणाइ देणा जो पंदरा सोला बरस ते घट कोई ना कुड़ी बिआहे। दारू मास नहीं खाणा पीणा। खौफ रखणा गुरू दा हरि दम।

ੴ सतिनामु करता पुरखु
निरभउ निरवैरु अकाल मूरति
अजूनी सैभं गुर प्रसादि ।।
जपु ॥

आदि सचु जुगादि सचु ॥ है भी सचु नानक होसी भी सचु ॥१॥ सोचै सोचि न होवई जे सोची लख वार ॥ चुपै चुप न होवई जे लाइ रहा लिव तार ॥ भुखिआ भुख न उतरी जे बंना पुरीआ भार ॥ सहस सिआणपा लख होहि त इक न चलै नालि ॥ किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥ हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥१॥

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥ हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥ हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥ इकना हुकमी बखसीस इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥ हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥ नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥२॥

गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥ गावै को दाति जाणै नीसाणु ॥ गावै को गुण वडिआईआ चार ॥ गावै को विदिआ विखमु वीचारु ॥ गावै को साजि करे तनु खेह ॥ गावै को जीअ लै फिरि देह ॥ गावै को जापै दिसै दूरि ॥ गावै को वेखै हादरा हदूरि ॥ कथना कथी न आवै तोटि ॥ कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि ॥ देदा दे लैदे थकि पाहि ॥ जुगा

जुगंतरि खाही खाहि ॥ हुकमी हुकमु चलाए राहु ॥ नानक विगसै वेपरवाहु ॥३॥

साचा साहिबु साचु नाइ भाखिआ भाउ अपारु ॥ आखहि मंगहि देहि देहि दाति करे दातारु ॥ फेरि कि अगै रखीऐ जितु दिसै दरबारु ॥ मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु ॥ अंम्रित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु ॥ करमी आवै कपड़ा नदरी मोखु दुआरु ॥ नानक एवै जाणीऐ सभु आपे सचिआरु ॥४॥

थापिआ न जाइ कीता न होइ ॥ आपे आपि निरंजनु सोइ ॥ जिनि सेविआ तिनि पाइआ मानु ॥ नानक गावीऐ गुणी निधानु ॥ गावीऐ सुणीऐ मनि रखीऐ भाउ ॥ दुखु परहरि सुखु घरि लै जाइ ॥ गुरमुखि नादं गुरमुखि वेदं गुरमुखि

रहिआ समाई ॥ गुरु ईसरु गुरु गोरखु बरमा गुरु पारबती माई ॥ जे हउ जाणा आखा नाही कहणा कथनु न जाई ॥ गुरा इक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥५॥

तीरथि नावा जे तिसु भावा विणु भाणे कि नाइ करी ॥ जेती सिरठि उपाई वेखा विणु करमा कि मिलै लई ॥ मति विचि रतन जवाहर माणिक जे इक गुर की सिख सुणी ॥ गुरा इक देहि बुझाई ॥ सभना जीआ का इकु दाता सो मै विसरि न जाई ॥६॥

जे जुग चारे आरजा होर दसूणी होइ ॥ नवा खंडा विचि जाणीऐ नालि चलै सभु कोइ ॥ चंगा नाउ रखाइ कै जसु कीरति जगि लेइ ॥ जे तिसु नदरि न आवई त वात न पुछै के ॥ कीटा

अंदरि कीटु करि दोसी दोसु धरे ॥ नानक निरगुणि गुणु करे गुणवंतिआ गुणु दे ॥ तेहा कोइ न सुझई जि तिसु गुणु कोइ करे ॥७॥

सुणिऐ सिध पीर सुरि नाथ ॥ सुणिऐ धरति धवल आकास ॥ सुणिऐ दीप लोअ पाताल ॥ सुणिऐ पोहि न सकै कालु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥८॥

सुणिऐ ईसरु बरमा इंदु ॥ सुणिऐ मुखि सालाहण मंदु ॥ सुणिऐ जोग जुगति तनि भेद ॥ सुणिऐ सासत सिम्रिति वेद ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥९॥

सुणिऐ सतु संतोखु गिआनु ॥ सुणिऐ अठसठि का इसनानु ॥ सुणिऐ पड़ि

पड़ि पावहि मानु ॥ सुणिऐ लागै सहजि धिआनु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥१०॥

सुणिऐ सरा गुणा के गाह ॥ सुणिऐ सेख पीर पातिसाह ॥ सुणिऐ अंधे पावहि राहु ॥ सुणिऐ हाथ होवै असगाहु ॥ नानक भगता सदा विगासु ॥ सुणिऐ दूख पाप का नासु ॥११॥

मंने की गति कही न जाइ ॥ जे को कहै पिछै पछुताइ ॥ कागदि कलम न लिखणहारु ॥ मंने का बहि करनि वीचारु ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१२॥

मंनै सुरति होवै मनि बुधि ॥ मंनै सगल भवण की सुधि ॥ मंनै मुहि चोटा ना खाइ ॥ मंनै जम कै साथि न जाइ ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि

जाणै मनि कोइ ॥१३॥

मंनै मारगि ठाक न पाइ ॥ मंनै पति सिउ परगटु जाइ ॥ मंनै मगु न चलै पंथु ॥ मंनै धरम सेती सनबंधु ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१४॥

मंनै पावहि मोखु दुआरु ॥ मंनै परवारै साधारु ॥ मंनै तरै तारे गुरु सिख ॥ मंनै नानक भवहि न भिख ॥ ऐसा नामु निरंजनु होइ ॥ जे को मंनि जाणै मनि कोइ ॥१५॥

पंच परवाण पंच परधानु ॥ पंचे पावहि दरगहि मानु ॥ पंचे सोहहि दरि राजानु ॥ पंचा का गुरु एकु धिआनु ॥ जे को कहै करै वीचारु ॥ करते कै करणै नाही सुमारु ॥ धौलु धरमु दइआ का पूतु ॥ संतोख थापि रखिआ जिनि

सूति ॥ जे को बुझै होवै सचिआरु ॥ धवलै उपरि केता भारु ॥ धरती होरु परै होरु होरु ॥ तिस ते भारु तलै कवणु जोरु ॥ जीअ जाति रंगा के नाव ॥ सभना लिखिआ वुड़ी कलाम ॥ एहु लेखा लिखि जाणै कोइ ॥ लेखा लिखिआ केता होइ ॥ केता ताणु सुआलिहु रूपु ॥ केती दाति जाणै कौणु कूतु ॥ कीता पसाउ एको कवाउ ॥ तिस ते होए लख दरीआउ ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥१६॥

असंख जप असंख भाउ ॥ असंख पूजा असंख तप ताउ ॥ असंख गरंथ मुखि वेद पाठ ॥ असंख जोग मनि रहहि उदास ॥ असंख भगत गुण

गिआन वीचार ॥ असंख सती असंख दातार ॥ असंख सूर मुह भख सार ॥ असंख मोनि लिव लाइ तार ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥१७॥

असंख मूरख अंध घोर ॥ असंख चोर हरामखोर ॥ असंख अमर करि जाहि जोर ॥ असंख गल वढ हतिआ कमाहि ॥ असंख पापी पापु करि जाहि ॥ असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥ असंख मलेछ मलु भखि खाहि ॥ असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥ नानकु नीचु कहै वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥१८॥

असंख नाव असंख थाव ॥ अगंम अगंम असंख लोअ ॥ असंख कहहि सिरि भारु होइ ॥ अखरी नामु अखरी सालाह ॥ अखरी गिआनु गीत गुण गाह ॥ अखरी लिखणु बोलणु बाणि ॥ अखरा सिरि संजोगु वखाणि ॥ जिनि एहि लिखे तिसु सिरि नाहि ॥ जिव फुरमाए तिव तिव पाहि ॥ जेता कीता तेता नाउ ॥ विणु नावै नाही को थाउ ॥ कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥१९॥

भरीऐ हथु पैरु तनु देह ॥ पाणी धोतै उतरसु खेह ॥ मूत पलीती कपड़ु होइ ॥ दे साबूणु लईऐ ओहु धोइ ॥ भरीऐ मति पापा कै संगि ॥ ओहु धोपै नावै कै रंगि ॥ पुंनी पापी आखणु नाहि ॥ करि

करि करणा लिखि लै जाहु ॥ आपे बीजि आपे ही खाहु ॥ नानक हुकमी आवहु जाहु ॥२०॥

तीरथु तपु दइआ दतु दानु ॥ जे को पावै तिल का मानु ॥ सुणिआ मंनिआ मनि कीता भाउ ॥ अंतरगति तीरथि मलि नाउ ॥ सभि गुण तेरे मै नाही कोइ ॥ विणु गुण कीते भगति न होइ ॥ सुअसति आथि बाणी बरमाउ ॥ सति सुहाणु सदा मनि चाउ ॥ कवणु सु वेला वखतु कवणु कवण थिति कवणु वारु ॥ कवणि सि रुती माहु कवणु जितु होआ आकारु ॥ वेल न पाईआ पंडती जि होवै लेखु पुराणु ॥ वखतु न पाइओ कादीआ जि लिखनि लेखु कुराणु ॥ थिति वार ना जोगी जाणै रुति माहु ना कोई ॥ जा करता सिरठी कउ साजे आपे जाणै

सोई ॥ किव करि आखा किव सालाही
किउ वरनी किव जाणा ॥ नानक
आखणि सभु को आखै इक दू इकु
सिआणा ॥ वडा साहिबु वडी नाई कीता
जा का होवै ॥ नानक जे को आपौ जाणै
अगै गइआ न सोहै ॥२१॥

पाताला पाताल लख आगासा
आगास ॥ ओड़क ओड़क भालि थके वेद
कहनि इक वात ॥ सहस अठारह
कहनि कतेबा असुलू इकु धातु ॥ लेखा
होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु ॥
नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु ॥२२॥

सालाही सालाहि एती सुरति न
पाईआ ॥ नदीआ अतै वाह पवहि समुंदि
न जाणीअहि ॥ समुंद साह सुलतान
गिरहा सेती मालु धनु ॥ कीड़ी तुलि न
होवनी जे तिसु मनहु न वीसरहि ॥२३॥

अंतु न सिफती कहणि न अंतु ॥ अंतु न करणै देणि न अंतु ॥ अंतु न वेखणि सुणणि न अंतु ॥ अंतु न जापै किआ मनि मंतु ॥ अंतु न जापै कीता आकारु ॥ अंतु न जापै पारावारु ॥ अंत कारणि केते बिललाहि ॥ ता के अंत न पाए जाहि ॥ एहु अंतु न जाणै कोइ ॥ बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥ वडा साहिबु ऊचा थाउ ॥ ऊचे उपरि ऊचा नाउ ॥ एवडु ऊचा होवै कोइ ॥ तिसु ऊचे कउ जाणै सोइ ॥ जेवडु आपि जाणै आपि आपि ॥ नानक नदरी करमी दाति ॥२४॥

बहुता करमु लिखिआ ना जाइ ॥ वडा दाता तिलु न तमाइ ॥ केते मंगहि जोध अपार ॥ केतिआ गणत नही वीचारु ॥ केते खपि तुटहि वेकार ॥ केते लै लै मुकरु पाहि ॥ केते मूरख खाही

खाहि ॥ केतिआ दूख भूख सद मार ॥ एहि भि दाति तेरी दातार ॥ बंदि खलासी भाणै होइ ॥ होरु आखि न सकै कोइ ॥ जे को खाइकु आखणि पाइ ॥ ओहु जाणै जेतीआ मुहि खाइ ॥ आपे जाणै आपे देइ ॥ आखहि सि भि केई केइ ॥ जिस नो बखसे सिफति सालाह ॥ नानक पातिसाही पातिसाहु ॥२५॥

अमुल गुण अमुल वापार ॥ अमुल वापारीए अमुल भंडार ॥ अमुल आवहि अमुल लै जाहि ॥ अमुल भाइ अमुला समाहि ॥ अमुलु धरमु अमुलु दीबाणु ॥ अमुलु तुलु अमुलु परवाणु ॥ अमुलु बखसीस अमुलु नीसाणु ॥ अमुलु करमु अमुलु फुरमाणु ॥ अमुलो अमुलु आखिआ न जाइ ॥ आखि आखि रहे लिव लाइ ॥

आखहि वेद पाठ पुराण ॥ आखहि पड़े करहि वखिआण ॥ आखहि बरमे आखहि इंद ॥ आखहि गोपी तै गोविंद ॥ आखहि ईसर आखहि सिध ॥ आखहि केते कीते बुध ॥ आखहि दानव आखहि देव ॥ आखहि सुरि नर मुनि जन सेव ॥ केते आखहि आखणि पाहि ॥ केते कहि कहि उठि उठि जाहि ॥ एते कीते होरि करेहि ॥ ता आखि न सकहि केई केइ ॥ जेवडु भावै तेवडु होइ ॥ नानक जाणै साचा सोइ ॥ जे को आखै बोलु विगाड़ु ॥ ता लिखीऐ सिरि गावारा गावारु ॥२६॥

सो दरु केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥ वाजे नाद अनेक असंखा केते वावणहारे ॥ केते राग परी सिउ कहीअनि केते गावणहारे ॥ गावहि

तुहनो पउणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥ गावहि चितु गुपतु लिखि जाणहि लिखि लिखि धरमु वीचारे ॥ गावहि ईसरु बरमा देवी सोहनि सदा सवारे ॥ गावहि इंद इदासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ गावहि सिध समाधी अंदरि गावनि साध विचारे ॥ गावनि जती सती संतोखी गावहि वीर करारे ॥ गावनि पंडित पड़नि रखीसर जुगु जुगु वेदा नाले ॥ गावहि मोहणीआ मनु मोहनि सुरगा मछ पइआले ॥ गावनि रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥ गावहि जोध महाबल सूरा गावहि खाणी चारे ॥ गावहि खंड मंडल वरभंडा करि करि रखे धारे ॥ सेई तुधुनो गावहि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥ होरि केते गावनि से मै चिति न आवनि नानकु

किआ वीचारे ॥ सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥ करि करि वेखै कीता आपणा जिव तिस दी वडिआई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी हुकमु न करणा जाई ॥ सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥२७॥

मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली धिआन की करहि बिभूति ॥ खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति ॥ आई पंथी सगल जमाती मनि जीतै जगु जीतु ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२८॥

भुगति गिआनु दइआ भंडारणि घटि

घटि वाजहि नाद ॥ आपि नाथु नाथी सभ जा की रिधि सिधि अवरा साद ॥ संजोगु विजोगु दुइ कार चलावहि लेखे आवहि भाग ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥२९॥

एका माई जुगति विआई तिनि चेले परवाणु ॥ इकु संसारी इकु भंडारी इकु लाए दी बाणु ॥ जिव तिसु भावै तिवै चलावै जिव होवै फुरमाणु ॥ ओहु वेखै ओना नदरि न आवै बहुता एहु विडाणु ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३०॥

आसणु लोइ लोइ भंडार ॥ जो किछु पाइआ सु एका वार ॥ करि करि वेखै सिरजणहारु ॥ नानक सचे की साची

कार ॥ आदेसु तिसै आदेसु ॥ आदि अनीलु अनादि अनाहति जुगु जुगु एको वेसु ॥३१॥

इक दू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस ॥ लखु लखु गेड़ा आखीअहि एकु नामु जगदीस ॥ एतु राहि पति पवड़ीआ चड़ीऐ होइ इकीस ॥ सुणि गला आकास की कीटा आई रीस ॥ नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस ॥३२॥

आखणि जोरु चुपै नह जोरु ॥ जोरु न मंगणि देणि न जोरु ॥ जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु ॥ जोरु न राजि मालि मनि सोरु ॥ जोरु न सुरती गिआन वीचारि ॥ जोरु न जुगती छुटै संसारु ॥ जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ ॥ नानक उतमु नीचु न कोइ ॥३३॥

राती रुती थिती वार ॥ पवण पाणी अगनी पाताल ॥ तिसु विचि धरती थापि रखी धरमसाल ॥ तिसु विचि जीअ जुगति के रंग ॥ तिन के नाम अनेक अनंत ॥ करमी करमी होइ वीचारु ॥ सचा आपि सचा दरबारु ॥ तिथै सोहनि पंच परवाणु ॥ नदरी करमि पवै नीसाणु ॥ कच पकाई ओथै पाइ ॥ नानक गइआ जापै जाइ ॥३४॥

धरम खंड का एहो धरमु ॥ गिआन खंड का आखहु करमु ॥ केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ॥ केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥ केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥ केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥ केते सिध बुध नाथ केते केते देवी वेस ॥ केते देव दानव मुनि

केते केते रतन समुंद ॥ केतीआ खाणी केतीआ बाणी केते पात नरिंद ॥ केतीआ सुरती सेवक केते नानक अंतु न अंतु ॥३५॥

गिआन खंड महि गिआनु परचंडु ॥ तिथै नाद बिनोद कोड अनंदु ॥ सरम खंड की बाणी रूपु ॥ तिथै घाड़ति घड़ीऐ बहुतु अनूपु ॥ ता कीआ गला कथीआ ना जाहि ॥ जे को कहै पिछै पछुताइ ॥ तिथै घड़ीऐ सुरति मति मनि बुधि ॥ तिथै घड़ीऐ सुरा सिधा की सुधि ॥३६॥

करम खंड की बाणी जोरु ॥ तिथै होरु न कोई होरु ॥ तिथै जोध महाबल सूर ॥ तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥ तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥ ता के रूप न कथने जाहि ॥ ना ओहि

मरहि न ठागे जाहि ॥ जिन कै रामु वसै मन माहि ॥ तिथै भगत वसहि के लोअ ॥ करहि अनंदु सचा मनि सोइ ॥ सचखंडि वसै निरंकारु ॥ करि करि वेखै नदरि निहाल ॥ तिथै खंड मंडल वरभंड ॥ जे को कथै त अंत न अंत ॥ तिथै लोअ लोअ आकार ॥ जिव जिव हुकम तिवै तिव कार ॥ वेखै विगसै करि वीचारु ॥ नानक कथना करड़ा सारु ॥३७॥

जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥ अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥ भउ खला अगनि तप ताउ ॥ भाँडा भाउ अंम्रितु तितु ढालि ॥ घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥ जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥ नानक नदरी नदरि निहाल ॥३८॥

सलोकु ॥

पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु ॥ दिवसु राति दुइ दाई दाइआ खेलै सगल जगतु ॥ चंगिआईआ बुरिआईआ वाचै धरमु हदूरि ॥ करमी आपो आपणी के नेड़ै के दूरि ॥ जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥ नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥१॥

माझ महला ५

चउपदे घरु १ ॥

मेरा मनु लोचै गुर दरसन ताई ॥ बिलप करे चात्रिक की निआई ॥ त्रिखा न उतरै साँति न आवै बिनु दरसन संत पिआरे जीउ ॥१ ॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई गुर दरसन संत पिआरे जीउ ॥१॥रहाउ॥ तेरा मुखु सुहावा जीउ सहज धुनि बाणी ॥ चिरु होआ देखे सारिंगपाणी ॥ धंनु सु देसु जहा तूं वसिआ मेरे सजण मीत मुरारे जीउ ॥२॥ हउ घोली हउ घोलि घुमाई गुर सजण मीत मुरारे जीउ ॥१॥रहाउ॥ इक घड़ी न मिलते ता कलिजुगु होता ॥ हुणि कदि

मिलीऐ प्रिअ तुधु भगवंता ॥ मोहि रैणि न विहावै नीद न आवै बिनु देखे गुर दरबारे जीउ ॥३॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई तिसु सचे गुर दरबारे जीउ ॥१॥रहाउ॥ भागु होआ गुरि संतु मिलाइआ ॥ प्रभु अबिनासी घर महि पाइआ ॥ सेव करी पलु चसा न विछुड़ा जन नानक दास तुमारे जीउ ॥४॥ हउ घोली जीउ घोलि घुमाई जन नानक दास तुमारे जीउ ॥रहाउ॥१॥८॥

धनासरी महला १

घरु १ चउपदे

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

जीउ डरतु है आपणा कै सिउ करी पुकार ॥ दूख विसारणु सेविआ सदा

सदा दातारु ॥१॥ साहिबु मेरा नीत नवा सदा सदा दातारु ॥१॥रहाउ॥ अनदिनु साहिबु सेवीऐ अंति छडाए सोइ ॥ सुणि सुणि मेरी कामणी पारि उतारा होइ ॥२॥ दइआल तेरै नामि तरा सद कुरबाणै जाउ ॥१॥रहाउ॥ सरबं साचा एकु है दूजा नाही कोइ ॥ ता की सेवा सो करे जाकउ नदरि करे ॥३॥ तुधु बाझु पिआरे केव रहा ॥ सा वडिआई देहि जितु नामु तेरे लागि रहाँ ॥ दूजा नाही कोइ जिसु आगै पिआरे जाइ कहा ॥१॥रहाउ॥ सेवी साहिबु आपणा अवरु न जाचंउ कोइ ॥ नानकु ता का दासु है बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥४॥ साहिब तेरे नाम विटहु बिंद बिंद चुख चुख होइ ॥१॥रहाउ॥४॥१॥

तिलंग महला १ घरु ३

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

इहु तनु माइआ पाहिआ पिआरे लीतड़ा लबि रंगाए ॥ मेरै कंत न भावै चोलड़ा पिआरे किउ धन सेजै जाए ॥१॥ हंउ कुरबानै जाउ मिहरवाना हंउ कुरबानै जाउ ॥ हंउ कुरबानै जाउ तिना कै लैनि जो तेरा नाउ ॥ लैनि जो तेरा नाउ तिना कै हंउ सद कुरबानै जाउ ॥१॥ रहाउ ॥ काइआ रंङणि जे थीऐ पिआरे पाईऐ नाउ मजीठ ॥ रंङण वाला जे रंङै साहिबु ऐसा रंगु न डीठ ॥२॥ जिन के चोले रतड़े पिआरे कंतु तिना कै पासि ॥ धूड़ि तिना की जे मिलै जी कहु नानक की अरदासि ॥३॥ आपे साजे आपे रंगे आपे नदरि करेइ ॥

नानक कामणि कंतै भावै आपे ही रावेइ ॥४॥१॥३॥

तिलंग म: १ ॥

इआनड़ीए मानड़ा काइ करेहि ॥ आपनड़ै घरि हरि रंगो की न माणेहि ॥ सहु नेड़ै धन कंमलीए बाहरु किआ ढूढेहि ॥ भै कीआ देहि सलाईआ नैणी भाव का करि सीगारो ॥ ता सोहागणि जाणीऐ लागी जा सहु धरे पिआरो ॥१॥ इआणी बाली किआ करे जा धन कंत न भावै ॥ करण पलाह करे बहुतेरे सा धन महलु न पावै ॥ विणु करमा किछु पाईऐ नाही जे बहुतेरा धावै ॥ लब लोभ अहंकार की माती माइआ माहि समाणी ॥ इनी बाती सहु पाईऐ नाही भई कामणि इआणी ॥२॥ जाइ पुछहु सोहागणी वाहै किनी बाती सहु पाईऐ ॥

जो किछु करे सो भला करि मानीऐ हिकमति हुकमु चुकाईऐ ॥ जा कै प्रेमि पदारथु पाईऐ तउ चरणी चितु लाईऐ ॥ सहु कहै सो कीजै तनु मनो दीजै ऐसा परमलु लाईऐ ॥ एव कहहि सोहागणी भैणे इनी बाती सहु पाईऐ ॥३॥ आपु गवाईऐ ता सहु पाईऐ अउरु कैसी चतुराई ॥ सहु नदरि करि देखै सो दिनु लेखै कामणि नउ निधि पाई ॥ आपणे कंत पिआरी सा सोहागणि नानक सा सभराई ॥ ऐसै रंगि राती सहज की माती अहिनिसि भाइ समाणी ॥ सुंदरि साइ सरूप बिचखणि कहीऐ सा सिआणी ॥४॥२॥४॥

सूही महला १

कउण तराजी कवणु तुला तेरा कवणु सराफु बुलावा ॥ कउणु गुरू कै पहि दीखिआ लेवा कै पहि मुलु करावा ॥१॥

मेरे लाल जीउ तेरा अंतु न जाणा ॥ तूं जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा तूं आपे सरब समाणा ॥१॥ रहाउ ॥ मनु ताराजी चितु तुला तेरी सेव सराफु कमावा ॥ घट ही भीतरि सो सहु तोली इन बिधि चितु रहावा ॥२॥ आपे कंडा तोलु तराजी आपे तोलणहारा ॥ आपे देखै आपे बूझै आपे है वणजारा ॥३॥ अंधुला नीच जाति परदेसी खिनु आवै तिलु जावै ॥ ता की संगति नानकु रहदा किउ करि मूड़ा पावै ॥४॥२॥६॥

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

रागु बिलावलु महला १

चउपदे घरु १ ॥

तू सुलतानु कहा हउ मीआ तेरी

कवन वडाई ॥ जो तू देहि सु कहा सुआमी मै मूरख कहणु न जाई ॥१॥ तेरे गुण गावा देहि बुझाई ॥ जैसे सच महि रहउ रजाई ॥१॥ रहाउ ॥ जो किछु होआ सभु किछु तुझ ते तेरी सभ असनाई ॥ तेरा अंतु न जाणा मेरे साहिब मै अंधुले किआ चतुराई ॥२॥ किआ हउ कथी कथे कथि देखा मै अकथु न कथना जाई ॥ जो तुधु भावै सोई आखा तिलु तेरी वडिआई ॥३॥ एते कूकर हउ बेगाना भउका इसु तन ताई ॥ भगति हीणु नानकु जे होइगा ता खसमै नाउ न जाई ॥४॥१॥

बिलावलु महला १

मनु मंदरु तनु वेस कलंदरु घट ही तीरथि नावा ॥ एकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है बाहुड़ि जनमि न आवा ॥१॥

मनु बेधिआ दइआल सेती मेरी माई ॥ कउणु जाणै पीर पराई ॥ हम नाही चिंत पराई ॥१॥ रहाउ ॥ अगम अगोचर अलख अपारा चिंता करहु हमारी ॥ जलि थलि महीअलि भरिपुरि लीणा घटि घटि जोति तुम्हारी ॥२॥ सिख मति सभि बुधि तुम्हारी मंदिर छावा तेरे ॥ तुझ बिनु अवरु न जाणा मेरे साहिबा गुण गावा नित तेरे ॥३॥ जीअ जंत सभि सरणि तुम्हारी सरब चिंत तुधु पासे ॥ जो तुधु भावै सोई चंगा इक नानक की अरदासे ॥४॥२॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

॥ जापु ॥

स्री मुख वाक पातिसाही १० ॥

छपै छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

चक्र चिहन अरु बरन जाति अरु पाति नहिन जिह ॥ रूप रंग अरु रेख भेख कोऊ कहि न सकत किह ॥ अचल मूरति अनभउ प्रकास अमितोज कहिजै ॥ कोटि इंद्र इंद्राणि साह साहाणि गणिजै ॥ त्रिभवण महीप सुर नर असुर नेति नेति बन त्रिण कहत ॥ त्व सरब नाम कथै कवन करम नाम बरनत सुमति ॥१॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमसत्वं अकाले ॥ नमसत्वं क्रिपाले ॥
नमसतं अरूपे ॥ नमसतं अनूपे ॥२॥
नमसतं अभेखे ॥ नमसतं अलेखे ॥
नमसतं अकाए ॥ नमसतं अजाए ॥३॥
नमसतं अगंजे ॥ नमसतं अभंजे ॥
नमसतं अनामे ॥ नमसतं अठामे ॥४॥
नमसतं अकरमं ॥ नमसतं अधरमं ॥
नमसतं अनामं ॥ नमसतं अधामं ॥५॥
नमसतं अजीते ॥ नमसतं अभीते ॥
नमसतं अबाहे ॥ नमसतं अढाहे ॥६॥
नमसतं अनीले ॥ नमसतं अनादे ॥
नमसतं अछेदे ॥ नमसतं अगाधे ॥७॥
नमसतं अगंजे ॥ नमसतं अभंजे ॥
नमसतं उदारे ॥ नमसतं अपारे ॥८॥
नमसतं सु एकै ॥ नमसतं अनेकै ॥
नमसतं अभूते ॥ नमसतं अजूपे ॥९॥

नमसतं त्रिकरमे ॥ नमसतं त्रिभरमे ॥
नमसतं त्रिदेसे ॥ नमसतं त्रिभेसे ॥१०॥
नमसतं त्रिनामे ॥ नमसतं त्रिकामे ॥
नमसतं त्रिधाते ॥ नमसतं त्रिघाते ॥११॥
नमसतं त्रिधूते ॥ नमसतं अभूते ॥
नमसतं अलोके ॥ नमसतं असोके ॥१२॥
नमसतं त्रितापे ॥ नमसतं अथापे ॥
नमसतं त्रिमाने ॥ नमसतं निधाने ॥१३॥
नमसतं अगाहे ॥ नमसतं अबाहे ॥
नमसतं त्रिबरगे ॥ नमसतं असरगे ॥१४॥
नमसतं प्रभोगे ॥ नमसतं सु जोगे ॥
नमसतं अरंगे ॥ नमसतं अभंगे ॥१५॥
नमसतं अगंमे ॥ नमसत्तसतु रंमे ॥
नमसतं जलास्रे ॥ नमसतं निरास्रे ॥१६॥
नमसतं अजाते ॥ नमसतं अपाते ॥
नमसतं अमजबे ॥ नमसत्तासतु
अजबे ॥१७॥ अदेसं अदेसे ॥ नमसतं

अभेसे ॥ नमसतं न्रिधामे ॥ नमसतं न्रिबामे ॥१८॥ नमो सरब काले ॥ नमो सरब दिआले ॥ नमो सरब रूपे ॥ नमो सरब भूपे ॥१९॥ नमो सरब खापे ॥ नमो सरब थापे ॥ नमो सरब काले ॥ नमो सरब पाले ॥२०॥ नमसत्तसतु देवै ॥ नमसतं अभेवै ॥ नमसतं अजनमे ॥ नमसतं सु बन मे ॥२१॥ नमो सरब गउने ॥ नमो सरब भउने ॥ नमो सरब रंगे ॥ नमो सरब भंगे ॥२२॥ नमो काल काले ॥ नमसत्तसतु दिआले ॥ नमसतं अबरने ॥ नमसतं अमरने ॥२३॥ नमसतं जरारं ॥ नमसतं क्रितारं ॥ नमो सरब धंधे ॥ नमोसत अबंधे ॥२४॥ नमसतं न्रिसाके ॥ नमसतं न्रिबाके ॥ नमसतं रहीमे ॥ नमसतं करीमे ॥२५॥ नमसतं अनंते ॥ नमसतं महंते ॥ नमसत्तसतु

रागे ॥ नमसतं सुहागे ॥२६ ॥ नमो सरब सोखं ॥ नमो सरब पोखं ॥ नमो सरब करता ॥ नमो सरब हरता ॥२७॥ नमो जोग जोगे ॥ नमो भोग भोगे ॥ नमो सरब दिआले ॥ नमो सरब पाले ॥२८॥

चाचरी छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

अरूप हैं ॥ अनूप हैं ॥ अजू हैं ॥ अभू हैं ॥२९॥ अलेख हैं॥ अभेख हैं॥ अनाम हैं॥ अकाम हैं॥३०॥ अधे हैं॥ अभे हैं॥ अजीत हैं ॥ अभीत हैं ॥३१॥ त्रिमान हैं॥ निधान हैं॥ त्रिबरग हैं॥ असरग हैं॥३२॥ अनील हैं॥ अनादि हैं॥ अजे हैं॥ अजादि हैं॥३३॥ अजनम हैं॥ अबरन हैं॥ अभूत हैं॥ अभरन हैं॥३४॥ अगंज हैं॥ अभंज हैं॥ अझूझ हैं॥ अझंझ हैं॥३५॥ अमीक हैं॥ रफ़ीक हैं॥ अधंध हैं॥ अबंध हैं॥३६॥

त्रिबूझ हैं॥ असूझ हैं॥ अकाल हैं॥ अजाल हैं॥३७॥ अलाह हैं॥ अजाह हैं॥ अनंत हैं॥ महंत हैं॥३८॥ अलीक हैं॥ त्रिस्रीक हैं॥ त्रिलंभ हैं॥ असंभ हैं॥३९॥ अगंम हैं॥ अजंम हैं॥ अभूत हैं॥ अछूत हैं॥४०॥ अलोक हैं॥ असोक हैं॥ अकरम हैं॥ अभरम हैं॥४१॥ अजीत हैं॥ अभीत हैं॥ अबाह हैं॥ अगाह हैं॥४२॥ अमान हैं॥ निधान हैं॥ अनेक हैं॥ फिर एक हैं॥४३॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमो सरब माने ॥ समसती निधाने ॥ नमो देव देवे ॥ अभेखी अभेवे ॥४४॥ नमो काल काले ॥ नमो सरब पाले ॥ नमो सरब गउणे ॥ नमो सरब भउणे ॥४५॥ अनंगी अनाथे ॥ त्रिसंगी प्रमाथे ॥

नमो भान भाने ॥ नमो मान माने ॥४६॥
नमो चंद्र चंद्रे ॥ नमो भान भाने ॥ नमो
गीत गीते ॥ नमो तान ताने ॥४७॥ नमो
निरत निरते ॥ नमो नाद नादे ॥ नमो
पान पाने ॥ नमो बाद बादे ॥४८॥
अनंगी अनामे ॥ समसती सरूपे ॥
प्रभंगी प्रमाथे ॥ समसती बिभूते ॥४९॥
कलंकं बिना नेकलंकी सरूपे ॥ नमो
राज राजेस्वरं परम रूपे ॥५०॥ नमो जोग
जोगेस्वरं परम सिधे ॥ नमो राज राजेस्वरं
परम ब्रिधे ॥५१॥ नमो ससत्र पाणे ॥
नमो असत्र माणे ॥ नमो परम गिआता ॥
नमो लोक माता ॥५२॥ अभेखी अभरमी
अभोगी अभुगते ॥ नमो जोग जोगेस्वरं
परम जुगते ॥५३॥ नमो नित नाराइणे
क्रूर करमे ॥ नमो प्रेत अप्रेत देवे सु
धरमे ॥५४॥ नमो रोग हरता नमो राग

रूपे ॥ नमो साह साहं नमो भूप भूपे ॥५५॥ नमो दान दाने नमो मान माने ॥ नमो रोग रोगे नमसतं सनाने ॥५६॥ नमो मंत्र मंत्रं ॥ नमो जंत्र जंत्रं ॥ नमो इसट इसटे ॥ नमो तंत्र तंत्रं ॥५७॥ सदा सच्चिदानंद सरबं प्रणासी ॥ अनूपे अरूपे समसतुल निवासी ॥५८॥ सदा सिद्धि दा बुद्धि दा ब्रिध करता ॥ अधो उरध अरधं अघं ओघ हरता ॥५९॥ परं परम परमेस्वरं प्रोछपालं ॥ सदा सरबदा सिद्धि दाता दिआलं ॥६०॥ अछेदी अभेदी अनामं अकामं ॥ समसतोपराजी समसतसतु धामं ॥६१॥

तेरा जोरु ॥ चाचरी छंद ॥

जले हैं ॥ थले हैं ॥ अभीत हैं ॥ अभे हैं ॥६२॥ प्रभू हैं ॥ अजू हैं ॥ अदेस हैं ॥ अभेस हैं ॥६३॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

अगाधे अबाधे ॥ अनंदी सरूपे ॥
नमो सरब माने ॥ समसती निधाने ॥६४॥
नमसत्वं त्रिनाथे ॥ नमसत्वं प्रमाथे ॥
नमसत्वं अगंजे ॥ नमसत्वं अभंजे ॥६५॥
नमसत्वं अकाले ॥ नमसत्वं अपाले ॥ नमो
सरब देसे ॥ नमो सरब भेसे ॥६६॥
नमो राज राजे ॥ नमो साज साजे ॥ नमो
साह साहे ॥ नमो माह माहे ॥६७॥
नमो गीत गीते ॥ नमो प्रीत प्रीते ॥ नमो
रोख रोखे ॥ नमो सोख सोखे ॥६८॥
नमो सरब रोगे ॥ नमो सरब भोगे ॥
नमो सरब जीतं ॥ नमो सरब भीतं ॥६९॥
नमो सरब गिआनं ॥ नमो परम तानं ॥
नमो सरब मंत्रं ॥ नमो सरब जंत्रं ॥७०॥
नमो सरब द्रिसं ॥ नमो सरब क्रिसं ॥
नमो सरब रंगे ॥ त्रिभंगी अनंगे ॥७१॥

नमो जीव जीवं ॥ नमो बीज बीजे ॥
अखिज्जे अभिज्जे ॥ समसतं
प्रसिज्जे ॥७२॥ क्रिपालं सरूपे ॥ कुकरमं
प्रणासी ॥ सदा सरबदा रिधि सिधं
निवासी ॥७३॥

चरपट छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

अंम्रित करमे ॥ अंब्रित धरमे ॥
अखल जोगे ॥ अचल भोगे ॥७४॥
अचल राजे ॥ अटल साजे ॥ अखल
धरमं ॥ अलख करमं ॥७५॥ सरबं
दाता ॥ सरबं गिआता ॥ सरबं भाने ॥
सरबं माने ॥७६॥ सरबं प्राणं ॥ सरबं
त्राणं ॥ सरबं भुगता ॥ सरबं
जुगता ॥७७॥ सरबं देवं ॥ सरबं भेवं ॥
सरबं काले ॥ सरबं पाले ॥७८॥

रूआल छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

आदि रूप अनादि मूरति अजोनि

पुरख अपार ॥ सरब मान त्रिमान देव अभेव आदि उदार ॥ सरब पालक सरब घालक सरब को पुनि काल ॥ जत्र तत्र बिराजही अवधूत रूप रसाल ॥७६॥ नाम ठाम न जात जा कर रूप रंग न रेख ॥ आदि पुरख उदार मूरति अजोनि आदि असेख ॥ देस और न भेस जा कर रूप रेख न राग ॥ जत्र तत्र दिसा विसा हुइ फैलिओ अनुराग ॥८०॥ नाम काम बिहीन पेखत धाम हूं नहि जाहि ॥ सरब मान सरबत्र मान सदैव मानत ताहि ॥ एक मूरति अनेक दरसन कीन रूप अनेक ॥ खेल खेल अखेल खेलन अंत को फिर एक ॥८१॥ देव भेव न जानही जिह बेद अउर कतेब ॥ रूप रंग न जाति पाति सु जानई किह जेब ॥ तात मात न जात जा कर जनम मरन

बिहीन ॥ चक्र बक्र फिरै चतुर चक मानही पुर तीन ॥८२॥ लोक चउदह के बिखै जग जापही जिह जाप ॥ आदि देव अनादि मूरति थापिओ जिह थापि ॥ परम रूप पुनीत मूरति पूरन पुरख अपार ॥ सरब बिस्व रचयो सुयंभव गड़न भंजनहार ॥८३॥ काल हीन कला संजुगति अकाल पुरख अदेस ॥ धरम धाम सु भरम रहत अभूत अलख अभेस ॥ अंग राग न रंग जा कह जाति पाति न नाम ॥ गरब गंजन दुसट भंजन मुकति दाइक काम ॥८४॥ आप रूप अमीक अन उसतति एक पुरख अवधूत ॥ गरब गंजन सरब भंजन आदि रूप असूत ॥ अंग हीन अभंग अनातम एक पुरख अपार ॥ सरब लाइक सरब घाइक सरब को प्रतिपार ॥८५॥ सरब

गंता सरब हंता सरब ते अनभेख ॥ सरब सासत्र न जानही जिह रूप रंग अरू रेख ॥ परम बेद पुराण जा कहि नेति भाखत नित्त ॥ कोटि सिंम्रिति पुरान सासत्र न आवही वहु चित्त॥८६॥

मधुभार छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

गुन गन उदार ॥ महिमा अपार॥ आसन अभंग ॥ उपमा अनंग ॥८७॥ अनभउ प्रकास ॥ निसि दिन अनास ॥ आजानु बाहु ॥ साहान साहु ॥८८॥ राजान राज ॥ भानान भान ॥ देवान देव ॥ उपमा महान ॥८९॥ इंद्रान इंद्र ॥ बालान बाल ॥ रंकान रंक ॥ कालान काल ॥९०॥ अनभूत अंग ॥ आभा अभंग ॥ गति मिति अपार ॥ गुन गन उदार ॥९१॥ मुनि गन प्रनाम ॥ निरभै न्रिकाम ॥ अति दुति प्रचंड ॥

मिति गति अखंड ॥६२॥ आलिसय करम ॥ आद्रिसय धरम ॥ सरबा भरणाढय ॥ अनडंड बाढय ॥६३॥

चाचरी छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

गुबिंदे ॥ मुकंदे ॥ उदारे ॥ अपारे ॥६४॥ हरीअं ॥ करीअं ॥ न्रिनामे ॥ अकामे ॥६५॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

चत्त्रु चक्क्र करता ॥ चत्त्रु चक्क्र हरता ॥ चत्त्रु चक्क्र दाने ॥ चत्त्रु चक्क्र जाने ॥६६॥ चत्त्रु चक्क्र वरती ॥ चत्त्रु चक्क्र भरती ॥ चत्त्रु चक्क्र पालै ॥ चत्त्रु चक्क्र कालै ॥६७॥ चत्त्रु चक्क्र पासे ॥ चत्त्रु चक्क्र वासे ॥ चत्त्रु चक्क्र मानयै ॥ चत्त्रु चक्क्र दानयै ॥६८॥

चाचरी छंद ॥

न सत्रै ॥ न मित्रै ॥ न भरमं ॥ न

भित्रै ॥९९॥ न करमं ॥ न काए ॥ अजनमं ॥ अजाए ॥१००॥ न चित्रै ॥ न मित्रै ॥ परे हैं ॥ पवित्रै ॥१०१॥ प्रिथीसै ॥ अदीसै ॥ अद्रिसै ॥ अक्रिसै ॥१०२॥

भगवती छंद ॥ त्व प्रसादि कथते ॥

कि आछिज देसै ॥ कि आभिज भेसै ॥ कि आगंज करमै ॥ कि आभंज भरमै ॥१०३॥ कि आभिज लोकै ॥ कि आदित सोकै ॥ कि अवधूत बरनै ॥ कि बिभूति करनै ॥१०४॥ कि राजं प्रभा हैं ॥ कि धरमं धुजा हैं ॥ कि आसोक बरनै ॥ कि सरबा अभरनै ॥१०५॥ कि जगतं क्रिती हैं ॥ कि छत्रं छत्री हैं ॥ कि ब्रहमं सरूपै ॥ कि अनभउ अनूपै ॥१०६॥ कि आदि अदेव हैं ॥ कि आप अभेव हैं ॥ कि चित्रं बिहीनै ॥ कि एकै अधीनै ॥१०७॥ कि रोज़ी रज़ाकै ॥ रहीमै

रिहाकै ॥ कि पाक बिऔब हैं ॥ कि ग़ैबुल ग़ैब हैं ॥१०८॥ कि अफ़वुल गुनाह हैं ॥ कि साहान साह हैं ॥ कि कारन कुनिंद हैं ॥ कि रोज़ी दिहिंद हैं ॥१०९॥ कि राजक रहीम हैं ॥ कि करमं करीम हैं ॥ कि सरबं कली हैं ॥ कि सरबं दली हैं ॥११०॥ कि सरबत्र मानयै ॥ कि सरबत्र दानयै ॥ कि सरबत्र गउनै ॥ कि सरबत्र भउनै ॥१११॥ कि सरबत्र देसै ॥ कि सरबत्र भेसै ॥ कि सरबत्र राजै ॥ कि सरबत्र साजै ॥११२॥ कि सरबत्र दीनै ॥ कि सरबत्र लीनै ॥ कि सरबत्र जा हो ॥ कि सरबत्र भा हो ॥११३॥ कि सरबत्र देसै ॥ कि सरबत्र भेसै ॥ कि सरबत्र कालै ॥ कि सरबत्र पालै ॥११४॥ कि सरबत्र हंता ॥ कि सरबत्र गंता ॥ कि सरबत्र भेखी ॥ कि

सरबत्त्र पेखी ॥११५॥ कि सरबत्त्र काजै ॥ कि सरबत्त्र राजै ॥ कि सरबत्त्र सोखै ॥ कि सरबत्त्र पोखै ॥११६॥ कि सरबत्त्र त्राणै ॥ कि सरबत्त्र प्राणै ॥ कि सरबत्त्र देसै ॥ कि सरबत्त्र भेसै ॥११७॥ कि सरबत्त्र मानयै ॥ सदैवं प्रधानयै ॥ कि सरबत्त्र जापयै ॥ कि सरबत्त्र थापयै ॥११८॥ कि सरबत्त्र भानै ॥ कि सरबत्त्र मानै ॥ कि सरबत्त्र इंद्रै ॥ कि सरबत्त्र चंद्रै ॥११९॥ कि सरबं कलीमै ॥ कि परमं फहीमै ॥ कि आकल अलामै ॥ कि साहिब कलामै ॥१२०॥ कि हुसनुल वज़ू हैं ॥ तमामुल रुज़ू हैं ॥ हमेसुल सलामै ॥ सलीखत मुदामै ॥१२१॥ गनीमुल सिकसतै ॥ ग़रीबुल परसतै ॥ बलंदुल मकानै ॥ जमीनुल जमानै ॥१२२॥ तमीज़ुल तमामै ॥ रुज़ूअल निधानै ॥

हरीफुल अज़ीमै ॥ रज़ाइक यकीनै ॥१२३॥ अनेकुल तरंग हैं॥ अभेद हैं अभंग हैं॥ अज़ीजुल निवाज हैं॥ गनीमुल खिराज हैं॥१२४॥ निरुकत सरूप हैं॥ त्रि मुकति बिभूति हैं॥ प्रभुगति प्रभा हैं॥ सु जुगति सुधा हैं॥१२५॥ सदैवं सरूप हैं॥ अभेदी अनूप हैं॥ समसतोपराज हैं॥ सदा सरब साज हैं॥१२६॥ समसतुल सलाम हैं॥ सदैवल अकाम हैं॥ न्रिबाध सरूप हैं॥ अगाधि अनूप हैं॥१२७॥ ओअं आदि रूपै॥ अनादि सरूपै॥ अनंगी अनामे॥ त्रिभंगी त्रिकामे॥१२८॥ त्रिबरगं त्रिबाधे॥ अगंजे अगाधे॥ सुभं सरब भागे॥ सु सरबानुरागे॥१२९॥ त्रिभुगत सरूप हैं॥ अछिज हैं अछूत हैं॥ कि नरकं प्रणास हैं॥ प्रिथीउल प्रवास

हैं ॥१३०॥ निरुकति प्रभा हैं॥ सदैवं सदा हैं॥ बिभुगति सरूप हैं॥ प्रजुगति अनूप हैं॥१३१॥ निरुकति सदा हैं॥ बिभुगति प्रभा हैं॥ अनुकति सरूप हैं॥ प्रजुगति अनूप हैं॥१३२॥

चाचरी छंद॥

अभंग हैं॥ अनंग हैं॥ अभेख हैं॥ अलेख हैं॥१३३॥ अभरम हैं॥ अकरम हैं॥ अनादि हैं॥ जुगादि हैं॥१३४॥ अजै हैं॥ अभै हैं॥ अभूत हैं॥ अधूत हैं ॥१३५॥ अनास हैं॥ उदास हैं ॥ अधंध हैं॥ अबंध हैं॥१३६॥ अभगत हैं॥ बिरकत हैं॥ अनास हैं॥ प्रकास हैं॥१३७॥ निचिंत हैं॥ सुनिंत हैं॥ अलिक्ख हैं॥ अदिक्ख हैं॥१३८॥ अलेख हैं॥ अभेख हैं॥ अढाह हैं॥ अगाह हैं॥१३९॥ असंभ हैं॥ अगंभ हैं॥

अनील हैं ॥ अनादि हैं ॥१४०॥ अनित्त हैं ॥ सु नित्त हैं ॥ अजात हैं ॥ अजादि हैं ॥१४१॥

चरपट छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

सरबं हंता ॥ सरबं गंता ॥ सरबं खिआता ॥ सरबं गिआता ॥१४२॥ सरबं हरता ॥ सरबं करता ॥ सरबं प्राणं ॥ सरबं त्राणं ॥१४३॥ सरबं करमं ॥ सरबं धरमं ॥ सरबं जुगता ॥ सरबा मुकता ॥१४४॥

रसावल छंद ॥ त्व प्रसादि ॥

नमो नरक नासे ॥ सदैवं प्रकासे ॥ अनंगं सरूपे ॥ अभंगं बिभूते ॥१४५॥ प्रमाथं प्रमाथे ॥ सदा सरब साथे ॥ अगाध सरूपे ॥ न्रिबाध बिभूते ॥१४६॥ अनंगी अनामे ॥ त्रिभंगी त्रिकामे ॥ न्रिभंगी सरूपे ॥ सरबंगी अनूपे ॥१४७॥

न पोत्रै न पुत्रै ॥ न सत्रै न मित्रै ॥ न तातै न मातै ॥ न जातै न पातै ॥१४८॥
न्रिसाकं सरीक हैं ॥ अमितो अमीक हैं ॥ सदैवं प्रभा हैं ॥ अजै हैं अजा हैं ॥१४९॥

भगवती छंद ॥ त्वप्रसादि ॥

कि ज़ाहर ज़हूर हैं ॥ कि हाज़र हज़ूर हैं ॥ हमेसुल सलाम हैं ॥ समसतुल कलाम हैं ॥१५०॥ कि साहिब दिमाग़ हैं ॥ कि हुसनुल चराग़ हैं ॥ कि कामल करीम हैं ॥ कि राज़क रहीम हैं ॥१५१॥ कि रोज़ी दिहिंद हैं ॥ कि राज़क रहिंद हैं ॥ करीमुल कमाल हैं ॥ कि हुसनुल जमाल हैं ॥१५२॥ गनीमुल खिराज हैं ॥ गरीबुल निवाज़ हैं ॥ हरीफुल सिकंन हैं ॥ हिरासुल फिकंन हैं ॥१५३॥ कलंकं प्रणास हैं ॥ समसतुल निवास हैं ॥ अगंजुल गनीम हैं ॥ रज़ाइक रहीम

हैं ॥१५४॥ समसतुल जुबाँ हैं॥ कि साहिब किराँ हैं ॥ कि नरकं प्रणास हैं ॥ बहिशतुल निवास हैं ॥१५५॥ कि सरबुल गवंन हैं ॥ हमेसुल रवंन हैं ॥ तमामुल तमीज़ हैं ॥ समसतुल अज़ीज़ हैं ॥१५६॥ परं परमईस हैं ॥ समसतुल अदीस हैं ॥ अदेसुल अलेख हैं॥ हमेसुल अभेख हैं ॥१५७॥ ज़मीनुल ज़माँ हैं ॥ अमीकुल इमाँ हैं॥ करीमुल कमाल हैं॥ कि जुरअत जमाल हैं ॥१५८॥ कि अचलं प्रकास हैं ॥ कि अमितो सुबास हैं ॥ कि अजब सरूप हैं॥ कि अमितो बिभूति हैं ॥१५९॥ कि अमितो पसा हैं॥ कि आतम प्रभा हैं॥ कि अचलं अनंग हैं ॥ कि अमितो अभंग हैं ॥१६०॥

मधुभार छंद ॥ त्वप्रसादि ॥

मुनि मनि प्रनाम ॥ गुन गन मुदाम ॥

अरि बर अगंज ॥ हरि नर प्रभंज ॥१६१॥
अन गन प्रनाम ॥ मुनि मनि सलाम ॥
हरि नर अखंड ॥ बर नर अमंड ॥१६२॥
अनुभव अनास ॥ मुनि मनि प्रकास ॥
गुन गन प्रनाम ॥ जल थल मुदाम
॥१६३॥ अनछिज अंग ॥ आसन अभंग ॥
उपमा अपार ॥ गति मिति उदार ॥१६४॥
जल थल अमंड ॥ दिस विस अभंड ॥
जल थल महंत ॥ दिस विस बिअंत
॥१६५॥ अनुभव अनास ॥ ध्रित धर
धुरास ॥ आजानु बाहु ॥ एकै सदाहु
॥१६६॥ ओअंकार आदि ॥ कथनी
अनादि ॥ खल खंड खिआल ॥ गुर बर
अकाल ॥१६७॥ घर घर प्रनाम ॥ चित
चरन नाम ॥ अनछिज्ज गात ॥ आजिज
न बात ॥१६८॥ अनझंझ गात ॥ अनरंज
बात ॥ अनटुट भंडार ॥ अनठट अपार

॥१६९॥ आडीठ धरम ॥ अति ढीठ करम ॥ अनब्रण अनंत ॥ दाता महंत ॥१७०॥

हरि बोलमना छंद ॥ त्वप्रसादि ॥

करुणालय हैं॥ अरि घालय हैं॥ खल खंडन हैं॥ महि मंडन हैं॥१७१॥ जगतेस्वर हैं॥ परमेस्वर हैं॥ कलि कारण हैं॥ सरबुबारण हैं॥१७२॥ ध्रित धारन हैं॥ जग कारन हैं॥ मन मानय हैं॥ जग जानय हैं॥१७३॥ सरबं भर हैं॥ सरबं कर हैं॥ सरबुपासय हैं॥ सरब नासय हैं॥१७४॥ करुणाकर हैं॥ बिस्वंभर हैं॥ सरबेस्वर हैं॥ जगतेस्वर हैं ॥१७५॥ ब्रहमंडस हैं॥ खल खंडस हैं॥ पर ते पर हैं॥ करुणाकर हैं॥१७६॥ अजपा जप हैं॥ अथपा थप हैं॥ अक्रिताक्रित हैं॥ अंम्रितांम्रित हैं

॥१७७॥ अम्रितांम्रित हैं॥ करुणाक्रित हैं॥ अक्रिताक्रित हैं॥ धरणी ध्रित हैं ॥१७८॥ अमितेस्वर हैं॥ परमेस्वर हैं॥ अक्रिताक्रित हैं॥ अम्रितांम्रित हैं॥१७९॥ अजबाक्रित हैं॥ अम्रितांम्रित हैं॥ नर नाइक हैं॥ खल घाइक हैं॥१८०॥ बिस्वंभर हैं॥ करुणालय हैं॥ न्रिप नाइक हैं॥ सरब पाइक हैं॥१८१॥ भव भंजन हैं॥ अरि गंजन हैं॥ रिपु तापन हैं॥ जप जापन हैं॥१८२॥ अकलं क्रित हैं॥ सरबा क्रित हैं॥ करता कर हैं॥ हरता हरि हैं॥१८३॥ परमातम हैं॥ सरबातम हैं॥ आतम बस हैं॥ जस के जस हैं॥१८४॥

भुजंग प्रयात छंद॥

नमो सूरज सूरजे नमो चंद्र चंद्रे॥ नमो राज राजे नमो इंद्र इंद्रे॥ नमो

अंधकारे नमो तेज तेजे ॥ नमो ब्रिंद ब्रिंदे नमो बीज बीजे ॥१८५॥ नमो राजसं तामसं साँत रूपे ॥ नमो परम तत्तं अतत्तं सरूपे ॥ नमो जोग जोगे नमो गिआन गिआने ॥ नमो मंत्र मंत्रे नमो धिआन धिआने ॥१८६॥ नमो जुद्ध जुद्धे नमो गिआन गिआने ॥ नमो भोज भोजे नमो पान पाने ॥ नमो कलह करता नमो साँति रूपे ॥ नमो इंद्र इंद्रे अनादं बिभूते ॥१८७॥ कलंकार रूपे अलंकार अलंके ॥ नमो आस आसे नमो बाँक बंके ॥ अभंगी सरूपे अनंगी अनामे ॥ त्रिभंगी त्रिकाले अनंगी अकामे ॥१८८॥

एक अछरी छंद ॥

अजै ॥ अलै ॥ अभै ॥ अबै ॥१८९॥ अभू ॥ अजू ॥ अनास ॥ अकास ॥१९०॥

अगंज ॥ अभंज ॥ अलख ॥ अभख ॥१६१॥ अकाल ॥ दिआल ॥ अलेख ॥ अभेख ॥१६२॥ अनाम ॥ अकाम ॥ अगाह ॥ अढाह ॥१६३॥ अनाथे ॥ प्रमाथे ॥ अजोनी ॥ अमोनी ॥१६४॥ न रागे ॥ न रंगे ॥ न रूपे ॥ न रेखे ॥१६५॥ अकरमं ॥ अभरमं ॥ अगंजे ॥ अलेखे ॥१६६॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमसतुल प्रणामे समसतुल प्रणासे ॥ अगंजुल अनामे समसतुल निवासे ॥ न्रिकामं बिभूते समसतुल सरूपे ॥ कुकरमं प्रणासी सुधरमं बिभूते ॥१६७॥ सदा सच्चिदानंद सत्रं प्रणासी ॥ करीमुल कुनिंदा समसतुल निवासी ॥ अजाइब बिभूते गजाइब गनीमे ॥ हरीअं करीअं करीमुल रहीमे ॥१६८॥ चत्र

चक्क्र वरती चत्त्र चक्क्र भुगते ॥
सुयंभव सुभं सरबदा सरब जुगते ॥
दुकालं प्रणासी दिआलं सरूपे ॥ सदा
अंग संगे अभंगं बिभूते ॥१९९॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

रामकली पातसाही १०

रे मन ऐसो करि संनिआसा ॥ बन से सदन सबै करि समझहु मनही माहि उदासा ॥१॥ रहाउ ॥ जत की जटा जोग को मजनु नेम के नखन बढाओ ॥ गयान गुरू आतम उपदेसहु नाम बिभूति लगाओ ॥१॥ अलप अहार सुलप सी निंद्रा दया छिमा तन प्रीति ॥ सील संतोख सदा निरबाहिबो ह्वैबो त्रिगुण अतीत ॥२॥ काम क्रोध हंकार लोभ हठ मोह न मन मो लयावै ॥ तब ही आतम तत को दरसै परम पुरख कह पावै ॥३॥१॥

रामकली पातसाही १०

रे मन इह बिधि जोगु कमाओ ॥ सिङी साच अकपट कंठला धिआन बिभूति चड़ाओ ॥१॥ रहाउ ॥ ताती गहु आतम बसि कर की भिच्छा नाम अधारं ॥ बाजै परम तार ततु हरि को उपजै राग रसारं ॥ उघटै तान तरंग रंगि अति गयान गीत बंधानं ॥ चकि चकि रहै देव दानव मुनि छकि छकि बयोम बिवानं ॥२॥ आतम उपदेस भेसु संजम को जापु सु अजपा जापे ॥ सदा रहै कंचन सी काया काल न कबहूं बिआपे ॥३॥२॥

रामकली पातसाही १०

प्रानी परम पुरख पग लागो ॥ सोवत कहा मोह निंद्रा मै कबहूं सुचित ह्वै जागो ॥१॥ रहाउ ॥ औरन कहा उपदेसत

है पसु तोहि प्रबोध न लागो ॥ सिंचत कहा परे बिखयन कह कबहू बिखै रस तिआगो ॥१॥ केवल करम भरम से चीनहु धरम करम अनुरागो ॥ संग्रहु करो सदा सिमरन को परम पाप तजि भागो ॥२॥ जा ते दूख पाप नहि भेटै काल जाल ते तागो ॥ जौ सुख चाहो सदा सभन को तौ हरि के रस पागौ ॥३॥

सोरठि पातसाही १०

प्रभ जू तो कह लाज हमारी ॥ नील कंठ नरहरि नाराइण नील बसन बनवारी ॥१॥ रहाउ ॥ परम पुरख परमेसुर सुआमी पावन पउन अहारी ॥ माधव महाजोति मधु मरदन मान मुकंद मुरारी ॥१॥ न्रिबिकार निरजुर निंद्रा बिनु निरबिख नरक निवारी ॥ क्रिपा सिंधु

काल त्रिदरसी कुक्रित प्रनासन कारी ॥२॥ धनुरपान ध्रितमान धराधर अन बिकार असिधारी ॥ हौ मति मंद चरन सरनागति कर गहि लेहु उबारी ॥३॥४॥

राग़ु कलिआण पातसाही १०

बिन करतार न किरतम मानो ॥ आदि अजोनि अजै अबिनासी तिह परमेसुर जानो ॥१॥ रहाउ ॥ कहा भयो जो आनि जगत मै दसक असुर हरि घाए ॥ अधिक परपंच दिखाइ सभन कह आपहि ब्रहमु कहाए ॥१॥ भंजन गड़न समरथ सदा प्रभु सो किम जाति गिनायो ॥ ता ते सरब काल के असि को घाइ बचाइ न आयो ॥२॥ कैसे तोहि तारि है सुनि जड़ आप डुबिओ भव सागर ॥ छुटिहो काल फास ते तबही गहो सरनि जगतागर ॥३॥५॥

खिआल पातसाही १०

मित्र पिआरे नू हाल फकीराँ दा कहिणा ॥ तुधु बिनु रोग रजाईआँ दा ओढण नाग निवासाँ दे रहिणा ॥ सूल सुराही खंजरु पिआला बिंगु कसाईआँ दा सहिणा ॥ यारड़े दा सानू सत्थरु चंगा भठ खेड़िआँ दा रहिणा ॥१॥६॥

तिलंग काफी पातसाही १०

केवल कालई करतार ॥ आदि अंति अनंति मूरति गड़न भंजन हार ॥१॥ रहाउ ॥ निंद उसतति जउन के सम सत्रु मित्र न कोइ ॥ कउन बाट परी तिसै पथ सारथी रथ होइ ॥१॥ तात मात न जात जा कर पुत्र पौत्र मुकंद ॥ कउन काजि कहाहिंगे जग आनि देवकि नंद ॥२॥ देव दैत दिसा विसा जिह कीन सरब पसारि ॥ कउन उपमा तउन

को मुख लेत नामु मुरारि ॥३॥७॥

रागु बिलावलु पातसाही १०

सो किम मानस रूप कहाए॥ सिधय समाधि साध करि हारे किउ हू न देखन पाए ॥१॥ रहाउ ॥ नारद बिआस परासर ध्रूअ से धिआवत धिआन लगाए ॥ बेद पुरान हारि हठ छाडिओ तदपि धयान न आए ॥२॥ दानव देव पिसाच प्रेत ते नेतहि नेति कहाए ॥ सूछम ते सूछम करि चीने ब्रिधन ब्रिध बताए ॥३॥ भूमि अकास पताल सबै सजि एक अनेक सदाए ॥ सो नर काल फाँस ते बाचे जो हरि सरण सिधाए ॥४॥८॥

देवगंधारी पातसाही १०

इक बिन दूसर सो न चिनार ॥ भंजन गड़न समरत्थ सदा प्रभु जानत है करतार ॥१॥ रहाउ ॥ कहा भयो जो

अति हित चित करि बहु बिधि सिला पुजाई ॥ पान थके पाहन कह परसत कछु करि सिद्धि न आई ॥१॥ अछत धूप दीप अरपत है पाहन कछू न खै है ॥ ता मै कहा सिधय है रे जड़ तोहि कछू बर दैहै ॥२॥ जौ जीअ होत तौ देत कछु तुहि मन बच करम बिचार ॥ केवल एक सरणि सुआमी बिन यौ न कतहि उधार ॥३॥६॥

देवगंधारी पातसाही १०

बिन हरि नाम न बाचन पैहै ॥ चौदह लोक जाहि बसि कीने ता ते कहा पलै है ॥१॥ रहाउ ॥ राम रहीम उबार न साकि है जा करि नामु रटै है ॥ ब्रहमा बिसनु रुद्र सूरज ससि ते बसि काल सबै है ॥१॥ बेद पुरान कुरान सबै मत जा कर नेति कहै है ॥ इंदर फनिंदर

मुनिंद्र कलप बहु धयावत धिआन न ऐहै ॥२॥ जा कह रूप रंग नहि जनियत सो किम सयाम कहै है ॥ छुटि हो काल जाल ते तब ही ताहि चरन लपटै है ॥३॥१०॥

सलोकु मः १

दुखु दारू सुखु रोगु भइआ जा सुखु तामि न होई ॥ तूं करता करणा मै नाही जा हउ करी न होई ॥१॥
बलिहारी कुदरति वसिआ ॥ तेरा अंतु न जाई लखिआ ॥१॥ रहाउ ॥ जाति महि जोति जोति महि जाता अकल कला भरपूरि रहिआ ॥ तूं सचा साहिबु सिफति सुआल्हिउ जिनि कीती सो पारि पइआ ॥ कहु नानक करते कीआ बाता जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥२॥

सो दरु रागु आसा महला १

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सो दरु तेरा केहा सो घरु केहा जितु बहि सरब समाले ॥ वाजे तेरे नाद अनेक असंखा केते तेरे वावणहारे ॥ केते तेरे राग परी सिउ कहीअहि केते तेरे गावणहारे ॥ गावनि तुधनो पवणु पाणी बैसंतरु गावै राजा धरमु दुआरे ॥ गावनि तुधनो चितु गुपतु लिखि जाणनि लिखि लिखि धरमु बीचारे ॥ गावनि तुधनो ईसरु ब्रहमा देवी सोहनि तेरे सदा सवारे ॥ गावनि तुधनो इंद्र इंद्रासणि बैठे देवतिआ दरि नाले ॥ गावनि तुधनो सिध समाधी अंदरि गावनि तुधनो साध बीचारे ॥ गावनि तुधनो जती सती संतोखी गावनि तुधनो वीर करारे ॥ गावनि तुधनो पंडित पड़नि रखीसुर जुगु

जुगु वेदा नाले ॥ गावनि तुधनो मोहणीआ मनु मोहनि सुरगु मछु पइआले ॥ गावनि तुधनो रतन उपाए तेरे अठसठि तीरथ नाले ॥ गावनि तुधनो जोध महाबल सूरा गावनि तुधनो खाणी चारे ॥ गावनि तुधनो खंड मंडल ब्रहमंडा करि करि रखे तेरे धारे ॥ सेई तुधनो गावनि जो तुधु भावनि रते तेरे भगत रसाले ॥ होरि केते तुधनो गावनि से मै चिति न आवनि नानकु किआ बीचारे ॥ सोई सोई सदा सचु साहिबु साचा साची नाई ॥ है भी होसी जाइ न जासी रचना जिनि रचाई ॥ रंगी रंगी भाती करि करि जिनसी माइआ जिनि उपाई ॥ करि करि देखै कीता आपणा जिउ तिस दी वडिआई ॥ जो तिसु भावै सोई करसी फिरि हुकमु न करणा

जाई ॥ सो पातिसाहु साहा पतिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥१॥

आसा महला १ ॥

सुणि वडा आखै सभु कोइ ॥ केवडु वडा डीठा होइ ॥ कीमति पाइ न कहिआ जाइ ॥ कहणै वाले तेरे रहे समाइ ॥१॥ वडे मेरे साहिबा गहिर गंभीरा गुणी गहीरा ॥ कोइ न जाणै तेरा केता केवडु चीरा ॥१॥ रहाउ ॥ सभि सुरती मिलि सुरति कमाई ॥ सभ कीमति मिलि कीमति पाई ॥ गिआनी धिआनी गुर गुरहाई ॥ कहणु न जाई तेरी तिलु वडिआई ॥२॥ सभि सत सभि तप सभि चंगिआईआ ॥ सिधा पुरखा कीआ वडिआईआ ॥ तुधु विणु सिधी किनै न पाईआ ॥ करमि मिलै नाही ठाकि रहाईआ ॥३॥ आखण वाला किआ

वेचारा ॥ सिफती भरे तेरे भंडारा ॥ जिसु तू देहि तिसै किआ चारा ॥ नानक सचु सवारणहारा ॥४॥२॥

आसा महला १ ॥

आखा जीवा विसरै मरि जाउ ॥ आखणि अउखा साचा नाउ ॥ साचे नाम की लागै भूख ॥ उतु भूखै खाइ चलीअहि दूख ॥१॥ सो किउ विसरै मेरी माइ ॥ साचा साहिबु साचै नाइ ॥१॥ रहाउ ॥ साचे नाम की तिलु वडिआई ॥ आखि थके कीमति नही पाई ॥ जे सभि मिलि कै आखण पाहि ॥ वडा न होवै घाटि न जाइ ॥२॥ ना ओहु मरै न होवै सोगु ॥ देदा रहै न चूकै भोगु ॥ गुणु एहो होरु नाही कोइ ॥ ना को होआ ना को होइ ॥३॥ जेवडु आपि तेवड तेरी दाति ॥ जिनि

दिनु करि कै कीती राति ॥ खसमु विसारहि ते कमजाति ॥ नानक नावै बाझु सनाति ॥४॥३॥

रागु गूजरी महला ४ ॥

हरि के जन सतिगुर सतपुरखा बिनउ करउ गुर पासि ॥ हम कीरे किरम सतिगुर सरणाई करि दइआ नामु परगासि ॥१॥ मेरे मीत गुरदेव मो कउ राम नामु परगासि ॥ गुरमति नामु मेरा प्रान सखाई हरि कीरति हमरी रहरासि ॥१॥ रहाउ ॥ हरि जन के वड भाग वडेरे जिन हरि हरि सरधा हरि पिआस ॥ हरि हरि नामु मिलै त्रिपतासहि मिलि संगति गुण परगासि ॥२॥ जिन हरि हरि हरि रसु नामु न पाइआ ते भागहीण जम पासि ॥ जो सतिगुर सरणि संगति नही आए ध्रिगु

जीवे ध्रिगु जीवासि ॥३॥ जिन हरि जन सतिगुर संगति पाई तिन धुरि मसतकि लिखिआ लिखासि ॥ धनु धंनु सतसंगति जितु हरि रसु पाइआ मिलि जन नानक नामु परगासि ॥४॥४॥

रागु गूजरी महला ५ ॥

काहे रे मन चितवहि उदमु जा आहरि हरि जीउ परिआ ॥ सैल पथर महि जंत उपाए ता का रिजकु आगै करि धरिआ ॥१॥ मेरे माधउ जी सतसंगति मिले सु तरिआ ॥ गुर परसादि परमपदु पाइआ सूके कासट हरिआ ॥१॥ रहाउ ॥ जननि पिता लोक सुत बनिता कोइ न किस की धरिआ ॥ सिरि सिरि रिजकु संबाहे ठाकुरु काहे मन भउ करिआ ॥२॥ ऊडे ऊडि आवै सै कोसा तिसु पाछै बचरे छरिआ ॥ तिन

कवणु खलावै कवणु चुगावै मन महि सिमरनु करिआ ॥३ ॥ सभि निधान दस असट सिधान ठाकुर कर तल धरिआ ॥ जन नानक बलि बलि सद बलि जाईऐ तेरा अंतु न पारावरिआ ॥४॥५॥

राग़ु आसा महला ४ सो पुरखु ॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सो पुरखु निरंजनु हरि पुरखु निरंजनु हरि अगमा अगम अपारा ॥ सभि धिआवहि सभि धिआवहि तुधु जी हरि सचे सिरजणहारा ॥ सभि जीअ तुमारे जी तूं जीआ का दातारा ॥ हरि धिआवहु संतहु जी सभि दूख विसारणहारा ॥ हरि आपे ठाकुरु हरि आपे सेवकु जी किआ नानक जंत विचारा ॥१॥ तूं घट घट अंतरि सरब निरंतरि जी हरि एको पुरखु समाणा ॥ इकि दाते इकि भेखारी जी

सभि तेरे चोज विडाणा ॥ तूं आपे दाता आपे भुगता जी हउ तुधु बिनु अवरु न जाणा ॥ तूं पारब्रहमु बेअंतु बेअंतु जी तेरे किआ गुण आखि वखाणा ॥ जो सेवहि जो सेवहि तुधु जी जनु नानकु तिन कुरबाणा ॥२॥ हरि धिआवहि हरि धिआवहि तुधु जी से जन जुग महि सुखवासी ॥ से मुकतु से मुकतु भए जिन हरि धिआइआ जी तिन तूटी जम की फासी ॥ जिन निरभउ जिन हरि निरभउ धिआइआ जी तिन का भउ सभु गवासी ॥ जिन सेविआ जिन सेविआ मेरा हरि जी ते हरि हरि रूपि समासी ॥ से धंनु से धंनु जिन हरि धिआइआ जी जनु नानकु तिन बलि जासी ॥३॥ तेरी भगति तेरी भगति भंडार जी भरे बिअंत बेअंता ॥ तेरे भगत तेरे भगत सलाहनि

तुधु जी हरि अनिक अनेक अनंता ॥ तेरी अनिक तेरी अनिक करहि हरि पूजा जी तपु तापहि जपहि बेअंता ॥ तेरे अनेक तेरे अनेक पड़हि बहु सिम्रिति सासत जी करि किरिआ खटु करम करंता ॥ से भगत से भगत भले जन नानक जी जो भावहि मेरे हरि भगवंता ॥४॥ तूं आदि पुरखु अपरंपरु करता जी तुधु जेवडु अवरु न कोई ॥ तूं जुगु जुगु एको सदा सदा तूं एको जी तूं निहचलु करता सोई ॥ तुधु आपे भावै सोई वरतै जी तूं आपे करहि सु होई ॥ तुधु आपे स्रिसटि सभ उपाई जी तुधु आपे सिरजि सभ गोई ॥ जनु नानकु गुण गावै करते के जी जो सभसै का जाणोई ॥५॥१॥

आसा महला ४ ॥

तूं करता सचिआरु मैडा साँई ॥ जो

तउ भावै सोई थीसी जो तूं देहि सोई हउ पाई ॥१॥रहाउ॥ सभ तेरी तूं सभनी धिआइआ ॥ जिस नो क्रिपा करहि तिनि नाम रतनु पाइआ ॥ गुरमुखि लाधा मनमुखि गवाइआ ॥ तुधु आपि विछोड़िआ आपि मिलाइआ ॥१॥ तूं दरीआउ सभ तुझ ही माहि ॥ तुझ बिनु दूजा कोई नाहि ॥ जीअ जंत सभि तेरा खेलु ॥ विजोगि मिलि विछुड़िआ संजोगी मेलु ॥२॥ जिसनो तू जाणाइहि सोई जनु जाणै ॥ हरि गुण सद ही आखि वखाणै ॥ जिनि हरि सेविआ तिनि सुखु पाइआ ॥ सहजे ही हरि नामि समाइआ ॥३॥ तू आपे करता तेरा कीआ सभु होइ ॥ तुधु बिनु दूजा अवरु न कोइ ॥ तू करि करि वेखहि जाणहि सोइ ॥ जन नानक गुरमुखि परगटु होइ ॥४॥२॥

आसा महला १ ॥

तितु सरवरड़ै भईले निवासा पाणी पावकु तिनहि कीआ ॥ पंकजु मोह पगु नही चालै हम देखा तह डूबीअले ॥१॥ मन एकु न चेतसि मूड़ मना ॥ हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥१॥ रहाउ ॥ ना हउ जती सती नही पड़िआ मूरख मुगधा जनमु भइआ ॥ प्रणवति नानक तिन की सरणा जिन तूं नाही वीसरिआ ॥२॥३॥

आसा महला ५ ॥

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥ गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥ अवरि काज तेरै कितै न काम ॥ मिलु साध संगति भजु केवल नाम ॥१॥ सरंजामि लागु भवजल तरन कै ॥ जनमु ब्रिथा जात रंगि माइआ कै ॥१॥ रहाउ ॥

जपु तपु संजमु धरमु न कमाइआ ॥ सेवा साध न जानिआ हरि राइआ ॥ कहु नानक हम नीच करंमा ॥ सरणि परे की राखहु सरमा ॥२॥४॥

ੴ वाहिगुरू जी की फते ॥

पातसाही १० ॥ चौपई ॥

पुनि राछस का काटा सीसा ॥ स्री असिकेत जगत के ईसा ॥ पुहपन ब्रिसटि गगन ते भई ॥ सभहिन आन बधाई दई ॥१॥ धंनय धंनय लोगन के राजा ॥ दुसटन दाह गरीब निवाजा ॥ अखल भवन के सिरजनहारे ॥ दास जानि मुहि लेहु उबारे ॥२॥

कबियो बाच बेनती ॥ चौपई ॥

हमरी करो हाथ दै रच्छा ॥ पूरन होइ चित्त की इच्छा ॥ तव चरनन मन रहै हमारा ॥ अपना जान करो

प्रतिपारा ॥१॥ हमरे दुसट सभै तुम घावहु ॥ आपु हाथ दै मोहि बचावहु ॥ सुखी वसै मोरो परिवारा ॥ सेवक सिख सभै करतारा ॥२॥ मो रच्छा निज कर दै करीऐ ॥ सभ बैरिन को आज संघरीऐ ॥ पूरन होइ हमारी आसा ॥ तोर भजन की रहै पिआसा ॥३॥ तुमहि छाडि कोई अवर न धयाऊं ॥ जो बर चाहों सु तुम ते पाऊं ॥ सेवक सिक्ख हमारे तारीअहि ॥ चुनि चुनि सत्रु हमारे मारीअहि ॥४॥ आप हाथ दै मुझै उबरीऐ ॥ मरण काल का त्रास निवरीऐ ॥ हूजो सदा हमारे पच्छा ॥ स्री असिधुज जू करीअहु रच्छा ॥५॥ राखि लेहु मुहि राखनहारे ॥ साहिब संत सहाइ पिआरे ॥ दीन बंधु दुसटन के हंता ॥ तुम हो पुरी चतरदस कंता ॥६॥

काल पाइ ब्रहमा बपु धरा ॥ काल पाइ सिवजू अवतरा ॥ काल पाइ करि बिसनु प्रकासा ॥ सकल काल का कीआ तमासा ॥७॥ जवन काल जोगी सिव कीओ ॥ बेदराज ब्रहमा जू थीओ ॥ जवन काल सभ लोक सवारा ॥ नमसकार है ताहि हमारा ॥८॥ जवन काल सभ जगत बनायो ॥ देव दैत जछन उपजायो ॥ आदि अंति एकै अवतारा ॥ सोई गुरू समझीअहु हमारा ॥९॥ नमसकार तिस ही को हमारी ॥ सकल प्रजा जिन आप सवारी ॥ सिवकन को सिव गुन सुख दीए ॥ सत्रुन को पल मो बध कीओ ॥१०॥ घट घट के अंतर की जानत ॥ भले बुरे की पीर पछानत ॥ चीटी ते कुंचर असथूला ॥ सभ पर

क्रिपा द्रिसटि करि फूला ॥११॥ संतन दुख पाए ते दुखी ॥ सुख पाए साधुन के सुखी ॥ एक एक की पीर पछानै ॥ घट घट के पट पट की जानै ॥१२॥ जब उदकरख करा करतारा ॥ प्रजा धरत तब देह अपारा ॥ जब आकरख करत हो कबहूं ॥ तुम मै मिलत देह धर सभहूं ॥१३॥ जेते बदन स्रिसटि सभ धारै ॥ आपु आपनी बूझ उचारै ॥ तुम सभही ते रहत निरालम ॥ जानत बेद भेद अरु आलम ॥१४॥ निरंकार न्रिबिकार निरलंभ ॥ आदि अनील अनादि असंभ ॥ ता का मूड़ उचारत भेदा ॥ जा का भेव न पावत बेदा ॥१५॥ ता को कर पाहन अनुमानत ॥ महा मूड़ कछु भेद न जानत ॥ महादेव को कहत सदा सिव ॥ निरंकार का चीनत नहि

भिव ॥१६॥ आप आपनी बुधि है जेती ॥ बरनत भिंन भिंन तुहि तेती ॥ तुमरा लखा न जाइ पसारा ॥ किह बिधि सजा प्रथम संसारा ॥१७॥ एकै रूप अनूप सरूपा ॥ रंक भयो राव कही भूपा ॥ अंडज जेरज सेतज कीनी ॥ उतभुज खानि बहुरि रचि दीनी ॥१८॥ कहूं फूल राजा ह्वै बैठा ॥ कहूं सिमटि भयो संकर इकैठा ॥ सगरी स्रिसटि दिखाइ अचंभव ॥ आदि जुगादि सरूप सुयंभव ॥१६॥ अब रच्छा मेरी तुम करो ॥ सिक्खय उबारि असिखय संघरो ॥ दुसट जिते उठवत उतपाता ॥ सकल मलेछ करो रण घाता ॥२०॥ जे असिधुज तव सरनी परे ॥ तिन के दुसट दुखित ह्वै मरे ॥ पुरख जवन पग परै तुहारे ॥ तिन के तुम संकट सभ

टारे ॥२१॥ जो कलि को इक बार धिऔ है ॥ ता के काल निकट नही औ है ॥ रच्छा होइ ताहि सभ काला ॥ दुसट अरिसट टरे ततकाला ॥२२॥ क्रिपा द्रिसटि तन जाहि निहरिहो ॥ ता के ताप तनिक महि हरिहो ॥ रिद्धि सिद्धि घर मो सभ होई ॥ दुसट छाह छ्वै सकै न कोई ॥२३॥ एक बार जिन तुमै संभारा ॥ काल फास ते ताहि उबारा ॥ जिन नर नाम तिहारो कहा ॥ दारिद दुसट दोख ते रहा ॥२४॥ खड़गकेतु मै सरणि तिहारी ॥ आपु हाथ दै लेहु उबारी ॥ सरब ठउर मो होहु सहाई ॥ दुसट दोख ते लेहु बचाई ॥२५॥ क्रिपा करी हम पर जग माता ॥ ग्रंथ करा पूरन सुभ राता ॥ किलबिख सकल देह को हरता ॥ दुसट दोखीअन को छै

करता ॥२६॥ स्री असिधुज जब भए दइआला ॥ पूरन करा ग्रंथ ततकाला ॥ मन बाछत फल पावै सोई ॥ दूख न तिसै बिआपत कोई ॥२७॥

अड़िल्ल ॥

सुनै गुंग जो याहि सु रसना पावई ॥ सुनै मूड़ चित लाइ चतुरता आवई ॥ दूख दरद भौ निकट न तिन नर के रहै ॥ हो जो या की एक बार चौपई को कहै ॥२८॥

चौपई ॥

संबत सतरह सहस भणिजै ॥ अरध सहस फुनि तीन कहिज्जै ॥ भादव सुदी असटमी रवि वारा ॥ तीर सत्तु द्रव ग्रंथ सुधारा ॥२६॥

इति स्री चरित्रो पखयाने त्रिया चरित्रे भूप मंत्री संबादे चार सै चार चरित्र

समापत मसतु सुभ मसतु ॥३॥

दोहरा ॥

दास जान करि दास पर कीजै क्रिपा अपार ॥ आप हाथ दै राख मुहि मन क्रम बचन बिचार ॥१॥

चौपई ॥

मै न गनेसहि प्रिथम मनाऊं ॥ किसन बिसन कबहूं नहि धिआऊं ॥ कान सुने पहिचान न तिन सों ॥ लिवलागी मोरी पग इन सों ॥२॥ महाकाल रखवार हमारो ॥ महा लोह मै किंकर थारो ॥ अपना जान करो रखवार ॥ बाहि गहे की लाज बिचार ॥३॥ अपना जान मुझै प्रतिपरीऐ ॥ चुनि चुनि सत्रु हमारे मरीऐ ॥ देग तेग जग मै दोऊ चलै ॥ राख आप मुहि अउर न दलै ॥४॥ तुम

मम करहु सदा प्रतिपारा ॥ तुम साहिब मै दास तिहारा ॥ जान आपना मुझै निवाज ॥ आप करो हमरे सभ काज ॥५॥ तुम हो सभ राजन के राजा ॥ आपे आप गरीब निवाजा ॥ दास जान करि क्रिपा करहु मुहि ॥ हार परा मै आनि द्वार तुहि ॥६॥ अपना जान करो प्रतिपारा ॥ तुम साहिब मै किंकर थारा ॥ दास जान दै हाथ उबारो ॥ हमरे सभ बैरीअन संघारो ॥७॥ प्रिथम धरो भगवत को धिआना ॥ बहुर करों कबिता बिधि नाना ॥ किसन जथा मति चरित्र उचारो ॥ चूक होइ कबि लेहु सुधारो ॥८॥

कबिबाच ॥ दोहरा ॥

जो निज प्रभ मो सो कहा सो कहिहौं जग माहि ॥ जो तिह प्रभ कौ

धिआइ है अंत सुरग को जाहि ॥१॥ दोहरा ॥ हरि हरि जन दुई एक है बिब बिचार कछु नाहि ॥ जल ते उपज तरंग जिउ जल ही बिखै समाहि ॥२॥

दोहरा ॥

जब आइसु प्रभु को भयो जनमु धरा जग आइ ॥ अब मै कथा संछेपते सभहूं कहत सुनाइ ॥३॥ कबिबाच दोहरा ॥ ठाढ भयो मै जोरि कर बचन कहा सिर नयाइ ॥ पंथ चलै तब जगत मै जब तुम करो सहाइ ॥४॥

दोहरा ॥

जे जे तुमरे धिआन को नित उठि धिऐहैं संत ॥ अंत लहैंगे मुकति फलु पावहिंगे भगवंत ॥५॥

दोहरा ॥

राम कथा जुग जुग अटृल सभ कोऊ भाखत नेत ॥ सुरग बास रघुबर करा सगरी पुरी समेत ॥६॥

चौपई ॥

जो इह कथा सुनै अरु गावै ॥ दूख पाप तिह निकटि न आवै ॥ बिसनु भगति की ए फल होई ॥ आधि बधधि छ्वै सकै न कोई ॥७॥ संमत सतरह सहस पचावन ॥ हाड़ वदी प्रिथम सुखदावन ॥ त्व प्रसादि कर ग्रंथ सुधारा ॥ भूल परी लहु लेहु सुधारा ॥८॥

दोहरा ॥

नेत्र तुंग के चरन तर सत्तु द्रव तीर तरंग ॥ स्री भगवत पूरन कीयो रघुबर कथा प्रसंग ॥६॥ साध असाध जानिओ

नही बाद सुबाद बिबाद ॥ ग्रंथ सकल पूरन कीयो भगवत क्रिपा प्रसादि ॥१०॥

सवैया ॥

पाँइ गहे जब ते तुमरे तब ते कोऊ आँख तरे नही आनयो ॥ राम रहीम पुरान कुरान अनेक कहैं मत एक न मानयो ॥ सिंम्रिति सासत्र बेद सभै बहु भेद कहैं हम एक न जानयो ॥ स्री असिपान क्रिपा तुमरी करि मै न कहयो सभ तोहि बखानयो ॥११॥

दोहरा ॥

सगल दुआर कउ छाडि कै गहिओ तुहारो दुआर ॥ बाँहि गहे की लाज अस गोबिंद दास तुहार ॥१२॥

रामकली महला ३ अनंदु

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै

पाइआ ॥ सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥ राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥ सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइआ ॥ कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मै पाइआ ॥१॥ ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥ हरि नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि विसारणा ॥ अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥ सभना गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥ कहै नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि नाले ॥२॥ साचे साहिबा किआ नाही घरि तैरै ॥ घरि त तैरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ॥ सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए ॥ नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥ कहै नानकु सचे

साहिब किआ नाही घरि तेरै ॥३॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥ साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥ करि सॉंति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि पुजाईआ ॥ सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु जिस दीआ एहि वडिआईआ ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु सबदि धरहु पिआरो ॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥४॥ वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै ॥ घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ ॥ पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ ॥ धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ॥ कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥५॥ अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥ पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ॥ दूख

रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥ संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥ सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥ बिनवंति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥४०॥

मुंदावणी महला ५ ॥

थाल विचि तिंनि वसतू पईओ सतु संतोखु वीचारो ॥ अंम्रित नामु ठाकुर का पइओ जिसका सभसु अधारो ॥ जे को खावै जे को भुंचै तिस का होइ उधारो ॥ एह वसतु तजी नह जाई नित नित रखु उरि धारो ॥ तम संसारु चरन लगि तरीऐ सभु नानक ब्रहम पसारो ॥१॥

सलोक महला ५ ॥

तेरा कीता जातो नाही मैनो जोगु कीतोई ॥ मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइओई ॥ तरसु पइआ

मिहरामति होई सतिगुरु सजणु मिलिआ ॥ नानक नामु मिलै ताँ जीवाँ तनु मनु थीवै हरिआ ॥१॥

पउड़ी ॥

तिथै तू समरथु जिथै कोइ नाहि ॥ ओथै तेरी रख अगनी उदर माहि ॥ सुणि कै जम के दूत नाइ तेरै छडि जाहि ॥ भउजलु बिखमु असगाहु गुर सबदी पारि पाहि ॥ जिन कउ लगी पिआस अंम्रितु सेइ खाहि ॥ कलि महि एहो पुंनु गुण गोविंद गाहि ॥ सभसै नो किरपालु सम्हाले साहि साहि ॥ बिरथा कोइ न जाइ जि आवै तुधु आहि ॥१॥

सलोकु महला ५

अंतरि गुरु आराधणा जिहवा जपि गुर नाउ ॥ नेत्री सतिगुरु पेखणा स्रवणी सुनणा गुर नाउ ॥ सतिगुर सेती रतिआ

दरगह पाईऐ ठाउ ॥ कहु नानक किरपा करे जिस नो एह वथु देइ ॥ जग महि उतम काढीअहि विरले केई केइ ॥१॥

मः ५ ॥

रखे रखण हारि आपि उबारिअनु ॥ गुर की पैरी पाइ काज सवारिअनु ॥ होआ आपि दइआलु मनहु न विसारिअनु ॥ साध जना कै संगि भवजलु तारिअनु ॥ साकत निंदक दुसट खिन माहि बिदारिअनु ॥ तिसु साहिब की टेक नानक मनै माहि ॥ जिसु सिमरत सुखु होइ सगले दूख जाहि ॥२॥

सोहिला रागु गउड़ी

दीपकी महला १

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जै घरि कीरति आखीऐ करते का होइ बीचारो ॥ तितु घरि गावहु सोहिला सिवरिहु सिरजणहारो ॥१॥ तुम गावहु मेरे निरभउ का सोहिला ॥ हउ वारी जितु सोहिलै सदा सुखु होइ ॥१॥ रहाउ ॥ नित नित जीअड़े समालीअनि देखैगा देवणहारु ॥ तेरे दानै कीमति ना पवै तिसु दाते कवणु सुमारु ॥२॥ संबति साहा लिखिआ मिलि करि पावहु तेलु ॥ देहु सजण

असीसड़ीआ जिउ होवै साहिब सिउ मेलु ॥३॥ घरि घरि एहो पाहुचा सदड़े नित पवंनि ॥ सदणहारा सिमरीऐ नानक से दिह आवंनि ॥४॥१॥

रागु आसा महला १

छिअ घर छिअ गुर छिअ उपदेस ॥ गुरु गुरु एको वेस अनेक ॥१॥ बाबा जै घरि करते कीरति होइ ॥ सो घरु राखु वडाई तोइ ॥१॥ रहाउ ॥ विसुए चसिआ घड़ीआ पहरा थिती वारी माहु होआ ॥ सूरजु एको रुति अनेक ॥ नानक करते के केते वेस ॥२॥२॥

रागु धनासरी महला १ ॥

गगन मै थालु रवि चंदु दीपक बने तारिका मंडल जनक मोती ॥ धूपु मलआनलो पवणु चवरो करे सगल बनराइ फूलंत जोती ॥१॥ कैसी आरती

होइ ॥ भव खंडना तेरी आरती ॥ अनहता सबद वाजंत भेरी ॥१॥ रहाउ ॥ सहस तव नैन नन नैन हहि तोहि कउ सहस मूरति नना एक तोही ॥ सहस पद बिमल नन एक पद गंध बिनु सहस तव गंध इव चलत मोही ॥२॥ सभ महि जोति जोति है सोइ ॥ तिसदै चानणि सभ महि चानणु होइ ॥ गुर साखी जोति परगटु होइ ॥ जो तिसु भावै सु आरती होइ ॥३॥ हरि चरण कवल मकरंद लोभित मनो अनदिनो मोहि आही पिआसा ॥ क्रिपा जलु देहि नानक सारिंग कउ होइ जा ते तेरै नाइ वासा ॥४॥३॥

रागु गउड़ी पूरबी महला ४ ॥

कामि करोधि नगरु बहु भरिआ मिलि साधू खंडल खंडा हे ॥ पूरबि लिखत

लिखे गुरु पाइआ मनि हरि लिव मंडल मंडा हे ॥१॥ करि साधू अंजुली पुनु वडा हे ॥ करि डंडउत पुनु वडा हे ॥१॥ रहाउ ॥ साकत हरि रस सादु न जाणिआ तिन अंतरि हउमै कंडा हे ॥ जिउ जिउ चलहि चुभै दुखु पावहि जमकालु सहहि सिरि डंडा हे ॥२॥ हरि जन हरि हरि नामि समाणे दुखु जनम मरण भव खंडा हे ॥ अबिनासी पुरखु पाइआ परमेसरु बहु सोभ खंड ब्रहमंडा हे ॥३॥ हम गरीब मसकीन प्रभ तेरे हरि राखु राखु वड वडा हे ॥ जन नानक नामु अधारु टेक है हरि नामे ही सुखु मंडा हे ॥४॥४॥

रागु गउड़ी पूरबी महला ५ ॥

करउ बेनंती सुणहु मेरे मीता संत टहल की बेला ॥ इहा खाटि चलहु हरि

लाहा आगै बसनु सुहेला ॥१॥ अउध घटै दिनसु रैणारे ॥ मन गुर मिलि काज सवारे ॥१॥ रहाउ ॥ इहु संसारु बिकारु संसे महि तरिओ ब्रहम गिआनी ॥ जिसहि जगाइ पीआवै इहु रसु अकथ कथा तिनि जानी ॥२॥ जा कउ आए सोई बिहाझहु हरि गुर ते मनहि बसेरा ॥ निज घरि महलु पावहु सुख सहजे बहुरि न होइगो फेरा ॥३॥ अंतरजामी पुरख बिधाते सरधा मन की पूरे ॥ नानक दासु इहै सुखु मागै मो कउ करि संतन की धूरे ॥४॥५॥

रामकली महला ३ अनंदु

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अनंदु भइआ मेरी माए सतिगुरू मै पाइआ ॥ सतिगुरु त पाइआ सहज सेती मनि वजीआ वाधाईआ ॥ राग रतन परवार परीआ सबद गावण आईआ ॥ सबदो त गावहु हरी केरा मनि जिनी वसाइआ ॥ कहै नानकु अनंदु होआ सतिगुरू मै पाइआ ॥१॥

ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥ हरि नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि विसारणा ॥ अंगीकारु ओहु करे तेरा कारज सभि सवारणा ॥ सभना

गला समरथु सुआमी सो किउ मनहु विसारे ॥ कहै नानकु मंन मेरे सदा रहु हरि नाले ॥२॥

साचे साहिबा किआ नाही घरि तेरै ॥ घरि त तेरै सभु किछु है जिसु देहि सु पावए ॥ सदा सिफति सलाह तेरी नामु मनि वसावए ॥ नामु जिन कै मनि वसिआ वाजे सबद घनेरे ॥ कहै नानकु सचे साहिब किआ नाही घरि तेरै ॥३॥

साचा नामु मेरा आधारो ॥ साचु नामु अधारु मेरा जिनि भुखा सभि गवाईआ ॥ करि साँति सुख मनि आइ वसिआ जिनि इछा सभि पुजाईआ ॥ सदा कुरबाणु कीता गुरू विटहु जिस दीआ एहि वडिआईआ ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु सबदि धरहु पिआरो ॥ साचा नामु मेरा आधारो ॥४॥

वाजे पंच सबद तितु घरि सभागै ॥ घरि सभागै सबद वाजे कला जितु घरि धारीआ ॥ पंच दूत तुधु वसि कीते कालु कंटकु मारिआ ॥ धुरि करमि पाइआ तुधु जिन कउ सि नामि हरि कै लागे ॥ कहै नानकु तह सुखु होआ तितु घरि अनहद वाजे ॥५॥

साची लिवै बिनु देह निमाणी ॥ देह निमाणी लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥ तुधु बाझु समरथ कोइ नाही क्रिपा करि बनवारीआ ॥ एस नउ होरु थाउ नाही सबदि लागि सवारीआ ॥ कहै नानकु लिवै बाझहु किआ करे वेचारीआ ॥६॥

आनंदु आनंदु सभु को कहै आनंदु गुरू ते जाणिआ ॥ जाणिआ आनंदु सदा गुर ते क्रिपा करे पिआरिआ ॥ करि

किरपा किलविख कटे गिआन अंजनु सारिआ ॥ अंदरहु जिन का मोहु तुटा तिन का सबदु सचै सवारिआ ॥ कहै नानकु एहु अनंदु है आनंदु गुर ते जाणिआ ॥७॥

बाबा जिसु तू देहि सोई जनु पावै ॥ पावै त सो जनु देहि जिस नो होरि किआ करहि वेचारिआ ॥ इकि भरमि भूले फिरहि दह दिसि इकि नामि लागि सवारिआ ॥ गुर परसादी मनु भइआ निरमलु जिना भाणा भावए ॥ कहै नानकु जिसु देहि पिआरे सोई जनु पावए ॥८॥

आवहु संत पिआरिहो अकथ की करह कहाणी ॥ करह कहाणी अकथ केरी कितु दुआरै पाईऐ ॥ तनु मनु धनु सभु सउपि गुर कउ हुकमि मंनिऐ

पाइऐ ॥ हुकमु मंनिहु गुरू केरा गावहु सची बाणी ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु कथिहु अकथ कहाणी ॥९॥

ए मन चंचला चतुराई किनै न पाइआ ॥ चतुराई न पाइआ किनै तू सुणि मंन मेरिआ ॥ एह माइआ मोहणी जिनि एतु भरमि भुलाइआ ॥ माइआ त मोहणी तिनै कीती जिनि ठगउली पाईआ ॥ कुरबाणु कीता तिसै विटहु जिनि मोहु मीठा लाइआ ॥ कहै नानकु मन चंचल चतुराई किनै न पाइआ ॥१०॥

ए मन पिआरिआ तू सदा सचु समाले ॥ एहु कुटंबु तू जि देखदा चलै नाही तेरै नाले ॥ साथि तेरै चलै नाही तिसु नालि किउ चितु लाईऐ ॥ ऐसा कंमु मूले न कीचै जितु अंति

पछोताईऐ ॥ सतिगुरू का उपदेसु सुणि तू होवै तेरै नाले ॥ कहै नानकु मन पिआरे तू सदा सचु समाले ॥११॥

अगम अगोचरा तेरा अंतु न पाइआ ॥ अंतो न पाइआ किनै तेरा आपणा आपु तू जाणहे ॥ जीअ जंत सभि खेलु तेरा किआ को आखि वखाणए ॥ आखहि त वेखहि सभु तूहै जिनि जगतु उपाइआ ॥ कहै नानकु तू सदा अगंमु है तेरा अंतु न पाइआ ॥१२॥

सुरि नर मुनि जन अंम्रितु खोजदे सु अंम्रितु गुर ते पाइआ ॥ पाइआ अंम्रितु गुरि क्रिपा कीनी सचा मनि वसाइआ ॥ जीअ जंत सभि तुधु उपाए इकि वेखि परसणि आइआ ॥ लबु लोभु अहंकारु चूका सतिगुरू भला भाइआ ॥ कहै

नानकु जिस नो आपि तुठा तिनि अंम्रितु गुर ते पाइआ ॥१३॥

भगता की चाल निराली ॥ चाला निराली भगताह केरी बिखमु मारगि चलणा ॥ लबु लोभु अहंकारु तजि त्रिसना बहुतु नाही बोलणा ॥ खंनिअहु तिखी वालहु निकी एतु मारगि जाणा ॥ गुर परसादी जिनी आपु तजिआ हरि वासना समाणी ॥ कहै नानकु चाल भगता जुगहु जुगु निराली ॥१४॥

जिउ तू चलाइहि तिव चलह सुआमी होर किआ जाणा गुण तेरे ॥ जिव तू चलाइहि तिवै चलह जिना मारगि पावहे ॥ करि किरपा जिन नामि लाइहि सि हरि हरि सदा धिआवहे ॥ जिसनो कथा सुणाइहि आपणी सि गुर दुआरै सुखु पावहे ॥ कहै नानकु सचे साहिब

जिउ भावै तिवै चलावहे ॥१५॥

एहु सोहिला सबदु सुहावा ॥ सबदो सुहावा सदा सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥ एहु तिन कै मंनि वसिआ जिन धुरहु लिखिआ आइआ ॥ इकि फिरहि घनेरे करहि गला गली किनै न पाइआ॥ कहै नानकु सबदु सोहिला सतिगुरू सुणाइआ ॥१६॥

पवितु होए से जना जिनी हरि धिआइआ ॥ हरि धिआइआ पवितु होए गुरमुखि जिनी धिआइआ ॥ पवितु माता पिता कुटंब सहित सिउ पवितु संगति सबाईआ ॥ कहदे पवितु सुणदे पवितु से पवितु जिनी मंनि वसाइआ ॥ कहै नानकु से पवितु जिनी गुरमुखि हरि हरि धिआइआ ॥१७॥

करमी सहजु न ऊपजै विणु सहजै

सहसा न जाइ ॥ नह जाइ सहसा कितै संजमि रहे करम कमाए ॥ सहसै जीउ मलीणु है कितु संजमि धोता जाए ॥ मंनु धोवहु सबदि लागहु हरि सिउ रहहु चितु लाइ ॥ कहै नानकु गुर परसादी सहजु उपजै इह सहसा इव जाइ ॥१८॥

जीअहु मैले बाहरहु निरमल ॥ बाहरहु निरमल जीअहु त मैले तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥ एह तिसना वडा रोगु लगा मरणु मनहु विसारिआ ॥ वेदा महि नामु ऊतमु सो सुणहि नाही फिरहि जिउ बेतालिआ ॥ कहै नानकु जिन सचु तजिआ कूड़े लागे तिनी जनमु जूऐ हारिआ ॥१९॥

जीअहु निरमल बाहरहु निरमल ॥ बाहरहु त निरमल जीअहु निरमल सतिगुर ते करणी कमाणी ॥ कूड़ की

सोइ पहुचै नाही मनसा सचि समाणी ॥ जनमु रतनु जिनी खटिआ भले से वणजारे ॥ कहै नानकु जिन मंनु निरमलु सदा रहहि गुर नाले ॥२०॥

जे को सिखु गुरू सेती सनमुखु होवै ॥ होवै त सनमुखु सिखु कोई जीअहु रहै गुर नाले ॥ गुर के चरन हिरदै धिआए अंतर आतमै समाले ॥ आपु छडि सदा रहै परणै गुर बिनु अवरु न जाणै कोए ॥ कहै नानकु सुणहु संतहु सो सिखु सनमुखु होए ॥२१॥

जे को गुर ते वेमुखु होवै बिनु सतिगुर मुकति न पावै ॥ पावै मुकति न होरथै कोई पुछहु बिबेकीआ जाए ॥ अनेक जूनी भरमि आवै विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥ फिरि मुकति पाए लागि चरणी सतिगुरू सबदु सुणाए ॥ कहै नानकु

वीचारि देखहु विणु सतिगुर मुकति न पाए ॥२२॥

आवहु सिख सतिगुरू के पिआरिहो गावहु सची बाणी ॥ बाणी त गावहु गुरू केरी बाणीआ सिरि बाणी ॥ जिन कउ नदरि करमु होवै हिरदै तिना समाणी ॥ पीवहु अंम्रितु सदा रहहु हरि रंगि जपिहु सारिगपाणी ॥ कहै नानकु सदा गावहु एह सची बाणी ॥२३॥

सतिगुरू बिना होर कची है बाणी ॥ बाणी त कची सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥ कहदे कचे सुणदे कचे कचीं आखि वखाणी ॥ हरि हरि नित करहि रसना कहिआ कछू न जाणी ॥ चितु जिन का हिरि लइआ माइआ बोलनि पए रवाणी ॥ कहै नानकु सतिगुरू बाझहु होर कची बाणी ॥२४॥

गुर का सबदु रतंनु है हीरे जितु जड़ाउ ॥ सबदु रतनु जितु मंनु लागा एहु होआ समाउ ॥ सबद सेती मनु मिलिआ सचै लाइआ भाउ ॥ आपे हीरा रतनु आपे जिसनो देइ बुझाइ ॥ कहै नानकु सबदु रतनु है हीरा जितु जड़ाउ ॥२५॥

सिव सकति आपि उपाइ कै करता आपे हुकमु वरताए ॥ हुकमु वरताए आपि वेखै गुरमुखि किसै बुझाए ॥ तोड़े बंधन होवै मुकतु सबदु मंनि वसाए ॥ गुरमुखि जिसनो आपि करे सु होवै एकस सिउ लिवलाए ॥ कहै नानकु आपि करता आपे हुकमु बुझाए ॥२६॥

सिम्रिति सासत्र पुंन पाप बीचारदे ततै सार न जाणी ॥ ततै सार न जाणी गुरू बाझहु ततै सार न जाणी ॥ तिही गुणी संसारु भ्रमि सुता सुतिआ रैणि

विहाणी ॥ गुर किरपा ते से जन जागे जिना हरि मनि वसिआ बोलहि अंम्रित बाणी ॥ कहै नानकु सो ततु पाए जिसनो अनदिनु हरि लिव लागै जागत रैणि विहाणी ॥२७॥

माता के उदर महि प्रतिपाल करे सो किउ मनहु विसारीऐ ॥ मनहु किउ विसारीऐ एवडु दाता जि अगनि महि आहारु पहुचावए ॥ ओसनो किहु पोहि न सकी जिस नउ आपणी लिव लावए ॥ आपणी लिव आपे लाए गुरमुखि सदा समालीऐ ॥ कहै नानकु एवडु दाता सो किउ मनहु विसारीऐ ॥२८॥

जैसी अगनि उदर महि तैसी बाहरि माइआ ॥ माइआ अगनि सभ इको जेही करतै खेलु रचाइआ ॥ जा तिसु भाणा ता जंमिआ परवारि भला भाइआ ॥ लिव

छुड़की लगी त्रिसना माइआ अमरु वरताइआ ॥ एह माइआ जितु हरि विसरै मोहु उपजै भाउ दूजा लाइआ ॥ कहै नानकु गुर परसादी जिना लिव लागी तिनी विचे माइआ पाइआ ॥२६॥

हरि आपि अमुलकु है मुलि न पाइआ जाइ ॥ मुलि न पाइआ जाइ किसै विटहु रहे लोक विललाइ ॥ ऐसा सतिगुरु जे मिलै तिसनो सिरु सउपीऐ विचहु आपु जाइ ॥ जिस दा जीउ तिसु मिलि रहै हरि वसै मनि आइ ॥ हरि आपि अमुलकु है भाग तिना के नानका जिन हरि पलै पाइ ॥३०॥

हरि रासि मेरी मनु वणजारा ॥ हरि रासि मेरी मनु वणजारा सतिगुर ते रासि जाणी ॥ हरि हरि नित जपिहु जीअहु लाहा खटिहु दिहाड़ी ॥ एहु धनु तिना

मिलिआ जिन हरि आपे भाणा॥ कहै नानकु हरि रासि मेरी मनु होआ वणजारा ॥३१॥

ए रसना तू अन रसि राचि रही तेरी पिआस न जाइ ॥ पिआस न जाइ होरतु कितै जिचरु हरि रसु पलै न पाइ ॥ हरि रसु पाइ पलै पीऐ हरि रसु बहुड़ि न त्रिसना लागै आइ ॥ एहु हरि रसु करमी पाईऐ सतिगुरु मिलै जिसु आइ ॥ कहै नानकु होरि अनरस सभि वीसरे जा हरि वसै मनि आइ ॥३२॥

ए सरीरा मेरिआ हरि तुम महि जोति रखी ता तू जग महि आइआ ॥ हरि जोति रखी तुधु विचि ता तू जग महि आइआ ॥ हरि आपे माता आपे पिता जिनि जीउ उपाइ जगतु दिखाइआ ॥ गुर परसादी बुझिआ ता चलतु होआ चलतु

नदरी आइआ ॥ कहै नानकु स्रिसटि का मूलु रचिआ जोति राखी ता तू जग महि आइआ ॥३३॥

मनि चाउ भइआ प्रभ आगमु सुणिआ ॥ हरि मंगलु गाउ सखी ग्रिहु मंदरु बणिआ ॥ हरि गाउ मंगलु नित सखीए सोगु दूखु न विआपए ॥ गुर चरन लागे दिन सभागे आपणा पिरु जापए ॥ अनहत बाणी गुर सबदि जाणी हरि नामु हरि रसु भोगो॥ कहै नानकु प्रभु आपि मिलिआ करण कारण जोगो ॥३४॥

ए सरीरा मेरिआ इसु जग महि आइ कै किआ तुधु करम कमाइआ ॥ कि करम कमाइआ तुधु सरीरा जा तू जग महि आइआ ॥ जिनि हरि तेरा रचनु रचिआ सो हरि मनि न वसाइआ ॥ गुर

परसादी हरि मंनि वसिआ पूरबि लिखिआ पाइआ ॥ कहै नानकु एहु सरीरु परवाणु होआ जिनि सतिगुर सिउ चितु लाइआ ॥३५॥

ए नेत्रहु मेरिहो हरि तुम महि जोति धरी हरि बिनु अवरु न देखहु कोई ॥ हरि बिनु अवरु न देखहु कोई नदरी हरि निहालिआ ॥ एहु विसु संसारु तुम देखदे एहु हरि का रूपु है हरि रूपु नदरी आइआ ॥ गुर प्रसादी बुझिआ जा वेखा हरि इकु है हरि बिनु अवरु न कोई ॥ कहै नानकु एहि नेत्र अंध से सतिगुरि मिलिऐ दिब द्रिसटि होई ॥३६॥

ए स्रवणहु मेरिहो साचै सुनणै नो पठाए ॥ साचै सुनणै नो पठाए सरीरि लाए सुणहु सति बाणी ॥ जितु सुणी मनु

तनु हरिआ होआ रसना रसि समाणी ॥ सचु अलख विडाणी ता की गति कही न जाए ॥ कहै नानकु अंम्रित नामु सुणहु पवित्र होवहु साचै सुनणै नो पठाए ॥३७॥

हरि जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥ वजाइआ वाजा पउण नउ दुआरे परगटु कीए दसवा गुपतु रखाइआ ॥ गुर दुआरै लाइ भावनी इकना दसवा दुआरु दिखाइआ ॥ तह अनेक रूप नाउ नव निधि तिस दा अंतु न जाई पाइआ ॥ कहै नानकु हरि पिआरै जीउ गुफा अंदरि रखि कै वाजा पवणु वजाइआ ॥३८॥

एहु साचा सोहिला साचै घरि गावहु ॥ गावहु त सोहिला घरि साचै जिथै सदा सचु धिआवहे ॥ सचो

धिआवहि जा तुधु भावहि गुरमुखि जिना बुझावहे ॥ इह सचु सभना का खसमु है जिसु बखसे सो जनु पावहे ॥ कहै नानकु सचु सोहिला सचै घरि गावहे ॥३९॥

अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥ पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ॥ दूख रोग संताप उतरे सुणी सची बाणी ॥ संत साजन भए सरसे पूरे गुर ते जाणी ॥ सुणते पुनीत कहते पवितु सतिगुरु रहिआ भरपूरे ॥ बिनवंति नानकु गुर चरण लागे वाजे अनहद तूरे ॥४०॥

गउड़ी सुखमनी मः ५ ॥

सलोकु ॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

आदि गुरए नमह ॥

जुगादि गुरए नमह ॥

सतिगुरए नमह ॥

स्री गुरदेवए नमह ॥१॥

असटपदी ॥

सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ ॥ कलि कलेस तन माहि मिटावउ ॥ सिमरउ जासु बिसुंभर एकै ॥ नामु जपत अगनत अनेकै ॥ बेद पुरान सिंम्रिति सुधाख्यर ॥ कीने राम

नाम इक आख्यर ॥ किनका एक जिसु जीअ बसावै ॥ ता की महिमा गनी न आवै ॥ काँखी एकै दरस तुहारो ॥ नानक उन संगि मोहि उधारो ॥१॥ सुखमनी सुख अंम्रित प्रभ नामु ॥ भगत जना कै मनि बिस्राम ॥ रहाउ ॥ प्रभ कै सिमरनि गरभि न बसै ॥ प्रभ कै सिमरनि दूखु जमु नसै ॥ प्रभ कै सिमरनि कालु परहरै ॥ प्रभ कै सिमरनि दुसमनु टरै ॥ प्रभ सिमरत कछु बिघनु न लागै ॥ प्रभ कै सिमरनि अनदिनु जागै ॥ प्रभ कै सिमरनि भउ न बिआपै ॥ प्रभ कै सिमरनि दुखु न संतापै ॥ प्रभ का सिमरनु साध कै संगि ॥ सरब निधान नानक हरि रंगि ॥२॥ प्रभ कै सिमरनि रिधि सिधि नउ निधि ॥ प्रभ कै सिमरनि गिआनु

धिआनु ततु बुधि ॥ प्रभ कै सिमरनि जप तप पूजा ॥ प्रभ कै सिमरनि बिनसै दूजा ॥ प्रभ कै सिमरनि तीरथ इसनानी ॥ प्रभ कै सिमरनि दरगह मानी ॥ प्रभ कै सिमरनि होइ सु भला ॥ प्रभ कै सिमरनि सुफल फला ॥ से सिमरहि जिन आपि सिमराए ॥ नानक ता कै लागउ पाए ॥३॥ प्रभ का सिमरनु सभ ते ऊचा ॥ प्रभ कै सिमरनि उधरे मूचा ॥ प्रभ कै सिमरनि त्रिसना बुझै ॥ प्रभ कै सिमरनि सभु किछु सुझै ॥ प्रभ कै सिमरनि नाही जम त्रासा ॥ प्रभ कै सिमरनि पूरन आसा ॥ प्रभ कै सिमरनि मन की मलु जाइ ॥ अंम्रित नामु रिद माहि समाइ ॥ प्रभ जी बसहि साध की रसना ॥ नानक जन का दासनि दसना ॥४॥ प्रभ कउ सिमरहि से

धनवंते ॥ प्रभ कउ सिमरहि से पतिवंते ॥ प्रभ कउ सिमरहि से जन परवान ॥ प्रभ कउ सिमरहि से पुरख प्रधान ॥ प्रभ कउ सिमरहि सि बेमुहताजे ॥ प्रभ कउ सिमरहि सि सरब के राजे ॥ प्रभ कउ सिमरहि से सुखवासी ॥ प्रभ कउ सिमरहि सदा अबिनासी ॥ सिमरन ते लागे जिन आपि दइआला ॥ नानक जन की मंगै रवाला ॥५॥ प्रभ कउ सिमरहि से परउपकारी ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन सद बलिहारी ॥ प्रभ कउ सिमरहि से मुख सुहावे ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन सूखि बिहावै ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन आतमु जीता ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन निरमल रीता ॥ प्रभ कउ सिमरहि तिन अनद घनेरे ॥ प्रभ कउ सिमरहि बसहि

हरि नेरे ॥ संत क्रिपा ते अनदिनु जागि ॥
नानक सिमरनु पूरै भागि ॥६॥ प्रभ कै
सिमरनि कारज पूरे ॥ प्रभ कै सिमरनि
कबहु न झूरे ॥ प्रभ कै सिमरनि हरि
गुन बानी ॥ प्रभ कै सिमरनि सहजि
समानी ॥ प्रभ कै सिमरनि निहचल
आसनु ॥ प्रभ कै सिमरनि कमल
बिगासनु ॥ प्रभ कै सिमरनि अनहद
झुनकार ॥ सुखु प्रभ सिमरन का अंतु
न पार ॥ सिमरहि से जन जिन कउ
प्रभ मइआ ॥ नानक तिन जन सरनी
पइआ ॥७॥ हरि सिमरनु करि भगत
प्रगटाए ॥ हरि सिमरनि लगि बेद
उपाए ॥ हरि सिमरनि भए सिध जती
दाते ॥ हरि सिमरनि नीच चहु कुंट
जाते ॥ हरि सिमरनि धारी सभ धरना ॥
सिमरि सिमरि हरि कारन करना ॥ हरि

सिमरनि कीओ सगल अकारा ॥ हरि सिमरन महि आपि निरंकारा ॥ करि किरपा जिसु आपि बुझाइआ ॥ नानक गुरमुखि हरि सिमरनु तिनि पाइआ ॥८॥१॥

सलोकु ॥

दीन दरद दुख भंजना घटि घटि नाथ अनाथ ॥ सरणि तुम्हारी आइओ नानक के प्रभ साथ ॥१॥

असटपदी ॥

जह मात पिता सुत मीत न भाई ॥ मन ऊहा नामु तेरै संगि सहाई ॥ जह महा भइआन दूत जम दलै ॥ तह केवल नामु संगि तेरै चलै ॥ जह मुसकल होवै अति भारी ॥ हरि को नामु खिन माहि उधारी ॥ अनिक पुनहचरन करत नही तरै ॥ हरि को नामु कोटि पाप परहरै ॥

गुरमुखि नामु जपहु मन मेरे ॥ नानक पावहु सूख घनेरे ॥१॥ सगल स्रिसटि को राजा दुखीआ ॥ हरि का नामु जपत होइ सुखीआ ॥ लाख करोरी बंधुन परै ॥ हरि का नामु जपत निसतरै ॥ अनिक माइआ रंग तिख न बुझावै ॥ हरि का नामु जपत आघावै ॥ जिह मारगि इहु जात इकेला ॥ तह हरि नामु संगि होत सुहेला ॥ ऐसा नामु मन सदा धिआईऐ ॥ नानक गुरमुखि परम गति पाईऐ ॥२॥ छूटत नही कोटि लख बाही ॥ नामु जपत तह पारि पराही ॥अनिक बिघन जह आइ संघारै ॥ हरि का नामु ततकाल उधारै ॥ अनिक जोनि जनमै मरि जाम ॥ नामु जपत पावै बिस्राम ॥ हउ मैला मलु कबहु न धोवै ॥ हरि का नामु कोटि पाप खोवै ॥ ऐसा नामु जपहु मन रंगि ॥

नानक पाईऐ साध कै संगि ॥३॥ जिह मारग के गने जाहि न कोसा ॥ हरि का नामु ऊहा संगि तोसा ॥ जिह पैडै महा अंध गुबारा ॥ हरि का नामु संगि ऊजीआरा ॥ जहा पंथि तेरा को न सिञानू ॥ हरि का नामु तह नालि पछानू ॥ जह महा भइआन तपति बहु घाम ॥ तह हरि के नाम की तुम ऊपरि छाम ॥ जहा त्रिखा मन तुझु आकरखै ॥ तह नानक हरि हरि अंम्रितु बरखै ॥४॥ भगत जना की बरतनि नामु ॥ संत जना कै मनि बिस्रामु ॥ हरि का नामु दास की ओट ॥ हरि कै नामि उधरे जन कोटि ॥ हरि जसु करत संत दिनु राति ॥ हरि हरि अउखधु साध कमाति ॥ हरि जन कै हरि नामु निधानु ॥ पारब्रहमि जन कीनो दान ॥ मन तन रंगि रते रंग

एकै ॥ नानक जन कै बिरति बिबेकै ॥५॥
हरि का नामु जन कउ मुकति जुगति ॥
हरि कै नामि जन कउ त्रिपति भुगति ॥
हरि का नामु जन का रूप रंगु ॥ हरि
नामु जपत कब परै न भंगु ॥ हरि का
नामु जन की वडिआई ॥ हरि कै नामि
जन सोभा पाई ॥ हरि का नामु जन
कउ भोग जोग ॥ हरि नामु जपत कछु
नाहि बिओगु ॥ जनु राता हरि नाम की
सेवा ॥ नानक पूजै हरि हरि देवा ॥६॥
हरि हरि जन कै मालु खजीना ॥ हरि
धनु जन कउ आपि प्रभि दीना ॥ हरि
हरि जन कै ओट सताणी ॥ हरि प्रतापि
जन अवर न जाणी ॥ ओति पोति जन
हरि रसि राते ॥ सुंन समाधि नाम रस
माते ॥ आठ पहर जनु हरि हरि जपै ॥
हरि का भगतु प्रगट नही छपै ॥ हरि

की भगति मुकति बहु करे ॥ नानक जन संगि केते तरे ॥७॥ पारजातु इहु हरि को नाम ॥ कामधेन हरि हरि गुण गाम ॥ सभ ते ऊतम हरि की कथा ॥ नामु सुनत दरद दुख लथा ॥ नाम की महिमा संत रिद वसै ॥ संत प्रतापि दुरतु सभु नसै ॥ संत का संगु वडभागी पाईऐ ॥ संत की सेवा नामु धिआईऐ ॥ नाम तुलि कछु अवरु न होइ ॥ नानक गुरमुखि नामु पावै जनु कोइ ॥८॥२॥

सलोकु ॥

बहु सासत्र बहु सिम्रिती पेखे सरब ढढोलि ॥ पूजसि नाही हरि हरे नानक नाम अमोल ॥१॥

असटपदी ॥

जाप ताप गिआन सभि धिआन ॥ खट सासत्र सिम्रिति वखिआन ॥ जोग

अभिआस करम ध्रम किरिआ ॥ सगल तिआगि बन मधे फिरिआ ॥ अनिक प्रकार कीए बहु जतना ॥ पुंन दान होमे बहु रतना ॥ सरीरु कटाइ होमै करि राती ॥ वरत नेम करै बहु भाती ॥ नही तुलि राम नाम बीचार ॥ नानक गुरमुखि नामु जपीऐ इक बार ॥१॥ नउ खंड प्रिथमी फिरै चिरु जीवै ॥ महा उदासु तपीसरु थीवै ॥ अगनि माहि होमत परान ॥ कनिक अस्व हैवर भूमि दान ॥ निउली करम करै बहु आसन ॥ जैन मारग संजम अति साधन ॥ निमख निमख करि सरीरु कटावै ॥ तउ भी हउमै मैलु न जावै ॥ हरि के नाम समसरि कछु नाहि ॥ नानक गुरमुखि नामु जपत गति पाहि ॥२॥ मन कामना तीरथ देह छुटै ॥ गरबु गुमानु न मन

ते हुटै ॥ सोच करै दिनसु अरु राति ॥ मन की मैलु न तन ते जाति ॥ इसु देही कउ बहु साधना करै ॥ मन ते कबहू न बिखिआ टरै ॥ जलि धोवै बहु देह अनीति ॥ सुध कहा होइ काची भीति ॥ मन हरि के नाम की महिमा ऊच ॥ नानक नामि उधरे पतित बहु मूच ॥३॥ बहुतु सिआणप जम का भउ बिआपै ॥ अनिक जतन करि त्रिसन ना ध्रापै ॥ भेख अनेक अगनि नही बुझै ॥ कोटि उपाव दरगह नही सिझै ॥ छूटसि नाही ऊभ पइआलि ॥ मोहि बिआपहि माइआ जालि ॥ अवर करतूति सगली जमु डानै ॥ गोविंद भजन बिनु तिलु नही मानै ॥ हरि का नामु जपत दुखु जाइ ॥ नानक बोलै सहजि सुभाइ ॥४॥ चारि पदारथ जे को मागै ॥ साध जना की

सेवा लागै ॥ जे को आपुना दूखु मिटावै ॥ हरि हरि नामु रिदै सद गावै ॥ जे को अपुनी सोभा लोरै ॥ साधसंगि इह हउमै छोरै ॥ जे को जनम मरण ते डरै ॥ साध जना की सरनी परै ॥ जिसु जन कउ प्रभ दरस पिआसा ॥ नानक ता कै बलि बलि जासा ॥५॥ सगल पुरख महि पुरखु प्रधानु ॥ साधसंगि जा का मिटै अभिमानु ॥ आपस कउ जो जाणै नीचा ॥ सोऊ गनीऐ सभ ते ऊचा ॥ जा का मनु होइ सगल की रीना ॥ हरि हरि नामु तिनि घटि घटि चीना ॥ मन अपुने ते बुरा मिटाना ॥ पेखै सगल स्रिसटि साजना ॥ सूख दूख जन सम द्रिसटेता ॥ नानक पाप पुंन नही लेपा ॥६॥ निरधन कउ धनु तेरो नाउ ॥ निथावे कउ नाउ तेरा

थाउ ॥ निमाने कउ प्रभ तेरो मानु ॥ सगल घटा कउ देवहु दानु ॥ करन करावनहार सुआमी ॥ सगल घटा के अंतरजामी ॥ अपनी गति मिति जानहु आपे ॥ आपन संगि आपि प्रभ राते ॥ तुम्हरी उसतति तुम ते होइ ॥ नानक अवरु न जानसि कोइ ॥७॥ सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥ हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥ सगल क्रिआ महि ऊतम किरिआ ॥ साधसंगि दुरमति मलु हिरिआ ॥ सगल उदम महि उदमु भला ॥ हरि का नामु जपहु जीअ सदा ॥ सगल बानी महि अंम्रित बानी ॥ हरि को जसु सुनि रसन बखानी ॥ सगल थान ते ओहु ऊतम थानु ॥ नानक जिह घटि वसै हरि नामु ॥८॥३॥

सलोकु ॥

निरगुनीआर इआनिआ सो प्रभु सदा समालि ॥ जिनि कीआ तिसु चीति रखु नानक निबही नालि ॥१॥

असटपदी ॥

रमईआ के गुन चेति परानी ॥ कवन मूल ते कवन द्रिसटानी ॥ जिनि तूं साजि सवारि सीगारिआ ॥ गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥ बार बिवसथा तुझहि पिआरै दूध ॥ भरि जोबन भोजन सुख सूध ॥ बिरधि भइआ ऊपरि साक सैन ॥ मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन ॥ इहु निरगुनु गुनु कछू न बूझै ॥ बखसि लेहु तउ नानक सीझै ॥१॥ जिह प्रसादि धर ऊपरि सुखि बसहि ॥ सुत भ्रात मीत बनिता संगि हसहि ॥ जिह प्रसादि पीवहि सीतल जला ॥ सुखदाई पवनु

पावकु अमुला ॥ जिह प्रसादि भोगहि सभि रसा ॥ सगल समग्री संगि साथि बसा ॥ दीने हसत पाव करन नेत्र रसना ॥ तिसहि तिआगि अवर संगि रचना ॥ ऐसे दोख मूड़ अंध बिआपे ॥ नानक काढि लेहु प्रभ आपे ॥२॥ आदि अंति जो राखनहारु ॥ तिस सिउ प्रीति न करै गवारु ॥ जा की सेवा नव निधि पावै ॥ ता सिउ मूड़ा मनु नही लावै ॥ जो ठाकुरु सद सदा हजूरे ॥ ता कउ अंधा जानत दूरे ॥ जा की टहल पावै दरगह मानु ॥ तिसहि बिसारै मुगधु अजानु ॥ सदा सदा इहु भूलनहारु ॥ नानक राखनहारु अपारु ॥३॥ रतनु तिआगि कउडी संगि रचै ॥ साचु छोडि झूठ संगि मचै ॥ जो छडना सु असथिरु करि मानै ॥ जो होवनु सो दूरि परानै ॥

छोडि जाइ तिस का स्रमु करै ॥ संगि सहाई तिसु परहरै ॥ चंदन लेपु उतारै धोइ ॥ गरधब प्रीति भसम संगि होइ ॥ अंध कूप महि पतित बिकराल ॥ नानक काढि लेहु प्रभ दइआल ॥४॥ करतूति पसू की मानस जाति ॥ लोक पचारा करै दिनु राति ॥ बाहरि भेख अंतरि मलु माइआ ॥ छपसि नाहि कछु करै छपाइआ ॥ बाहरि गिआन धिआन इसनान ॥ अंतरि बिआपै लोभु सुआनु ॥ अंतरि अगनि बाहरि तनु सुआह ॥ गलि पाथर कैसे तरै अथाह ॥ जा कै अंतरि बसै प्रभु आपि ॥ नानक ते जन सहजि समाति ॥५॥ सुनि अंधा कैसे मारगु पावै ॥ करु गहि लेहु ओड़ि निबहावै ॥ कहा बुझारति बूझै डोरा ॥ निसि कहीऐ तउ समझै भोरा ॥ कहा बिसनपद गावै

गुंग ॥ जतन करै तउ भी सुर भंग ॥ कह पिंगुल परबत पर भवन ॥ नही होत ऊहा उसु गवन ॥ करतार करुणामै दीनु बेनती करै ॥ नानक तुमरी किरपा तरै ॥६॥ संगि सहाई सु आवै न चीति ॥ जो बैराई ता सिउ प्रीति ॥ बलूआ के ग्रिह भीतरि बसै ॥ अनद केल माइआ रंगि रसै ॥ द्रिड़ु करि मानै मनहि प्रतीति ॥ कालु न आवै मूड़े चीति ॥ बैर बिरोध काम क्रोध मोह ॥ झूठ बिकार महा लोभ ध्रोह ॥ इआहू जुगति बिहाने कई जनम ॥ नानक राखि लेहु आपन करि करम ॥७॥ तू ठाकुरु तुम पहि अरदासि ॥ जीउ पिंडु सभु तेरी रासि ॥ तुम मात पिता हम बारिक तेरे ॥ तुमरी क्रिपा महि सूख घनेरे ॥ कोइ न जानै तुमरा अंतु ॥ ऊचे ते ऊचा भगवंत ॥

सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी ॥ तुम ते होइ सु आगिआकारी ॥ तुमरी गति मिति तुम ही जानी ॥ नानक दास सदा कुरबानी ॥८॥४॥

सलोकु ॥

देनहारु प्रभ छोडि कै लागहि आन सुआइ ॥ नानक कहू न सीझई बिनु नावै पति जाइ ॥१॥

असटपदी ॥

दस बसतू ले पाछै पावै ॥ एक बसतु कारनि बिखोटि गवावै ॥ एक भी न देइ दस भी हिरि लेइ ॥ तउ मूड़ा कहु कहा करेइ ॥ जिसु ठाकुर सिउ नाही चारा ॥ ता कउ कीजै सद नमसकारा ॥ जा कै मनि लागा प्रभु मीठा ॥ सरब सूख ताहू मनि वूठा ॥ जिसु जन अपना हुकमु मनाइआ ॥ सरब थोक नानक तिनि

पाइआ ॥१॥ अगनत साहु अपनी दे रासि ॥ खात पीत बरतै अनद उलासि ॥ अपुनी अमान कछु बहुरि साहु लेइ ॥ अगिआनी मनि रोसु करेइ ॥ अपनी परतीति आप ही खोवै ॥ बहुरि उस का बिस्वासु न होवै ॥ जिस की बसतु तिसु आगै राखै ॥ प्रभ की आगिआ मानै माथै ॥ उस ते चउगुन करै निहालु ॥ नानक साहिबु सदा दइआलु ॥२॥ अनिक भाति माइआ के हेत ॥ सरपर होवत जानु अनेत ॥ बिरख की छाइआ सिउ रंगु लावै ॥ ओह बिनसै उहु मनि पछुतावै ॥ जो दीसै सो चालनहारु ॥ लपटि रहिओ तह अंध अंधारु ॥ बटाउ सिउ जो लावै नेह ॥ ता कउ हाथि न आवै केह ॥ मन हरि के नाम की प्रीति सुखदाई ॥ करि

किरपा नानक आपि लए लाई ॥३॥
मिथिआ तनु धनु कुटंबु सबाइआ ॥
मिथिआ हउमै ममता माइआ ॥ मिथिआ
राज जोबन धन माल ॥ मिथिआ काम
क्रोध बिकराल ॥ मिथिआ रथ हसती
अस्व बसत्रा ॥ मिथिआ रंग संगि माइआ
पेखि हसता ॥ मिथिआ ध्रोह मोह
अभिमानु ॥ मिथिआ आपस ऊपरि करत
गुमानु ॥ असथिरु भगति साध की
सरन ॥ नानक जपि जपि जीवै हरि के
चरन ॥४॥ मिथिआ स्रवन पर निंदा
सुनहि ॥ मिथिआ हसत पर दरब कउ
हिरहि ॥ मिथिआ नेत्र पेखत पर त्रिअ
रूपाद ॥ मिथिआ रसना भोजन अन
स्वाद ॥ मिथिआ चरन पर बिकार कउ
धावहि ॥ मिथिआ मन पर लोभ
लुभावहि ॥ मिथिआ तन नही

परउपकारा ॥ मिथिआ बासु लेत बिकारा ॥ बिनु बूझे मिथिआ सभ भए ॥ सफल देह नानक हरि हरि नाम लए ॥५॥ बिरथी साकत की आरजा ॥ साच बिना कह होवत सूचा ॥ बिरथा नाम बिना तनु अंध ॥ मुखि आवत ता कै दुरगंध ॥ बिनु सिमरन दिनु रैनि ब्रिथा बिहाइ ॥ मेघ बिना जिउ खेती जाइ ॥ गोबिद भजन बिनु ब्रिथे सभ काम ॥ जिउ किरपन के निरारथ दाम ॥ धंनि धंनि ते जन जिह घटि बसिओ हरि नाउ ॥ नानक ता कै बलि बलि जाउ ॥६॥ रहत अवर कछु अवर कमावत ॥ मनि नही प्रीति मुखहु गंढ लावत ॥ जाननहार प्रभू परबीन ॥ बाहरि भेख न काहू भीन ॥ अवर उपदेसै आपि न करै ॥ आवत जावत

जनमै मरै ॥ जिस कै अंतरि बसै निरंकारु ॥ तिस की सीख तरै संसारु ॥ जो तुम भाने तिन प्रभु जाता ॥ नानक उन जन चरन पराता ॥७॥ करउ बेनती पारब्रहमु सभु जानै ॥ अपना कीआ आपहि मानै ॥ आपहि आप आपि करत निबेरा ॥ किसै दूरि जनावत किसै बुझावत नेरा ॥ उपाव सिआनप सगल ते रहत ॥ सभु कछु जानै आतम की रहत ॥ जिसु भावै तिसु लए लड़ि लाइ ॥ थान थनंतरि रहिआ समाइ ॥ सो सेवकु जिसु किरपा करी ॥ निमख निमख जपि नानक हरी ॥८॥५॥

सलोकु ॥

काम क्रोध अरु लोभ मोह बिनसि जाइ अहंमेव ॥ नानक प्रभ सरणागती करि प्रसादु गुरदेव ॥१॥

असटपदी ॥

जिह प्रसादि छतीह अंम्रित खाहि ॥ तिसु ठाकुर कउ रखु मन माहि ॥ जिह प्रसादि सुगंधत तनि लावहि ॥ तिस कउ सिमरत परम गति पावहि ॥ जिह प्रसादि बसहि सुख मंदरि ॥ तिसहि धिआइ सदा मन अंदरि ॥ जिह प्रसादि ग्रिह संगि सुख बसना ॥ आठ पहर सिमरहु तिसु रसना ॥ जिह प्रसादि रंग रस भोग ॥ नानक सदा धिआईऐ धिआवन जोग ॥१॥

जिह प्रसादि पाट पटंबर हढावहि ॥ तिसहि तिआगि कत अवर लुभावहि ॥ जिह प्रसादि सुखि सेज सोईजै ॥ मन आठ पहर ता का जसु गावीजै ॥ जिह प्रसादि तुझु सभु कोऊ मानै ॥ मुखि ता को जसु रसन बखानै ॥ जिह प्रसादि तेरो

रहता धरमु ॥ मन सदा धिआइ केवल पारब्रहमु ॥ प्रभ जी जपत दरगह मानु पावहि ॥ नानक पति सेती घरि जावहि ॥२॥ जिह प्रसादि आरोग कंचन देही ॥ लिव लावहु तिसु राम सनेही ॥ जिह प्रसादि तेरा ओला रहत ॥ मन सुखु पावहि हरि हरि जसु कहत ॥ जिह प्रसादि तेरे सगल छिद्र ढाके ॥ मन सरनी परु ठाकुर प्रभ ता कै ॥ जिह प्रसादि तुझु को न पहूचै ॥ मन सासि सासि सिमरहु प्रभ ऊचे ॥ जिह प्रसादि पाई द्रुलभ देह ॥ नानक ता की भगति करेह ॥३॥ जिह प्रसादि आभूखन पहिरीजै ॥ मन तिसु सिमरत किउ आलसु कीजै ॥ जिह प्रसादि अस्व हसति असवारी ॥ मन तिसु प्रभ कउ कबहू न बिसारी ॥ जिह प्रसादि बाग मिलख धना ॥ राखु परोइ प्रभु अपुने

मना ॥ जिनि तेरी मन बनत बनाई ॥
ऊठत बैठत सद तिसहि धिआई ॥ तिसहि
धिआइ जो एक अलखै ॥ ईहा ऊहा
नानक तेरी रखै ॥४॥ जिह प्रसादि करहि
पुंन बहु दान ॥ मन आठ पहर करि तिस
का धिआन ॥ जिह प्रसादि तू आचार
बिउहारी ॥ तिसु प्रभ कउ सासि सासि
चितारी ॥ जिह प्रसादि तेरा सुंदर रूपु ॥
सो प्रभु सिमरहु सदा अनूपु ॥ जिह
प्रसादि तेरी नीकी जाति ॥ सो प्रभु
सिमरि सदा दिन राति ॥ जिह प्रसादि
तेरी पति रहै ॥ गुर प्रसादि नानक जसु
कहै ॥५॥ जिह प्रसादि सुनहि करन
नाद ॥ जिह प्रसादि पेखहि बिसमाद ॥
जिह प्रसादि बोलहि अंम्रित रसना ॥ जिह
प्रसादि सुखि सहजे बसना ॥ जिह
प्रसादि हसत कर चलहि ॥ जिह प्रसादि

संपूरन फलहि ॥ जिह प्रसादि परम गति पावहि ॥ जिह प्रसादि सुखि सहजि समावहि ॥ ऐसा प्रभु तिआगि अवर कत लागहु ॥ गुर प्रसादि नानक मनि जागहु ॥६॥ जिह प्रसादि तूं प्रगटु संसारि ॥ तिसु प्रभ कउ मूलि न मनहु बिसारि ॥ जिह प्रसादि तेरा परतापु ॥ रे मन मूड़ तू ता कउ जापु ॥ जिह प्रसादि तेरे कारज पूरे ॥ तिसहि जानु मन सदा हजूरे ॥ जिह प्रसादि तूं पावहि साचु ॥ रे मन मेरे तूं ता सिउ राचु ॥ जिह प्रसादि सभ की गति होइ ॥ नानक जापु जपै जपु सोइ ॥७॥ आपि जपाए जपै सो नाउ ॥ आपि गावाए सु हरि गुन गाउ ॥ प्रभ किरपा ते होइ प्रगासु ॥ प्रभू दइआ ते कमल बिगासु ॥ प्रभ सुप्रसंन बसै मनि सोइ ॥ प्रभ दइआ ते मति ऊतम होइ ॥

सरब निधान प्रभ तेरी मइआ ॥ आपहु कछू न किनहू लइआ ॥ जितु जितु लावहु तितु लगहि हरि नाथ ॥ नानक इन कै कछू न हाथ ॥८॥६॥

सलोकु ॥

अगम अगाधि पारब्रहमु सोइ ॥ जो जो कहै सु मुकता होइ ॥ सुनि मीता नानकु बिनवंता ॥ साध जना की अचरज कथा ॥१॥

असटपदी ॥

साध कै संगि मुख ऊजल होत ॥ साधसंगि मलु सगली खोत ॥ साध कै संगि मिटै अभिमानु ॥ साध कै संगि प्रगटै सु गिआनु ॥ साध कै संगि बुझै प्रभु नेरा ॥ साधसंगि सभु होत निबेरा ॥ साध कै संगि पाए नाम रतनु ॥ साध कै संगि एक ऊपरि जतनु ॥ साध की

महिमा बरनै कउनु प्रानी ॥ नानक साध की सोभा प्रभ माहि समानी ॥१॥ साध कै संगि अगोचरु मिलै ॥ साध कै संगि सदा परफुलै ॥ साध कै संगि आवहि बसि पंचा ॥ साधसंगि अंम्रित रसु भुंचा ॥ साधसंगि होइ सभ की रेन ॥ साध कै संगि मनोहर बैन ॥ साध कै संगि न कतहूं धावै ॥ साधसंगि असथिति मनु पावै ॥ साध कै संगि माइआ ते भिंन ॥ साधसंगि नानक प्रभ सुप्रसंन ॥२॥ साधसंगि दुसमन सभि मीत ॥ साधू कै संगि महा पुनीत ॥ साधसंगि किस सिउ नही बैरु ॥ साध कै संगि न बीगा पैरु ॥ साध कै संगि नाही को मंदा ॥ साधसंगि जाने परमानंदा ॥ साध कै संगि नाही हउ तापु ॥ साध कै संगि तजै सभु आपु ॥

आपे जानै साध बडाई ॥ नानक साध प्रभू बनि आई ॥३॥ साध कै संगि न कबहू धावै ॥ साध कै संगि सदा सुखु पावै ॥ साधसंगि बसतु अगोचर लहै ॥ साधू कै संगि अजरु सहै ॥ साध कै संगि बसै थानि ऊचै ॥ साधू कै संगि महलि पहूचै ॥ साध कै संगि द्रिड़ै सभि धरम ॥ साध कै संगि केवल पारब्रहम ॥ साध कै संगि पाए नाम निधान ॥ नानक साधू कै कुरबान ॥४॥ साध कै संगि सभ कुल उधारै ॥ साधसंगि साजन मीत कुटंब निसतारै ॥ साधू कै संगि सो धनु पावै ॥ जिसु धन ते सभु को वरसावै ॥ साधसंगि धरम राइ करे सेवा ॥ साध कै संगि सोभा सुरदेवा ॥ साधू कै संगि पाप पलाइन ॥ साधसंगि अंम्रित गुन गाइन ॥ साध कै संगि स्रब थान गंमि ॥

नानक साध कै संगि सफल जनंम ॥५॥
साध कै संगि नही कछु घाल ॥ दरसनु
भेटत होत निहाल ॥ साध कै संगि
कलूखत हरै ॥ साध कै संगि नरक
परहरै ॥ साध कै संगि ईहा ऊहा
सुहेला ॥ साधसंगि बिछुरत हरि मेला ॥
जो इछै सोई फलु पावै ॥ साध कै संगि
न बिरथा जावै ॥ पारब्रहमु साध रिद
बसै ॥ नानक उधरै साध सुनि रसै ॥६॥
साध कै संगि सुनउ हरि नाउ ॥
साधसंगि हरि के गुन गाउ ॥ साध कै
संगि न मन ते बिसरै ॥ साधसंगि सरपर
निसतरै ॥ साध कै संगि लगै प्रभु
मीठा ॥ साधू कै संगि घटि घटि डीठा ॥
साधसंगि भए आगिआकारी ॥ साधसंगि
गति भई हमारी ॥ साध कै संगि मिटे
सभि रोग ॥ नानक साध भेटे संजोग

॥७॥ साध की महिमा बेद न जानहि ॥
जेता सुनहि तेता बखिआनहि ॥ साध
की उपमा तिहु गुण ते दूरि ॥ साध की
उपमा रही भरपूरि ॥ साध की सोभा
का नाही अंत ॥ साध की सोभा सदा
बेअंत ॥ साध की सोभा ऊच ते ऊची ॥
साध की सोभा मूच ते मूची ॥ साध
की सोभा साध बनि आई ॥ नानक साध
प्रभ भेदु न भाई ॥८॥७॥

सलोकु ॥

मनि साचा मुखि साचा सोइ ॥
अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ ॥ नानक
इह लछण ब्रहम गिआनी होइ ॥१॥

असटपदी ॥

ब्रहम गिआनी सदा निरलेप ॥ जैसे
जल महि कमल अलेप ॥ ब्रहम गिआनी
सदा निरदोख ॥ जैसे सुरु सरब कउ

सोख ॥ ब्रहम गिआनी कै द्रिसटि समानि ॥ जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान ॥ ब्रहम गिआनी कै धीरजु एक ॥ जिउ बसुधा कोऊ खोदै कोऊ चंदन लेप ॥ ब्रहम गिआनी का इहै गुनाउ ॥ नानक जिउ पावक का सहज सुभाउ ॥१॥ ब्रहम गिआनी निरमल ते निरमला ॥ जैसे मैलु न लागै जला ॥ ब्रहम गिआनी कै मनि होइ प्रगासु ॥ जैसे धर ऊपरि आकासु ॥ ब्रहम गिआनी कै मित्र सत्रु समानि ॥ ब्रहम गिआनी कै नाही अभिमान ॥ ब्रहम गिआनी ऊच ते ऊचा ॥ मनि अपनै है सभ ते नीचा ॥ ब्रहम गिआनी से जन भए ॥ नानक जिन प्रभु आपि करेइ ॥२॥ ब्रहम गिआनी सगल की रीना ॥ आतम रसु ब्रहम गिआनी चीना ॥ ब्रहम गिआनी की सभ

ऊपरि मइआ ॥ ब्रहम गिआनी ते कछु बुरा न भइआ ॥ ब्रहम गिआनी सदा समदरसी ॥ ब्रहम गिआनी की द्रिसटि अंम्रितु बरसी ॥ ब्रहम गिआनी बंधन ते मुकता ॥ ब्रहम गिआनी की निरमल जुगता ॥ ब्रहम गिआनी का भोजनु गिआन ॥ नानक ब्रहम गिआनी का ब्रहम धिआनु ॥३॥ ब्रहम गिआनी एक ऊपरि आस ॥ ब्रहम गिआनी का नही बिनास ॥ ब्रहम गिआनी कै गरीबी समाहा ॥ ब्रहम गिआनी परउपकार उमाहा ॥ ब्रहम गिआनी कै नाही धंधा ॥ ब्रहम गिआनी ले धावतु बंधा ॥ ब्रहम गिआनी कै होइ सु भला ॥ ब्रहम गिआनी सुफल फला ॥ ब्रहम गिआनी संगि सगल उधारु ॥ नानक ब्रहम गिआनी जपै सगल संसारु ॥४॥

ब्रहम गिआनी कै एकै रंग ॥ ब्रहम गिआनी कै बसै प्रभु संग ॥ ब्रहम गिआनी कै नामु आधारु ॥ ब्रहम गिआनी कै नामु परवारु ॥ ब्रहम गिआनी सदा सद जागत ॥ ब्रहम गिआनी अहंबुधि तिआगत ॥ ब्रहम गिआनी कै मनि परमानंद ॥ ब्रहम गिआनी कै घरि सदा अनंद ॥ ब्रहम गिआनी सुख सहज निवास ॥ नानक ब्रहम गिआनी का नही बिनास ॥५॥ ब्रहम गिआनी ब्रहम का बेता ॥ ब्रहम गिआनी एक संगि हेता ॥ ब्रहम गिआनी कै होइ अचिंत ॥ ब्रहम गिआनी का निरमल मंत ॥ ब्रहम गिआनी जिसु करै प्रभु आपि ॥ ब्रहम गिआनी का बड परताप ॥ ब्रहम गिआनी का दरसु बडभागी पाईऐ ॥ ब्रहम गिआनी कउ

बलि बलि जाईऐ ॥ ब्रहम गिआनी कउ खोजहि महेसुर ॥ नानक ब्रहम गिआनी आपि परमेसुर ॥६॥ ब्रहम गिआनी की कीमति नाहि ॥ ब्रहम गिआनी कै सगल मन माहि ॥ ब्रहम गिआनी का कउन जानै भेदु ॥ ब्रहम गिआनी कउ सदा अदेसु ॥ ब्रहम गिआनी का कथिआ न जाइ अधाखयरु ॥ ब्रहम गिआनी सरब का ठाकुरु ॥ ब्रहम गिआनी की मिति कउनु बखानै ॥ ब्रहम गिआनी की गति ब्रहम गिआनी जानै ॥ ब्रहम गिआनी का अंतु न पारु ॥ नानक ब्रहम गिआनी कउ सदा नमसकारु ॥७॥ ब्रहम गिआनी सभ स्रिसटि का करता ॥ ब्रहम गिआनी सद जीवै नही मरता ॥ ब्रहम गिआनी मुकति जुगति जीअ का दाता ॥ ब्रहम गिआनी पूरन पुरखु बिधाता ॥ ब्रहम

गिआनी अनाथ का नाथु ॥ ब्रहम गिआनी का सभ ऊपरि हाथु ॥ ब्रहम गिआनी का सगल अकारु ॥ ब्रहम गिआनी आपि निरंकारु ॥ ब्रहम गिआनी की सोभा ब्रहम गिआनी बनी ॥ नानक ब्रहम गिआनी सरब का धनी ॥८॥८॥

सलोकु ॥

उरि धारै जो अंतरि नामु ॥ सरब मै पेखै भगवानु ॥ निमख निमख ठाकुर नमसकारै ॥ नानक ओहु अपरसु सगल निसतारै ॥१॥

असटपदी ॥

मिथिआ नाही रसना परस ॥ मन महि प्रीति निरंजन दरस ॥ पर त्रिअ रूपु न पेखै नेत्र ॥ साध की टहल संतसंगि हेत ॥ करन न सुनै काहू की निंदा ॥ सभ ते जानै आपस कउ मंदा ॥ गुर

प्रसादि बिखिआ परहरै ॥ मन की बासना मन ते टरै ॥ इंद्रीजित पंच दोख ते रहत ॥ नानक कोटि मधे को ऐसा अपरस ॥१॥ बैसनो सो जिसु ऊपरि सुप्रसंन ॥ बिसन की माइआ ते होइ भिंन ॥ करम करत होवै निहकरम ॥ तिसु बैसनो का निरमल धरम ॥ काहू फल की इछा नही बाछै ॥ केवल भगति कीरतन संगि राचै ॥ मन तन अंतरि सिमरन गोपाल ॥ सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥ आपि द्रिड़ै अवरह नामु जपावै ॥ नानक ओहु बैसनो परम गति पावै ॥२॥ भगउती भगवंत भगति का रंगु ॥ सगल तिआगै दुसट का संगु ॥ मन ते बिनसै सगला भरमु ॥ करि पूजै सगल पारब्रहमु ॥ साधसंगि पापा मलु खोवै ॥ तिसु भगउती की मति ऊतम

होवै ॥ भगवंत की टहल करै नित नीति ॥ मनु तनु अरपै बिसन परीति ॥ हरि के चरन हिरदै बसावै ॥ नानक ऐसा भगउती भगवंत कउ पावै ॥३॥ सो पंडितु जो मनु परबोधै ॥ राम नामु आतम महि सोधै ॥ राम नाम सारु रसु पीवै ॥ उसु पंडित कै उपदेसि जगु जीवै ॥ हरि की कथा हिरदै बसावै ॥ सो पंडितु फिरि जोनि न आवै ॥ बेद पुरान सिम्रिति बूझै मूल ॥ सूखम महि जानै असथूलु ॥ चहु वरना कउ दे उपदेसु ॥ नानक उसु पंडित कउ सदा अदेसु ॥४॥ बीज मंत्रु सरब को गिआनु ॥ चहु वरना महि जपै कोउ नामु ॥ जो जो जपै तिस की गति होइ ॥ साधसंगि पावै जनु कोइ ॥ करि किरपा अंतरि उर धारै ॥ पसु प्रेत मुघद पाथर

कउ तारै ॥ सरब रोग का अउखदु नामु ॥ कलिआण रूप मंगल गुण गाम ॥ काहू जुगति कितै न पाईऐ धरमि ॥ नानक तिसु मिलै जिसु लिखिआ धुरि करमि ॥५॥ जिस कै मनि पारब्रहम का निवासु ॥ तिस का नामु सति रामदासु ॥ आतम रामु तिसु नदरी आइआ ॥ दास दसंतण भाइ तिनि पाइआ ॥ सदा निकटि निकटि हरि जानु ॥ सो दासु दरगह परवानु ॥ अपुने दास कउ आपि किरपा करै ॥ तिसु दास कउ सभ सोझी परै ॥ सगल संगि आतम उदासु ॥ ऐसी जुगति नानक रामदासु ॥६॥ प्रभ की आगिआ आतम हितावै ॥ जीवन मुकति सोऊ कहावै ॥ तैसा हरखु तैसा उसु सोगु ॥ सदा अनंदु तह नही बिओगु ॥ तैसा सुवरनु तैसी

उसु माटी ॥ तैसा अंम्रितु तैसी बिखु खाटी ॥ तैसा मानु तैसा अभिमानु ॥ तैसा रंकु तैसा राजानु ॥ जो वरताए साई जुगति ॥ नानक ओहु पुरखु कहीऐ जीवन मुकति ॥७॥ पारब्रहम के सगले ठाउ ॥ जितु जितु घरि राखै तैसा तिन नाउ ॥ आपे करन करावन जोगु ॥ प्रभ भावै सोई फुनि होगु ॥ पसरिओ आपि होइ अनत तरंग ॥ लखे न जाहि पारब्रहम के रंग ॥ जैसी मति देइ तैसा परगास ॥ पारब्रहमु करता अबिनास ॥ सदा सदा सदा दइआल ॥ सिमरि सिमरि नानक भए निहाल ॥८॥६॥

सलोकु ॥

उसतति करहि अनेक जन अंतु न पारावार ॥ नानक रचना प्रभि रची बहु बिधि अनिक प्रकार ॥१॥

असटपदी ॥

कई कोटि होए पूजारी ॥ कई कोटि आचार बिउहारी ॥ कई कोटि भए तीरथ वासी ॥ कई कोटि बन भ्रमहि उदासी ॥ कई कोटि बेद के स्रोते ॥ कई कोटि तपीसुर होते ॥ कई कोटि आतम धिआनु धारहि ॥ कई कोटि कबि काबि बीचारहि ॥ कई कोटि नवतन नाम धिआवहि ॥ नानक करते का अंतु न पावहि ॥१॥ कई कोटि भए अभिमानी ॥ कई कोटि अंध अगिआनी ॥ कई कोटि किरपन कठोर ॥ कई कोटि अभिग आतम निकोर ॥ कई कोटि पर दरब कउ हिरहि ॥ कई कोटि पर दूखना करहि ॥ कई कोटि माइआ स्रम माहि ॥ कई कोटि परदेस भ्रमाहि ॥ जितु जितु लावहु तितु तितु लगना ॥ नानक करते

की जानै करता रचना ॥२॥ कई कोटि सिध जती जोगी ॥ कई कोटि राजे रस भोगी ॥ कई कोटि पंखी सरप उपाए ॥ कई कोटि पाथर बिरख निपजाए ॥ कई कोटि पवण पाणी बैसंतर ॥ कई कोटि देस भू मंडल ॥ कई कोटि ससीअर सूर नखयत्र ॥ कई कोटि देव दानव इंद्र सिरि छत्र ॥ सगल समग्री अपनै सूति धारै ॥ नानक जिसु जिसु भावै तिसु तिसु निसतारै ॥३॥ कई कोटि राजस तामस सातक ॥ कई कोटि बेद पुरान सिम्रिति अरु सासत ॥ कई कोटि कीए रतन समुद ॥ कई कोटि नाना प्रकार जंत ॥ कई कोटि कीए चिर जीवे ॥ कई कोटि गिरी मेर सुवरन थीवे ॥ कई कोटि जखय किंनर पिसाच ॥ कई कोटि भूत प्रेत सूकर म्रिगाच ॥ सभ ते नेरै सभहू

ते दूरि ॥ नानक आपि अलिपतु रहिआ भरपूरि ॥४॥ कई कोटि पाताल के वासी ॥ कई कोटि नरक सुरग निवासी ॥ कई कोटि जनमहि जीवहि मरहि ॥ कई कोटि बहु जोनी फिरहि ॥ कई कोटि बैठत ही खाहि ॥ कई कोटि घालहि थकि पाहि ॥ कई कोटि कीए धनवंत ॥ कई कोटि माइआ महि चिंत ॥ जह जह भाणा तह तह राखे ॥ नानक सभु किछु प्रभ कै हाथे ॥५॥ कई कोटि भए बैरागी ॥ राम नाम संगि तिनि लिव लागी ॥ कई कोटि प्रभ कउ खोजंते ॥ आतम महि पारब्रहमु लहंते ॥ कई कोटि दरसन प्रभ पिआस ॥ तिन कउ मिलिओ प्रभु अबिनास ॥ कई कोटि मागहि सतसंगु ॥ पारब्रहम तिन लागा रंगु ॥ जिन कउ होए आपि

सुप्रसंन ॥ नानक ते जन सदा धनि धंनि ॥६॥ कई कोटि खाणी अरु खंड ॥ कई कोटि अकास ब्रहमंड ॥ कई कोटि होए अवतार ॥ कई जुगति कीनो बिसथार ॥ कई बार पसरिओ पासार ॥ सदा सदा इकु एकंकार ॥ कई कोटि कीने बहु भाति ॥ प्रभ ते होए प्रभ माहि समाति ॥ ता का अंतु न जानै कोइ ॥ आपे आपि नानक प्रभु सोइ ॥७॥ कई कोटि पारब्रहम के दास ॥ तिन होवत आतम परगास ॥ कई कोटि तत के बेते ॥ सदा निहारहि एको नेत्रे ॥ कई कोटि नाम रसु पीवहि ॥ अमर भए सद सद ही जीवहि ॥ कई कोटि नाम गुन गावहि ॥ आतम रसि सुखि सहजि समावहि ॥ अपुने जन कउ सासि सासि समारे ॥

नानक ओइ परमेसुर के पिआरे ॥८॥१०॥

सलोकु ॥

करण कारण प्रभु एकु है दूसर नाही कोइ ॥ नानक तिसु बलिहारणै जलि थलि महीअलि सोइ ॥१॥

असटपदी ॥

करन करावन करनै जोगु ॥ जो तिसु भावै सोई होगु ॥ खिन महि थापि उथापनहारा ॥ अंतु नही किछु पारावारा ॥ हुकमे धारि अधर रहावै ॥ हुकमे उपजै हुकमि समावै ॥ हुकमे ऊच नीच बिउहार ॥ हुकमे अनिक रंग परकार ॥ करि करि देखै अपनी वडिआई ॥ नानक सभ महि रहिआ समाई ॥१॥ प्रभ भावै मानुख गति पावै ॥ प्रभ भावै ता पाथर तरावै ॥ प्रभ

भावै बिनु सास ते राखै ॥ प्रभ भावै ता हरि गुण भाखै ॥ प्रभ भावै ता पतित उधारै ॥ आपि करै आपन बीचारै ॥ दुहा सिरिआ का आपि सुआमी ॥ खेलै बिगसै अंतरजामी ॥ जो भावै सो कार करावै ॥ नानक द्रिसटी अवरु न आवै ॥२॥ कहु मानुख ते किआ होइ आवै ॥ जो तिसु भावै सोई करावै ॥ इस कै हाथि होइ ता सभु किछु लेइ ॥ जो तिसु भावै सोई करेइ ॥ अनजानत बिखिआ महि रचै ॥ जे जानत आपन आप बचै ॥ भरमे भूला दह दिसि धावै ॥ निमख माहि चारि कुंट फिरि आवै ॥ करि किरपा जिसु अपनी भगति देइ ॥ नानक ते जन नामि मिलेइ ॥३॥ खिन महि नीच कीट कउ राज ॥ पारब्रहम गरीब निवाज ॥ जा का द्रिसटि

कछू न आवै ॥ तिसु ततकाल दह दिस प्रगटावै ॥ जा कउ अपुनी करै बखसीस ॥ ता का लेखा न गनै जगदीस ॥ जीउ पिंडु सभ तिस की रासि ॥ घटि घटि पूरन ब्रहम प्रगास ॥ अपनी बणत आपि बनाई ॥ नानक जीवै देखि बडाई ॥४॥ इस का बलु नाही इसु हाथ ॥ करन करावन सरब को नाथ ॥ आगिआकारी बपुरा जीउ ॥ जो तिसु भावै सोई फुनि थीउ ॥ कबहू ऊच नीच महि बसै ॥ कबहू सोग हरख रंगि हसै ॥ कबहू निंद चिंद बिउहार ॥ कबहू ऊभ अकास पइआल ॥ कबहू बेता ब्रहम बीचार ॥ नानक आपि मिलावणहार ॥५॥ कबहू निरति करै बहु भाति ॥ कबहू सोइ रहै दिनु राति ॥ कबहू महा क्रोध बिकराल ॥ कबहूं

सरब की होत रवाल ॥ कबहू होइ बहै बड राजा ॥ कबहु भेखारी नीच का साजा ॥ कबहू अपकीरति महि आवै ॥ कबहू भला भला कहावै ॥ जिउ प्रभु राखै तिव ही रहै ॥ गुर प्रसादि नानक सचु कहै ॥६॥ कबहू होइ पंडितु करे बखयान ॥ कबहू मोनिधारी लावै धिआनु ॥ कबहू तट तीरथ इसनान ॥ कबहू सिध साधिक मुखि गिआन ॥ कबहू कीट हसति पतंग होइ जीआ ॥ अनिक जोनि भरमै भरमीआ ॥ नाना रूप जिउ स्वागी दिखावै ॥ जिउ प्रभ भावै तिवै नचावै ॥ जो तिसु भावै सोई होइ ॥ नानक दूजा अवरु न कोइ ॥७॥ कबहू साधसंगति इहु पावै ॥ उसु असथान ते बहुरि न आवै ॥ अंतरि होइ गिआन परगासु ॥ उसु

असथान का नही बिनासु ॥ मन तन नामि रते इक रंगि ॥ सदा बसहि पारब्रहम कै संगि ॥ जिउ जल महि जलु आइ खटाना ॥ तिउ जोती संगि जोति समाना ॥ मिटि गए गवन पाए बिस्राम ॥ नानक प्रभ कै सद कुरबान ॥८॥११॥

सलोकु ॥

सुखी बसै मसकीनीआ आपु निवारि तले ॥ बडे बडे अहंकारीआ नानक गरबि गले ॥१॥

असटपदी ॥

जिस कै अंतरि राज अभिमानु ॥ सो नरकपाती होवत सुआनु ॥ जो जानै मै जोबनवंतु ॥ सो होवत बिसटा का जंतु ॥ आपस कउ करमवंतु कहावै ॥ जनमि मरै बहु जोनि भ्रमावै ॥ धन भूमि का जो करै गुमानु ॥ सो मूरखु अंधा

अगिआनु ॥ करि किरपा जिस कै हिरदै गरीबी बसावै ॥ नानक ईहा मुकतु आगै सुखु पावै ॥१॥ धनवंता होइ करि गरबावै ॥ त्रिण समानि कछु संगि न जावै ॥ बहु लसकर मानुख ऊपरि करे आस ॥ पल भीतरि ता का होइ बिनास ॥ सभ ते आप जानै बलवंतु ॥ खिन महि होइ जाइ भसमंतु ॥ किसै न बदै आपि अहंकारी ॥ धरम राइ तिसु करे खुआरी ॥ गुर प्रसादि जा का मिटै अभिमानु ॥ सो जनु नानक दरगह परवानु ॥२॥ कोटि करम करै हउ धारे ॥ स्रमु पावै सगले बिरथारे ॥ अनिक तपसिआ करे अहंकार ॥ नरक सुरग फिरि फिरि अवतार ॥ अनिक जतन करि आतम नही द्रवै ॥ हरि दरगह कहु कैसे गवै ॥ आपस कउ जो भला कहावै ॥

तिसहि भलाई निकटि न आवै ॥ सरब की रेन जा का मनु होइ ॥ कहु नानक ता की निरमल सोइ ॥३॥ जब लगु जानै मुझ ते कछु होइ ॥ तब इस कउ सुखु नाही कोइ ॥ जब इह जानै मै किछु करता ॥ तब लगु गरभ जोनि महि फिरता ॥ जब धारै कोऊ बैरी मीतु ॥ तब लगु निहचलु नाही चीतु ॥ जब लगु मोह मगन संगि माइ ॥ तब लगु धरम राइ देइ सजाइ ॥ प्रभ किरपा ते बंधन तूटै ॥ गुर प्रसादि नानक हउ छूटै ॥४॥ सहस खटे लख कउ उठि धावै ॥ त्रिपति न आवै माइआ पाछै पावै ॥ अनिक भोग बिखिआ के करै ॥ नह त्रिपतावै खपि खपि मरै ॥ बिना संतोख नही कोऊ राजै ॥ सुपन मनोरथ ब्रिथे सभ काजै ॥ नाम रंगि सरब सुखु होइ ॥

बडभागी किसै परापति होइ ॥ करन करावन आपे आपि ॥ सदा सदा नानक हरि जापि ॥५॥ करन करावन करनैहारु ॥ इस कै हाथि कहा बीचारु ॥ जैसी द्रिसटि करे तैसा होइ ॥ आपे आपि आपि प्रभु सोइ ॥ जो किछु कीनो सु अपनै रंगि ॥ सभ ते दूरि सभहू कै संगि ॥ बूझै देखै करै बिबेक ॥ आपहि एक आपहि अनेक ॥ मरै न बिनसै आवै न जाइ ॥ नानक सद ही रहिआ समाइ ॥६॥ आपि उपदेसै समझै आपि ॥ आपे रचिआ सभ कै साथि ॥ आपि कीनो आपन बिसथारु ॥ सभु कछु उस का ओहु करनैहारु ॥ उस ते भिंन कहहु किछु होइ ॥ थान थनंतरि एकै सोइ ॥ अपुने चलित आपि करणैहार ॥ कउतक करै रंग आपार ॥

मन महि आपि मन अपुने माहि ॥ नानक कीमति कहनु न जाइ ॥७॥ सति सति सति प्रभु सुआमी ॥ गुर परसादि किनै वखिआनी ॥ सचु सचु सचु सभु कीना ॥ कोटि मधे किनै बिरलै चीना ॥ भला भला भला तेरा रूप ॥ अति सुंदर अपार अनूप ॥ निरमल निरमल निरमल तेरी बाणी ॥ घटि घटि सुनी स्रवन बखयाणी ॥ पवित्र पवित्र पवित्र पुनीत ॥ नामु जपै नानक मनि प्रीति ॥८॥१२॥

सलोकु ॥

संत सरनि जो जनु परै सो जनु उधरनहार ॥ संत की निंदा नानका बहुरि बहुरि अवतार ॥१॥

असटपदी ॥

संत कै दूखनि आरजा घटै ॥ संत

कै दूखनि जम ते नही छुटै ॥ संत कै दूखनि सुखु सभु जाइ ॥ संत कै दूखनि नरक महि पाइ ॥ संत कै दूखनि मति होइ मलीन ॥ संत कै दूखनि सोभा ते हीन ॥ संत के हते कउ रखै न कोइ ॥ संत कै दूखनि थान भ्रसटु होइ ॥ संत क्रिपाल क्रिपा जे करै ॥ नानक संतसंगि निंदकु भी तरै ॥१॥ संत के दूखन ते मुखु भवै ॥ संतन कै दूखनि काग जिउ लवै ॥ संतन कै दूखनि सरप जोनि पाइ ॥ संत कै दूखनि त्रिगद जोनि किरमाइ ॥ संतन कै दूखनि त्रिसना महि जलै ॥ संत कै दूखनि सभु को छलै ॥ संत कै दूखनि तेजु सभु जाइ ॥ संत कै दूखनि नीचु नीचाइ ॥ संत दोखी का थाउ को नाहि ॥ नानक संत भावै ता ओइ भी गति पाहि ॥२॥ संत का

निंदकु महा अतताई ॥ संत का निंदकु खिनु टिकनु न पाई ॥ संत का निंदकु महा हतिआरा ॥ संत का निंदकु परमेसुरि मारा ॥ संत का निंदकु राज ते हीनु ॥ संत का निंदकु दुखीआ अरु दीनु ॥ संत के निंदक कउ सरब रोग ॥ संत के निंदक कउ सदा बिजोग ॥ संत की निंदा दोख महि दोखु ॥ नानक संत भावै ता उस का भी होइ मोखु ॥३॥ संत का दोखी सदा अपवितु ॥ संत का दोखी किसै का नही मितु ॥ संत के दोखी कउ डानु लागै ॥ संत के दोखी कउ सभ तिआगै ॥ संत का दोखी महा अहंकारी ॥ संत का दोखी सदा बिकारी ॥ संत का दोखी जनमै मरै ॥ संत की दूखना सुख ते टरै ॥ संत के दोखी कउ नाही ठाउ ॥ नानक संत

भावै ता लए मिलाइ ॥४॥ संत का दोखी अध बीच ते टूटै ॥ संत का दोखी कितै काजि न पहूचै ॥ संत के दोखी कउ उदिआन भ्रमाईऐ ॥ संत का दोखी उझड़ि पाईऐ ॥ संत का दोखी अंतर ते थोथा ॥ जिउ सास बिना मिरतक की लोथा ॥ संत के दोखी की जड़ किछु नाहि ॥ आपन बीजि आपे ही खाहि ॥ संत के दोखी कउ अवरु न राखनहारु ॥ नानक संत भावै ता लए उबारि ॥५॥ संत का दोखी इउ बिललाइ ॥ जिउ जल बिहून मछुली तड़फड़ाइ ॥ संत का दोखी भूखा नही राजै ॥ जिउ पावकु इधनि नही ध्रापै ॥ संत का दोखी छुटै इकेला ॥ जिउ बूआड़ु तिलु खेत माहि दुहेला ॥ संत का दोखी धरम ते रहत ॥ संत का

दोखी सद मिथिआ कहत ॥ किरतु निंदक का धुरि ही पइआ ॥ नानक जो तिसु भावै सोई थिआ ॥६॥ संत का दोखी बिगड़ रूपु होइ जाइ ॥ संत के दोखी कउ दरगह मिलै सजाइ ॥ संत का दोखी सदा सहकाईऐ ॥ संत का दोखी न मरै न जीवाईऐ ॥ संत के दोखी की पुजै न आसा ॥ संत का दोखी उठि चलै निरासा ॥ संत कै दोखि न त्रिसटै कोइ ॥ जैसा भावै तैसा कोई होइ ॥ पइआ किरतु न मेटै कोइ ॥ नानक जानै सचा सोइ ॥७॥ सभ घट तिस के ओहु करनैहारु ॥ सदा सदा तिस कउ नमसकारु ॥ प्रभ की उसतति करहु दिनु राति ॥ तिसहि धिआवहु सासि गिरासि ॥ सभु कछु वरतै तिस का कीआ ॥ जैसा करे तैसा को थीआ ॥

अपना खेलु आपि करनैहारु ॥ दूसर कउनु कहै बीचारु ॥ जिस नो क्रिपा करै तिसु आपन नामु देइ ॥ बडभागी नानक जन सेइ ॥८॥१३॥

सलोकु ॥

तजहु सिआनप सुरि जनहु सिमरहु हरि हरि राइ ॥ एक आस हरि मनि रखहु नानक दूखु भरमु भउ जाइ ॥१॥

असटपदी ॥

मानुख की टेक ब्रिथी सभ जानु ॥ देवन कउ एकै भगवानु ॥ जिस कै दीऐ रहै अघाइ ॥ बहुरि न त्रिसना लागै आइ ॥ मारै राखै एको आपि ॥ मानुख कै किछु नाही हाथि ॥ तिस का हुकमु बूझि सुखु होइ ॥ तिस का नामु रखु कंठि परोइ ॥ सिमरि सिमरि सिमरि प्रभु सोइ ॥ नानक बिघनु न लागै कोइ ॥१॥

उसतति मन महि करि निरंकार ॥ करि मन मेरे सति बिउहार ॥ निरमल रसना अंम्रितु पीउ ॥ सदा सुहेला करि लेहि जीउ ॥ नैनहु पेखु ठाकुर का रंगु ॥ साधसंगि बिनसै सभ संगु ॥ चरन चलउ मारगि गोबिंद ॥ मिटहि पाप जपीऐ हरि बिंद ॥ कर हरि करम स्रवनि हरि कथा ॥ हरि दरगह नानक ऊजल मथा ॥२॥ बडभागी ते जन जग माहि ॥ सदा सदा हरि के गुन गाहि ॥ राम नाम जो करहि बीचार ॥ से धनवंत गनी संसार ॥ मनि तनि मुखि बोलहि हरि मुखी ॥ सदा सदा जानहु ते सुखी ॥ एको एकु एकु पछानै ॥ इत उत की ओहु सोझी जानै ॥ नाम संगि जिस का मनु मानिआ ॥ नानक तिनहि निरंजनु जानिआ ॥३॥ गुर प्रसादि आपन आपु

सुझै ॥ तिस की जानहु त्रिसना बुझै ॥
साधसंगि हरि हरि जसु कहत ॥ सरब
रोग ते ओहु हरि जनु रहत ॥ अनदिनु
कीरतनु केवल बखयानु ॥ ग्रिहसत महि
सोई निरबानु ॥ एक ऊपरि जिसु जन
की आसा ॥ तिस की कटीऐ जम की
फासा ॥ पारब्रहम की जिसु मनि भूख ॥
नानक तिसहि न लागहि दूख ॥४॥
जिस कउ हरि प्रभु मनि चिति आवै ॥
सो संतु सुहेला नही डुलावै ॥ जिसु प्रभु
अपुना किरपा करै ॥ सो सेवकु कहु
किस ते डरै ॥ जैसा सा तैसा
द्रिसटाइआ ॥ अपुने कारज महि आपि
समाइआ ॥ सोधत सोधत सोधत
सीझिआ ॥ गुर प्रसादि ततु सभु
बूझिआ ॥ जब देखउ तब सभु किछु
मूलु ॥ नानक सो सूखमु सोई

असथूलु ॥५॥ नह किछु जनमै नह किछु मरै ॥ आपन चलितु आप ही करै ॥ आवनु जावनु द्रिसटि अनद्रिसटि ॥ आगिआकारी धारी सभ स्रिसटि ॥ आपे आपि सगल महि आपि ॥ अनिक जुगति रचि थापि उथापि ॥ अबिनासी नाही किछु खंड ॥ धारण धारि रहिओ ब्रहमंड ॥ अलख अभेव पुरख परताप ॥ आपि जपाए त नानक जाप ॥६॥ जिन प्रभु जाता सु सोभावंत ॥ सगल संसारु उधरै तिन मंत ॥ प्रभ के सेवक सगल उधारन ॥ प्रभ के सेवक दूख बिसारन ॥ आपे मेलि लए किरपाल ॥ गुर का सबदु जपि भए निहाल ॥ उन की सेवा सोई लागै ॥ जिस नो क्रिपा करहि बडभागै ॥ नामु जपत पावहि बिस्रामु ॥ नानक तिन पुरख कउ ऊतम

करि मानु ॥७॥ जो किछु करै सु प्रभ कै रंगि ॥ सदा सदा बसै हरि संगि ॥ सहज सुभाइ होवै सो होइ ॥ करणैहारु पछाणै सोइ ॥ प्रभ का कीआ जन मीठ लगाना ॥ जैसा सा तैसा द्रिसटाना ॥ जिस ते उपजे तिसु माहि समाए ॥ ओइ सुख निधान उनहू बनि आए ॥ आपस कउ आपि दीनो मानु ॥ नानक प्रभ जनु एको जानु ॥८॥१४॥

सलोकु ॥

सरब कला भरपूर प्रभ बिरथा जाननहार ॥ जा कै सिमरनि उधरीऐ नानक तिसु बलिहार ॥१॥

असटपदी ॥

टूटी गाढनहार गोपाल ॥ सरब जीआ आपे प्रतिपाल ॥ सगल की चिंता जिसु मन माहि ॥ तिस ते बिरथा कोई नाहि ॥

रे मन मेरे सदा हरि जापि ॥ अबिनासी प्रभु आपे आपि ॥ आपन कीआ कछू न होइ ॥ जे सउ प्रानी लोचै कोइ ॥ तिसु बिनु नाही तेरै किछु काम ॥ गति नानक जपि एक हरि नाम ॥१॥ रूपवंतु होइ नाही मोहै ॥ प्रभ की जोति सगल घट सोहै ॥ धनवंता होइ किआ को गरबै ॥ जा सभु किछु तिस का दीआ दरबै ॥ अति सूरा जे कोऊ कहावै ॥ प्रभ की कला बिना कह धावै ॥ जे को होइ बहै दातारु ॥ तिसु देनहारु जानै गावारु ॥ जिसु गुर प्रसादि तूटै हउ रोगु ॥ नानक सो जनु सदा अरोगु ॥२॥ जिउ मंदर कउ थामै थंमनु ॥ तिउ गुर का सबदु मनहि असथंमनु ॥ जिउ पाखाणु नाव चड़ि तरै ॥ प्राणी गुर चरण लगतु निसतरै ॥ जिउ अंधकार दीपक

परगासु ॥ गुर दरसनु देखि मनि होइ बिगासु ॥ जिउ महा उदिआन महि मारगु पावै ॥ तिउ साधू संगि मिलि जोति प्रगटावै ॥ तिन संतन की बाछउ धूरि ॥ नानक की हरि लोचा पूरि ॥३॥ मन मूरख काहे बिललाईऐ ॥ पुरब लिखे का लिखिआ पाईऐ ॥ दूख सूख प्रभ देवनहारु ॥ अवर तिआगि तू तिसहि चितारु ॥ जो कछु करै सोई सुखु मानु ॥ भूला काहे फिरहि अजान ॥ कउन बसतु आई तेरै संग ॥ लपटि रहिओ रसि लोभी पतंग ॥ राम नाम जपि हिरदे माहि ॥ नानक पति सेती घरि जाहि ॥४॥ जिसु वखर कउ लैनि तू आइआ ॥ राम नामु संतन घरि पाइआ ॥ तजि अभिमानु लेहु मन मोलि ॥ राम नामु हिरदे महि तोलि ॥ लादि खेप संतह संगि चालु ॥

अवर तिआगि बिखिआ जंजाल ॥ धंनि धंनि कहै सभु कोइ ॥ मुख ऊजल हरि दरगह सोइ ॥ इहु वापारु विरला वापारै ॥ नानक ता कै सद बलिहारै ॥५॥ चरन साध के धोइ धोइ पीउ ॥ अरपि साध कउ अपना जीउ ॥ साध की धूरि करहु इसनानु ॥ साध ऊपरि जाईऐ कुरबानु ॥ साध सेवा वडभागी पाईऐ ॥ साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ अनिक बिघन ते साधू राखै ॥ हरि गुन गाइ अंम्रित रसु चाखै ॥ ओट गही संतह दरि आइआ ॥ सरब सूख नानक तिह पाइआ ॥६॥ मिरतक कउ जीवालनहार ॥ भूखे कउ देवत अधार ॥ सरब निधान जा की द्रिसटी माहि ॥ पुरब लिखे का लहणा पाहि ॥ सभु किछु तिस का ओहु करनै जोगु ॥ तिसु

बिनु दूसर होआ न होगु ॥ जपि जन सदा सदा दिनु रैणी ॥ सभ ते ऊच निरमल इह करणी ॥ करि किरपा जिस कउ नामु दीआ ॥ नानक सो जनु निरमलु थीआ ॥७॥ जा कै मनि गुर की परतीति ॥ तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥ भगतु भगतु सुनीऐ तिहु लोइ ॥ जा कै हिरदै एको होइ ॥ सचु करणी सचु ता की रहत ॥ सचु हिरदै सति मुखि कहत ॥ साची द्रिसटि साचा आकारु ॥ सचु वरतै साचा पासारु ॥ पारब्रहमु जिनि सचु करि जाता ॥ नानक सो जनु सचि समाता ॥८॥१५॥

सलोकु ॥

रूपु न रेख न रंगु किछु त्रिहु गुण ते प्रभ भिंन ॥ तिसहि बुझाए नानका जिसु होवै सुप्रसंन ॥१॥

असटपदी ॥

अबिनासी प्रभु मन महि राखु ॥ मानुख की तू प्रीति तिआगु ॥ तिस ते परै नाही किछु कोइ ॥ सरब निरंतरि एको सोइ ॥ आपे बीना आपे दाना ॥ गहिर गंभीरु गहीरु सुजाना ॥ पारब्रहम परमेसुर गोबिंद ॥ क्रिपा निधान दइआल बखसंद ॥ साध तेरे की चरनी पाउ ॥ नानक कै मनि इहु अनराउ ॥१॥ मनसा पूरन सरना जोग ॥ जो करि पाइआ सोई होगु ॥ हरन भरन जा का नेत्र फोरु ॥ तिस का मंत्रु न जानै होरु ॥ अनद रूप मंगल सद जा कै ॥ सरब थोक सुनीअहि घरि ता कै ॥ राज महि राजु जोग महि जोगी ॥ तप महि तपीसरु ग्रिहसत महि भोगी ॥ धिआइ धिआइ भगतह सुखु पाइआ ॥

नानक तिसु पुरख का किनै अंतु न पाइआ ॥२॥ जा की लीला की मिति नाहि ॥ सगल देव हारे अवगाहि ॥ पिता का जनमु कि जानै पूतु ॥ सगल परोई अपुनै सूति ॥ सुमति गिआनु धिआनु जिन देइ ॥ जन दास नामु धिआवहि सेइ ॥ तिहु गुण महि जा कउ भरमाए ॥ जनमि मरै फिरि आवै जाए ॥ ऊच नीच तिस के असथान ॥ जैसा जनावै तैसा नानक जान ॥३॥ नाना रूप नाना जा के रंग ॥ नाना भेख करहि इक रंग ॥ नाना बिधि कीनो बिसथारु ॥ प्रभु अबिनासी एकंकारु ॥ नाना चलित करे खिन माहि ॥ पूरि रहिओ पूरनु सभ ठाइ ॥ नाना बिधि करि बनत बनाई ॥ अपनी कीमति आपे पाई ॥ सभ घट तिस के सभ

तिस के ठाउ ॥ जपि जपि जीवै नानक हरि नाउ ॥४॥ नाम के धारे सगले जंत ॥ नाम के धारे खंड ब्रहमंड ॥ नाम के धारे सिम्रिति बेद पुरान ॥ नाम के धारे सुनन गिआन धिआन ॥ नाम के धारे आगास पाताल ॥ नाम के धारे सगल आकार ॥ नाम के धारे पुरीआ सभ भवन ॥ नाम कै संगि उधरे सुनि स्रवन ॥ करि किरपा जिसु आपनै नामि लाए ॥ नानक चउथे पद महि सो जनु गति पाए ॥५॥ रूपु सति जा का सति असथानु ॥ पुरखु सति केवल परधानु ॥ करतूति सति सति जा की बाणी ॥ सति पुरख सभ माहि समाणी ॥ सति करमु जा की रचना सति ॥ मूलु सति सति उतपति ॥ सति करणी निरमल निरमली ॥ जिसहि बुझाए तिसहि सभ

भली ॥ सति नामु प्रभ का सुखदाई ॥
बिस्वासु सति नानक गुर ते पाई ॥६॥
सति बचन साधू उपदेस ॥ सति ते जन
जा कै रिदै प्रवेस ॥ सति निरति बूझै
जे कोइ ॥ नामु जपत ता की गति
होइ ॥ आपि सति कीआ सभु सति ॥
आपे जानै अपनी मिति गति ॥ जिस
की स्रिसटि सु करणैहारु ॥ अवर न
बूझि करत बीचारु ॥ करते की मिति
न जानै कीआ ॥ नानक जो तिसु भावै
सो वरतीआ ॥७॥ बिसमन बिसम भए
बिसमाद ॥ जिनि बूझिआ तिसु आइआ
स्वाद ॥ प्रभ कै रंगि राचि जन रहे ॥
गुर कै बचनि पदारथ लहे ॥ ओइ दाते
दुख काटनहार ॥ जा कै संगि तरै
संसार ॥ जन का सेवकु सो वडभागी ॥
जन कै संगि एक लिव लागी ॥ गुन

गोबिद् कीरतनु जनु गावै ॥ गुर प्रसादि नानक फलु पावै ॥८॥१६॥

सलोकु ॥

आदि सचु जुगादि सचु ॥ है भि सचु नानक होसी भि सचु ॥१॥

असटपदी ॥

चरन सति सति परसनहार ॥ पूजा सति सति सेवदार ॥ दरसनु सति सति पेखनहार ॥ नामु सति सति धिआवनहार ॥ आपि सति सति सभ धारी ॥ आपे गुण आपे गुणकारी ॥ सबदु सति सति प्रभु बकता ॥ सुरति सति सति जसु सुनता ॥ बुझनहार कउ सति सभ होइ ॥ नानक सति सति प्रभु सोइ ॥१॥ सति सरूपु रिदै जिनि मानिआ ॥ करन करावन तिनि मूलु पछानिआ ॥ जा कै रिदै बिस्वासु प्रभ

आइआ ॥ ततु गिआनु तिसु मनि प्रगटाइआ ॥ भै ते निरभउ होइ बसाना ॥ जिस ते उपजिआ तिसु माहि समाना ॥ बसतु माहि ले बसतु गडाई ॥ ता कउ भिंन न कहना जाई ॥ बूझै बूझनहारु बिबेक ॥ नाराइन मिले नानक एक ॥२॥ ठाकुर का सेवकु आगिआकारी ॥ ठाकुर का सेवकु सदा पूजारी ॥ ठाकुर के सेवक कै मनि परतीति ॥ ठाकुर के सेवक की निरमल रीति ॥ ठाकुर कउ सेवकु जानै संगि ॥ प्रभ का सेवकु नाम कै रंगि ॥ सेवक कउ प्रभ पालनहारा ॥ सेवक की राखै निरंकारा ॥ सो सेवकु जिसु दइआ प्रभु धारै ॥ नानक सो सेवकु सासि सासि समारै ॥३॥ अपुने जन का परदा ढाकै ॥ अपने सेवक की सरपर राखै ॥ अपने

दास कउ देइ वडाई ॥ अपने सेवक कउ नामु जपाई ॥ अपने सेवक की आपि पति राखै ॥ ता की गति मिति कोइ न लाखै ॥ प्रभ के सेवक कउ को न पहूचै ॥ प्रभ के सेवक ऊच ते ऊचे ॥ जो प्रभि अपनी सेवा लाइआ ॥ नानक सो सेवकु दह दिसि प्रगटाइआ ॥४॥ नीकी कीरी महि कल राखै ॥ भसम करै लसकर कोटि लाखै ॥ जिस का सासु न काढत आपि ॥ ता कउ राखत दे करि हाथ ॥ मानस जतन करत बहु भाति ॥ तिस के करतब बिरथे जाति ॥ मारै न राखै अवरु न कोइ ॥ सरब जीआ का राखा सोइ ॥ काहे सोच करहि रे प्राणी ॥ जपि नानक प्रभ अलख विडाणी ॥५॥ बारं बार बार प्रभु जपीऐ ॥ पी अंम्रितु इहु मनु तनु ध्रपीऐ ॥

नाम रतनु जिनि गुरमुखि पाइआ ॥ तिसु किछु अवरु नाही द्रिसटाइआ ॥ नामु धनु नामो रूपु रंगु ॥ नामो सुखु हरि नाम का संगु ॥ नाम रसि जो जन त्रिपताने ॥ मन तन नामहि नामि समाने ॥ ऊठत बैठत सोवत नाम ॥ कहु नानक जन कै सद काम ॥६॥ बोलहु जसु जिहबा दिनु राति ॥ प्रभि अपनै जन कीनी दाति ॥ करहि भगति आतम कै चाइ ॥ प्रभ अपने सिउ रहहि समाइ ॥ जो होआ होवत सो जानै ॥ प्रभ अपने का हुकमु पछानै ॥ तिस की महिमा कउन बखानउ ॥ तिस का गुनु कहि एक न जानउ ॥ आठ पहर प्रभ बसहि हजूरे ॥ कहु नानक सेई जन पूरे ॥७॥ मन मेरे तिन की ओट लेहि ॥ मनु तनु अपना तिन जन देहि ॥ जिनि

जनि अपना प्रभू पछाता ॥ सो जनु सरब थोक का दाता ॥ तिस की सरनि सरब सुख पावहि ॥ तिस कै दरसि सभ पाप मिटावहि ॥ अवर सिआनप सगली छाडु ॥ तिसु जन की तू सेवा लागु ॥ आवनु जानु न होवी तेरा ॥ नानक तिसु जन के पूजहु सद पैरा ॥८॥१७॥

सलोकु ॥

सति पुरखु जिनि जानिआ सतिगुरु तिस का नाउ ॥ तिस कै संगि सिखु उधरै नानक हरि गुन गाउ ॥१॥

असटपदी ॥

सतिगुरु सिख की करै प्रतिपाल ॥ सेवक कउ गुरु सदा दइआल ॥ सिख की गुरु दुरमति मलु हिरै ॥ गुर बचनी हरि नामु उचरै ॥ सतिगुरु सिख के बंधन काटै ॥ गुर का सिखु बिकार ते

हाटै ॥ सतिगुरु सिख कउ नाम धनु देइ ॥ गुर का सिखु वडभागी हे ॥ सतिगुरु सिख का हलतु पलतु सवारै ॥ नानक सतिगुरु सिख कउ जीअ नालि समारै ॥१॥ गुर कै ग्रिहि सेवकु जो रहै ॥ गुर की आगिआ मन महि सहै ॥ आपस कउ करि कछु न जनावै ॥ हरि हरि नामु रिदै सद धिआवै ॥ मनु बेचै सतिगुर कै पासि ॥ तिसु सेवक के कारज रासि ॥ सेवा करत होइ निहकामी ॥ तिस कउ होत परापति सुआमी ॥ अपनी क्रिपा जिसु आपि करेइ ॥ नानक सो सेवकु गुर की मति लेइ ॥२॥ बीस बिसवे गुर का मनु मानै ॥ सो सेवकु परमेसुर की गति जानै ॥ सो सतिगुरु जिसु रिदै हरि नाउ ॥ अनिक बार गुर कउ बलि जाउ ॥ सरब निधान जीअ का दाता ॥ आठ

पहर पारब्रहम रंगि राता ॥ ब्रहम महि जनु जन महि पारब्रहमु ॥ एकहि आपि नही कछु भरमु ॥ सहस सिआनप लइआ न जाईऐ ॥ नानक ऐसा गुरु बडभागी पाईऐ ॥३॥ सफल दरसनु पेखत पुनीत ॥ परसत चरन गति निरमल रीति ॥ भेटत संगि राम गुन रवे ॥ पारब्रहम की दरगह गवे ॥ सुनि करि बचन करन आघाने ॥ मनि संतोखु आतम पतीआने ॥ पूरा गुरु अखयओ जा का मंत्र ॥ अंम्रित द्रिसटि पेखै होइ संत ॥ गुण बिअंत कीमति नही पाइ ॥ नानक जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥४॥ जिहबा एक उसतति अनेक ॥ सति पुरख पूरन बिबेक ॥ काहू बोल न पहुचत प्रानी ॥ अगम अगोचर प्रभ निरबानी ॥ निराहार निरवैर

सुखदाई ॥ ता की कीमति किनै न पाई ॥ अनिक भगत बंदन नित करहि ॥ चरन कमल हिरदै सिमरहि ॥ सद बलिहारी सतिगुर अपने ॥ नानक जिसु प्रसादि ऐसा प्रभु जपने ॥५॥ इहु हरि रसु पावै जनु कोइ ॥ अंम्रितु पीवै अमरु सो होइ ॥ उसु पुरख का नाही कदे बिनास ॥ जा कै मनि प्रगटे गुनतास ॥ आठ पहर हरि का नामु लेइ ॥ सचु उपदेसु सेवक कउ देइ ॥ मोह माइआ कै संगि न लेपु ॥ मन महि राखै हरि हरि एकु ॥ अंधकार दीपक परगासे ॥ नानक भरम मोह दुख तह ते नासे ॥६॥ तपति माहि ठाढि वरताई ॥ अनदु भइआ दुख नाठे भाई ॥ जनम मरन के मिटे अंदेसे ॥ साधू के पूरन उपदेसे ॥ भउ चूका निरभउ होइ

बसे ॥ सगल बिआधि मन ते खै नसे ॥
जिस का सा तिनि किरपा धारी ॥
साधसंगि जपि नामु मुरारी ॥ थिति पाई
चूके भ्रम गवन ॥ सुनि नानक हरि हरि
जसु स्रवन ॥७॥ निरगुनु आपि सरगुनु
भी ओही ॥ कला धारि जिनि सगली
मोही ॥ अपने चरित प्रभि आपि
बनाए ॥ अपुनी कीमति आपे पाए ॥ हरि
बिनु दूजा नाही कोइ ॥ सरब निरंतरि
एको सोइ ॥ ओति पोति रविआ रूप
रंग ॥ भए प्रगास साध कै संग ॥ रचि
रचना अपनी कल धारी ॥ अनिक बार
नानक बलिहारी ॥८॥१८॥

सलोकु ॥

साथि न चालै बिनु भजन बिखिआ
सगली छारु ॥ हरि हरि नामु कमावना
नानक इहु धनु सारु ॥१॥

असटपदी ॥

संत जना मिलि करहु बीचारु ॥ एकु सिमरि नाम आधारु ॥ अवरि उपाव सभि मीत बिसारहु ॥ चरन कमल रिद महि उरि धारहु ॥ करन कारन सो प्रभु समरथु ॥ द्रिड़ु करि गहहु नामु हरि वथु ॥ इहु धनु संचहु होवहु भगवंत ॥ संत जना का निरमल मंत ॥ एक आस राखहु मन माहि ॥ सरब रोग नानक मिटि जाहि ॥१॥ जिसु धन कउ चारि कुंट उठि धावहि ॥ सो धनु हरि सेवा ते पावहि ॥ जिसु सुख कउ नित बाछहि मीत ॥ सो सुखु साधू संगि परीति ॥ जिसु सोभा कउ करहि भली करनी ॥ सा सोभा भजु हरि की सरनी ॥ अनिक उपावी रोगु न जाइ ॥ रोगु मिटै हरि अवखधु लाइ ॥ सरब निधान महि हरि

नामु निधानु ॥ जपि नानक दरगहि परवानु ॥२॥ मनु परबोधहु हरि कै नाइ ॥ दह दिसि धावत आवै ठाइ ॥ ता कउ बिघनु न लागै कोइ ॥ जा कै रिदै बसै हरि सोइ ॥ कलि ताती ठाँढा हरि नाउ ॥ सिमरि सिमरि सदा सुख पाउ ॥ भउ बिनसै पूरन होइ आस ॥ भगति भाइ आतम परगास ॥ तितु घरि जाइ बसै अबिनासी ॥ कहु नानक काटी जम फासी ॥३॥ ततु बीचारु कहै जनु साचा ॥ जनमि मरै सो काचो काचा ॥ आवा गवनु मिटै प्रभ सेव ॥ आपु तिआगि सरनि गुरदेव ॥ इउ रतन जनम का होइ उधारु ॥ हरि हरि सिमरि प्रान आधारु ॥ अनिक उपाव न छूटनहारे ॥ सिंम्रिति सासत बेद बीचारे ॥ हरि की भगति करहु मनु

लाइ ॥ मनि बंछत नानक फल पाइ ॥४॥ संगि न चालसि तेरै धना ॥ तूं किआ लपटावहि मूरख मना ॥ सुत मीत कुटंब अरु बनिता ॥ इन ते कहहु तुम कवन सनाथा ॥ राज रंग माइआ बिसथार ॥ इन ते कहहु कवन छुटकार ॥ असु हसती रथ असवारी ॥ झूठा डंफु झूठु पासारी ॥ जिनि दीऐ तिसु बुझै न बिगाना ॥ नामु बिसारि नानक पछुताना ॥५॥ गुर की मति तूं लेहि इआने ॥ भगति बिना बहु डूबे सिआने ॥ हरि की भगति करहु मन मीत ॥ निरमल होइ तुमहारो चीत ॥ चरन कमल राखहु मन माहि ॥ जनम जनम के किलबिख जाहि ॥ आपि जपहु अवरा नामु जपावहु ॥ सुनत कहत रहत गति पावहु ॥ सार भूत सति हरि को

नाउ ॥ सहजि सुभाइ नानक गुन गाउ ॥६॥ गुन गावत तेरी उतरसि मैलु ॥ बिनसि जाइ हउमै बिखु फैलु ॥ होहि अचिंतु बसै सुख नालि ॥ सासि ग्रासि हरि नामु समालि ॥ छाडि सिआनप सगली मना ॥ साधसंगि पावहि सचु धना ॥ हरि पूंजी संचि करहु बिउहारु ॥ ईहा सुखु दरगह जैकारु ॥ सरब निरंतरि एको देखु ॥ कहु नानक जा कै मसतकि लेखु ॥७॥ एको जपि एको सालाहि ॥ एकु सिमरि एको मन आहि ॥ एकस के गुन गाउ अनंत ॥ मनि तनि जापि एक भगवंत ॥ एको एकु एकु हरि आपि ॥ पूरन पूरि रहिओ प्रभु बिआपि ॥ अनिक बिसथार एक ते भए ॥ एकु अराधि पराछत गए ॥ मन तन अंतरि एकु प्रभु राता ॥

गुर प्रसादि नानक इकु जाता ॥८॥१६॥

सलोकु ॥

फिरत फिरत प्रभ आइआ परिआ तउ सरनाइ ॥ नानक की प्रभ बेनती अपनी भगती लाइ ॥१॥

असटपदी ॥

जाचक जनु जाचै प्रभ दानु ॥ करि किरपा देवहु हरि नामु ॥ साध जना की मागउ धूरि ॥ पारब्रहम मेरी सरधा पूरि ॥ सदा सदा प्रभ के गुन गावउ ॥ सासि सासि प्रभ तुमहि धिआवउ ॥ चरन कमल सिउ लागै प्रीति ॥ भगति करउ प्रभ की नित नीति ॥ एक ओट एको आधारु ॥ नानकु मागै नामु प्रभ सारु ॥१॥ प्रभ की द्रिसटि महा सुखु होइ ॥ हरि रसु पावै बिरला कोइ ॥ जिन चाखिआ से जन त्रिपताने ॥ पूरन पुरख

नही डोलाने ॥ सुभर भरे प्रेम रस रंगि ॥ उपजै चाउ साध कै संगि ॥ परे सरनि आन सभ तिआगि ॥ अंतरि प्रगास अनदिनु लिव लागि ॥ बडभागी जपिआ प्रभु सोइ ॥ नानक नामि रते सुखु होइ ॥२॥ सेवक की मनसा पूरी भई ॥ सतिगुर ते निरमल मति लई ॥ जन कउ प्रभु होइओ दइआलु ॥ सेवकु कीनो सदा निहालु ॥ बंधन काटि मुकति जनु भइआ ॥ जनम मरन दूखु भ्रमु गइआ ॥ इछ पुनी सरधा सभ पूरी ॥ रवि रहिआ सद संगि हजूरी ॥ जिस का सा तिनि लीआ मिलाइ ॥ नानक भगती नामि समाइ ॥३॥ सो किउ बिसरै जि घाल न भानै ॥ सो किउ बिसरै जि कीआ जानै ॥ सो किउ बिसरै जिनि सभु किछु दीआ ॥ सो किउ बिसरै जि जीवन

जीआ ॥ सो किउ बिसरै जि अगनि महि राखै ॥ गुर प्रसादि को बिरला लाखै ॥ सो किउ बिसरै जि बिखु ते काढै ॥ जनम जनम का टूटा गाढै ॥ गुरि पूरै ततु इहै बुझाइआ ॥ प्रभु अपना नानक जन धिआइआ ॥४॥ साजन संत करहु इहु कामु ॥ आन तिआगि जपहु हरि नामु ॥ सिमरि सिमरि सिमरि सुख पावहु ॥ आपि जपहु अवरह नामु जपावहु ॥ भगति भाइ तरीऐ संसारु ॥ बिनु भगती तनु होसी छारु ॥ सरब कलिआण सूख निधि नामु ॥ बूडत जात पाए बिस्रामु ॥ सगल दूख का होवत नासु ॥ नानक नामु जपहु गुनतासु ॥५॥

उपजी प्रीति प्रेम रसु चाउ ॥ मन तन अंतरि इही सुआउ ॥ नेत्रहु पेखि दरसु सुखु होइ ॥ मनु बिगसै साध चरन

धोइ ॥ भगत जना कै मनि तनि रंगु ॥ बिरला कोऊ पावै संगु ॥ एक बसतु दीजै करि मइआ ॥ गुर प्रसादि नामु जपि लइआ ॥ ता की उपमा कही न जाइ ॥ नानक रहिआ सरब समाइ ॥६॥ प्रभ बखसंद दीन दइआल ॥ भगति वछल सदा किरपाल ॥ अनाथ नाथ गोबिंद गुपाल ॥ सरब घटा करत प्रतिपाल ॥ आदि पुरख कारण करतार ॥ भगत जना के प्रान अधार ॥ जो जो जपै सु होइ पुनीत ॥ भगति भाइ लावै मन हीत ॥ हम निरगुनीआर नीच अजान ॥ नानक तुमरी सरनि पुरख भगवान ॥७॥ सरब बैकुंठ मुकति मोख पाए ॥ एक निमख हरि के गुन गाए ॥ अनिक राज भोग बडिआई ॥ हरि के नाम की कथा मनि भाई ॥ बहु भोजन

कापर संगीत ॥ रसना जपती हरि हरि नीत ॥ भली सु करनी सोभा धनवंत ॥ हिरदै बसे पूरन गुर मंत ॥ साधसंगि प्रभ देहु निवास ॥ सरब सूख नानक परगास ॥८॥२०॥

सलोकु ॥

सरगुन निरगुन निरंकार सुंन समाधी आपि ॥ आपन कीआ नानका आपे ही फिरि जापि ॥१॥

असटपदी ॥

जब अकारु इहु कछु न द्रिसटेता ॥ पाप पुंन तब कह ते होता ॥ जब धारी आपन सुंन समाधि ॥ तब बैर बिरोध किसु संगि कमाति ॥ जब इस का बरनु चिहनु न जापत ॥ तब हरख सोग कहु किसहि बिआपत ॥ जब आपन आप आपि पारब्रहम ॥ तब मोह कहा किसु

होवत भरम ॥ आपन खेलु आपि वरतीजा ॥ नानक करनैहारु न दूजा ॥१॥ जब होवत प्रभ केवल धनी ॥ तब बंध मुकति कहु किस कउ गनी ॥ जब एकहि हरि अगम अपार ॥ तब नरक सुरग कहु कउन अउतार ॥ जब निरगुन प्रभ सहज सुभाइ ॥ तब सिव सकति कहहु कितु ठाइ ॥ जब आपहि आपि अपनी जोति धरै ॥ तब कवन निडरु कवन कत डरै ॥ आपन चलित आपि करनैहार ॥ नानक ठाकुर अगम अपार ॥२॥ अबिनासी सुख आपन आसन ॥ तह जनम मरन कहु कहा बिनासन ॥ जब पूरन करता प्रभु सोइ ॥ तब जम की त्रास कहहु किसु होइ ॥ जब अबिगत अगोचर प्रभ एका ॥ तब चित्र गुपत किसु पूछत लेखा ॥ जब नाथ

निरंजन अगोचर अगाधे ॥ तब कउन छुटे कउन बंधन बाधे ॥ आपन आप आप ही अचरजा ॥ नानक आपन रूप आप ही उपरजा ॥३॥ जह निरमल पुरखु पुरख पति होता ॥ तह बिनु मैलु कहहु किआ धोता ॥ जह निरंजन निरंकार निरबान ॥ तह कउन कउ मान कउन अभिमान ॥ जह सरूप केवल जगदीस ॥ तह छल छिद्र लगत कहु कीस ॥ जह जोति सरूपी जोति संगि समावै ॥ तह किसहि भूख कवनु त्रिपतावै ॥ करन करावन करनैहारु ॥ नानक करते का नाहि सुमारु ॥४॥ जब अपनी सोभा आपन संगि बनाई ॥ तब कवन माइ बाप मित्र सुत भाई ॥ जह सरब कला आपहि परबीन ॥ तह बेद कतेब कहा कोऊ चीन ॥ जब आपन

आपु आपि उरि धारै ॥ तउ सगन अपसगन कहा बीचारै ॥ जह आपन ऊच आपन आपि नेरा ॥ तह कउन ठाकुरु कउनु कहीऐ चेरा ॥ बिसमन बिसम रहे बिसमाद ॥ नानक अपनी गति जानहु आपि ॥५॥ जह अछल अछेद अभेद समाइआ ॥ ऊहा किसहि बिआपत माइआ ॥ आपस कउ आपहि आदेसु ॥ तिहु गुण का नाही परवेसु ॥ जह एकहि एक एक भगवंता ॥ तह कउनु अचिंतु किसु लागै चिंता ॥ जह आपन आपु आपि पतीआरा ॥ तह कउनु कथै कउनु सुननैहारा ॥ बहु बेअंत ऊच ते ऊचा ॥ नानक आपस कउ आपहि पहूचा ॥६॥ जह आपि रचिओ परपंचु अकारु ॥ तिहु गुण महि कीनो बिसथारु ॥ पापु पुंनु तह भई

कहावत ॥ कोऊ नरक कोऊ सुरग बंछावत ॥ आल जाल माइआ जंजाल ॥ हउमै मोह भरम भै भार ॥ दूख सूख मान अपमान ॥ अनिक प्रकार कीओ बखयान ॥ आपन खेलु आपि करि देखै ॥ खेलु संकोचै तउ नानक एकै ॥७॥ जह अबिगतु भगतु तह आपि ॥ जह पसरै पासारु संत परतापि ॥ दुहू पाख का आपहि धनी ॥ उन की सोभा उनहू बनी ॥ आपहि कउतक करै अनद चोज ॥ आपहि रस भोगन निरजोग ॥ जिसु भावै तिसु आपन नाइ लावै ॥ जिसु भावै तिसु खेल खिलावै ॥ बेसुमार अथाह अगनत अतोलै ॥ जिउ बुलावहु तिउ नानक दास बोलै ॥८॥२१॥

सलोकु ॥

जीअ जंत के ठाकुरा आपे

वरतणहार ॥ नानक एको पसरिआ दूजा कह द्रिसटार ॥१॥

असटपदी ॥

आपि कथै आपि सुननैहारु ॥ आपहि एकु आपि बिसथारु ॥ जा तिसु भावै ता स्रिसटि उपाए ॥ आपनै भाणै लए समाए ॥ तुम ते भिंन नही किछु होइ ॥ आपन सूति सभु जगतु परोइ ॥ जा कउ प्रभ जीउ आपि बुझाए ॥ सचु नामु सोई जनु पाए ॥ सो समदरसी तत का बेता ॥ नानक सगल स्रिसटि का जेता ॥१॥ जीअ जंत्र सभ ता कै हाथ ॥ दीन दइआल अनाथ को नाथु ॥ जिसु राखै तिसु कोइ न मारै ॥ सो मूआ जिसु मनहु बिसारै ॥ तिसु तजि अवर कहा को जाइ ॥ सभ सिरि एकु निरंजन राइ ॥ जीअ की जुगति जा कै सभ हाथि ॥

अंतरि बाहरि जानहु साथि ॥ गुन निधान बेअंत अपार ॥ नानक दास सदा बलिहार ॥२॥ पूरन पूरि रहे दइआल ॥ सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥ अपने करतब जानै आपि ॥ अंतरजामी रहिओ बिआपि ॥ प्रतिपालै जीअन बहु भाति ॥ जो जो रचिओ सु तिसहि धिआति ॥ जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥ भगति करहि हरि के गुण गाइ ॥ मन अंतरि बिस्वासु करि मानिआ ॥ करनहारु नानक इकु जानिआ ॥३॥ जनु लागा हरि एकै नाइ ॥ तिस की आस न बिरथी जाइ ॥ सेवक कउ सेवा बनि आई ॥ हुकमु बूझि परम पदु पाई ॥ इस ते ऊपरि नही बीचारु ॥ जा कै मनि बसिआ निरंकारु ॥ बंधन तोरि भए निरवैर ॥ अनदिनु पूजहि गुर के पैर ॥ इह लोक

सुखीए परलोक सुहेले ॥ नानक हरि प्रभि आपहि मेले ॥४॥ साधसंगि मिलि करहु अनंद ॥ गुन गावहु प्रभ परमानंद ॥ राम नाम ततु करहु बीचारु ॥ द्रुलभ देह का करहु उधारु ॥ अम्रित बचन हरि के गुन गाउ ॥ प्रान तरन का इहै सुआउ ॥ आठ पहर प्रभ पेखहु नेरा ॥ मिटै अगिआनु बिनसै अंधेरा ॥ सुनि उपदेसु हिरदै बसावहु ॥ मन इछे नानक फल पावहु ॥५॥ हलतु पलतु दुइ लेहु सवारि ॥ राम नामु अंतरि उरि धारि ॥ पूरे गुर की पूरी दीखिआ ॥ जिसु मनि बसै तिसु साचु परीखिआ ॥ मनि तनि नामु जपहु लिव लाइ ॥ दूखु दरदु मन ते भउ जाइ ॥ सचु वापारु करहु वापारी ॥ दरगह निबहै खेप तुमारी ॥ एका टेक रखहु मन माहि ॥ नानक

बहुरि न आवहि जाहि ॥६॥ तिस ते दूरि कहा को जाइ ॥ उबरै राखनहारु धिआइ ॥ निरभउ जपै सगल भउ मिटै ॥ प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै ॥ जिसु प्रभु राखै तिसु नाही दूख ॥ नामु जपत मनि होवत सूख ॥ चिंता जाइ मिटै अहंकारु ॥ तिसु जन कउ कोइ न पहुचनहारु ॥ सिर ऊपरि ठाढा गुरु सूरा ॥ नानक ता के कारज पूरा ॥७॥ मति पूरी अंम्रितु जा की द्रिसटि ॥ दरसनु पेखत उधरत स्रिसटि ॥ चरन कमल जा के अनूप ॥ सफल दरसनु सुंदर हरि रूप ॥ धंनु सेवा सेवकु परवानु ॥ अंतरजामी पुरखु प्रधानु ॥ जिसु मनि बसै सु होत निहालु ॥ ता कै निकटि न आवत कालु ॥ अमर भए अमरा पदु

पाइआ ॥ साधसंगि नानक हरि धिआइआ ॥८॥२२॥

सलोकु ॥

गिआन अंजनु गुरि दीआ अगिआन अंधेर बिनासु ॥ हरि किरपा ते संत भेटिआ नानक मनि परगासु ॥१॥

असटपदी ॥

संतसंगि अंतरि प्रभु डीठा ॥ नामु प्रभू का लागा मीठा ॥ सगल समिग्री एकसु घट माहि ॥ अनिक रंग नाना द्रिसटाहि ॥ नउ निधि अंम्रितु प्रभ का नामु ॥ देही महि इस का बिस्रामु ॥ सुंन समाधि अनहत तह नाद ॥ कहनु न जाई अचरज बिसमाद ॥ तिनि देखिआ जिसु आपि दिखाए ॥ नानक तिसु जन सोझी पाए ॥१॥ सो अंतरि सो बाहरि अनंत ॥ घटि घटि बिआपि रहिआ

भगवंत ॥ धरनि माहि आकास पइआल ॥ सरब लोक पूरन प्रतिपाल ॥ बनि तिनि परबति है पारब्रहमु ॥ जैसी आगिआ तैसा करमु ॥ पउण पाणी बैसंतर माहि ॥ चारि कुंट दह दिसे समाहि ॥ तिस ते भिंन नही को ठाउ ॥ गुर प्रसादि नानक सुखु पाउ ॥२॥ बेद पुरान सिंम्रिति महि देखु ॥ ससीअर सूर नखयत्र महि एकु ॥ बाणी प्रभ की सभु को बोलै ॥ आपि अडोलु न कबहू डोलै ॥ सरब कला करि खेलै खेल ॥ मोलि न पाईऐ गुणह अमोल ॥ सरब जोति महि जा की जोति ॥ धारि रहिओ सुआमी ओति पोति ॥ गुर परसादि भरम का नासु ॥ नानक तिन महि एहु बिसासु ॥३॥ संत जना का पेखनु सभु ब्रहम ॥ संत जना कै हिरदै सभि

धरम ॥ संत जना सुनहि सुभ बचन ॥
सरब बिआपी राम संगि रचन ॥ जिनि
जाता तिस की इह रहत ॥ सति बचन
साधू सभि कहत ॥ जो जो होइ सोई
सुखु मानै ॥ करन करावनहारु प्रभु
जानै ॥ अंतरि बसे बाहरि भी ओही ॥
नानक दरसनु देखि सभ मोही ॥४॥
आपि सति कीआ सभु सति ॥ तिसु प्रभ
ते सगली उतपति ॥ तिसु भावै ता करे
बिसथारु ॥ तिसु भावै ता एकंकारु ॥
अनिक कला लखी नह जाइ ॥ जिसु
भावै तिसु लए मिलाइ ॥ कवन निकटि
कवन कहीऐ दूरि ॥ आपे आपि आप
भरपूरि ॥ अंतरगति जिसु आपि जनाए ॥
नानक तिसु जन आपि बुझाए ॥५॥
सरब भूत आपि वरतारा ॥ सरब नैन
आपि पेखनहारा ॥ सगल समग्री जा का

तना ॥ आपन जसु आप ही सुना ॥
आवन जानु इकु खेलु बनाइआ ॥
आगिआकारी कीनी माइआ ॥ सभ कै
मधि अलिपतो रहै ॥ जो किछु कहणा
सु आपे कहै ॥ आगिआ आवै आगिआ
जाइ ॥ नानक जा भावै ता लए
समाइ ॥६॥ इस ते होइ सु नाही बुरा ॥
ओरै कहहु किनै कछु करा ॥ आपि भला
करतूति अति नीकी ॥ आपे जानै अपने
जी की ॥ आपि साचु धारी सभ साचु ॥
ओति पोति आपन संगि राचु ॥ ता की
गति मिति कही न जाइ ॥ दूसर होइ
त सोझी पाइ ॥ तिस का कीआ सभु
परवानु ॥ गुर प्रसादि नानक इहु
जानु ॥७॥ जो जानै तिसु सदा सुखु
होइ ॥ आपि मिलाइ लए प्रभु सोइ ॥
ओहु धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु ॥ जीवन

मुकति जिसु रिदै भगवंतु ॥ धंनु धंनु धंनु जनु आइआ ॥ जिसु प्रसादि सभु जगतु तराइआ ॥ जन आवन का इहै सुआउ ॥ जन कै संगि चिति आवै नाउ ॥ आपि मुकतु मुकतु करै संसारु ॥ नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु ॥८॥२३॥

सलोकु ॥

पूरा प्रभु आराधिआ पूरा जा का नाउ ॥ नानक पूरा पाइआ पूरे के गुन गाउ ॥१॥

असटपदी ॥

पूरे गुर का सुनि उपदेसु ॥ पारब्रहमु निकटि करि पेखु ॥ सासि सासि सिमरहु गोबिंद ॥ मन अंतर की उतरै चिंद ॥ आस अनित तिआगहु तरंग ॥ संत जना की धूरि मन मंग ॥ आपु छोडि बेनती करहु ॥ साधसंगि अगनि सागरु

तरहु ॥ हरि धन के भरि लेहु भंडार ॥
नानक गुर पूरे नमसकार ॥१॥ खेम
कुसल सहज आनंद ॥ साधसंगि भजु
परमानंद ॥ नरक निवारि उधारहु
जीउ ॥ गुन गोबिंद अंम्रित रसु पीउ ॥
चिति चितवहु नाराइण एक ॥ एक रूप
जा के रंग अनेक ॥ गोपाल दामोदर दीन
दइआल ॥ दुख भंजन पूरन किरपाल ॥
सिमरि सिमरि नामु बारंबार ॥ नानक
जीअ का इहै अधार ॥२॥ उतम सलोक
साध के बचन ॥ अमुलीक लाल एहि
रतन ॥ सुनत कमावत होत उधार ॥
आपि तरै लोकह निसतार ॥ सफल
जीवनु सफलु ता का संगु ॥ जा कै मनि
लागा हरि रंगु ॥ जै जै सबदु अनाहदु
वाजै ॥ सुनि सुनि अनद करे प्रभु गाजै ॥
प्रगटे गुपाल महाँत कै माथे ॥ नानक

उधरे तिन कै साथे ॥३॥ सरनि जोगु
सुनि सरनी आए ॥ करि किरपा प्रभ
आप मिलाए ॥ मिटि गए बैर भए सभ
रेन ॥ अंम्रित नामु साधसंगि लैन ॥
सुप्रसंन भए गुरदेव ॥ पूरन होई सेवक
की सेव ॥ आल जंजाल बिकार ते
रहते ॥ राम नाम सुनि रसना कहते ॥
करि प्रसादु दइआ प्रभि धारी ॥ नानक
निबही खेप हमारी ॥४॥ प्रभ की
उसतति करहु संत मीत ॥ सावधान
एकागर चीत ॥ सुखमनी सहज गोबिंद
गुन नाम ॥ जिसु मनि बसै सु होत
निधान ॥ सरब इछा ता की पूरन होइ ॥
प्रधान पुरखु प्रगटु सभ लोइ ॥ सभ ते
ऊच पाए असथानु ॥ बहुरि न होवै
आवन जानु ॥ हरि धनु खाटि चलै जनु
सोइ ॥ नानक जिसहि परापति

होइ ॥५॥ खेम साँति रिधि नव निधि ॥ बुधि गिआनु सरब तह सिधि ॥ बिदिआ तपु जोगु प्रभ धिआनु ॥ गिआनु स्रेसट ऊतम इसनानु ॥ चारि पदारथ कमल प्रगास ॥ सभ कै मधि सगल ते उदास ॥ सुंदरु चतुरु तत का बेता ॥ समदरसी एक द्रिसटेता ॥ इह फल तिसु जन कै मुखि भने ॥ गुर नानक नाम बचन मनि सुने ॥६॥ इहु निधानु जपै मनि कोइ ॥ सभ जुग महि ता की गति होइ ॥ गुण गोबिंद नाम धुनि बाणी ॥ सिम्रिति सासत्र बेद बखाणी ॥ सगल मताँत केवल हरि नाम ॥ गोबिंद भगत कै मनि बिस्राम ॥ कोटि अप्राध साधसंगि मिटै ॥ संत क्रिपा ते जम ते छुटै ॥ जा कै मसतकि करम प्रभि पाए ॥ साध सरणि नानक ते आए ॥७॥ जिसु मनि बसै

सुनै लाइ प्रीति ॥ तिसु जन आवै हरि प्रभु चीति ॥ जनम मरन ता का दूखु निवारै ॥ दुलभ देह ततकाल उधारै ॥ निरमल सोभा अंम्रित ता की बानी ॥ एकु नामु मन माहि समानी ॥ दूख रोग बिनसे भै भरम ॥ साध नाम निरमल ता के करम ॥ सभ ते ऊच ता की सोभा बनी ॥ नानक इह गुणि नामु सुखमनी ॥८॥२४॥

आसा महला ४ छंत घरु ४ ।।

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि अंम्रित भिंने लोइणा मनु प्रेमि रतंना राम राजे ॥ मनु रामि कसवटी लाइआ कंचनु सोविंना ॥ गुरमुखि रंगि चलूलिआ मेरा मनु तनो भिंना ॥ जनु नानकु मुसकि झकोलिआ सभु जनमु धनु धंना ॥१॥

हरि प्रेम बाणी मनु मारिआ अणीआले अणीआ राम राजे ॥ जिसु लागी पीर पिरंम की सो जाणै जरीआ ॥ जीवन मुकति सो आखीऐ मरि जीवै मरीआ ॥ जन नानक सतिगुरु मेलि हरि जगु दुतरु तरीआ ॥२॥

हम मूरख मुगध सरणागती मिलु गोविंद रंगा राम राजे ॥ गुरि पूरै हरि पाइआ हरि भगति इक मंगा ॥ मेरा मनु तनु सबदि विगासिआ जपि अनत तरंगा ॥ मिलि संत जना हरि पाइआ नानक सतसंगा ॥३॥

दीन दइआल सुणि बेनती हरि प्रभ हरि राइआ राम राजे ॥ हउ मागउ सरणि हरि नाम की हरि हरि मुखि पाइआ ॥ भगति वछलु हरि बिरदु है हरि लाज रखाइआ ॥ जनु नानकु सरणागती हरि नामि तराइआ ॥४॥८॥१५॥

आसा महला ४ ॥

गुरमुखि ढूंढि ढूढेदिआ हरि सजणु लधा राम राजे ॥ कंचन काइआ कोट गड़ विचि हरि हरि सिधा ॥ हरि हरि हीरा रतनु है मेरा मनु तनु विधा ॥ धुरि

भाग वडे हरि पाइआ नानक रसि गुधा ॥१॥

पंथु दसावा नित खड़ी मुंध जोबनि बाली राम राजे ॥ हरि हरि नामु चेताइ गुर हरि मारगि चाली ॥ मेरै मनि तनि नामु आधारु है हउमै बिखु जाली ॥ जन नानक सतिगुरु मेलि हरि हरि मिलिआ बनवाली ॥२॥

गुरमुखि पिआरे आइ मिलु मै चिरी विछुंने राम राजे ॥ मेरा मनु तनु बहुतु बैरागिआ हरि नैण रसि भिंने ॥ मै हरि प्रभु पिआरा दसि गुरु मिलि हरि मनु मंने ॥ हउ मूरखु कारै लाईआ नानक हरि कंमे ॥३॥

गुर अंम्रित भिंनी देहुरी अंम्रितु बुरके राम राजे ॥ जिना गुरबाणी मनि भाईआ अंम्रिति छकि छके ॥ गुर तुठै हरि पाइआ

चूके धक धके ॥ हरि जनु हरि हरि होइआ नानकु हरि इके ॥४॥६॥१६॥

आसा महला ४ ॥

हरि अंम्रित भगति भंडार है गुर सतिगुर पासे राम राजे ॥ गुरु सतिगुरु सचा साहु है सिख देइ हरि रासे ॥ धनु धंनु वणजारा वणजु है गुरु साहु साबासे ॥ जनु नानकु गुरु तिन्ही पाइआ जिन धुरि लिखतु लिलाटि लिखासे ॥१॥

सचु साहु हमारा तूं धणी सभु जगतु वणजारा राम राजे ॥ सभ भाँडे तुधै साजिआ विचि वसतु हरि थारा ॥ जो पावहि भाँडे विचि वसतु सा निकलै किआ कोई करे वेचारा ॥ जन नानक कउ हरि बखसिआ हरि भगति भंडारा ॥२॥

हम किआ गुण तेरे विथरह सुआमी

तूं अपर अपारो राम राजे ॥ हरि नामु सालाहह दिनु राति एहा आस आधारो ॥ हम मूरख किछूअ न जाणहा किव पावह पारो ॥ जनु नानकु हरि का दासु है हरि दास पनिहारो ॥३॥

जिउ भावै तिउ राखि लै हम सरणि प्रभ आए राम राजे ॥ हम भूलि विगाड़ह दिनसु राति हरि लाज रखाए ॥ हम बारिक तूं गुरु पिता है दे मति समझाए ॥ जनु नानकु दासु हरि काँढिआ हरि पैज रखाए ॥४॥१०॥१७॥

आसा महला ४ ॥

जिन मसतकि धुरि हरि लिखिआ तिना सतिगुरु मिलिआ राम राजे ॥ अगिआनु अंधेरा कटिआ गुर गिआनु घटि बलिआ ॥ हरि लधा रतनु पदारथो फिरि बहुड़ि न चलिआ ॥ जन नानक नामु

आराधिआ आराधि हरि मिलिआ ॥१॥
जिनी ऐसा हरि नामु न चेतिओ से काहे जगि आए राम राजे ॥ इहु माणस जनमु दुलंभु है नाम बिना बिरथा सभु जाए ॥ हुणि वतै हरि नामु न बीजिओ अगै भुखा किआ खाए ॥ मनमुखा नो फिरि जनमु है नानक हरि भाए ॥२॥
तूं हरि तेरा सभु को सभि तुधु उपाए राम राजे ॥ किछु हाथि किसै दै किछु नाही सभि चलहि चलाए ॥ जिन तूं मेलहि पिआरे से तुधु मिलहि जो हरि मनि भाए ॥ जन नानक सतिगुरु भेटिआ हरि नामि तराए ॥३॥
कोई गावै रागी नादी बेदी बहु भाति करि नही हरि हरि भीजै राम राजे ॥ जिना अंतरि कपटु विकारु है तिना रोइ किआ कीजै ॥ हरि करता सभु किछु

जाणदा सिरि रोग हथु दीजै ॥ जिना नानक गुरमुखि हिरदा सुधु है हरि भगति हरि लीजै ॥४॥११॥१८॥

आसा महला ४ ॥

जिन अंतरि हरि हरि प्रीति है ते जन सुघड़ सिआणे राम राजे ॥ जे बाहरहु भुलि चुकि बोलदे भी खरे हरि भाणे ॥ हरि संता नो होरु थाउ नाही हरि माणु निमाणे ॥ जन नानक नामु दीबाणु है हरि ताणु सताणे ॥१॥

जिथै जाइ बहै मेरा सतिगुरू सो थानु सुहावा राम राजे ॥ गुरसिखीं सो थानु भालिआ लै धूरि मुखि लावा ॥ गुरसिखा की घाल थाइ पई जिन हरि नामु धिआवा ॥ जिन्ह नानकु सतिगुरु पूजिआ तिन हरि पूज करावा ॥२॥

गुरसिखा मनि हरि प्रीति है हरि नाम

हरि तेरी राम राजे ॥ करि सेवहि पूरा सतिगुरू भुख जाइ लहि मेरी ॥ गुरसिखा की भुख सभ गई तिन पिछै होर खाइ घनेरी ॥ जन नानक हरि पुंनु बीजिआ फिरि तोटि न आवै हरि पुंन केरी ॥३॥

गुरसिखा मनि वाधाईआ जिन मेरा सतिगुरू डिठा राम राजे ॥ कोई करि गल सुणावै हरि नाम की सो लगै गुरसिखा मनि मिठा ॥ हरि दरगह गुरसिख पैनाईअहि जिना मेरा सतिगुरू तुठा ॥ जन नानकु हरि हरि होइआ हरि हरि मनि वुठा ॥४॥१२॥१९॥

आसा महला ४ ॥

जिन्हा भेटिआ मेरा पूरा सतिगुरू तिन हरि नामु द्रिड़ावै राम राजै ॥ तिस की त्रिसना भुख सभ उतरै जो हरि नामु

धिआवै ॥ जो हरि हरि नामु धिआइदे तिन्ह जमु नेड़ि न आवै ॥ जन नानक कउ हरि क्रिपा करि नित जपै हरि नामु हरि नामि तरावै ॥१॥

जिन्ही गुरमुखि नामु धिआइआ तिन्हा फिरि बिघनु न होई राम राजे ॥ जिनी सतिगुरु पुरखु मनाइआ तिन पूजे सभु कोई ॥ जिन्ही सतिगुरु पिआरा सेविआ तिन्हा सुखु सद होई ॥ जिन्हा नानकु सतिगुरु भेटिआ तिन्हा मिलिआ हरि सोई ॥२॥

जिन्हा अंतरि गुरमुखि प्रीति है तिन्ह हरि रखणहारा राम राजे ॥ तिन्ह की निंदा कोई किआ करे जिन्ह हरि नामु पिआरा ॥ जिन हरि सेती मनु मानिआ सभ दुसट झख मारा ॥ जन नानक नामु धिआइआ हरि रखणहारा ॥३॥ हरि

जुगु जुगु भगत उपाइआ पैज रखदा आइआ राम राजे ॥ हरणाखसु दुसटु हरि मारिआ प्रहलादु तराइआ ॥ अहंकारीआ निंदका पिठि देइ नामदेउ मुखि लाइआ ॥ जन नानक ऐसा हरि सेविआ अंति लए छडाइआ ॥४॥१३॥२०॥

੧ਓ सतिनामु करता पुरखु
निरभउ निरवैरु अकाल मूरति
अजूनी सैभं गुरप्रसादि ।।

आसा महला १ ॥

वार सलोका नालि सलोक भी महले पहिले के लिखे टुंडे अस राजै की धुनी ॥

सलोकु मः १ ॥

बलिहारी गुर आपणे दिउहाड़ी सद वार ॥ जिनि माणस ते देवते कीए करत न लागी वार ॥१॥

महला २ ॥

जे सउ चंदा उगवहि सूरज चड़हि हजार ॥ एते चानण होदिआँ गुर बिनु घोर अंधार ॥२॥

म: १ ॥

नानक गुरू न चेतनी मनि आपणै सुचेत ॥ छुटे तिल बूआड़ जिउ सुंञे अंदरि खेत ॥ खेतै अंदरि छुटिआ कहु नानक सउ नाह ॥ फलीअहि फुलीअहि बपुड़े भी तन विचि सुआह ॥३॥

पउड़ी ॥

आपीन्है आपु साजिओ आपीन्है रचिओ नाउ ॥ दुयी कुदरति साजीऐ करि आसणु डिठो चाउ ॥ दाता करता आपि तूं तुसि देवहि करहि पसाउ ॥ तूं जाणोई सभसै दे लैसहि जिंदु कवाउ ॥ करि आसणु डिठो चाउ ॥१॥

सलोकु म: १ ॥

सचे तेरे खंड सचे ब्रहमंड ॥ सचे तेरे लोअ सचे आकार ॥ सचे तेरे करणे सरब बीचार ॥ सचा तेरा अमरु सचा

दीबाणु ॥ सचा तेरा हुकमु सचा फुरमाणु ॥ सचा तेरा करमु सचा नीसाणु ॥ सचे तुधु आखहि लख करोड़ि ॥ सचै सभि ताणि सचै सभि जोरि ॥ सची तेरी सिफति सची सालाह ॥ सची तेरी कुदरति सचे पातिसाह ॥ नानक सचु धिआइनि सचु ॥ जो मरि जंमे सु कचुनि कचु ॥१॥

म: १ ॥

वडी वडिआई जा वडा नाउ ॥ वडी वडिआई जा सचु निआउ ॥ वडी वडिआई जा निहचल थाउ ॥ वडी वडिआई जाणै आलाउ ॥ वडी वडिआई बुझै सभि भाउ ॥ वडी वडिआई जा पुछि न दाति ॥ वडी वडिआई जा आपे आपि ॥ नानक कार न कथनी जाइ ॥ कीता करणा सरब रजाइ ॥२॥

महला २ ॥

इहु जगु सचै की है कोठड़ी सचे का विचि वासु ॥ इकन्हा हुकमि समाइ लए इकन्हा हुकमे करे विणासु ॥ इकन्हा भाणै कढि लए इकन्हा माइआ विचि निवासु ॥ एव भि आखि न जापई जि किसै आणे रासि ॥ नानक गुरमुखि जाणीऐ जा कउ आपि करे परगासु ॥३॥

पउड़ी ॥

नानक जीअ उपाइि कै लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥ ओथै सचे ही सचि निबड़ै चुणि वखि कढे जजमालिआ ॥ थाउ न पाइनि कूड़िआर मुह कालै दोजकि चालिआ ॥ तेरै नाइ रते से जिणि गए हारि गए सि ठगण वालिआ ॥ लिखि नावै धरमु बहालिआ ॥२॥

सलोक मः १ ॥

विसमादु नाद विसमादु वेद ॥ विसमादु जीअ विसमादु भेद ॥ विसमादु रूप विसमादु रंग ॥ विसमादु नागे फिरहि जंत ॥ विसमादु पउणु विसमादु पाणी ॥ विसमादु अगनी खेडहि विडाणी ॥ विसमादु धरती विसमादु खाणी ॥ विसमादु सादि लगहि पराणी ॥ विसमादु संजोगु विसमादु विजोगु ॥ विसमादु भुख विसमादु भोगु ॥ विसमादु सिफति विसमादु सालाह ॥ विसमादु उझड़ विसमादु राह ॥ विसमादु नेड़ै विसमादु दूरि ॥ विसमादु देखै हाजरा हजूरि ॥ वेखि विडाणु रहिआ विसमादु ॥ नानक बुझणु पूरै भागि ॥१॥

म: १ ॥

कुदरति दिसै कुदरति सुणीऐ कुदरति भउ सुख सारु ॥ कुदरति पाताली आकासी कुदरति सरब आकारु ॥ कुदरति वेद पुराण कतेबा कुदरति सरब वीचारु ॥ कुदरति खाणा पीणा पैन्हणु कुदरति सरब पिआरु ॥ कुदरति जाती जिनसी रंगी कुदरति जीअ जहान ॥ कुदरति नेकीआ कुदरति बदीआ कुदरति मानु अभिमानु ॥ कुदरति पउणु पाणी बैसंतरु कुदरति धरती खाकु ॥ सभ तेरी कुदरति तूं कादिरु करता पाकी नाई पाकु ॥ नानक हुकमै अंदरि वेखै वरतै ताको ताकु ॥२॥

पउड़ी ॥

आपीन्है भोग भोगि कै होइ भसमड़ि भउरु सिधाइआ ॥ वडा होआ दुनीदारु

गलि संगलु घति चलाइआ ॥ अगै करणी कीरति वाचीऐ बहि लेखा करि समझाइआ ॥ थाउ न होवी पउदीई हुणि सुणीऐ किआ रूआइआ ॥ मनि अंधै जनमु गवाइआ ॥३॥

सलोक म: १ ॥

भै विचि पवणु वहै सद वाउ ॥ भै विचि चलहि लख दरीआउ ॥ भै विचि अगनि कढै वेगारि ॥ भै विचि धरती दबी भारि ॥ भै विचि इंदु फिरै सिर भारि ॥ भै विचि राजा धरम दुआरु ॥ भै विचि सूरजु भै विचि चंदु ॥ कोह करोड़ी चलत न अंतु ॥ भै विचि सिध बुध सुर नाथ ॥ भै विचि आडाणे आकास ॥ भै विचि जोध महाबल सूर ॥ भै विचि आवहि जावहि पूर ॥ सगलिआ भउ लिखिआ सिरि लेखु ॥ नानक निरभउ निरंकारु सचु एकु ॥१॥

म: १ ॥

नानक निरभउ निरंकारु होरि केते राम रवाल ॥ केतीआ कंन्ह कहाणीआ केते बेद बीचार ॥ केते नचहि मंगते गिड़ि मुड़ि पूरहि ताल ॥ बाजारी बाजार महि आइ कढहि बाजार ॥ गावहि राजे राणीआ बोलहि आल पताल ॥ लख टकिआ के मुंदड़े लख टकिआ के हार ॥ जितु तनि पाईअहि नानका से तन होवहि छार ॥ गिआनु न गलीई ढूढीऐ कथना करड़ा सारु ॥ करमि मिलै ता पाईऐ होर हिकमति हुकमु खुआरु ॥२॥

पउड़ी ॥

नदरि करहि जे आपणी ता नदरी सतिगुरु पाइआ ॥ एहु जीउ बहुते जनम भरंमिआ ता सतिगुरि सबदु सुणाइआ ॥ सतिगुर जेवडु दाता को नही सभि

सुणिअहु लोक सबाइआ ॥ सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ही विचहु आपु गवाइआ ॥ जिनि सचो सचु बुझाइआ ॥४॥

सलोक म: १ ॥

घड़ीआ सभे गोपीआ पहर कंन्ह गोपाल ॥ गहणे पउणु पाणी बैसंतरु चंदु सूरजु अवतार ॥ सगली धरती मालु धनु वरतणि सरब जंजाल ॥ नानक मुसै गिआन विहूणी खाइ गइआ जमकालु ॥१॥

म: १ ॥

वाइनि चेले नचनि गुर ॥ पैर हलाइनि फेरन्हि सिर ॥ उडि उडि रावा झाटै पाइ ॥ वेखै लोकु हसै घरि जाइ ॥ रोटीआ कारणि पूरहि ताल ॥ आपु पछाड़हि धरती नालि ॥ गावनि गोपीआ

गावनि कान्ह ॥ गावनि सीता राजे राम ॥
निरभउ निरंकारु सचु नामु ॥ जा का
कीआ सगल जहानु ॥ सेवक सेवहि
करमि चड़ाउ ॥ भिंनी रैणि जिन्हा मनि
चाउ ॥ सिखी सिखिआ गुर वीचारि ॥
नदरी करमि लघाए पारि ॥ कोलू चरखा
चकी चकु ॥ थल वारोले बहुतु अनंतु ॥
लाटू माधाणीआ अनगाह ॥ पंखी
भउदीआ लैनि न साह ॥ सूऐ चाड़ि
भवाईअहि जंत ॥ नानक भउदिआ
गणत न अंत ॥ बंधन बंधि भवाए
सोइ ॥ पइऐ किरति नचै सभु कोइ ॥
नचि नचि हसहि चलहि से रोइ ॥ उडि
न जाही सिध न होहि ॥ नचणु कुदणु
मन का चाउ ॥ नानक जिन्ह मनि भउ
तिन्हा मनि भाउ ॥२॥

पउड़ी ॥

नाउ तेरा निरंकारु है नाइ लइऐ नरकि न जाईऐ ॥ जीउ पिंडु सभु तिस दा दे खाजै आखि गवाईऐ ॥ जे लोड़हि चंगा आपणा करि पुंनहु नीचु सदाईऐ ॥ जे जरवाणा परहरै जरु वेस करेदी आईऐ ॥ को रहै न भरीऐ पाईऐ ॥५॥

सलोक म: १ ॥

मुसलमाना सिफति सरीअति पड़ि पड़ि करहि बीचारु ॥ बंदे से जि पवहि विचि बंदी वेखण कउ दीदारु ॥ हिंदू सालाही सालाहनि दरसनि रूपि अपारु ॥ तीरथि नावहि अरचा पूजा अगर वासु बहकारु ॥ जोगी सुंनि धिआवन्हि जेते अलख नामु करतारु ॥ सूखम मूरति नामु निरंजन काइआ का आकारु ॥ सतीआ मनि संतोखु उपजै

देणै कै वीचारि ॥ दे दे मंगहि सहसा गूणा सोभ करे संसार ॥ चोरा जारा तै कूड़िआरा खाराबा वेकार ॥ इकि होदा खाइ चलहि ऐथाऊ तिना भि काई कार ॥ जलि थलि जीआ पुरीआ लोआ आकारा आकार ॥ ओइ जि आखहि सु तूंहै जाणहि तिना भि तेरी सार ॥ नानक भगता भुख सालाहणु सचु नामु आधारु ॥ सदा अनंदि रहहि दिनु राती गुणवंतिआ पा छारु ॥१॥

म: १ ॥

मिटी मुसलमान की पेड़ै पई कुम्हिआर ॥ घड़ि भाँडे इटा कीआ जलदी करे पुकार ॥ जलि जलि रोवै बपुड़ी झड़ि झड़ि पवहि अंगिआर ॥ नानक जिनि करतै कारणु कीआ सो जाणै करतारु ॥२॥

पउड़ी ॥

बिनु सतिगुर किनै न पाइओ बिनु सतिगुर किनै न पाइआ ॥ सतिगुर विचि आपु रखिओनु करि परगटु आखि सुणाइआ ॥ सतिगुर मिलिऐ सदा मुकतु है जिनि विचहु मोहु चुकाइआ ॥ उतमु एहु बीचारु है जिनि सचे सिउ चितु लाइआ ॥ जगजीवनु दाता पाइआ ॥६॥

सलोक मः १ ॥

हउ विचि आइआ हउ विचि गइआ ॥ हउ विचि जंमिआ हउ विचि मुआ ॥ हउ विचि दिता हउ विचि लइआ ॥ हउ विचि खटिआ हउ विचि गइआ ॥ हउ विचि सचिआरु कूड़िआरु ॥ हउ विचि पाप पुंन वीचारु ॥ हउ विचि नरकि सुरगि अवतारु ॥ हउ विचि हसै हउ विचि

रोवै ॥ हउ विचि भरीऐ हउ विचि धोवै ॥ हउ विचि जाती जिनसी खोवै ॥ हउ विचि मूरखु हउ विचि सिआणा ॥ मोख मुकति की सार न जाणा ॥ हउ विचि माइआ हउ विचि छाइआ ॥ हउमै करि करि जंत उपाइआ ॥ हउमै बूझै ता दरु सूझै ॥ गिआन विहूणा कथि कथि लूझै ॥ नानक हुकमी लिखीऐ लेखु ॥ जेहा वेखहि तेहा वेखु ॥१॥

महला २ ॥

हउमै एहा जाति है हउमै करम कमाहि ॥ हउमै एई बंधना फिरि फिरि जोनी पाहि ॥ हउमै किथहु ऊपजै कितु संजमि इह जाइ ॥ हउमै एहो हुकमु है पइऐ किरति फिराहि ॥ हउमै दीरघ रोगु है दारु भी इसु माहि ॥ किरपा करे जे आपणी ता गुर का सबदु कमाहि ॥

नानकु कहै सुणहु जनहु इतु संजमि दुख जाहि ॥२॥

पउड़ी ॥

सेव कीती संतोखीीं जिन्ही सचो सचु धिआइआ ॥ ओन्ही मंदै पैरु न रखिओ करि सुक्रितु धरमु कमाइआ ॥ ओन्ही दुनीआ तोड़े बंधना अंनु पाणी थोड़ा खाइआ ॥ तूं बखसीसी अगला नित देवहि चड़हि सवाइआ ॥ वडिआई वडा पाइआ ॥७॥

सलोक म: १ ॥

पुरखाँ बिरखाँ तीरथाँ तटाँ मेघाँ खेताँह ॥ दीपाँ लोआँ मंडलाँ खंडाँ वरभंडाँह ॥ अंडज जेरज उतभुजाँ खाणी सेतजाँह ॥ सो मिति जाणै नानका सराँ मेराँ जंताह ॥ नानक जंत उपाइ कै संमाले सभनाह ॥ जिनि करतै करणा

कीआ चिंता भि करणी ताह ॥ सो करता चिंता करे जिनि उपाइआ जगु ॥ तिसु जोहारी सुअसति तिसु तिसु दीबाणु अभगु ॥ नानक सचे नाम बिनु किआ टिका किआ तगु ॥१॥

म: १ ॥

लख नेकीआ चंगिआईआ लख पुंना परवाणु ॥ लख तप उपरि तीरथाँ सहज जोग बेबाण ॥ लख सूरतण संगराम रण महि छुटहि पराण ॥ लख सुरती लख गिआन धिआन पड़ीअहि पाठ पुराण ॥ जिनि करतै करणा कीआ लिखिआ आवण जाणु ॥ नानक मती मिथिआ करमु सचा नीसाणु ॥२॥

पउड़ी ॥

सचा साहिबु एकु तूं जिनि सचो सचु वरताइआ ॥ जिसु तूं देहि तिसु मिलै

सचु ता तिन्ही सचु कमाइआ ॥ सतिगुरि मिलिऐ सचु पाइआ जिन्ह कै हिरदै सचु वसाइआ ॥ मूरख सचु न जाणन्ही मनमुखी जनमु गवाइआ ॥ विचि दुनीआ काहे आइआ ॥८॥

सलोकु मः १ ॥

पड़ि पड़ि गडी लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ ॥ पड़ि पड़ि बेड़ी पाईऐ पड़ि पड़ि गडीअहि खात ॥ पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास ॥ पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास ॥ नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख ॥१॥

मः १ ॥

लिखि लिखि पड़िआ ॥ तेता कड़िआ ॥ बहु तीरथ भविआ ॥ तेतो लविआ ॥ बहु भेख कीआ देही दुखु

दीआ ॥ सहु वे जीआ अपणा कीआ ॥ अंनु न खाइआ सादु गवाइआ ॥ बहु दुखु पाइआ दूजा भाइआ ॥ बसत्र न पहिरै ॥ अहिनिसि कहरै ॥ मोनि विगूता ॥ किउ जागै गुर बिनु सूता ॥ पग उपेताणा ॥ अपणा कीआ कमाणा ॥ अलु मलु खाई सिरि छाई पाई ॥ मूरखि अंधै पति गवाई ॥ विणु नावै किछु थाइ न पाई ॥ रहै बेबाणी मड़ी मसाणी ॥ अंधु न जाणै फिरि पछुताणी ॥ सतिगुरु भेटे सो सुखु पाए ॥ हरि का नामु मंनि वसाए ॥ नानक नदरि करे सो पाए ॥ आस अंदेसे ते निहकेवलु हउमै सबदि जलाए ॥२॥

पउड़ी ॥

भगत तेरै मनि भावदे दरि सोहनि कीरति गावदे ॥ नानक करमा बाहरे दरि

ढोअ न लहन्ही धावदे ॥ इकि मूलु न बुझन्हि आपणा अणहोदा आपु गणाइदे ॥ हउ ढाढी का नीच जाति होरि उतम जाति सदाइदे ॥ तिन्ह मंगा जि तुझै धिआइदे ॥६॥

सलोकु मः १ ॥

कूड़ु राजा कूड़ु परजा कूड़ु सभु संसारु ॥ कूड़ु मंडप कूड़ु माड़ी कूड़ु बैसणहारु ॥ कूड़ु सुइना कूड़ु रुपा कूड़ु पैन्हणहारु ॥ कूड़ु काइआ कूड़ु कपड़ु कूड़ु रूपु अपारु ॥ कूड़ु मीआ कूड़ु बीबी खपि होए खारु ॥ कूड़ि कूड़ै नेहु लगा विसरिआ करतारु ॥ किसु नालि कीचै दोसती सभु जगु चलणहारु ॥ कूड़ु मिठा कूड़ु माखिउ कूड़ु डोबे पूरु ॥ नानकु वखाणै बेनती तुधु बाझु कूड़ो कूड़ु ॥१॥

म: १ ॥

सचु ता परु जाणीऐ जा रिदै सचा होइ ॥ कूड़ की मलु उतरै तनु करे हछा धोइ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा सचि धरे पिआरु ॥ नाउ सुणि मनु रहसीऐ ता पाए मोख दुआरु ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा जुगति जाणै जीउ ॥ धरति काइआ साधि कै विचि देइ करता बीउ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा सिख सची लेइ ॥ दइआ जाणै जीअ की किछु पुंनु दानु करेइ ॥ सचु ता परु जाणीऐ जा आतम तीरथि करे निवासु ॥ सतिगुरू नो पुछि कै बहि रहै करे निवासु ॥ सचु सभना होइ दारू पाप कढै धोइ ॥ नानकु वखाणै बेनती जिन सचु पलै होइ ॥२॥

पउड़ी ॥

दानु महिंडा तली खाकु जे मिलै त मसतकि लाईऐ ॥ कूड़ा लालचु छडीऐ होइ इक मनि अलखु धिआईऐ ॥ फलु तेवेहो पाईऐ जेवेही कार कमाईऐ ॥ जे होवै पूरबि लिखिआ ता धूड़ि तिन्हा दी पाईऐ ॥ मति थोड़ी सेव गवाईऐ ॥१०॥

सलोकु म: १ ॥

सचि कालु कूड़ु वरतिआ कलि कालख बेताल ॥ बीउ बीजि पति लै गए अब किउ उगवै दालि ॥ जे इकु होइ त उगवै रुती हू रुति होइ ॥ नानक पाहै बाहरा कोरै रंगु न सोइ ॥ भै विचि खुंबि चड़ाईऐ सरमु पाहु तनि होइ ॥ नानक भगती जे रपै कूड़ै सोइ न कोइ ॥१॥

म: १ ॥

लबु पापु दुइ राजा महता कूड़ु होआ सिकदारु ॥ कामु नेबु सदि पुछीऐ बहि बहि करे बीचारु ॥ अंधी रयति गिआन विहूणी भाहि भरे मुरदारु ॥ गिआनी नचहि वाजे वावहि रूप करहि सीगारु ॥ ऊचे कूकहि वादा गावहि जोधा का वीचारु ॥ मूरख पंडित हिकमति हुजति संजै करहि पिआरु ॥ धरमी धरमु करहि गावावहि मंगहि मोख दुआरु ॥ जती सदावहि जुगति न जाणहि छडि बहहि घर बारु ॥ सभु को पूरा आपे होवै घटि न कोई आखै ॥ पति परवाणा पिछै पाईऐ ता नानक तोलिआ जापै ॥२॥

म: १ ॥

वदी सु वजगि नानका सचा वेखै

सोइ ॥ सभनी छाला मारीआ करता करे सु होइ ॥ अगै जाति न जोरु है अगै जीउ नवे ॥ जिन की लेखै पति पवै चंगे सेई केइ ॥३॥

पउड़ी ॥

धुरि करमु जिना कउ तुधु पाइआ ता तिनी खसमु धिआइआ ॥ एना जंता कै वसि किछु नाही तुधु वेकी जगतु उपाइआ ॥ इकना नो तूं मेलि लैहि इकि आपहु तुधु खुआइआ ॥ गुर किरपा ते जाणिआ जिथै तुधु आपु बुझाइआ ॥ सहजे ही सचि समाइआ ॥११॥

सलोकु म: १ ॥

दुखु दारु सुखु रोगु भइआ जा सुखु तामि न होई ॥ तूं करता करणा मै नाही जा हउ करी न होई ॥१॥ बलिहारी कुदरति वसिआ ॥ तेरा अंतु न जाई

लखिआ ॥१॥ रहाउ ॥ जाति महि जोति जोति महि जाता अकल कला भरपूरि रहिआ ॥ तूं सचा साहिबु सिफति सुआल्हिउ जिनि कीती सो पारि पइआ ॥ कहु नानक करते कीआ बाता जो किछु करणा सु करि रहिआ ॥२॥

म: २ ॥

जोग सबदं गिआन सबदं बेद सबदं ब्राहमणह ॥ खत्री सबदं सूर सबदं सूद्र सबदं पराक्रितह ॥ सरब सबदं एक सबदं जे को जाणै भेउ ॥ नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥३॥

महला २ ॥

एक क्रिसनं सरब देवा देव देवा त आतमा ॥ आतमा बासुदेवस्यि जे को जाणै भेउ ॥ नानकु ता का दासु है सोई निरंजन देउ ॥४॥

म: १ ॥

कुंभे बधा जलु रहै जल बिनु कुंभु न होइ ॥ गिआन का बधा मनु रहै गुर बिनु गिआनु न होइ ॥५॥

पउड़ी ॥

पड़िआ होवै गुनहगारु ता ओमी साधु न मारीऐ ॥ जेहा घाले घालणा तेवेहो नाउ पचारीऐ ॥ ऐसी कला न खेडीऐ जितु दरगह गइआ हारीऐ ॥ पड़िआ अतै ओमीआ वीचारु अगै वीचारीऐ ॥ मुहि चलै सु अगै मारीऐ ॥१२॥

सलोकु म: १ ॥

नानक मेरु सरीर का इकु रथु इकु रथवाहु ॥ जुगु जुगु फेरि वटाईअहि गिआनी बुझहि ताहि ॥ सतजुगि रथु संतोखु का धरमु अगै रथवाहु ॥ त्रेतै रथु जतै का जोरु अगै रथवाहु ॥ दुआपुरि

रथु तपै का सतु अगै रथवाहु ॥ कलजुगि रथु अगनि का कूड़ु अगै रथवाहु ॥१॥

म: १ ॥

साम कहै सेतंबरु सुआमी सच महि आछै साचि रहे ॥ सभु को सचि समावै ॥ रिगु कहै रहिआ भरपूरि ॥ राम नामु देवा महि सूरु ॥ नाइ लइऐ पराछत जाहि ॥ नानक तउ मोखंतरु पाहि ॥ जुज महि जोरि छली चंद्रावलि कान्ह क्रिसनु जादमु भइआ ॥ पारजातु गोपी लै आइआ बिंद्राबन महि रंगु कीआ ॥ कलि महि बेदु अथरबणु हूआ नाउ खुदाई अलहु भइआ ॥ नील वसत्र ले कपड़े पहिरे तुरक पठाणी अमलु कीआ ॥ चारे वेद होए सचिआर ॥ पड़हि गुणहि तिन्ह चार वीचार ॥ भाउ भगति करि नीचु सदाए ॥ तउ नानक मोखंतरु पाए ॥२॥

पउड़ी ॥

सतिगुर विटहु वारिआ जितु मिलिऐ खसमु समालिआ ॥ जिनि करि उपदेसु गिआन अंजनु दीआ इन्ही नेत्री जगतु निहालिआ ॥ खसमु छोडि दूजै लगे डुबे से वणजारिआ ॥ सतिगुरु है बोहिथा विरलै किनै वीचारिआ ॥ करि किरपा पारि उतारिआ ॥१३॥

सलोकु म:१ ॥

सिंमल रुखु सराइरा अति दीरघ अति मुचु ॥ ओइि जि आवहि आस करि जाहि निरासे कितु ॥ फल फिके फुल बकबके कंमि न आवहि पत ॥ मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु ॥ सभु को निवै आप कउ पर कउ निवै न कोइ ॥ धरि ताराजू तोलीऐ निवै सु गउरा होइ ॥ अपराधी दूणा निवै जो

हंता मिरगाहि ॥ सीसि निवाइऐ किआ थीऐ जा रिदै कुसुधे जाहि ॥१॥

म: १ ॥

पड़ि पुसतक संधिआ बादं ॥ सिल पूजसि बगुल समाधं ॥ मुखि झूठ बिभूखण सारं ॥ त्रैपाल तिहाल बिचारं ॥ गलि माला तिलकु लिलाटं ॥ दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥ जे जाणसि ब्रहमं करमं ॥ सभि फोकट निसचउ करमं ॥ कहु नानक निहचउ धिआवै ॥ विणु सतिगुर वाट न पावै ॥२॥

पउड़ी ॥

कपड़ु रुपु सुहावणा छडि दुनीआ अंदरि जावणा ॥ मंदा चंगा आपणा आपे ही कीता पावणा ॥ हुकम कीए मनि भावदे राहि भीड़ै अगै जावणा ॥ नंगा दोजकि चालिआ ता दिसै खरा

डरावणा ॥ करि अउगण पछोतावणा ॥१४॥

सलोकु म: १ ॥

दइआ कपाह संतोखु सूतु जतु गंढी सतु वटु ॥ एहु जनेऊ जीअ का हई त पाडे घतु ॥ ना एहु तुटै ना मलु लगै ना एहु जलै न जाइ ॥ धंनु सु माणस नानका जो गलि चले पाइ ॥ चउकड़ि मुलि अणाइआ बहि चउकै पाइआ ॥ सिखा कंनि चड़ाईआ गुरु ब्राहमणु थिआ ॥ ओहु मुआ ओहु झड़ि पइआ वेतगा गइआ ॥१॥

म: १ ॥

लख चोरीआ लख जारीआ लख कूड़ीआ लख गालि ॥ लख ठगीआ पहिनामीआ राति दिनसु जीअ नालि ॥ तगु कपाहहु कतीऐ बाम्हणु वटे आइ ॥

कुहि बकरा रिंन्हि खाइआ सभु को आखै पाइ ॥ होइ पुराणा सुटीऐ भी फिरि पाईऐ होरु ॥ नानक तगु न तुटई जे तगि होवै जोरु ॥२॥

म: १ ॥

नाइ मंनिऐ पति ऊपजै सालाही सचु सूतु ॥ दरगह अंदरि पाईऐ तगु न तूटसि पूत ॥३॥

म: १ ॥

तगु न इंद्री तगु न नारी ॥ भलके थुक पवै नित दाड़ी ॥ तगु न पैरी तगु न हथी ॥ तगु न जिहवा तगु न अखी ॥ वेतगा आपे वतै ॥ वटि धागे अवरा घतै ॥ लै भाड़ि करे वीआहु ॥ कढि कागलु दसे राहु ॥ सुणि वेखहु लोका एहु विडाणु ॥ मनि अंधा नाउ सुजाणु ॥४॥

पउड़ी ॥

साहिबु होइ दइआलु किरपा करे ता साई कार कराइसी ॥ सो सेवकु सेवा करे जिस नो हुकमु मनाइसी ॥ हुकमि मंनिऐ होवै परवाणु ता खसमै का महलु पाइसी ॥ खसमै भावै सो करे मनहु चिंदिआ सो फलु पाइसी ॥ ता दरगह पैधा जाइसी ॥१५॥

सलोक म: १ ॥

गऊ बिराहमण कउ करु लावहु गोबरि तरणु न जाई ॥ धोती टिका तै जपमाली धानु मलेछाँ खाई ॥ अंतरि पूजा पड़हि कतेबा संजमु तुरका भाई ॥ छोडीले पाखंडा ॥ नामि लइऐ जाहि तरंदा ॥१॥

म: १ ॥

माणस खाणे करहि निवाज ॥ छुरी

वगाइनि तिन गलि ताग ॥ तिन घरि ब्रहमण पूरहि नाद ॥ उन्हा भि आवहि ओई साद ॥ कूड़ी रासि कूड़ा वापारु ॥ कूड़ु बोलि करहि आहारु ॥ सरम धरम का डेरा दूरि ॥ नानक कूड़ु रहिआ भरपूरि ॥ मथै टिका तेड़ि धोती कखाई ॥ हथि छुरी जगत कासाई ॥ नील वसत्र पहिरि होवहि परवाणु ॥ मलेछ धानु ले पूजहि पुराणु ॥ अभाखिआ का कुठा बकरा खाणा ॥ चउके उपरि किसै न जाणा ॥ दे कै चउका कढी कार ॥ उपरि आइ बैठे कूड़िआर ॥ मतु भिटै वे मतु भिटै ॥ इहु अंनु असाडा फिटै ॥ तनि फिटै फेड़ करेनि ॥ मनि जूठै चुली भरेनि ॥ कहु नानक सचु धिआईऐ ॥ सुचि होवै ता सचु पाईऐ ॥२॥

पउड़ी ॥

चितै अंदरि सभु को वेखि नदरी हेठि चलाइदा ॥ आपे दे वडिआईआ आपे ही करम कराइदा ॥ वडहु वडा वड मेदनी सिरे सिरि धंधै लाइदा ॥ नदरि उपठी जे करे सुलताना घाहु कराइदा ॥ दरि मंगनि भिख न पाइदा ॥१६॥

सलोकु म: १ ॥

जे मोहाका घरु मुहै घरु मुहि पितरी देइ ॥ अगै वसतु सिञाणीऐ पितरी चोर करेइ ॥ वढीअहि हथ दलाल के मुसफी एह करेइ ॥ नानक अगै सो मिलै जि खटे घाले देइ ॥१॥

म: १ ॥

जिउ जोरु सिरनावणी आवै वारो वार ॥ जूठे जूठा मुखि वसै नित नित

होइ खुआरु ॥ सूचे एहि न आखीअहि बहनि जि पिंडा धोइ ॥ सूचे सेई नानका जिन मनि वसिआ सोइ ॥२॥

पउड़ी ॥

तुरे पलाणे पउण वेग हर रंगी हरम सवारिआ ॥ कोठे मंडप माड़ीआ लाइ बैठे करि पासारिआ ॥ चीज करनि मनि भावदे हरि बुझनि नाही हारिआ ॥ करि फुरमाइसि खाइआ वेखि महलति मरणु विसारिआ ॥ जरु आई जोबनि हारिआ ॥१७॥

सलोकु म: १ ॥

जे करि सूतकु मंनीऐ सभ तै सूतकु होइ ॥ गोहे अतै लकड़ी अंदरि कीड़ा होइ ॥ जेते दाणे अंन के जीआ बाझु न कोइ ॥ पहिला पाणी जीउ है जितु हरिआ सभु कोइ ॥ सूतकु किउ करि

रखीऐ सूतकु पवै रसोइ ॥ नानक सूतकु एव न उतरै गिआनु उतारे धोइ ॥१॥

म: १ ॥

मन का सूतकु लोभु है जिहवा सूतकु कूड़ु ॥ अखी सूतकु वेखणा पर त्रिअ पर धन रूपु ॥ कंनी सूतकु कंनि पै लाइतबारी खाहि ॥ नानक हंसा आदमी बधे जम पुरि जाहि ॥२॥

म: १ ॥

सभो सूतकु भरमु है दूजै लगै जाइ ॥ जंमणु मरणा हुकमु है भाणै आवै जाइ ॥ खाणा पीणा पवित्रु है दितोनु रिजकु संबाहि ॥ नानक जिन्ही गुरमुखि बुझिआ तिन्हा सूतकु नाहि ॥३॥

पउड़ी ॥

सतिगुरु वडा करि सालाहीऐ जिसु विचि वडीआ वडिआईआ ॥ सहि मेले

ता नदरी आईआ ॥ जा तिसु भाणा ता मनि वसाईआ ॥ करि हुकमु मसतकि हथु धरि विचहु मारि कढीआ बुरिआईआ ॥ सहि तुठै नउ निधि पाईआ ॥१८॥

सलोकु म:१ ॥

पहिला सुचा आपि होइ सुचै बैठा आइ ॥ सुचे अगै रखिओनु कोइ न भिटिओ जाइ ॥ सुचा होइ कै जेविआ लगा पड़णि सलोकु ॥ कुहथी जाई सटिआ किसु एहु लगा दोखु ॥ अंनु देवता पाणी देवता बैसंतरु देवता लूणु पंजवा पाइआ घिरतु ॥ ता होआ पाकु पवितु ॥ पापी सिउ तनु गडिआ थुका पईआ तितु ॥ जितु मुखि नामु न ऊचरहि बिनु नावै रस खाहि ॥ नानक एवै जाणीऐ तितु मुखि थुका पाहि ॥१॥

म:१ ॥

भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥ भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥ भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥ सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥ भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ ॥ नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥ जितु मुखि सदा सालाहीऐ भागा रती चारि ॥ नानक ते मुख ऊजले तितु सचै दरबारि ॥२॥

पउड़ी ॥

सभु को आखै आपणा जिसु नाही सो चुणि कढीऐ ॥ कीता आपो आपणा आपे ही लेखा संढीऐ ॥ जा रहणा नाही ऐतु जगि ता काइतु गारबि हंढीऐ ॥ मंदा किसै न आखीऐ पड़ि अखरु एहो बुझीऐ ॥ मूरखै नालि न लुझीऐ ॥१९॥

सलोकु म: १ ॥

नानक फिकै बोलिऐ तनु मनु फिका होइ ॥ फिको फिका सदीऐ फिके फिकी सोइ ॥ फिका दरगह सटीऐ मुहि थुका फिके पाइ ॥ फिका मूरखु आखीऐ पाणा लहै सजाइ ॥१॥

म:१ ॥

अंदरहु झूठे पैज बाहरि दुनीआ अंदरि फैलु ॥ अठसठि तीरथ जे नावहि उतरै नाही मैलु ॥ जिन्ह पटु अंदरि बाहरि गुदड़ु ते भले संसारि ॥ तिन्ह नेहु लगा रब सेती देखन्हे वीचारि ॥ रंगि हसहि रंगि रोवहि चुप भी करि जाहि ॥ परवाह नाही किसै केरी बाझु सचे नाह ॥ दरि वाट उपरि खरचु मंगा जबै देइ त खाहि ॥ दीबानु एको कलम एका हमा तुम्हा मेलु ॥ दरि लए लेखा

पीड़ि छुटै नानका जिउ तेलु ॥२॥

पउड़ी ॥

आपे ही करणा कीओ कल आपे ही तै धारीऐ ॥ देखहि कीता आपणा धरि कची पकी सारीऐ ॥ जो आइआ सो चलसी सभु कोई आई वारीऐ ॥ जिस के जीअ पराण हहि किउ साहिबु मनहु विसारीऐ ॥ आपण हथी आपणा आपे ही काजु सवारीऐ ॥२०॥

सलोकु महला २ ॥

एह किनेही आसकी दूजै लगै जाइ ॥ नानक आसकु कांढीऐ सद ही रहै समाइ ॥ चंगै चंगा करि मंने मंदै मंदा होइ ॥ आसकु ओहु न आखीऐ जि लेखै वरतै सोइ ॥१॥

महला २ ॥

सलामु जबाबु दोवै करे मुंढहु घुथा

जाइ ॥ नानक दोवै कूड़ीआ थाइ न काई पाइ ॥२॥

पउड़ी ॥

जितु सेविऐ सुखु पाईऐ सो साहिबु सदा सम्हालीऐ ॥ जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ ॥ मंदा मूलि न कीचई दे लंमी नदरि निहालीऐ ॥ जिउ साहिब नालि न हारीऐ तेवेहा पासा ढालीऐ ॥ किछु लाहे उपरि घालीऐ ॥२१॥

सलोकु महला २ ॥

चाकरु लगै चाकरी नाले गारबु वादु ॥ गला करे घणेरीआ खसम न पाए सादु ॥ आपु गवाइ सेवा करे ता किछु पाए मानु ॥ नानक जिस नो लगा तिसु मिलै लगा सो परवानु ॥१॥

महला २ ॥

जो जीइ होइ सु उगवै मुह का कहिआ वाउ ॥ बीजे बिखु मंगै अंम्रितु वेखहु एहु निआउ ॥२॥

महला २ ॥

नालि इआणे दोसती कदे न आवै रासि ॥ जेहा जाणै तेहो वरतै वेखहु को निरजासि ॥ वसतू अंदरि वसतु समावै दूजी होवै पासि ॥ साहिब सेती हुकमु न चलै कही बणै अरदासि ॥ कूड़ि कमाणै कूड़ो होवै नानक सिफति विगासि ॥३॥

महला २ ॥

नालि इआणे दोसती वडारू सिउ नेहु ॥ पाणी अंदरि लीक जिउ तिस दा थाउ न थेहु ॥४॥

महला २ ॥

होइ इआणा करे कंमु आणि न सकै रासि ॥ जे इक अध चंगी करे दूजी भी वेरासि ॥५॥

पउड़ी ॥

चाकरु लगै चाकरी जे चलै खसमै भाइ ॥ हुरमति तिस नो अगली ओहु वजहु भि दूणा खाइ ॥ खसमै करे बराबरी फिरि गैरति अंदरि पाइ ॥ वजहु गवाए अगला मुहे मुहि पाणा खाइ ॥ जिस दा दिता खावणा तिसु कहीऐ साबासि ॥ नानक हुकमु न चलई नालि खसम चलै अरदासि ॥२२॥

सलोकु महला २ ॥

एह किनेही दाति आपस ते जो पाईऐ ॥ नानक सा करमाति साहिब तुठै जो मिलै ॥१॥

महला २ ॥

एह किनेही चाकरी जितु भउ खसम न जाइ ॥ नानक सेवकु काढीऐ जि सेती खसम समाइ ॥२॥

पउड़ी ॥

नानक अंत न जापन्ही हरि ता के पारावार ॥ आपि कराए साखती फिरि आपि कराए मार ॥ इकन्हा गली जंजीरीआ इकि तुरी चड़हि बिसीआर ॥ आपि कराए करे आपि हउ कै सिउ करी पुकार ॥ नानक करणा जिनि कीआ फिरि तिस ही करणी सार ॥२३॥

सलोकु म:१ ॥

आपे भाँडे साजिअनु आपे पूरणु देइ ॥ इकन्ही दुधु समाईऐ इकि चुल्है रहन्हि चड़े ॥ इकि निहाली पै सवन्हि इकि उपरि रहनि खड़े ॥ तिन्हा सवारे

नानका जिन्ह कउ नदरि करे ॥१॥

महला २ ॥

आपे साजे करे आपि जाई भि रखै आपि ॥ तिसु विचि जंत उपाइ कै देखै थापि उथापि ॥ किस नो कहीऐ नानका सभु किछु आपे आपि ॥

पउड़ी ॥

वडे कीआ वडिआईआ किछु कहणा कहणु न जाइ ॥ सो करता कादर करीमु दे जीआ रिजकु संबाहि ॥ साई कार कमावणी धुरि छोडी तिंनै पाइ ॥ नानक एकी बाहरी होर दूजी नाही जाइ ॥ सो करे जि तिसै रजाइ ॥२४॥१॥ सुधु ॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

उतार खासे दसखत का

पातिसाही १०॥

अकाल पुरख की रच्छा हम नै ॥ सरब लोह दी रच्छिआ हम नै ॥ सरब काल जी दी रछिआ हम नै ॥ सरब लोह जी दी सदा रछिआ हम नै ॥

आगै लिखारी के दसखत

त्वप्रसादि ॥ चउपई ॥

प्रणवो आदि एकंकारा ॥ जलि थलि महीअलि कीओ पसारा ॥ आदि पुरखु अबिगत अबिनासी ॥ लोक चतुरदस जोति प्रकासी ॥१॥ हसति कीट के बीच

समाना ॥ राव रंक जिह इक सर
जाना ॥ अद्वै अलख पुरखु अबिगामी ॥
सभ घट घट के अंतरजामी ॥२॥ अलख
रूप अछै अनभेखा ॥ राग रंग जिह रूप
न रेखा ॥ बरन चिहन सबहूं ते
निआरा ॥ आदि पुरखु अद्वै
अबिकारा ॥३॥ बरन चिहन जिह जाति
न पाता ॥ सत्रु मित्र जिह तात न माता ॥
सभ ते दूरि सभन ते नेरा ॥ जलि थलि
महीअलि जाहि बसेरा ॥४॥ अनहद रूप
अनाहद बानी ॥ चरन सरनि जिह
बसति भवानी ॥ ब्रहमा बिसन अंतु नही
पाइओ ॥ नेति नेति मुख चार
बताइओ ॥५॥ कोटि इंद्र उपइंद्र
बनाए ॥ ब्रहमा रुद्र उपाइ खपाए ॥
लोक चतुरदस खेल रचाइओ ॥ बहुर
आप ही बीच मिलाइओ ॥६॥ दानव

देव फनिंद अपारा ॥ गंध्रब जच्छ रचे सुभ चारा ॥ भूत भविख भवान कहानी ॥ घट घट के पट पट की जानी ॥७॥ तात मात जिह जाति न पाता ॥ एक रंग काहू नही राता ॥ सरब जोति के बीच समाना ॥ सभहूं सरब ठौर पहिचाना ॥८॥ काल रहत अन काल सरूपा ॥ अलख पुरखु अविगत अवधूता ॥ जाति पाति जिह चिहन न बरना ॥ अबिगत देव अछै अनभरमा ॥९॥ सभ को काल सभन को करता ॥ रोग सोग दोखन को हरता ॥ एक चित्त जिह इक छिन धिआइओ ॥ काल फास के बीच न आइओ ॥१०॥

त्वप्रसादि ॥ कबित्त ॥

कतहूं सुचेत हुइ कै चेतना को चारु कीओ कतहूं अचिंत हुइ कै सोवत अचेत

हो ॥ कतहूं भिखारी हुइ कै मागत फिरत भीख कहूं महादानि हुइ कै मागिओ धन देत हो ॥ कहूं महाराजन को दीजत अनंत दान कहूं महाराजन ते छीन छिति लेत हो ॥ कहूं बेद रीति कहूं ता सिउ बिप्रीत कहूं त्रिगुन अतीत कहूं सुरगुन समेत हो ॥१॥११॥

कहूं ज्छ गंध्रब उरग कहूं बिदिआधर कहूं भए किंनर पिसाच कहूं प्रेत हो ॥ कहूं हुइ कै हिंदूआ गाइत्री को गुपत जपिओ कहूं हुइ कै तुरका पुकारे बाँग देत हो ॥ कहूं कोक काबि हुइ पुरान को पड़त मत कतहूं कुरान को निदान जान लेत हो ॥ कहूं बेद रीति कहूं ता सिउ बिप्रीति कहूं त्रिगुन अतीत कहूं सुरगुन समेत हो ॥२॥१२॥

कहूं देवतान के दिवान मै

बिराजमान कहूं दानवान को गुमान मत देत हो ॥ कहूं इंद्र राजा को मिलत इंद्र पदवी सी कहूं इंद्र पदवी छपाइ छीन लेत हो ॥ कतहूं बिचार अबिचार को बिचारत हो कहूं निज नारि पर नारि के निकेत हो ॥ कहूं बेद रीत कहूं ता सिउ बिप्रीत कहूं त्रिगुन अतीत कहूं सुरगुन समेत हो ॥३॥१३॥

कहूं ससत्र धारी कहूं बिदिआ के बिचारी कहूं मारुत अहारी कहूं नार के निकेत हो ॥ कहूं देव बानी कहूं सारदा भवानी कहूं मंगला म्रिड़ानी कहूं सिआम कहूं सेत हो ॥ कहूं धरम धामी कहूं सरब ठौर गामी कहूं जती कहूं कामी कहूं देत कहूं लेत हो ॥ कहूं बेद रीति कहूं ता सिउ बिप्रीत कहूं त्रिगुन अतीत कहूं सुरगुन समेत हो ॥४॥१४॥

कहूं जटा धारी कहूं कंठी धरे ब्रहम चारी कहूं जोग साधी कहूं साधना करत हो ॥ कहूं कानफारे कहूं डंडी हुइ पधारे कहूं फूक फूक पावन कउ प्रिथी पै धरत हो ॥ कतहूं सिपाही हुइ कै साधत सिलाहन को कहूं छत्री हुइकै अरि मारत मरत हो ॥ कहूं भूमि भार को उतारत हो महाराज कहूं भव भूतन की भावना भरत हो ॥५॥१५॥

कहूं गीत नाद के निदान को बतावत हो कहूं न्रितकारी चित्रकारी के निधान हो ॥ कतहूं पयूख हुइ कै पीवत पिवावत हो कतहूं मयूख ऊख कहूं मद पान हो ॥ कहूं महा सूर हुइ कै मारत मवासन को कहूं महादेव देवतान के समान हो ॥ कहूं महा दीन कहूं द्रब के अधीन कहूं बिदिआ मै प्रबीन कहूं

भूमि कहूं भानु हो ॥६॥१६॥

कहूं अकलंक कहूं मारत मयंक कहूं पूरन प्रजंक कहूं सुधता की सार हो ॥ कहूं देव धरम कहूं साधना के हरम कहूं कुतसित कुकरम कहूं धरम के प्रकार हो ॥ कहूं पउनाहारी कहूं बिदिआ के बिचारी कहूं जोगी जती ब्रहम चारी नर कहूं नारि हो ॥ कहूं छत्र धारी कहूं छाला धरे छैल भारी कहूं छकवारी कहूं छल के प्रकार हो ॥७॥१७॥

कहूं गीत के गवय्या कहूं बेनु के बजय्या कहूं न्रित के नचय्या कहूं नर को अकार हो ॥ कहूं बेद बानी कहूं कोक की कहानी कहूं राजा कहूं रानी कहूं नारि के प्रकार हो ॥ कहूं बेनु के बजय्या कहूं धेनु के चर्‍या कहूं लाखन लवय्या कहूं सुंदर कुमार हो ॥ सुधता

की सान हो कि संतन के प्रान हो कि दाता महादान हो न्रिदोखी निरंकार हो ॥८॥१८॥

निरजुर निरूप हो कि सुंदर सरुप हो कि भूपन के भूप हो कि दाता महादान हो ॥ प्रान के बचय्या दूध पूत के दिवय्या रोग सोग के मिटय्या किधौ मानी महा मान हो ॥ बिदिआ के बिचार हो कि अद्वै अवतार हो कि सिधता की सूरति हो कि सुधता की सान हो ॥ जोबन के जाल हो कि काल हूं के काल हो कि सत्रुन के सूल हो कि मित्रन के प्रान हो ॥९॥१९॥

कहूं ब्रहम बाद कहूं बिदिआ को बिखाद कहूं नाद को ननाद कहूं पूरन भगत हो ॥ कहूं बेद रीति कहूं बिदिआ की प्रतीति कहूं नीति औ अनीति कहूं

ज्वाला सी जगत हो ॥ पूरन प्रताप कहूं इकाँती को जाप कहूं ताप को अताप कहूं जोग ते डिगत हो ॥ कहूं बर देत कहूं छल सिउ छिनाइ लेत सरब काल सरब ठौर एक से लगत हो ॥१०॥२०॥

त्व प्रसादि ॥ सवये ॥

स्रावग सुध समूह सिधान के देखि फिरिओ घर जोग जती के ॥ सूर सुरारदन सुध सुधादिक संत समूह अनेक मती के ॥ सारे ही देस को देखि रहिओ मत कोऊ न देखीअत प्रान पती के ॥ स्री भगवान की भाइ क्रिपा हूं ते एक रती बिनु एक रती के ॥१॥२१॥

माते मतंग जरे जर संगि अनूप उतंग सुरंग सवारे ॥ कोट तुरंग कुरंग से कूदत पउन के गउन कउ जात निवारे ॥ भारी भुजान के भूप भली बिधि निआवत

सीस न जात बिचारे ॥ एते भए तो कहा भए भूपति अंत को नागे ही पाइ पधारे ॥२॥२२॥

जीत फिरे सभ देस दिसान को बाजत ढोल म्रिदंग नगारे ॥ गुंजत गूड़ गजान के सुंदर हिंसत ही हय राज हजारे ॥ भूत भविख भवान के भूपति कउन गनै नही जात बिचारे ॥ स्री पति स्री भगवान भजे बिनु अंत कउ अंतके धाम सिधारे ॥३॥२३॥

तीरथ नहान दइआ दम दान सु संजम नेम अनेक बिसेखै ॥ बेद पुरान कतेब कुरान जमीन जमान सबान के पेखै ॥ पउन अहार जती जत धार सबै सु बिचार हजारक देखै ॥ स्री भगवान भजे बिनु भूपति एक रती बिनु एक न लेखै ॥४॥२४॥

सुध सिपाह दुरंत दुबाह सु साजि सनाह दुरजान दलैंगे ॥ भारी गुमान भरे मन मै करि परबत पंख हलै न हलैंगे ॥ तोरि अरीन मरोरि मवासन माते मतंगन मान मलैंगे ॥ स्री पति स्री भगवान क्रिपा बिनु तिआग जहानु निदान चलैंगे ॥५॥२५॥

बीर अपार बडे बरिआर अबिचारहि सार की धार भछय्या ॥ तोरत देस मलिंद मवासन माते गजान के मान मलय्या ॥ गाड़े गड़ान के तोड़न हार सु बातन ही चक चार लवय्या ॥ साहिब स्री सभ को सिर नाइकु जाचिक अनेक सु एक दिवय्या ॥६॥२६॥

दानव देव फनिंद निसाचर भूत भविख भवान जपैंगे ॥ जीव जिते जल मै थल मै पल ही पल मै सभ थाप

थपैंगे ॥ पुंन प्रतापन बाढत जै धुनि पापन के बहु पुंज खपैंगे ॥ साध समूह प्रसंन फिरैं जग सत्रु सभै अविलोक चपैंगे ॥७॥२७॥

मानव इंद्र गजिंद्र नराधिप जौन त्रिलोक को राज करैंगे ॥ कोट सनान गजादिक दान अनेक सुअंबर साज बरैंगे ॥ ब्रहम महेसुर बिसनु सचीपति अंत फसे जम फास परैंगे ॥ जे नर स्री पति के प्रस हैं पग ते नर फेर न देह धरैंगे ॥८॥२८॥

कहा भयो जो दोऊ लोचन मूंद कै बैठ रहिओ बक धिआन लगाइओ ॥ न्हात फिरिओ लीए सात समुंद्रन लोक गइओ परलोक गवाइओ ॥ बासु कीओ बिखिआन सो बैठ कै ऐसे ही ऐस सु बैस बिताइओ ॥ साचु कहों सुन लेहु

सभै जिन प्रेमु कीओ तिनही प्रभु पाइओ ॥९॥२९॥

काहू लै पाहन पूज धरो सिर काहू लै लिंगु गरे लटकाइओ ॥ काहू लखिओ हरि अवाची दिसा महि काहू पछाह को सीस निवाइओ ॥ कोऊ बुतान को पूजत है पसु कोऊ म्रितान कउ पूजन धाइओ ॥ कूर क्रिआ उरझिओ सभ ही जगु स्री भगवान को भेदु न पाइओ ॥१०॥३०॥

त्व प्रसादि ॥ तोमर छंद

हरि जनम मरन बिहीन ॥ दस चार चार प्रबीन ॥ अकलंक रूप अपार ॥ अनछिज्ज तेज उदार ॥१॥३१॥

अनभिज्ज रूप दुरंत ॥ सभ जगत भगत महंत ॥ जस तिलक भू भ्रित भानु ॥ दस चार चार निधान ॥२॥३१॥

अकलंक रूप अपार ॥ सभ लोक सोक बिदार ॥ कलि काल करम बिहीन ॥ सभ करम धरम प्रबीन ॥३॥३३॥ अनखंड अतुल प्रताप ॥ सभ थापिओ जिह थाप ॥ अनखेद भेद अछेद ॥ मुखचार गावत बेद ॥४॥३४॥ जिह नेति निगम कहंत ॥ मुखचार बकत बिअंत ॥ अनभिज्ज अतुल प्रताप ॥ अन खंड अमित अथाप ॥५॥३५॥ जिह कीन जगत पसार ॥ रचिओ बिचार बिचार ॥ अनंत रूप अखंड ॥ अतुल प्रताप प्रचंड ॥६॥३६॥ जिह अंड ते ब्रहमंड ॥ कीने सु चौदह खंड ॥ सभ कीन जगत पसार ॥ अबध्कत रूप उदार ॥७॥३७॥ जिह कोटि इंद्र न्रिपार ॥ कई ब्रहम बिसन बिचार ॥ कई राम क्रिसन रसूल ॥ बिनु भगति को न

कबूल ॥८॥३८॥ कई सिंध बिंध नगिंद्र ॥ कई मच्छ कच्छ फनिंद्र ॥ कई देव आदि कुमार ॥ कई क्रिसन बिसनु अवतार ॥९॥३९॥ कई इंद्र बार बुहार ॥ कई बेद औ मुखचार ॥ कई रूद्द्र छुद्द्र सरूप ॥ कई राम क्रिसन अनूप ॥१०॥४०॥ कई कोक काबि भणंत ॥ कई बेद भेद कहंत ॥ कई सासत्र सिंम्रिति बखान ॥ कहूं कथत ही सु पुरान ॥११॥४१॥ कई अगनिहोत्र करंत ॥ कई उरध ताप दुरंत ॥ कई उरध बाहु संनिआस ॥ कहूं जोग भेस उदास ॥१२॥४२॥ कहूं निवली करम करंत ॥ कहूं पउन अहार दुरंत ॥ कहूं तीरथ दान अपार ॥ कहूं जग करम उदार ॥१३॥४३॥ कहूं अगनिहोत्र अनूप ॥ कहूं निआइ राज बिभूति ॥ कहूं

सासत्र सिंम्रिति रीति ॥ कहूं बेद सिउ बिप्रीति ॥१४॥४४॥ कई देस देस फिरंत ॥ कई एक ठौर इसथंत ॥ कहूं करत जल महि जाप ॥ कहूं सहत तन पर ताप ॥१५॥४५॥ कहूं बास बनहि करंत ॥ कहूं ताप तनहि सहंत ॥ कहूं ग्रिहसत धरम अपार ॥ कहूं राज रीति उदार ॥१६॥४६॥ कहूं रोग रहत अभरम ॥ कहूं करम करत अकरम ॥ कहूं सेख ब्रहम सरूप ॥ कहूं नीति राज अनूप ॥१७॥४७॥ कहूं रोग सोग बिहीन ॥ कहूं एक भगति अधीन ॥ कहूं रंक राज कुमार ॥ कहूं बेद बिआस अवतार ॥१८॥४८॥ कई ब्रहम बेद रटंत ॥ कई सेख नाम उचरंत ॥ बैराग कहूं संनिआस ॥ कहूं फिरत रूप उदास ॥१९॥४९॥ सभ करम फोकट

जान ॥ सभ धरम निहफल मान ॥ बिन एक नाम अधार ॥ सभ करम भरम बिचार ॥२०॥५०॥

त्व प्रसादि ॥ लघु नराज छंद ॥

जले हरी ॥ थले हरी ॥ उरे हरी ॥ बने हरी ॥१॥५१॥ गिरे हरी ॥ गुफे हरी ॥ छिते हरी ॥ नभे हरी ॥२॥५२॥ ईहाँ हरी ॥ ऊहाँ हरी ॥ जिमी हरी ॥ जमा हरी ॥३॥५३॥ अलेख हरी ॥ अभेख हरी ॥ अदोख हरी ॥ अद्वैख हरी ॥४॥५४॥ अकाल हरी ॥ अपाल हरी ॥ अछेद हरी ॥ अभेद हरी ॥५॥५५॥ अजंत्र हरी ॥ अमंत्र हरी ॥ सु तेज हरी ॥ अतंत्र हरी ॥६॥५६॥ अजाति हरी ॥ अपाति हरी ॥ अमित्र हरी ॥ अमात हरी ॥७॥५७॥ अरोग हरी ॥ असोग हरी ॥ अभरम हरी ॥ अकरम

हरी ॥८॥५८॥ अजै हरी ॥ अभै हरी ॥
अभेद हरी ॥ अछेद हरी ॥६॥५६॥
अखंड हरी ॥ अभंड हरी ॥ अडंड हरी ॥
प्रचंड हरी ॥१०॥६०॥ अतेव हरी ॥
अभेव हरी ॥ अजेव हरी ॥ अछेव
हरी ॥११॥६१॥ भजो हरी ॥ थपो हरी ॥
तपो हरी ॥ जपो हरी ॥१२॥६२॥ जलस
तुही ॥ थलस तुही ॥ नदिस तुही ॥
नदस तुही ॥१३॥६३॥ ब्रिछस तुही ॥
पतस तुही ॥ छितस तुही ॥ उरधस
तुही ॥१४॥६४॥ भजस तुअं ॥ भजस
तुअं ॥ रटम तुअं ॥ ठटस तुअं
॥१५॥६५॥ जिमी तुही ॥ जमा तुही ॥
मकी तुही ॥ मका तुही ॥१६॥६६॥ अभू
तुही ॥ अभै तुही ॥ अछू तुही ॥ अछै
तुही ॥१७॥६७॥ जतस तुही ॥ ब्रतस
तुही ॥ गतस तुही ॥ मतस

तुही ॥१८॥६८॥ तुही तुही ॥ तुही तुही ॥ तुही तुही ॥ तुही तुही ॥१९॥६९॥ तुही तुही ॥ तुही तुही ॥ तुही तुही ॥ तुही तुही ॥२०॥७०॥

त्व प्रसादि ॥ कबित्त ॥

खूक मलहारी गज गदहा बिभूति धारी गिदूआ मसान बास करिओ ई करत है ॥ घुघू मट बासी लगे डोलत उदासी म्रिग तरवर सदीव मोन साधे ई मरत है ॥ बिंद के सधय्या ताहि हीज की बडय्या देत बंदरा सदीव पाइ नागे ई फिरत है ॥ अंगना अधीन काम क्रोध मै प्रबीन एक गिआन के बिहीन छीन कैसे कै तरत है ॥१॥७१॥

भूत बनचारी छिति छउना सभै दूधाधारी पौन के अहारी सु भुजंग जानीअतु है ॥ त्रिण के भछय्या धन

लोभ के तजय्या ते तो गऊअन के जय्या ब्रिख भय्या मानीअतु है ॥ नभ के उडय्या ताहि पंछी की बडय्या देत बगुला बिड़ाल ब्रिक धिआनी ठानीअतु है ॥ जेते बडे गिआनी तिनो जानी पै बखानी नाहि ऐसे न प्रपंच मन भूलि आनीअतु है ॥२॥७२॥

भूमि के बसय्या ताहि भू चरी के जय्या कहै नभ के उडय्या सो चिरय्या कै बखानीऐ ॥ फल के भछय्या ताहि बाँदरी के जय्या कहै आदिस फिरय्या ते तो भूत कै पछानीऐ ॥ जल के तरय्या को गंगेरी सी कहत जग आग के भछय्या सो चकोर सम मानीऐ ॥ सूरज सिवय्या ताहि कौल की बडय्या देत चंद्रमा सिवय्या कौ कवी कै पहिचानीऐ ॥३॥७३॥

नाराइण क्छ म्छ तिंदूआ कहत सभ कउल नाभि कउल जिह ताल मै रहतु है ॥ गोपी नाथ गूजर गुपाल सभै धेनुचारी रिखी केस नाम कै महंत लहीअतु है ॥ माधव भवर औ अटेरू को कन्हय्या नाम कंस को बधय्या जम दूत कहीअतु है ॥ मूड़ रूड़ पीटत न गूड़ता को भेद पावै पूजत न ताहि जा के राखे रहीअतु है ॥४॥७४॥

बिसुपाल जगत काल दीन दिआल बैरी साल सदा प्रतिपाल जम जाल ते रहत है ॥ जोगी जटाधारी सती साचे बडे ब्रहमचारी धिआन काज भूख पिआस देह पै सहत है ॥ निउली करम जल पावक पवन होम अधो मुख एक पाइ ठाढे न बहत है ॥ मानव फनिंद देव दानव न पावै भेद बेद औ कतेब

नेति नेति कै कहत है ॥५॥७५॥

नाचत फिरत मोर बादर करत घोर दामनी अनेक भाउ करिओ ई करत है ॥ चंद्रमा ते सीतल न सूरज ते तपत तेज इंद्र सो न राजा भव भूमि को भरत है ॥ सिव से तपसी आदि ब्रहमा से न बेदचारी सनत कुमार सी तपसध न अनत है ॥ गिआन के बिहीन काल फास के अधीन सदा जुगन की चउकरी फिराए ई फिरत है ॥६॥७६॥

एक सिव भए एक गए एक फेर भए राम चंद्र क्रिसन के अवतार भी अनेक है ॥ ब्रहमा अरु बिसन केते बेद औ पुरान केते सिंम्रिति समूहन के हुइ हुइ बितए है ॥ मोन दी मदार केते असुनी कुमार केते अंसा अवतार केते काल बस भए है ॥ पीर औ पिकाँबर केते गने न

परत एते भूमि ही ते हुइ कै फेरि भूमि ही मिलए है ॥७॥७७॥

जोगी जती ब्रहमचारी बडे बडे छत्रधारी छत्र ही की छाया कई कोस लौ चलत है ॥ बडे बडे राजन के दाबत फिरत देस बडे बडे राजन के द्रप को दलत है ॥ मान से महीप औ दिलीप कैसे छत्रधारी बडो अभिमान भुज दंड को करत है ॥ दारा से दिलीसर द्रुजोधन से मान धारी भोग भोग भूमि अंत भूमि मै मिलत है ॥८॥७८॥

सिजदे करे अनेक तोपची कपट भेस पोसती अनेक दा निवावत है सीस कौ ॥ कहा भइओ मल्ल जौ पै काढत अनेक डंड सो तौ न डंडौत असटाँग अथितीस कौ ॥ कहा भइओ रोगी जौ पै डारिओ रहिओ उरध मुख मन ते न

मूंड निहुराइओ आदि ईस कौ ॥ कामना अधीन सदा दामना प्रबीन एक भावना बिहीन कैसे पावै जगदीस कौ ॥९॥७९॥ सीस पटकत जा के कान मै खजूरा धसै मूंड छटकत मित्र पुत्र हूं के सोक सों ॥ आक को चरया फल फूल को भछय्या सदा बन को भ्रमया और दूसरो न बोक सों ॥ कहा भयो भेड जो घसत सीस ब्रिछन सों माटी को भछय्या बोल पूछ लीजै जोक सों ॥ कामना अधीन काम क्रोध मै प्रबीन एक भावना बिहीन कैसे भेटै परलोक सों ॥१०॥८०॥

नाचिओ ई करत मोर दादर करत सोर सदा घनघोर घन करिओ ई करत हैं ॥ एक पाइ ठाढे सदा बन मै रहत ब्रिछ फूक फूक पाव भूमि स्रावग धरत

हैं ॥ पाहन अनेक जुग एक ठउर बासु करै काग और चील देस देस बिचरत हैं ॥ गिआन के बिहीन महा दान मै न हूजै लीन भावना बिहीन दीन कैसे कै तरत हैं ॥११॥८१॥

जैसे एक स्वाँगी कहूं जोगीआ बैरागी बनै कबहूं संनिआस भेस बन कै दिखावई ॥ कहूं पउनाहारी कहूं बैठे लाइ तारी कहूं लोभ की खुमारी सों अनेक गुन गावई ॥ कहूं ब्रहमचारी कहूं हाथ पै लगावै बारी कहूं डंड धारी हुइ कै लोगन भ्रमावई ॥ कामना अधीन परिओ नाचत है नाचन सो गिआन के बिहीन कैसे ब्रहम लोक पावई ॥१२॥८२॥

पंच बार गीदर पुकारे परे सीत काल कुंचर औ गदहा अनेक दा पुकार ही ॥

कहा भइओ जो पै कलवत्त्र लीओ कासी बीच चीर चीर चोरटा कुठारन सो मारही ॥ कहा भइओ फासी डारि बूडिओ जड़ गंग धार डारि डारि फास ठग मारि मारि डारही ॥ डूबे नरक धार मूड़ गिआन के बिना बिचार भावना बिहीन कैसे गिआन को बिचार ही ॥१३॥८३॥

ताप के सहे ते जौ पै पाईऐ अताप नाथ तापना अनेक तन घाइल सहत हैं॥ जाप के कीए ते जौ पै पायत अजाप देव पूदना सदीव तुही तुही उचरत हैं॥ नभ के उडे ते जौ पै नाराइण पायत अनल अकास पंछी डोलबो करत हैं॥ आग मै जरे ते गति राँड की परत करि पताल के बासी किउ भुजंग न तरत हैं॥१४॥८४॥

कोऊ भइओ मुंडीआ संनिआसी कोऊ जोगी भइओ कोऊ ब्रहमचारी कोऊ जती अनुमानबो ॥ हिंदू औ तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥ करता करीम सोई राजक रहीम ओई दूसरो न भेद कोई भूलि भ्रम मानबो ॥ एक ही की सेव सभ ही को गुरदेव एक एक ही सरूप सबै एकै जोति जानबो ॥१५॥८५॥

देहुरा मसीत सोई पूजा औ निवाज एई मानस सबै एक पै अनेक को भ्रमाउ है ॥ देवता अदेव जच्छ गंध्रब तुरक हिंदू निआरे निआरे देसन के भेस को प्रभाउ है ॥ एकै नैन एकै कान एकै देह एकै बान खाक बाद आतस औ आब को रलाउ है ॥ अलह अभेख सोई

पुरान औ कुरान ओई एक ही सरूप सबै एक ही बनाउ है ॥१६॥८६॥

जैसे एक आग ते कनूका कोटि आग उठे निआरे निआरे हुइ कै फेरि आग मै मिलाहिंगे ॥ जैसे एक धूरि ते अनेक धूरि पूरत है धूरि के कनूका फेर धूरि ही समाहिंगे ॥ जैसे एक नद ते तरंग कोटि उपजत हैं पानि के तरंग सबै पानि ही कहाहिंगे ॥ तैसे बिस्व रूप ते अभूत भूत प्रगट हुइ ताही ते उपज सबै ताही मै समाहिंगे ॥१७॥८७॥

केते कच्छ मच्छ केते उन कउ करत भच्छ केते अच्छ वच्छ हुइ सपच्छ उड्ड जाहिंगे ॥ केते नभ बीच अच्छ पच्छ कउ करैंगे भच्छ केतक प्रतच्छ हुइ पचाइ खाहि जाहिंगे ॥ जल कहा थल कहा गगन के गउन कहा काल

के बनाए सबै काल ही चबाहिंगे ॥ तेज जिउ अतेज मै अतेज जैसे तेज लीन ताही ते उपज सबै ताही मै समाहिंगे ॥१८॥८८॥

कूकत फिरत केते रोवत मरत केते जल मै डुबत केते आग मै जरत हैं ॥ केते गंग बासी केते मदीना मका निवासी केतक उदासी के भ्रमाए ई फिरत हैं ॥ करवत सहत केते भूमि मै गडत केते सूआ पै चढ़त केते दूख कउ भरत हैं ॥ गैन मै उडत केते जल मै रहत केते गिआन के बिहीन जक जारे ई मरत हैं ॥१९॥८९॥

सोध हारे देवता बिरोध हारे दानो बडे बोध हारे बोधक प्रबोध हारे जापसी ॥ घस हारे चंदन लगाइ हारे चोआचार पूज हारे पाहन चढाइ हारे लापसी ॥ गाह हारे

गोरन मनाइ हारे मड़ी मट लीप हारे भीतन लगाइ हारे छापसी ॥ गाइ हारे गंध्रब बजाइ हारे किंनर सब पच हारे पंडित तपंत हारे तापसी ॥२०॥९०॥

त्व प्रसादि ॥ भुजंग प्रयात छंद ॥

न रागं न रंगं न रूपं न रेखं ॥ न मोहं न क्रोहं न द्रोहं न द्वैखं ॥ न करमं न भरमं न जनमं न जातं ॥ न मित्रं न सत्रं न पित्रं न मातं ॥१॥९१॥

न नेहं न गेहं न कामं न धामं ॥ न पुत्रं न मित्रं न सत्रं न भामं ॥ अलेखत्रं अभेखं अजोनी सरूपं ॥ सदा सिद्धिदा बुद्धिदा ब्रिध रूपं ॥२॥९२॥ नही जानि जाई कछू रूप रेखं ॥ कहा बास ता को फिरै कउन भेखं ॥ कहा नाम ता को कहा कै कहावै ॥ कहा कै बखानो कहै मै न आवै ॥३॥९३॥

न रोगं न सोगं न मोहं न मातं ॥
न करमं न भरमं न जनमं न जातं ॥
अद्वैखम अभेखं अजोनी सरूपे ॥ नमो
एक रूपे नमो एकरूपे ॥४॥६४॥

परेअं परा परम प्रगिआ प्रकासी
अछेदं अछै आदि अद्वै अबिनासी ॥ न
जातं न पातं न रूपं न रंगे ॥ नमो आदि
अभंगे नमो आदि अभंगे ॥५॥६५॥

किते क्रिसन से कीट कोटै उपाए ॥
उसारे गड़े फेरि मेटे बनाए ॥ अगाधे अभै
आदि अद्वै अबिनासी ॥ प्रेअं परा परम
पूरन प्रकासी ॥६॥६६॥

न आधं न बिआधं अगाधं सरूपे ॥
अखंडित प्रताप आदि अछै बिभूते ॥ न
जनमं न मरनं न बरनं न बिआधे ॥
अखंडे प्रचंडे अदंडे असाधे ॥७॥६७॥

न नेहं न गेहं सनेहं सनाथे ॥ उदंडे

अमंडे प्रचंडे प्रमाथे ॥ न जाते न पाते न सत्रे न मित्रे ॥ सु भूते भविखे भवाने अचित्रे ॥८॥९८॥

न राय न रंकं न रूपं न रेखं ॥ न लोभं न छोभं अभूतं अभेखं ॥ न सत्रं न मित्रं न नेहं न गेहं ॥ सदैवं सदा सरब सरबत्र सनेहं ॥९॥९९॥

न कामं न करोधं न लोभं न मोहं ॥ अजोनी अछै आदि अद्वै अजोहं ॥ न जनमं न मरनं न बरनं न बिआधं ॥ न रोगं न सोगं अभै निर बिखाधं ॥१०॥१००॥

अछेदं अभेदं अकरमं अकालं ॥ अखंडं अभंडं प्रचंडं अपालं ॥ न तातं न मातं न जातं न कायं ॥ न नेहं न गेहं न भरमं न भायं ॥११॥१०१॥

न रूपं न भूपं न कायं न करमं ॥

न त्रासं न प्रासं न भेदं न भरमं ॥ सदैवं सदा सिद्‌ध ब्रिधं सरूपे ॥ नमो एक रूपे नमो एक रूपे ॥१२॥१०२॥

त्रिउकतं प्रभा आदि अनउकतं प्रतापे ॥ अजुगतं अछै आदि अविकते अथापे ॥ बिभुगतं अछै आदि अछै सरूपे ॥ नमो एक रूपे नमो एक रूपे ॥१३॥१०३॥

न नेहं न गेहं न सोकं न साकं ॥ परेअं पवित्रं पुनीतं अताकं ॥ न जातं न पातं न मित्रं न मंत्रे ॥ नमो एक तंत्रे नमो एक तंत्रे ॥१४॥१०४॥

न धरमं न भरमं न सरमं न साके ॥ न बरमं न चरमं न करमं न बाके ॥ न सत्रं न मित्रं न पुत्रं सरूपे ॥ नमो आदि रूपे नमो आदि रूपे ॥१५॥१०५॥

कहूं कंज के मंज के भरम भूले ॥

कहूं रंक के राज के धरम अलूले ॥ कहूं देस के भेस के धरम धामे ॥ कहूं राज के साज के बाज तामे ॥१६॥१०६॥

कहूं अच्छ के पच्छ के सिद्ध साधे ॥ कहूं सिद्ध के बुद्धि के ब्रिद्ध लाधे ॥ कहूं अंग के रंग के संगि देखे ॥ कहूं जंग के रंग के रंग पेखे ॥१७॥१०७॥

कहूं धरम के करम के हरम जाने ॥ कहूं धरम के करम के भरम माने ॥ कहूं चारु चेसटा कहूं चित्र रूपं ॥ कहूं परम प्रगिआ कहूं सरब भूपं ॥१८॥१०८॥

कहूं नेह ग्रेहं कहूं देह दोखं ॥ कहूं अउखधी रोग के सोक सोखं ॥ कहूं देव बिदिआ कहूं दैत बानी ॥ कहूं जच्छ गंध्रब किंनर कहानी ॥१९॥१०९॥

कहूं राजसी सातकी तामसी हो ॥ कहूं जोग बिदिआ धरे तापसी हो ॥ कहूं रोग हरता कहूं जोग जुगतं ॥ कहूं भूमि की भुगत मै भरम भुगतं ॥२०॥११०॥

कहूं देव कंनिआ कहूं दानवी हो ॥ कहूं जच्छ बिदिआधरे मानवी हो ॥ कहूं राजसी हो कहूं राज कंनिआ ॥ कहूं स्रिसटि की प्रिसट की रिसट पंनिआ ॥२१॥१११॥

कहूं बेद बिदिआ कहूं बिओम बानी ॥ कहूं कोक की काबि कथै कहानी ॥ कहूं अद्‌द्र सारं कहूं भद्‌द्र रूपं ॥ कहूं मद्‌द्र बानी कहूं छिद्‌द्र सरूपं ॥२२॥११२॥

कहूं बेद बिदिआ कहूं काबि रूपं ॥ कहूं चेसटा चार चित्रं सरूपं ॥ कहूं परम पुरान को पार पावै ॥ कहूं बैठ

कुरान के गीत गावै ॥२३॥११३॥

कहूं सुद्ध सेखं कहूं ब्रहम धरमं ॥
कहूं ब्रिद्ध अवसथा कहूं बाल करमं ॥
कहूं जुआ सरूपं जरा रहत देहं ॥ कहूं
नेह देहं कहूं तिआग ग्रेहं ॥२४॥११४॥

कहूं जोग भोगं कहूं रोग रागं ॥ कहूं
रोग रहता कहूं भोग तिआगं ॥ कहूं राज
साजं कहूं राज रीतं ॥ कहूं पूरन प्रग्गिआ
कहूं परम प्रीतं ॥२५॥११५॥

कहूं आरबी तोरकी पारसी हो ॥ कहूं
पहलवी पसतवी संसक्रिती हो ॥ कहूं
देस भाखिआ कहूं देव बानी ॥ कहूं राज
बिदिआ कहूं राजधानी ॥२६॥११६॥

कहूं मंत्र बिदिआ कहूं तंत्र सारं ॥
कहूं जंत्र रीतं कहूं ससत्र धारं ॥ कहूं
होम पूजा कहूं देव अरचा ॥ कहूं
पिंगुलाचारणी गीत चरचा ॥२७॥११७॥

कहूं बीन बिदिआ कहूं गान गीतं ॥
कहूं मलेछ भाखिआ कहूं बेद रीतं ॥
कहूं न्रित बिदिआ कहूं नाग बानी ॥ कहूं
गारड़ू गूढ़ कथै कहानी ॥२८॥११८॥

कहूं अच्छरा पच्छरा मच्छरा हो ॥
कहूं बीर बिदिआ अभूतं प्रभा हो ॥ कहूं
छैल छालाधरे छत्र धारी ॥ कहूं राज
साजं धिराजाधिकारी ॥२९॥११९॥

नमो नाथ पूरे सदा सिद्ध दाता ॥
अछेदी अछै आदि अद्वै बिधाता ॥ न
त्रसतं न त्रसतं समसतं सरूपे ॥ नमसतं
नमसतं तुअसतं अभूते ॥३०॥१२०॥

त्वप्रसादि ॥ पाधड़ी छंद ॥

अबयकत तेज अनभउ प्रकास ॥
अचछै सरूप अद्वै अनास ॥ अनतुट्ट
तेज अनखुट्ट भंडार ॥ दाता दुरंत सरबं
प्रकार ॥१॥१२१॥

अनभूत तेज अनछिज्ज गात ॥ करता सदीव हरता सनात ॥ आसन अडोल अनभूत करम ॥ दाता दइआल अनभूत धरम ॥२॥१२२॥

जिह सत्र मित्त्र नही जनम जाति ॥ जिह पुत्त्र भ्रॉत नही मित्त्र मात ॥ जिह करम भरम नही धरम धिआन ॥ जिह नेह गेह नही बिओत बान ॥३॥१२३॥

जिह जाति पाति नही सत्त्रु मित्त्र ॥ जिह नेह गेह नही चिहन चित्र ॥ जिह रंग रुप नही राग रेख ॥ जिह जनम जाति नही भरम भेख ॥४॥१२४॥

जिह करम भरम नही जाति पाति ॥ नही नेह गेह नही पित्र मात ॥ जिह नाम थाम नही बरग बिआधि ॥ जिह रोग सोग नही सत्त्रु साध ॥५॥१२५॥

जिह त्रास वास नही देह नास ॥

जिह आदि अंत नही रूप रास ॥ जिह
रोग सोग नही जोग जुगति ॥ जिह त्रास
आस नही भूमि भुगति ॥६॥१२६॥

जिह काल बिआल कटिओ न अंग ॥
अछै सरूप अखै अभंग ॥ जिह नेति
नेति उचरंत बेद ॥ जिह अलख रूप
कथत कतेब ॥७॥१२७॥

जिह अलख रूप आसन अडोल ॥
जिह अमित तेज अछै अतोल ॥ जिह
धिआन काज मुनि जन अनंत ॥ कई
कलप जोग साधत दुरंत ॥८॥१२८॥

तन सीत घाम बरखा सहंत ॥ कई
कलप एक आसन बितंत ॥ कई जतन
जोग बिदिआ बिचार ॥ साधंत तदपि
पावत न पार ॥६॥१२६॥

कई उरध बाहु देसन भ्रमंत ॥ कई
उरध मध पावक झुलंत ॥ कई सिंम्रिति

सासत्र उचरंत बेद ॥ कई कोक काबि कथत कतेब ॥१०॥१३०॥

कई अगनिहोत्र कई पउनाहार ॥ कई करत कोट म्रित को अहार ॥ कई करत साक पै पत्र भच्छ ॥ नही तदपि देव होवत प्रतच्छ ॥११॥१३१॥

कई गीत गान गंध्रब रीति ॥ कई बेद सासत्र बिदिआ प्रतीति ॥ कहूं बेद रीति जग आदि करम ॥ कहूं अगनिहोत्र कहूं तीरथ धरम ॥१२॥१३२॥

कई देस देस भाखा रटंत ॥ कई देस देस बिदिआ पढ़ंत ॥ कई करत भाँति भाँतिन बिचार ॥ नही नैक तास पायतन पार ॥१३॥१३३॥

कई तीरथ तीरथ भरमत सु भरम ॥ कई अगनिहोत्र कई देव करम ॥ कई करत बीर बिदिआ बिचार ॥ नही तदपि

तास पायतन पार ॥१४॥१३४॥

कहूं राज रीति कहूं जोग धरम ॥ कई सिंम्रिति सासत्र उचरत सु करम ॥ निउली आदि करम कहूं हसति दान ॥ कहूं अस्वमेध मख को बखान ॥१५॥१३५॥

कहूं करत ब्रहम बिदिआ बिचार ॥ कहूं जोग रीति कहूं बिरधचार ॥ कहूं करत जच्छ गंध्रब गान ॥ कहूं धूप दीप कहूं अरघ दान ॥१६॥१३६॥

कहूं पित्र करम कहूं बेद रीति ॥ कहूं न्रित नाच कहूं गान गीति ॥ कहूं करत सासत्र सिंम्रिति उचार ॥ कहूं भजत एक पग निराधार ॥१७॥१३७॥

कई नेह देह कई गेह वास ॥ कई भ्रमत देस देसन उदास ॥ कई जल निवास कई अगनि ताप ॥ कई जपत उरध लटकंत जाप ॥१८॥१३८॥

कई करत जोग कलपं प्रजंत ॥ नही तदपि तास पायतन अंत ॥ कई करत कोटि बिदिआ बिचारि ॥ नही तदप द्रिसटि देखे मुरारि ॥१९॥१३९॥

बिन भगति सकति नही परत पान ॥ बहु करत होम अरु जग्ग दान ॥ बिन एक नाम इक चित लीन ॥ फोकटो सरब धरमा बिहीन ॥२०॥१४०॥

त्वप्रसादि ॥ तोटक छंद ॥

जै जंपहु जुगण जूह जुअं ॥ भै कंपहु मेरु पयाल भुअं ॥ तप तापस सरब जलेरुथलं ॥ धन उचरत इंद्र कुमेर बलं ॥१॥१४१॥

अनखेद सरूप अभेद अभिअं ॥ अनखंड अभूत अछेद अछिअं ॥ अनकाल अपाल दिआल सुअं ॥ जिह ठटीअं मेरु अकास भुअं ॥२॥१४२॥

अनखंड अमंड प्रचंड नरं ॥ जिह रचीअं देव अदेव बरं ॥ सभ कीनी दीन जमीन जमाँ ॥ जिह रचीअं सरब मकीन मकाँ ॥३॥१४३॥

जिह राग न रूप न रेख रुखं ॥ जिह ताप न साप न सोक सुखं ॥ जिह रोग न सोग न भोग भुयं ॥ जिह खेद न भेद न छेद छुयं ॥४॥१४४॥

जिह जाति न पाति न मात पितं ॥ जिह रचीअं छत्री छत्र छितं ॥ जिह राग न रेख न रोग भणं ॥ जिह द्वैख न दाग न दोख गणं ॥५॥१४५॥

जिह अंडह ते ब्रहमंड रचिओ ॥ दस चार करी नव खंड सचिओ ॥ रज तामस तेज अतेज कीओ ॥ अनभउ पद आप प्रचंड लीओ ॥६॥१४६॥

स्रिअ सिंधरु बिंध नगिंद नगं ॥ स्रिअ

जच्छ गंध्रब फनिंद भुजं ॥ रचि देव अदेव अभेव नरं ॥ नरपालनि पाल कराल त्रिगं ॥७॥१४७॥

कई कीट पतंग भुजंग नरं ॥ रचि अंडज सेतज उतभुजं ॥ कीए देव अदेव सराध धितं ॥ अनखंड प्रताप प्रचंड गतं ॥८॥१४८॥

प्रभ जाति न पाति न जोत जुतं ॥ जिह तात न मात न भ्रात सुतं ॥ जिह रोग न सोग न भोग भुअं ॥ जिह जंपहि किंनर जच्छ जुअं ॥९॥१४९॥

नर नारि नपुंसक जाहि कीए ॥ गण किंनर जच्छ भुजंग दीए ॥ गज बाज रथादिक पात गणं ॥ भव भूत भविख्ख भवान तुअं ॥१०॥१५०॥

जिह अंडज सेतज जेर रजं ॥ रचि भूमि अकास पताल जलं ॥ रचि पावक

पौन प्रचंड बली ॥ बन जासु कीओ फल फूल कली ॥११॥१५१॥

भूअ मेर अकास निवास छितं ॥ रचि रोज इकादसि चंद्र ब्रतं ॥ दुति चंद दिनीसह दीप दई ॥ जिह पावक पउन प्रचंड मई ॥१२॥१५२॥

जिह खंड अखंड प्रचंड कीए ॥ जिह छत्र उपाइ छिपाइ दीए ॥ जिह लोक चतुरदस चार रचे ॥ गण गंध्रब देव अदेव सचे ॥१३॥१५३॥

अनधूत अभूत अछूत मतं ॥ अनगाध अबिआधि अनादि गतं ॥ अनखेद अभेद अछेद नरं ॥ जिह चार चतुर दिस चक्र फिरं ॥१४॥१५४॥

जिह राग न रंग न रेख रुगं ॥ जिह सोग न भोग न जोग जुगं ॥ भूअ भंजन गंजन आदि सिरं ॥ जिह बंदत देव

अदेव नरं ॥१५॥१५५॥

गण किंनर जच्छ भुजंग रचे ॥ मणि माणक मोती लाल सुचे ॥ अनभंज प्रभा अनगंज ब्रितं ॥ जिह पार न पावत पूरि मतं ॥१६॥१५६॥

अनखंड सरूप अडंड प्रभा ॥ जै जंपत बेद पुरान सभा ॥ जिह बेद कतेब अनंत कहै ॥ जिह भूत अभूत न भेद लहै ॥१७॥१५७॥

जिह बेद पुरान कतेब जपै ॥ सुत सिंधु अधोमुख ताप तपै ॥ कई कलपन लौ तप ताप करै ॥ नही नैक क्रिपानिधि पान परै ॥१८॥१५८॥

जिह फोकट धरम सभै तजि है ॥ इक चित क्रिपा निधि को भजि है ॥ तेऊ या भव सागर को तरि है ॥ भव भूलि न देह पुनर धरि है ॥१९॥१५९॥

इक नाम बिना नही कोटि ब्रती ॥
इम बेद उचारत सारसुती ॥ जेऊ वा
रस के चसके रस है ॥ तेऊ भूलि न
काल फधा फस है ॥२०॥१६०॥

त्वप्रसादि ॥ नराज छंद ॥

अगंज आदि देव है अभंज भंज
जानीऐ ॥ अभूत भूत है सदा अगंज गंज
मानीऐ ॥ अदेव देव है सदा अभेव भेव
नाथ है ॥ समसत सिधि ब्रिधिदा सदीव
सरब साथ है ॥१॥१६१॥

अनाथ नाथ नाथ है अभंज भंज है
सदा ॥ अगंज गंज गंज है सदीव सि्धि
ब्रिधिदा ॥ अनूप रूप सरूप है अछिज्ज
तेज मानीऐ ॥ सदीव सिद्ध बुद्धिदा
प्रताप पत्र जानीऐ ॥२॥१६२॥

न राग रंग रूप है न रोग राग रेख
है ॥ अदोख अदाग अदग्ग है अभूत

अभ्रम अभेख है ॥ न तात मात जाति है न पाति चिहन बरन है ॥ अदेख असेख अभेख है सदीव बिसु भरन है ॥३॥१६३॥

बिस्वंभर बिसु नाथ है बिसेख बिसु भरन है ॥ जिमी जमान के बिखै सदीव करम करन है ॥ अद्वैख है अभेख है अलेख नाथ जानीऐ ॥ सदीव सरब ठउर मै बिसेख आन मानीऐ ॥४॥१६४॥

न जंत्र मै न तंत्र मै न मंत्र बसि आवई ॥ पुरान औ कुरान नेति नेति कै बतावई ॥ न करम मै न धरम मै न भरम मै बताईऐ ॥ अगंज आदि देव है कहो सु कैसि पाईऐ ॥५॥१६५॥

जिमी जमान के बिखै समसत एक जोति है ॥ न घाट है न बाढ है न घाट बाढ होति है ॥ न हानि है न बान है

समान रूप जानीऐ ॥ मकीन औ मकान अप्रमान तेज मानीऐ ॥६॥१६६॥

न देह है न गेह है न जाति है न पाति है ॥न मंत्र है न मित्र है न तात है न मात है ॥ न अंग है न रंग है न संग साथ नेह है ॥ न दोख है न दाग है न द्वैख है न देह है ॥७॥१६७॥

न सिंघ है न सिआर है न राउ है न रंक है ॥ न मान है न मउत है न साक है न संक है ॥ न जच्छ है न गंध्रब है न नरु है न नारि है ॥ न चोर है न साह है न साह को कुमार है ॥८॥१६८॥

न नेह है न गेह है न देह को बनाउ है ॥ न छल है न छिद्द्र है न छल को मिलाउ है ॥ न तंत्र है न मंत्र है न जंत्र को सरूप है ॥ न राग है न

रंग है न रेख है न रूप है ॥९॥१६९॥

न जंत्र है न मंत्र है न तंत्र को बनाउ है ॥ न छल है न छिद्र है न छाइआ को मिलाउ है ॥ न राग है न रंग है न रूप है न रेख है ॥ न करम है न धरम है अजनम है अभेख है ॥१०॥१७०॥

न तात है न मात है अखिआल अखंड रूप है ॥ अछेद है अभेद है न रंक है न भूप है ॥ परे है पवित्र है पुनीति है पुरान है ॥ अगंज है अभंज है करीम है कुरान है ॥११॥१७१॥

अकाल है अपाल है खिआल है अखंड है ॥ न रोग है न सोग है न भेद है न भंड है ॥ न अंग है न रंग है न संग है न साथ है ॥ प्रिआ है पवित्र है पुनीति है प्रमाथ है ॥१२॥१७२॥

न सीत है न सोच है न घ्राम है न घाम है ॥ न लोभ है न मोह है न क्रोध है न काम है ॥ न देव है न दैत है न नर को सरूप है ॥ न छल है न छिद्द्र है न छिद्द्र की बिभूति है ॥१३॥१७३॥

न काम है न क्रोध है न लोभ है न मोह है ॥ न द्वैख है न भेख है न दुई है न द्रोह है ॥ न काल है न बाल है सदीव दयाल रूप है ॥ अगंज है अभंज है अभरम है अभूत है ॥१४॥१७४॥ अछेद छेद है सदा अगंज गंज गंज है ॥ अभूत भेख है बली अरूप राग रंग है ॥ न द्वैख है न भेख है न काम क्रोध करम है ॥ न जाति है न पाति है न चित्त्र चिहन बरन है ॥१५॥१७५॥

बिअंत है अनंत है अनंत तेज जानीऐ ॥ अभूमि अभिज्ज है सदा अछिज्ज तेज मानीऐ ॥ न आधि है न बिआधि है अगाधि रूप लेखीऐ ॥ अदोख है अदाग है अछै प्रताप पेखीऐ ॥१६॥१७६॥

न करम है न भरम है न धरम को प्रभाउ है ॥ न जंत्र है न तंत्र है न मंत्र को रलाउ है ॥ न छल है न छिद्र है न छिद्र को सरूप है ॥ अभंग है अनंग है अगंज सी बिभूति है ॥१७॥१७७॥

न काम है न क्रोध है न लोभ मोह कार है ॥ न आधि है न गाधि है न बिआधि को बिचार है ॥ न रंग राग रूप है न रूप रेख रार है ॥ न हाउ है न भाउ है न दाउ को प्रकार है ॥१८॥१७८॥

गजाधपी नराधपी करंत सेव है सदा ॥ सितसपती तपसतपी बनसपती जपस सदा ॥ अगसत आदि जे बडे तपसपती बिसेखीऐ ॥ बिअंत बिअंत बिअंत को करंत पाठ पेखीऐ ॥१९॥१७९॥

अगाध आदि देव की अनादि बात मानीऐ ॥ न जाति पाति मंत्र मित्र सत्रु सनेह जानीऐ ॥ सदीव सरब लोक के क्रिपाल खिआल मै रहै ॥ तुरंत द्रोह देह के अनंत भाँति सो दहै ॥२०॥१८०॥

त्वप्रसादि ॥ रूआमल छंद ॥

रूप राग न रेख रंग न जनम मरन बिहीन ॥ आदि नाथ अगाध पुरख सु धरम करम प्रबीन ॥ जंत्र मंत्र न तंत्र जा को आदि पुरख अपार ॥ हसति कीट बिखै बसै सब ठउर मै निरधार ॥१॥१८१॥

जाति पाति न तात जा को मंत्र मात न मित्र ॥ सरब ठउर बिखै रमिओ जिह चक्क्र चिहन न चित्र ॥ आदि देव उदार मूरति अगाध नाथ अनंत ॥ आदि अंति न जानीऐ अबिखाद देव दुरंत ॥२॥१८२॥

देव भेव न जानही जिह मरम बेद कतेब ॥ सनक अउ सनकेस नंदन पावही नहि सेब ॥ जच्छ किंनर मच्छ मानस मुरग उरग अपार ॥ नेति नेति पुकार ही सिव सक्र औ मुखचार ॥३॥१८३॥

सरब सपत पतार के तर जापही जिह जाप ॥ आदि देव अगाधि तेज अनादि मूरति अताप ॥ जंत्र मंत्र न आवई कर तंत्र मंत्रन कीन ॥ सरब ठउर रहिओ बिराज धिराजराज प्रबीन ॥४॥१८४॥

जच्छ गंध्रब देव दानो न ब्रहम छत्रीअन माहि ॥ बैसनं के बिखै बिराजै सूद्र भी वहि नाहि ॥ गूड़ गउड न भील भीकर ब्रहम सेख सरूप ॥ रात दिवस न मध उरध न भूमि अकास अनूप ॥५॥१८५॥

जाति जनम न काल करम न धरम करम बिहीन ॥ तीरथ जात्र न देव पूजा गोर के न अधीन ॥ सरब सपत पतार के तर जानीऐ जिह जोति ॥ सेस नाम सहंसफनि नहि नेति पूरन होत ॥६॥१८६॥

सोधि सोधि हटे सभै सुर बिरोध दानव सरब ॥ गाइ गाइ हटे गंध्रब वाइ किंनर गरब ॥ पड़त पड़त थके महा कबि गड़त गाड़ अनंत ॥ हार हार कहिओ सभू मिल नाम नाम दुरंत ॥७॥१८७॥

बेद् भेद् न पाइओ लखिओ न सेब कतेब ॥ देव दानो मूड़ मानो जच्छ न जानै जेब ॥ भूत भब्ब भवान भूपति आदि् नाथ अनाथ ॥ अगनि बाइ जले थले महि सरब ठउर निवास ॥८॥१८८॥

देह गेह न नेह सनेह अबेह नाथ अजीति ॥ सरब गंजन सरब भंजन सरब ते अनभीति ॥ सरब करता सरब हरता सरब दिआल अद्वैख ॥ चक्र चिहन न बरन जा को जाति पाति न भेख ॥९॥१८९॥

रूप रेख न रंग जा को राग रूप न रंग ॥ सरब लाइक सरब घाइक सरब ते अनभंग ॥ सरब दाता सरब गिआता सरब को प्रतिपाल ॥ दीन बंधु दइआल सुआमी आदि् देव अपाल ॥१०॥१९०॥

दीन बंधु प्रबीन स्री पति सरब को

करतार ॥ बरन चिहन न चक्क्र जा को चक्क्र चिहन अकार ॥ जाति पाति न गोत्र गाथा रूप रेख न बरन ॥ सरब दाता सरब गिआता सरब भूअ को भरन ॥११॥१६१॥

दुसट गंजन सत्रु भंजन परम पुरख प्रमाथ ॥ दुसट हरता स्रिसटि करता जगत मै जिह गाथ ॥ भूत भब भविख्ख भवान प्रमान देव अगंज ॥ आदि अम्त अनादि स्री पति परम पुरख अभंज ॥१२॥१६२॥

धरम के अन करम जेतक कीन तउन पसार ॥ देव अदेव गंध्रब किंनर मच्छ कच्छ अपार ॥ भूमि अकास जले थले महि मानीऐ जिह नाम ॥ दुसट हरता पुसटि करता स्रिसटि हरता काम ॥१३॥१६३॥

दुसट हरना स्रिसटि करना दिआल लाल गोबिंद ॥ मित्र पालक सत्रु घालक दीन दइआल मुकंद ॥ अघौ दंडण दुसट खंडण काल हूं के काल ॥ दुसट हरणं पुसटि करणं सरब के प्रतिपाल ॥१४॥१६४॥

सरब करता सरब हरता सरब के अनकाम ॥ सरब खंडण सरब दंडण सरब के निज भाम ॥ सरब भुगता सरब जुगता सरब करम प्रबीन ॥ सरब खंडण सरब दंडण सरब करम अधीन ॥१५॥१६५॥

सरब सिंम्रितन सरब सासत्रन सरब बेद बिचार ॥ दुसट हरता बिसु भरता आदि रूप अपार ॥ दुसट दंडण पुसटि खंडण आदि देव अखंड ॥ भूमि अकास जले थले महि

जपत जाप अमम्ड ॥१६॥१६६॥

स्रिसटिचार बिचार जेते जानीऐ स बिचार ॥ आदि देव अपार स्री पति दुसट पुसट प्रहार ॥ अंन दाता गिआन गिआता सरब मान महिंद्र ॥ बेद बिआस करे कई जिन कोट इंद्र उपइंद्र ॥१७॥१६७॥

जनम जाता करम गिआता धरम चार बिचार ॥ बेद भेव न पावनी सिव रूद्र औ मुख चार ॥ कोट इंद्र उप इंद्र बिआसक सनक सनत कुमार ॥ गाइ गाइ थके सभै गुन चक्क्रत भे मुख चार ॥१८॥१६८॥

आदि अंत न मद्ध जा को भूत भब्ब भवान ॥ सत दुआपर त्रितीआ कलजुग चत्र काल प्रधान ॥ धिआइ धिआइ थके महा मुनि गाइ गंध्रब

अपार ॥ हार हार थके सभै नही पाइओ तिह पार ॥१६॥१६६॥

नारद आदिक बेद बिआसक मुनि महान अनंत ॥ धिआइ धिआइ थके सभे कर कोटि कसट दुरंत ॥ गाइ गाइ थके गंध्रब नाच अपछ्र अपार ॥ सोधि सोधि थके महा सुर पाइओ नहि पार ॥२०॥२००॥

त्व प्रसादि ॥

दोहरा ॥ एक समै स्री आतमा उचरिओ मति सिउ बैन ॥ सभ प्रताप जगदीस को कहो सगल बिधि तैन ॥१॥२०१॥

दोहरा ॥ को आतमा सरूप है कहा स्रिसटि को बिचार ॥ कउन धरम को करम है कहो सगल बिसथार ॥२॥२०२॥

दोहरा ॥ कह जीतब कह मरन है कवन सुरग कह नरक ॥ को सुघड़ा को मूड़ता कहा तरक अवतरक ॥३॥२०२॥

दोहरा ॥ को निंदा जस है कवन कवन पाप कह धरम ॥ कवन जोग को भोग है कवन करम अपकरम ॥४॥२०४॥

दोहरा ॥ कहो सु सम का सो कहै दम को कहा कहंत ॥ को सूरा दाता कवन कहो तंत को मंत ॥५॥२०५॥

दोहरा ॥ कहा रंक राजा कवन हरख सोग है कवन ॥ को रोगी रागी कवन कहो तत मुहि तवन ॥६॥२०६॥

दोहरा ॥ कवन रिसट को पुसट है कहा स्रिसटि को बिचार ॥ कवन स्रिसटि को भ्रिसट है कहो सकल बिसथार ॥७॥२०७॥

दोहरा ॥ कहा करम को करम है कहा भरम को नास ॥ कहा चितन की चेसटा कहा अचेत प्रकास ॥८॥२०८॥

दोहरा ॥ कहा नेम संजम कहा कहा गिआन अगिआन ॥ को रोगी सोगी कवन कहा भरम की हान ॥९॥२०९॥

दोहरा ॥ को सूरा सुंदर कवन कहा जोग को सार ॥ को दाता गिआनी कवन कह बिचार अबिचार ॥१०॥ २१०॥

त्वप्रसादि ॥ दीरघ त्रिभंगी छंद ॥

दुरजन दल दंडण असुर बिहंडण दुसट निकंदण आदि ब्रिते ॥ चछरासुर मारण पतित उधारण नरक निवारण गूड़ गते ॥ अछै अखंडे तेज प्रचंडे खंड उदंडे अलख मते ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन रंम कपरदिनि छत्र छिते ॥१॥२११॥

आसुरी बिहंडण दुसट निकंदन पुसट उदंडण रूप अते॥ चंडासुर चंडण मुंड बिहंडण धूम्र बिधुंसण महिख मथे॥ दानव प्रहारण नरक निवारन अधम उधारन उरध अधे॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन रंम कपरदिनि आदि ब्रिते॥२॥२१२॥

डावरू डवंकै बबर बवंकै भुजा फरंकै तेज बरं॥ लंकुड़ीआ फाधै आयुध बाधै सैन बिमरदन काल असुरं॥ असटाइध चमकै भूखण दमकै अति सित झमकै फुंक फनं॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन रंम कपरदिनि दैत जिणं॥३॥२१३॥

चंडासुर चंडण मुंड बिमुंडण खंड अखंडण खून खिते॥ दामनी दमंकण धुजा फरंकण फणी फुकारण जोध

जिते ॥ सर धार बिबरखण दुसट प्रकरखण पुसट प्रहरखण दुसट मथे ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन भूमि अकास तल उरध अधे ॥४॥२१४॥

दामनी प्रहासन सुछबि निवासन स्रिसटि प्रकासन गूड़ गते ॥ रकतासुर आचन जुध प्रमाचन निरभै नराचन धरम ब्रिते ॥ स्रोणंत अचंती अनल बवंती जोग जयंती खड़ग धरे ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन पाप बिनासन धरम करे ॥५॥२१५॥

अघ ओघ निवारन दुसट प्रजारन स्रिसटि उबारन सुध मते ॥ फणीअर फुंकारण बाघ बकारण ससत्र प्रहारण साध मते ॥ सैहथी सनाहन असट प्रबाहन बोल निबाहन तेज अतुलं ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन भूमि अकास पताल जलं ॥६॥२१६॥

चाचर चमकारन चिछुर हारन धूम्र धुंकारन द्रप मथे ॥ दाड़वी प्रदंते जोग जयंते मनुज मथंते गूड़ कथे ॥ करम प्रणासन चंद प्रकासन भानु प्रतेजन असट भुजे ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन भरम बिनासन धरम धुजे ॥७॥२१७॥

घुंघरू घमंकण ससत्र झमंकण फणी फुकारण धरम धुजे ॥ असटाट प्रहासन स्रिसटि निवासन दुसट प्रणासन चक्र गते ॥ केसरी प्रवाहे सुद्ध सनाहे अगम अथाहे एक ब्रिते ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन आदि कुमारि अगाधि ब्रिते ॥८॥२१८॥

सुर नर मुनि बंदन दुसट निकंदन भ्रिसट बिनासन म्रित मथे ॥ कावरू कुमारे अधम उधारे नरक निवारे आदि

कथे ॥ किंकणी प्रसोहण सुर नर मोहण सिंघारोहण बितल तले ॥ जै जै होसी सभ ठउर निवासन बाइ पताल अकास अनले ॥९॥२१९॥

संकटी निवारन अधम उधारन तेज प्रकरखण तुंद तबे ॥ दुख दोख दहंती ज्वाल जयंती आदि अनादि अगाधि अछे ॥ सुद्धता समरपण तरक बितरकण तपत प्रतापण जपत जिवे ॥ जै जै होसी ससत्र प्रकरखण आदि अनील अगाध अभे ॥१०॥२२०॥

चंचला चखंगी अलक भुजंगी तुंद तुरंगण तिछ सरे ॥ कर कसा कुठारे नरक निवारे अधम उधारे तूर भुजे ॥ दामनी दमंके केहर लंके आदि अतंके क्रूर कथे ॥ जै जै होसी रकतासुर खंडण सुंभ चक्रत निसुंभ मथे ॥११॥२२१॥

बारिज बिलोचन ब्रितन बिमोचन सोच बिसोचन कउच कसे ॥ दामनी प्रहासे सुक सर नासे सुब्रित सुबासे दुसट ग्रसे ॥ चंचला प्रअंगी बेद प्रसंगी तेज तुरंगी खंड सुरं ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन आदि अनादि अगाध उरं ॥१२॥२२२॥

घंटिका बिराजै रूण झुण बाजै भ्रम भै भाजै सुनत सुरं ॥ कोकिल सुन लाजै किल बिख भाजै सुख उपराजै मद्ध उरं ॥ दुरजन दल दझै मन तन रिझै स भै न भजै रोह रणं ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन चंड चक्रतन आदि गुरं ॥१३॥२२३॥

चाचरी प्रजोधन दुसट बिरोधन रोस अरोधन क्रूर ब्रिते ॥ धूम्राछ बिधुंसन प्रलै प्रजुंसन जग बिधुंसन सुध मते ॥ जालपा

जयंती सत्रु मथंती दुसट प्रदाहन गाड़ मते ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन आदि जुगादि अगाधि गते ॥१४॥२२४॥

खत्रीआण खतंगी अभै अभंगी आदि अनंगी अगाधि गते ॥ बिड़लाछ बिहंडण चिछुर दंडण तेज प्रचंडण आदि ब्रिते ॥ सुर नर प्रतिपारन पतित उधारन दुसट निवारन दोख हरे ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन बिसु बिधुंसन स्रिसटि करे ॥१५॥२२५॥

दामनी प्रकासे उनत नासे जोत प्रकासे अतुल बले ॥ दानवी प्रकरखण सर वर वरखण दुसट प्रधरखण बितल तले ॥ असटाइध बाहण बोल निबाहण संत पनाहण गूड़ गते ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन आदि अनादि अगाधि ब्रिते ॥१६॥२२६॥

दुख दोख प्रभच्छण सेवक रच्छण संत प्रतच्छण सुद्ध सरे ॥ सारंग सनाहे दुसट प्रदाहे अरि दल गाहे दोख हरे ॥ गंजन गुमाने अतुल प्रवाने संत जमाने आदि अंते ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन साध प्रदछण दुसट हंते ॥१७॥२२७॥

कारण करीली गरब गहीली जोति जतीली तुंद मते ॥ असटाइध चमकण ससत्र झमकण दामनि दमकण आदि ब्रिते ॥ डुकडुकी दमंकै बाघ बबंकै भुजा फरंकै सुध गते ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन आदि जुगादि अनादि मते ॥१८॥२२८॥

चछरासुर मारण नरक निवारण पतित उधारण एक भटे ॥ पापान बिहंडण दुसट प्रचंडण खंड अखंडण

काल कटे ॥ चंद्रानन चारै नरक निवारै पतित उधारै मुंड मथे ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन धूम्र बिधुंसन आदि कथे ॥१९॥२२९॥

रकतासुर मरदन चंड चक्रदन दानव अरदन बिड़ाल बधे ॥ सर धार बिबरखण दुरजन धरखण अतुल अमरखण धरम धुजे ॥ धूम्राछ बिधुंसण स्रोणित चुंसन सुंभ निपात निसुंभ मथे ॥ जै जै होसी महिखासुर मरदन आदि अनील अगाध कथे ॥२०॥२३०॥

त्व प्रसादि ॥ पाधड़ी छंद ॥

तुम कहो देव सरबं बिचार ॥ जिम कीओ आपि करते पसार ॥ जद्दपि अभूत अनभै अनंत ॥ तउ कहों जथा मति त्रैण तंत ॥१॥२३१॥

करता करीम कादर क्रिपाल ॥ अद्वै

अभूत अन भै दिआल ॥ दाता दुरंत दुख दोख रहत ॥ जिह नेति नेति सभ बेद कहत ॥२॥२३२॥

कई ऊच नीच कीनो बनाउ ॥ सभ वार पार जा को प्रभाउ ॥ सभ जीव जंत जानंत जाहि ॥ मन मूढ़ किउ न सेवंत ताहि ॥३॥२३३॥

कई मूढ़ पत्र पूजा करंत ॥ कई सिद्ध साध सूरज सिवंत ॥ कई पलट सूरज सिजदा कराइ ॥ प्रभ एक रूप द्वै कै लखाइ ॥४॥२३४॥

अनछिज्ज तेज अनभै प्रकास ॥ दाता दुरंत अद्वै अनास ॥ सभ रोग सोग ते रहत रूप ॥ अन भै अकाल अछै सरूप ॥५॥२३५॥

करुणा निधान कामल क्रिपाल ॥ दुख दोख हरत दाता दिआल ॥ अंजन

बिहीन अनभंज नाथ ॥ जल थल प्रभाउ
सरबत्र साथ ॥६॥२३६॥

जिह जाति पाति नही भेद भरम ॥
जिह रंग रूप नही एक धरम ॥ जिह
सत्रु मित्र दोऊ एक सार ॥ अछै सरूप
अबिचल अपार ॥७॥२३७॥

जानी न जाइ जिह रूप रेख ॥ कहि
बास तास कहि कउन भेख ॥ कहि
नाम तास है कवन जात ॥ जिह सत्रु
मित्र नही पुत्र भ्रात ॥८॥२३८॥

करुणा निधान कारण सरूप ॥ जिह
चक्क्र चिहन नही रंग रूप ॥ जिह खेद
भेद नही करम काल ॥ सभ जीव जंत
की करत पाल ॥९॥२३९॥

उरधं बिरहत सिद्धं सरूप ॥ बुधं
अपाल जुधं अनूप ॥ जिह रूप रेख नही
रंग राग ॥ अनछिज तेज अनभिज

अदाग ॥१०॥२४०॥

जल थल महीप बन तन दुरंत ॥ जिह नेति नेति निस दिन उचरंत ॥ पाइओ न जाइ जिह पैर पार ॥ दीनान दोख दहिता उदार ॥११॥२४१॥

कई कोटि इंद्र जिह पानिहार ॥ कई कोटि रुद्र जुगीआ दुआर ॥ कई बेद बिआस ब्रहमा अनंत ॥ जिह नेति नेति निसि दिन उचरंत ॥१२॥२४२॥

त्व प्रसादि ॥ सवय्ये ॥

दीनन की प्रतिपाल करै नित संत उबार गनीमन गारै ॥ पच्छ पसू नग नाग नराधिप सरब समै सभ को प्रतिपारै ॥ पोखत है जल मै थल मै पल मै कलि के नही करम बिचारै ॥ दीन दइआल दइआनिधि दोखन देखत है पर देत न हारै ॥१॥२४३॥

दाहत है दुख दोखन को दल दूजन के पल मै दल डारै ॥ खंड अखंड प्रचंड प्रहारन पूरन प्रेम की प्रीति संभारै ॥ पार न पाइ सकै पदमापति बेद कतेब अभेद उचारै ॥ रोजी ही राज बिलोकत राजक रोखि रूहान की रोजी न टारै ॥२॥२४४॥

कीट पतंग कुरंग भुजंगम भूत भविख भवान बनाए ॥ देव अदेव खपे अहंमेव न भेव लखिओ भ्रम सिउ भरमाए ॥ बेद पुरान कतेब कुरान हसेब थके कर हाथ न आए ॥ पूरन प्रेम प्रभाउ बिना पति सिउ किन स्री पदमापति पाए ॥३॥२४५॥

आदि अनंत अगाध अद्वैख सु भूत भविख भवान अभै है ॥ अंत बिहीन अनातम आप अदाग अदोख अछिद्र

अछै है ॥ लोगन के करता हरता जल मै थल मै भरता प्रभु वै है ॥ दीन दइआल दइआकर स्री पति सुंदर स्री पदमापति ए है ॥४॥२४६॥

काम न क्रोध न लोभ न मोह न रोग न सोग न भोग न भै है ॥ देह बिहीन सनेह सभो तन नेह बिरकत अगेह अछै है ॥ जान को देत अजान को देत जमीन को देत जमान को दै है ॥ काहे को डोलत है तुमरी सुद्ध सुंदर स्री पदमापति लै है ॥५॥२४७॥

रोगन ते अरु सोगन ते जल जोगन ते बहु भाँति बचावै ॥ सत्रु अनेक चलावत घाव तऊ तन एक न लागन पावै ॥ राखत है अपनो कर दै करि पाप संबूह न भेटन पावै ॥ और की

बात कहा कह तो सो सु पेट ही के पट बीच बचावै ॥६॥२४८॥

जछ भुजंग सु दानव देव अभेव तुमै सभ ही कर धिआवै ॥ भूमि अकास पताल रसातल जच्छ भुजंग सभै सिर निआवै ॥ पाइ सकै नही पार प्रभा हू को नेति ही नेतह बेद् बतावै ॥ खोज थके सभ ही खुजीआ सुर हार परे हरि हाथ न आवै ॥७॥२४९॥

नारद् से चतुरानन से रुमना रिखि से सभहूं मिल गाइओ ॥ बेद् कतेब न भेद् लखिओ सभ हारि परे हरि हाथ न आइओ ॥ पाइ सकै नही पार उमापति सिद्ध सनाथ सनंतन धिआइओ ॥ धिआन धरो तिह को मन मै जिह को अमितोज सभै जग छाइओ ॥८॥२५०॥

बेद पुरान कतेब कुरान अभेद न्रिपान सभै पचि हारे॥ भेद न पाइ सकिओ अनभेद को खेदत है अनछेद पुकारे॥ राग न रूप न रेख न रंग न साक न सोग न संग तिहारे॥ आदि अनादि अगाध अभेख अद्वैख जपिओ तिन ही कुल तारे॥६॥२५१॥

तीरथ कोटि कीऐ इसनान दीए बहु दान महा ब्रत धारे॥ देस फिरिओ कर भेस तपो धन केस धरे न मिले हरि पिआरे॥ आसन कोटि करे असटाँग धरे बहु नधस करे मुख कारे॥ दीन दइआल अकाल भजे बिन अंत को अंतके धाम सिधारे ॥१०॥२५२॥

त्व प्रसादि॥ कबित्त

अत्र के चलय्या छिति छत्र के धरय्या छत्र धारीयों के छलय्या महाँ

सत्रुन के साल हैं॥ दान के दिवय्या महाँ मान के बढय्या अवसान के दिवय्या हैं कटय्या जम जाल हैं॥ जुद्ध के जितय्या अबरुद्ध के मिटय्या महाँ बुद्धि के दिवय्या महा मान हूं के माल हैं॥ गिआन हूं के गिआता महाँ बुद्धिता के दाता देव काल हूं के काल महा काल हूं के काल हैं॥१॥२५३॥

पूरबी न पार पावै हिंगुला हिमालै धिआवै गोर गरदेजी गुन गावै तेरे नाम हैं॥ जोगी जोग साधै पउन साधना कितेक बाधै आरब के आरबी अराधै तेरे नाम हैं॥ फरा के फिरंगी मानै कंधारी कुरैसी जानै पछम के पछमी पछानै निज काम हैं॥ मरहटा मघेले तेरी मन सो तपसिआ करै द्रिड़वै तिलंगी पहचानै धरम धाम हैं॥२॥२५४॥

बंग के बंगाली फिरहंग के फिरंगावाली दिल्ली के दिलवाली तेरी आगिआ मै चलत हैं॥ रोह के रुहेले माघ देस के मघेले बीर बंगसी बुंदेले पाप पुंज को मलत हैं ॥ गोखा गुन गावै चीन मचीन के सीस नयवै तिबती धिआइ दोख देह के दलत हैं ॥ जिनै तोहि धिआइओ तिनै पूरन प्रताप पाइओ सरब धन धाम फल फूल सो फलत हैं॥३॥२५५॥

देव देवतान को सुरेस दानवान को महेस गंग धान को अभेस कहीअतु हैं ॥ रंग मै रंगीन राग रूप मै प्रबीन और काहूं पै न दीन साध अधीन कहीअतु हैं ॥ पाईऐ न पार तेज पुंज मै अपार सरब बिदिआ को उदार हैं अपार कहीअतु हैं ॥ हाथी की चिंघार पल पाछै

पहुंचत ताहि चीटी की पुकार पहिले ही सुनीअतु हैं ॥४॥२५६॥

केते इंद्र दुआर केते ब्रहमा मुखचार केते क्रिसनावतार केते राम कहीअतु हैं॥ केते ससि रासी केते सूरज प्रकासी केते मुंडीआ उदासी जोग दुआर दहीअतु हैं॥ केते महादीन केते बिआस से प्रबीन केते कुमेर कुलीन केते जच्छ कहीअतु हैं ॥ करते हैं बिचार पै न पूरन को पावै पार ताही ते अपार निराधार लहीअतु हैं ॥५॥२५७॥

पूरन अवतार निराधार है न पारावार पाईऐ न पार पै अपार कै बखानीऐ ॥ अद्वै अबिनासी परम पूरन प्रकासी महा रूप हूं के रासी है अनासी कै कै मानीऐ ॥ जंत्र हूं न जाति जा की बाप हूं न माइ ता की पूरन प्रभा की सु

छटा कै अनुमानीऐ ॥ तेज हूं को तंत्र है कि राजसी को जत्र है कि मोहनी को मंत्र है निजंत्र कै कै जानीऐ ॥६॥२५८॥

तेज हूं को तरु है कि राजसी को सरु है कि सुद्धता को घरु है कि सिद्धता की सार है ॥ कामना की खान है कि साधना की सान है बिरकतता की बान है कि बुधि को उदार है ॥ सुंदर सरूप है कि भूपन को भूप है कि रूप हूं को रूप है कुमति को प्रहार है ॥ दीनन को दाता है गनीमन को गारक है साधन को रच्छक है गुनन को पहार है ॥७॥२५९॥

सिद्धि को सरूप है कि बुद्धि को बिभूति हैं कि क्रुद्ध को अभूत हैं कि अछै अबिनासी हैं ॥ काम को कुनिंदा

हैं कि खूबी को दहिंदा हैं गनीमन गरिंदा है कि तेज को प्रकासी है ॥ काल हूं के काल है कि सत्रुन के साल हैं कि मित्रन को पोखत है कि ब्रिधता की बासी है ॥ जोग हूं को जंत्र हैं कि तेज हूं को तंत्र हैं कि मोहनी को मंत्र हैं कि पूरन प्रकासी हैं ॥८॥२६०॥

रुप को निवास हैं कि बुद्धि को प्रकास है कि सिद्धिता को बास हैं कि बुद्धि हूं को घरु हैं॥ देवन को देव हैं कि निरंजन अभेव हैं अदेवन को देव हैं कि सुद्धिता को सरु हैं॥ जान को बचय्या है इमान को दिवय्या जमजाल को कटय्या हैं कि कामना को करु हैं॥ तेज को प्रचंड है अखंडण को खंड है महीपन को मंड हैं कि इसत्री हैं न नरु हैं ॥९॥२६१॥

बिस्व को भरन हैं कि अपदा को हरन हैं कि सुख को करन हैं कि तेज को प्रकास हैं॥ पाईऐ न पार पारावार हूं को पार जा को कीजत बिचार सु बिचार को निवास हैं॥ हिंगुला हिमालै गावै हबसी हलब्बी धिआवै पूरबी न पार पावै आसा ते अनास है॥ देवन को देव महा देव हू को देव हैं निरंजन अभेव नाथ अद्वै अबिनास हैं ॥१०॥२६२॥

अंजन बिहीन हैं निरंजन प्रबीन है कि सेवक अधीन हैं कटय्या जम जाल के॥ देवन के देव महादेव हूं के देवनाथ भूम के भुजय्या है मुहय्या महा बाल के॥ राजन के राजा महा साज हूं के साजा महा जोग हूं को जोग है धरय्या द्रुम छाल के॥ कामना के कर

हैं कुबुद्धता को हर हैं कि सिद्धिता के साथी है कि काल है कुचाल के ॥११॥२६३॥

छीर कैसी छीरा वधि छाछ कैसी छत्रानेर छपाकर कैसी छब कालिंद्री के कूल के ॥ हंसनी सी सीहा रूम हीरा सी हुसैनाबाद गंगा कैसी धार चली सातो सिंधु रूल के ॥ पारा सी पलाऊ गढ रूपा कैसी रामपुर सोरा सी सुरंगाबाद नीके रही झूल के ॥ चंपा सी चंदेरी कोट चाँदनी सी चाँदा गड़ कीरति तिहारी रही मालती सी फूल के ॥१२॥२६४॥

फटक सी कैलास कमाऊ गड़ काँसी पुर सीसा सी सुरंगाबाद नीके सोहीअतु है ॥ हिमा सी हिमालै हरहार सी हलबानेर हंस कैसी हाजीपुर देखे

मोहीअतु है ॥ चंदन सी चंपावती चंद्रमा सी चंद्रा गिर चाँदनी सी चाँदा गड़ जोन जोहीअतु है ॥ गंगा सम गंग धार बकान सी बिलंदावाद कीरति तिहारी की उजिआरी सोहीअतु है ॥१३॥२६५॥

फरासी फिरंगी फरासीस के दुरंगी मकरान के म्रिदंगी तेरे गीत गाईअतु हैं ॥ भखरी कंधारी गोर गखरी गरदेजाचारी पौन के अहारी तेरो नाम धिआईअतु हैं ॥ पूरब पलाऊ काम रूप औ कमाऊ सरब ठउर मै बिराजै जहाँ जहाँ जाईअतु हैं ॥ पूरन प्रतापी जंत्र मंत्र ते अतापी नाथ कीरति तिहारी को न पार पाईअतु हैं ॥१४॥२६६॥

त्व प्रसादि ॥ पाधड़ी छंद ॥

अद्वै अनास आसन अडोल ॥ अद्वै अनंत उपमा अतोल ॥ अछै सरूप

अबयकत नाथ ॥ आजानु बाहु सरबा
प्रमाथ ॥१॥२६७॥

जह तह महीप बन तन प्रफुल्ल ॥
सोभा बसंत जह तह प्रडुल्ल ॥ बन तन
दुरंत खग म्रिग महान ॥ जह तह प्रफुल
सुंदर सुजान ॥२॥२६८॥

फुलतं प्रफुल लहि लहित मोर ॥ सिर
ढुरहि जान मनमथह चौर ॥ कुजरत
कमाल राजक रहीम ॥ करुणा निधान
कामल करीम ॥३॥२६९॥

जह तह बिलोक तह तह प्रसोह ॥
आजानु बाहु अमितोज मोह ॥ रोसं
बिरहत करुणा निधान ॥ जह तह
प्रफुल्ल सुंदर सुजान ॥४॥२७०॥

बन तन महीप जल थल महान ॥
जह तह प्रसोह करुणा निधान ॥ जग
मगत तेज पूरन प्रताप ॥ अंबर जमीन

जिह जपत जाप ॥५॥२७१॥

सातो अकास सातो पतार ॥
बिथरिओ अद्रिसट जिह करम जारि ॥
उसतति संपूरनं ॥

ੴ वाहिगुरू जी की फते ॥

अथ चंडी चरित्र लिखयते ॥

नराज छंद ॥

महिख्खख दईत सूरयं ॥ बढियो सु लोह पूरयं ॥ सु देव राज जीतयं ॥ त्रिलोक राज कीतयं ॥१॥ भजे सु देवता तबै ॥ इकत्त्र होइ कै सबै ॥ महेसुराचलं बसे ॥ बिसेख चित मो त्रसे ॥२॥ जुगेस भेस धार कै ॥ भजे हथिआर डार कै ॥ पुकार आरतं चले ॥ बिसूर सूरमा भले ॥३॥ बरख किते तहाँ रहे ॥ सु दुख देह मो सहे ॥ जगत्र माति धिआयं ॥ सु जैत पत्त्र पायं ॥४॥ प्रसंन देवता

भए ॥ चरंन पूजबे धए ॥ सनंमुखान ठढ्ढीअं ॥ प्रणाम पान पढ्ढीअं ॥५॥

रसावल छंद ॥

तबै देव धाए ॥ सबै सीस निआए ॥ सुमन धार बरखे ॥ सबै साधु हरखे ॥६॥ करी देबि अरचा ॥ ब्रहम बेद चरचा ॥ जबै पाइ लागे ॥ तबै सोग भागे ॥७॥ बिनंती सुनाई ॥ भवानी रिझाई ॥ सबै ससत्र धारी ॥ करी सिंघ सुआरी ॥८॥ करे घंट नादं ॥ धुनं निर बिखादं ॥ सुणयो दैईत राजं ॥ सजिओ जुद्ध साजं ॥९॥ चड़िओ राछसेसं ॥ रचे चार अनेसं ॥ बली चामरेवं ॥ हठी चिच्छुरेवं ॥१०॥ बिड़ालच्छ बीरं ॥ चड़े बीर धीरं ॥ बडे इख्खु धारी ॥ घटा जानु कारी ॥११॥

दोहरा

बाण जिते राछसनि मिलि छाडत भए अपार ॥ फूल माल हुऐ मात उरि सोभे सभे सु धार ॥१२॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

जिते दानवो बान पानी चलाए ॥ तिते देवता आप काटे बचाए ॥ किते ढाल ढाहे किते पास पेले । भरे बसत्र लोहू जनो फाग खेले ॥१३॥ दुरगा हूं कियं खेत धुंके नगारे ॥ करं पट्टिसं परघ पाँसी संभारे ॥ तहाँ गोफनै गुरज गोले संभारैं॥ हठी मारही मार कै कै पुकारैं ॥१४॥ तबै असट हाथं हथिआरं संभारे ॥ सिरं दानवेंद्रान के ताकि झारे ॥ बबक्किओ बली सिंघ जुधं मझारं ॥ करे खंड खंडं सु जोधा अपारं ॥१५॥

तोटक छंद ॥

तब दानव रोस भरे सभ ही ॥ जगमात के बाण लगे जब ही ॥ बिबिधायुध लै सु बली हरखे ॥ घन बूंदन जिउं बिसखं बरखे ॥१६॥ जनु घोर कै सिआम घटा घुमडी ॥ असुरेस अनीकनि तिउ उमडी ॥ जग मात बिरूथनि मो धसि कै ॥ धनुसाइक हाथ गहिओ कसि कै ॥१७॥ रण कुंजर पुंज गिराइ दीए ॥ इक खंड अखंड दुखंड कीए ॥ सिर एकनि चोट निफोट बही ॥ तरवा तर हुऐ तरवार रही ॥१८॥ तन झज्झर हुऐ रण भूमि गिरे ॥ इक भाज चले फिर कै न फिरे ॥ इकि हाथ हथिआर लै आन बहे ॥ लरि कै मरि कै गिरि खेत रहे ॥१६॥

नराज छंद ॥

तहाँ सु दैत राजयं ॥ सजे सु सरब साजयं ॥ तुरंग आप बाहियं ॥ बधं सु मात चाहियं ॥२०॥ तबै द्रुगा बकारि कै ॥ कमाण बाण धारि कै ॥ सु घाव चामरं कियो ॥ उतार हसति तें दियो ॥२१॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

तबै बीर कोपं बिड़ालाछ नामं ॥ सजे ससत्र देहं चले जुद्‍ध धामं ॥ सिरं सिंघ के आन घायं प्रहारं ॥ बली सिंघ सो हाथ सों मारि डारं ॥२२॥ बिड़ालाछ मारे सु पिंगाछ धाए ॥ दुरगा सामुहे बोल बाँके सुनाए ॥ करी अभ्र जिउं गरज कै बाण बरखं ॥ महाँ सूर बीरं भरे जुद्‍ध हरखं ॥२३॥ तबै देवीअं पाणि बाणं संभारं ॥ हनधे दुसट के घाइ सीसं

मझारं ॥ गिरयो झूम भूमं गए प्राण छुट्टं ॥ मनो मेरु को सातवों स्रिंग टुट्टं ॥२४॥ गिरे बीर पिंगाछ देबी संघारे ॥ चले अउर बीरं हथिआरं उघारे ॥ तबै रोस देबी सरोघं चलाए ॥ बिना प्राण कै जुद्ध मद्धं गिराए ॥२५॥

चौपई ॥

जे जे सत्रु सामुहे आए ॥ सबै देवता मारि गिराए ॥ सैना सकल जबै हनि डारी ॥ आसुरेस कोपा अहंकारी ॥२६॥ आप जुद्ध तब कीआ भवानी ॥ चुनि चुनि हने पखरीआ बानी ॥ क्रोध जुआल मसतक ते बिगसी ॥ ता ते आप कालिका निकसी ॥२७॥

मधुभार छंद ॥

मुख बमत जुआल ॥ निकसी कपाल ॥ मारे गजेस ॥ छुट्टे है एस

॥२८॥ छुट्टंत बाण ॥ झमकत क्रिपाण ॥ साँगं प्रहार ॥ खेलत धमार ॥२९॥ बाहैं निसंग ॥ उँठैं झड़ंग ॥ तुप्पक तड़ाक ॥ उँठत कड़ाक ॥३०॥ बबकंत माइ ॥ भभकंत घाइ ॥ जुज्झे जुआण ॥ नच्चे किकाण ॥३१॥

रूआमल छंद ॥

धायो असुरेंद्र तह निज कोप ओप बढाइ ॥ संग लै चतुरंग सैना सुद्ध ससत्र नचाइ ॥ देबि ससत्र लगैं गिरे रण रुँझि जुँझि जुआण ॥ पीलराज फिरे कहूं रण सुच्छ छुच्छ किकाण ॥३२॥ चीर चामर पुंज कुंजर बाजिराज अनेक ॥ ससत्र असत्र सुभे कहूं सरदार सुआर अरेक ॥ तेग तीर तुफंग तबर कुहुक बाण अनंत ॥ बेधि बेधि गिरे बरच्छिन सूर सोभावंत ॥३३॥ ग्रिध ब्रिध उडे तहाँ

फिकरंत सुआन स्रिगाल ॥ मत्त दंति सपच्छ पब्बै कंक बंक रसाल ॥ छुद्र मीन छुरुध्रका अरु चरम कच्छप अनंत ॥ नक्क्र बक्क्र सु बरम सोभित स्रोण नीर दुरंत ॥३४॥ नव सूर नवका से रथी अति रथी जान जहाज ॥ लादि लादि मनो चले धन धीर बीर सलाज ॥ मोलु बीच फिरैं चुकात दलाल खेत खतंग ॥ गाहि गाहि फिरे फवज्जनि झारि दिरब निखंग ॥३५॥ अंग भंग गिरे कहूं बहु रंग रंगित बसत्र ॥ चरम बरम सुभे कहूं रण भूमि ससत्ररुअसत्र ॥ मुंड तुंड धुजा पताका टूक टाक अरेक ॥ जूझ जूझ परे सबै अरि बाचिओ नही एक ॥३६॥ कोप कै महिखेस दानो धायो तिह काल ॥ असत्र ससत्र संभार सूरो रूप कै बिकराल ॥ कालि पाणि क्रिपाण

लै तिह मारिओ ततकाल ॥ जोति जोति बिखै मिली तज ब्रहम रंध्रि उताल ॥३७॥

दोहरा ॥

महिखासुर कह मार कर प्रफुलत भी जग माइ ॥ ता दिन ते महिखे बलिहि देत जगत सुख पाइ ॥३८॥

इति स्री बचित्र नाटके चंडी चरित्रे महिखासुर बधहि प्रथम धिआइ संपूरण मसतु सुभ मसतु ॥१॥

॥ अफजू ॥

अथ धूम्र नैन जुद्ध कथनं ॥

कुलक छंद ॥

देविस तब गाजीय ॥ अनहद बाजीय ॥ भई बधाई ॥ सभ सुखदाई ॥१॥३९॥ दुंदभि बाजे ॥ सभ सुर गाजे ॥ करत बडाई ॥ सुमन ब्रखाई

॥२॥४०॥ कीनी अरचा ॥ जस धुनि चरचा ॥ पाइन लागे ॥ सभ दुख भागे ॥३॥४१॥ गाए करखा ॥ पुहपनि बरखा ॥ सीस निवाए ॥ सब सुख पाए ॥४॥४२॥

दोहरा ॥

लोप चंडिका जू भए दै देवन को राज ॥ बहुर सुंभ नैसुंभ दुइ दैत बढे सिर ताज ॥५॥४३॥

चोपई ॥

सुंभ निसुंभ चड़े लै के दल ॥ अरि अनेक जीते जिन जल थल ॥ देव राज को राज छिनावा ॥ सेस मुकट मनि भेट पठावा ॥६॥४४॥ छीन लयो अलिकेस भंडारा ॥ देस देस के जीति न्रिपारा ॥ जहाँ तहाँ कह दैत पठाए ॥ देस बिदेस जीति फिर आए ॥७॥४५॥

दोहरा ॥

देव सभै त्रासित भऐ मन मो कियो बिचार ॥ सरनि भवानी की सभै भाजि परे निरधार ॥८॥४६॥

नराज छंद ॥

सु त्रास देव भाजियं ॥ बिसेख लाज लाजियं ॥ बिसिख कारमंक से ॥ सु देव लोक मो बसे ॥९॥४७॥ तबै प्रकोप देबि हुऐ ॥ चली सु ससत्र असत्र लै ॥ सु मुद्द पानि पान कै ॥ गजी क्रिपान पानि लै ॥१०॥४८॥

रसावल छंद ॥

सुनी देव बानी ॥ चढ़ी सिंघ रानी ॥ सुभं ससत्र धारे ॥ सभै पाप टारे ॥११॥४९॥ करे नद्द नादं ॥ महाँ मद्द मादं ॥ भयो संख सोरं ॥ सुणयो चार ओरं ॥१२॥५०॥ उते दैत धाए ॥ बडी

सैन लिआए ॥ मुखं रकत नैणं ॥ बके बंक बैणं ॥१३॥५१॥ चवं चार ढूके ॥ मुखं मार कूके ॥ लए बाण पाणं ॥ सु काती क्रिपाणं ॥१४॥५२॥ मंडे मद्ध जंगं ॥ प्रहारं खतंगं ॥ करउती कटारं ॥ उठी ससत्र झारं ॥१५॥५३॥ महाँ बीर धाए ॥ सरोघं चलाए ॥ करैं बार बैरी ॥ फिरें जिउ गंगैरी ॥१६॥५४॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

उॅधत सटायं उतै सिंघ धायो ॥ इतै संख लै हाथ देवी बजायो ॥ पुरी चउदहूंयं रहिओ नाद पूरं ॥ चमक्किओ मुखं जुद्ध के मधि नूरं ॥१७॥५५॥ तबै धूम्र नैणं मचिओ ससत्र धारी ॥ लए संग जोधा बडे बीर भारी ॥ लयो बेढ़ि पब्बं कियो नाद उॅचं ॥ सुणे गरभणीआन के गरभ मुच्चं ॥१८॥५६॥ सुणिओ नाद

स्रवणं कियो देवि कोपं ॥ सजे चरम बरमं धरे सीस टोपं ॥ भई सिंघ सुआरं कियो नाद उॅचं ॥ सुने दीह दानवान के मान मुच्चं ॥१९॥५७॥ महाँ कोप देवी धसी सैन मदधं ॥ करे बीर बंके तहा अद्ध अद्धं ॥ जिसै धाइ कै सूल सैथी प्रहारयो ॥ तिनै फेरि पाणं न बाणं संभारयो ॥२०॥५८॥

रसावल छंद ॥

जिसै बाण मारिओ ॥ तिसै मार डारिओ ॥ जितै सिंघ धायो ॥ तितै सैन घायो ॥२१॥५९॥ जिते घाइ डाले ॥ तिते घारि घाले ॥ समुह सत्र आयो ॥ सु जाने न पायो ॥२२॥६०॥ जिते जुज्झ रुझे ॥ तिते अंत जुज्झे ॥ जिनै ससत्र घाले ॥ तिते मार डाले ॥२३॥६१॥ तबै मात काली ॥ तपी तेज वाली ॥ जिसै घाव

डारयो ॥ सु सुरगं सिधारयो ॥२४॥६२॥
घरी अदध मदधं ॥ हनियो सैन सुद्धं ॥
हनियो धूम्र नैणं ॥ सुनयो देव गैणं
॥२५॥६३॥

दोहरा ॥

भजी बिरूथनि दानवी गई भूप के
पास ॥ धूम्र नैण काली हनयो भजियो
सैन निरास ॥२६॥६४॥

*इति स्री बचित्र नाटके चंडी चरित्रे
धूम्र नैण बधहि दुतीआ धिआइ संपूरण
मसतु सुभ मसतु ॥२॥ अफजू ॥*

अथ चंड मुंड जुद्ध कथनं ॥

दोहरा ॥

इह बिधि दैत संघार कर धवला
चली अवास ॥ जो यह कथा पढ़ै सुनै
रिधि सिधि ग्रिह तास ॥१॥६५॥

चउपई ॥

धूम्र नैण जब सुणे संघारे ॥ चंड मुंड तब भूप हकारे ॥ बहु बिधि कर पठए सनमाना ॥ है गै पति दीए रथ नाना ॥२॥६६॥ प्रिथम निरखि देबीअहि जे आए ॥ ते धवला गिरि ओर पठाए ॥ तिन की तनिक भनक सुनि पाई ॥ निसिरी ससत्र असत्र लै माई ॥३॥६७॥

रूआल छंद ॥

साजि साजि चले तहाँ रण राछसेंद्र अनेक ॥ अरध मुंडित मुंडितेक जटाधरे सु अरेक ॥ कोपि ओपं दै सबै कर ससत्र असत्र नचाइ ॥ धाइ धाइ करैं प्रहारन तिच्छ तेग कंपाइ ॥४॥६८॥ ससत्र असत्र लगे जिते सभ फूल माल हुए गए ॥ कोप ओप बिलोकि अतिभुति दानवं बिसमै भए ॥ दउर दउर अनेक

आयुध फेर फेर प्रहारहीं॥ जूझ जूझ गिरे अरेक सु मार मार पुकारहीं॥५॥६९॥ रेल रेल चले हइंद्रन पेल पेल गजेंद्र ॥ झेल झेल अनंत आयुध हेल हेल रिपेंद्र ॥ गाहि गाहि फिरे फवज्जन बाहि बाहि खतंग ॥ अंग भंग गिरे कहूं रण रंग सूर उतंग ॥६॥७०॥ झार झार फिरै सरोतम डारि झारि क्रिपान ॥ सैल से रण पुंज कुंजर सूर सीस पखान ॥ बक्क्र नक्क्र भुजा सु सोभित चक्क्र से रथ चक्क्र ॥ केस पास सिबाल सोहत असथ चूर सरक्क्र ॥७॥७१॥ सज्जि सज्जि चले हथिआरन गज्जि गज्जि गजेंद्र ॥ बज्जि बज्जि सबज्ज बाजन भज्जि भज्जि हएंद्र ॥ मार मार पुकार कै हथीआर हाथ संभार ॥ धाइ धाइ परे निसाचर बाइ संख अपार

॥८॥७२॥ संख गोयमं गजियं अर सजियं रिपु राज॥ भाजि भाजि चले किते तज लाज बीर न्रिलाज ॥ भीम भेरी भुंकीअं अरु धुंकीअं सु निसाण॥ गाहि गाहि फिरे फवज्जन बाहि बाहि गदाण ॥६॥७३॥ बीर कंगने बंधहीं अरु अच्छरैं सिर तेलु॥ बीनि बीनि बरे बरंगनि डारि डारि फुलेल ॥ घालि घालि बिवान ले गी फेरि फेरि सु बीर॥ कूदि कूदि परे तहाँ ते झागि झागि सु तीर ॥१०॥७४॥ हाँकि हाँकि लरे तहाँ रण रीझि रीझि भटेंद्र ॥ जीति जीति लयो जिन्है कई बार इंद्र उपेंद्र ॥ काटि काटि दए कपाली बाँटि बाँटि दिसान ॥ डाटि डाटि कर दलं सुर पग्गु पब्ब पिसान ॥११॥७५॥ धाइ धाइ संघारीअं रिपु राज बाज अनंत ॥ स्रोण की सरिता उठी रण

मद्धि रूप दुरंत ॥ बाण अउर कमाण सैथी सूल तिच्छ कुठार ॥ चंड मुंड हणे दोऊ कर कोप कालि करवार ॥१२॥७६॥

दोहरा ॥

चंड मुंड मारे दोऊ काली कोप करवार ॥ अउर जिती सैना हुती छिन मो दई संघार ॥१३॥७७॥

इति स्री बचित्र नाटके चंडी चरित्रे चंड मुंड बधहि त्रितियो धिआइ संपूरण मसत सुभ मसतु ॥३॥ अफजू ॥

अथ रकत बीरज जुद्ध कथनं ॥

सोरठा ॥

सुनी भूप इम गाथ चंड मुंड काली हने ॥ बैठ भ्रात सो भ्रात मंत्र करत इह बिधि भए ॥१॥७८॥

चउपई ॥

रकत बीज तब भूपि बुलायो ॥

अमित दरब दै तहाँ पठायो ॥ बहु बिधि दई बिरूथनि संगा ॥ है गै रथ पैदल चतुरंगा ॥२॥७९॥ रकत बीज दै चलयो नगारा ॥ देव लोग लउ सुनी पुकारा ॥ कंपी भूमि गगन थहराना ॥ देवन जुति दिवराज डराना ॥३॥८०॥ धवला गिरि के जब तट आए ॥ दुंदभि ढोल म्रिदंग बजाए ॥ जब ही सुना कुलाहल काना ॥ उतरी ससत्र असत्र लै नान्हा ॥४॥८१॥ छहबर लाइ बरखीअं बाणं ॥ बाजराज अरु गिरे किकाणं ॥ ढहि ढहि परे सुभट सिरदारा ॥ जनु कर कटे बिरछ संगि आरा ॥५॥८२॥ जे जे सत्त्रु सामुहे भए ॥ बहुर जीअत ग्रिह को नही गए ॥ जिह पर परत भई तरवारा ॥ इकि इकि ते भए दो दो चारा ॥६॥८३॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

झिमी तेज तेगं सरोसं प्रहारं ॥ खिमी दामनी जाणु भादों मझारं ॥ उठे नद्द नादं कड़क्के कमाणं ॥ मचयो लोह क्रोहं अभूतं भयाणं ॥७॥८४॥ बजे भेर भेरी जुझारे झणक्के ॥ परी कुट्ट कुट्टं लगे धीर धक्के ॥ चवी चावडियं नफीरं रणक्कं ॥ मनो बिच्चरं बाघ बंके बबक्कं ॥८॥८५॥ उते कोपियं स्रोणबिंदं सु बीरं ॥ प्रहारे भली भाँति सो आनि तीरं ॥ उते दउर देवी करयो खग्ग पातं ॥ गिरधे मूरछा हुऐ भयो जानु घातं ॥९॥८६॥ छुटी मूरछनायं महा बीर गज्जयो ॥ घरी चार लौ सार सो सार बज्जयो ॥ लगे बाण स्रोणं गिरयो भूमि जुद्धं ॥ उठे बीर तेते कीए नाद क्रूद्धं ॥१०॥८७॥ उठे बीर जेते तिते कालि

कूटे ॥ परे चरम बरमं कहूं गात टूटे ॥ जिती भूमि मद्धं परी स्रोण धारं ॥ जगे सूर तेते कीए मार मारं ॥११॥८८॥ परी कुट्ट कुट्टं रुले तच्छ मुच्छं ॥ कहू मुंड तुंडं कहूं मासु मुछं ॥ भयो चार सै कोस लौ बीर खेतं ॥ बिदारे परे बीर ब्रिंदं बिचेतं ॥१२॥८९॥

रसावल छंद ॥

चहूं ओर ढूके ॥ मुखं मार कूके ॥ झंडा गड्ड गाढे ॥ मचे रोस बाढे ॥१३॥९०॥ भरे बीर हरखं ॥ करी बाण बरखं ॥ चवं चार ढुक्के ॥ पछे आहु रुक्के ॥१४॥९१॥ परी ससत्र झारं ॥ चली स्रोण धारं ॥ उठे बीर मानी ॥ धरे बान पानी ॥१५॥९२॥ महा रोसि गज्जे ॥ तुरी नाद बज्जे ॥ भरे रोस भारी ॥ मच्चे छत्र धारी ॥१६॥९३॥ हकं हाक

बज्जी ॥ फिरै सैण भज्जी ॥ परयो लोह क्रोहं ॥ छके सूर सोहं ॥१७॥९४॥ गिरे अंग भंगं ॥ दवं जानु दंगं ॥ कड़ंकार छुट्टे ॥ झणंकार उठे ॥१८॥९५॥ कटा कट्ट बाहैं॥ उभै जीत चाहैं॥ महाँ म्दद माते ॥ तपे तेज ताते ॥१९॥९६॥ रसं रुद्द राचे ॥ उभै जुद्ध माचे ॥ करैं बाण अरचा ॥ धनुर बेद चरचा ॥२०॥९७॥ मचे बीर बीरं ॥ उठी झार तीरं ॥ गलो गड्ड फोरैं॥ नही नैन मोरैं ॥२१॥९८॥ समुह ससत्र बरखे ॥ महिख्रुआसु करखे ॥ करैं तीर मारं ॥ बहैं लोह धारं ॥२२॥९९॥ नदी स्रोण पूरं ॥ फिरी गैण हूरं ॥ गजै गैण काली ॥ हसी खप्पराली ॥२३॥१००॥ कहूं बाजि मारे ॥ कहूं सूर भारे ॥ कहूं चरम टूटे ॥ फिरैं गज फूटे ॥२४॥१०१॥ कहूं बरम

बेधे ॥ कहूं चरम छेदे॥ कहूं पील परमं॥ कटे बाजि बरमं॥२५॥१०२॥ बली बैर रुज्झे॥ समुह सार झुज्झे॥ लखे बीर खेतं॥ नच्चे भूत प्रेतं॥२६॥१०३॥ नत्चे मासहारी॥ हसे बयोम चारी॥ किलंकार कंकं॥ मच्चे बीर बंकं॥२७॥१०४॥ छुभे छत्त्र धारी॥ महिखुआस चारी॥ उठे छिच्छ इच्छं॥ चले तीर तिच्छं॥२८॥१०५॥ गणं गाँध्रबेअं॥ चरं चारणेअं॥ हसे सिध सिद्धं॥ मचे बीर क्रुद्धं॥२९॥१०६॥ डका ड्डक डाकैं॥ हक्का हक्क हाकैं॥ भका भुंक भेरी॥ डमक डाम डेरी॥३०॥१०७॥ महा बीर गाजे॥ नवं नाद बाजे॥ धरा गोम गज्जे॥ द्रुगा दैत बज्जे॥३१॥१०८॥

बिजै छंद ॥

जेतक बाण चले अरि ओर ते फूल की माल हुऐ कंठ बिराजे ॥ दानव पुंगव पेख अचंभव छोड भज्जे रण एक न गाजे ॥ कुंजर पुंज गिरे तिह ठौर भरे सभ स्रोणत पै गन ताजे ॥ जानुक नीरध मद्ध छपे भ्रमि भूधर के भय ते नग भाजे ॥३२॥१०९॥

मनोहर छंद ॥

स्री जगनाथ कमान लै हाथ परमाथिन संख स्रजयो जब जुद्धं ॥ गाहत सैण संघारत सूर बबक्कति सिंघ भ्रमयो रण क्रुद्धं ॥ कउचह भेद अभेदित अंग सुरंग उतंग सु सोभित सुद्धं ॥ मानो बिसाल बड़वानल जुआल समुद्र के मद्ध बिराजति उँधं ॥३३॥११०॥

बिजै छंद ॥

पूर रही भव भूर धनुर धुनि धूर उडी नभ मंडल छायो ॥ नूर भरे मुख मार गिरे रण हूरन हेरि हियो हुलसायो ॥ पूरन रोस भरे अरि तूरण पूरि परे रण भूमि सुहायो ॥ चूर भए अरि रूरे गिरे भट चूरण जानुक बैद बनायो ॥३४॥१११॥

संगीत भुजंग प्रयात छंद ॥

कागड़दंग काती कटारी कड़ाकं ॥ तागड़दंग तीरं तुपक्कं तड़ाकं ॥ झागड़दंग नागड़दंग बागड़दंग बाजे ॥ गागड़दंग गाजी महा गज्ज गाजे ॥३५॥११२॥ सागड़दंग सूरं कागड़दंग कोपं ॥ पागड़दंग परमं रणं पाव रोपं ॥ सागड़दंग ससत्रं झागड़दंग झारैं ॥ बागड़दंग बीरं डागड़दंग डकारैं

॥३६॥११३॥ चागड़दंग चउपे बागड़दंग बीरं ॥ मागड़दंग मारे तनं तिच्छ तीरं ॥ गागड़दंग गज्जे सु बज्जे गहीरैं॥ कागड़दंग कवियान कथे कथीरैं ॥३७॥११४॥ दागड़दंग दानो भागड़दंग भाजे ॥ गागड़दंग गाजी जागड़दंग गाजे ॥ छागड़दंग छउही छुरे प्रे छड़ाके ॥ तागड़दंग तीरं तुपकं तड़ाके ॥३८॥११५॥ गागड़दंग गोमाय गज्जे गहीरं ॥ सागड़दंग संखं नागड़ दंग नफीरं ॥ बागड़दंग बाजे बज्जे बीर खेतं ॥ नागड़दंग नाचे सु भूतं परेतं ॥३९॥११६॥ तागड़दंग तीरं बागड़दंग बाणं ॥ कागड़दंग काती कटारी क्रिपाणं ॥ नागड़दंग नादं बागड़ दंग बाजे ॥ सागड़दंग सूरं रागड़दंग राजे ॥४०॥११७॥ सागड़दंग संखं नागड़दंग

नफीरं ॥ गागड़दंग गोमाय ग्जे गहीरं ॥ नागड़दंग नगारे बागड़दंग बाजे ॥ जागड़दंग जोधा गागड़दंग गाजे ॥४१॥११८॥

नराज छंद ॥

जितेक रूप धारियं ॥ तितेक देबि मारियं ॥ जितेक रूप धारहीं ॥ तितिओ दुगा संघारहीं ॥४२॥११९॥ जितेक ससत्र वा झरे ॥ प्रवाह स्रोन के परे ॥ जितीक बिंदुका गिरैं॥ सु पान कालिका करैं ॥४३॥१२०॥

रसावल छंद ॥

हूओ स्रोण हीनं ॥ भयो अंग छीनं । गिरिओ अंत झूमं ॥ मनो मेघ भूमं ॥४४॥१२१॥ सबै देव हरखे ॥ सुमन धार बरखे ॥ रकतबिंदु मारे ॥ सबै संतुबारे ॥४५॥१२२॥

इति स्री बचित्र नाटके चंडी चरित्रे रकत बीरज बधह चतुरथ धिआइ संपूरण मसतु सुभ मसतु ॥४॥ अफजू ॥

अथ निसुंभ जुद्ध कथनं ॥

दोहरा ॥

सुंभ निसुंभ सुणयो जबै रकत बीरज को नास ॥ आप चढ़त भे जोर दल सजे परस अरु पासु ॥१॥१२३॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

चढ़े सुंभ नैसुंभ सूरा अपारं ॥ उठे नद्द नादं सु धउसा धुकारं ॥ भई असट सै कोस लौ छत्र छायं ॥ भजे चंद्र सूरं डरयो देव रायं ॥२॥१२४॥ भका भुक्क भेरी ढका ढुक्क ढोलं ॥ फटी नख सिंघं मुखं डड्ढ कोलं ॥ डमा डम्म डउरू डका डुक डंकं ॥ रड़े ग्रिद्ध ब्रिद्धं किलक्कार कंकं ॥३॥१२५॥ खुरं

खेह उॅठी रहिओ गैण पूरं ॥ दहले सिंध बिंधं भए पब्ब चूरं ॥ सुणयो सोर काली गहे ससत्र पाणं ॥ किलक्कार जेमी हने जंग जुआणं ॥४॥१२६॥

रसावल छंद ॥

गज्जे बीर गाजी ॥ तुरे तुंद ताजी ॥ महिखुआस करखे ॥ सरं धार बरखे ॥५॥१२७॥ इतै सिंघ गजयो ॥ महाँ संख बजयो ॥ रहयो नाद पूरं ॥ छुही गैणि धूरं ॥६॥१२८॥ सबै ससत्र साजे ॥ घणं जेम गाजे ॥ चले तेज तै कै ॥ अनंत ससत्र लै कै ॥७॥१२९॥ चहूं ओर ढूके ॥ मुखं मार कूके ॥ अनंत ससत्र बज्जे ॥ महाँ बीर गज्जे ॥८॥१३०॥ मुखं नैण रकतं ॥ धरे पाण सकतं ॥ कीए क्रोध उॅठे ॥ सरं ब्रिसटि बुठ्ठे ॥९॥१३१॥ किते दुसट कूटे ॥ अनंतासत्र

छूटे ॥ करी बाण बरखं ॥ भरी देबि हरखं ॥१०॥१३२॥

बेली बिद्रुम छंद ॥

कह कह सु कूकति कंकियं ॥ बह बहत बीर सु बंकियं ॥ लह लहत बाण क्रिपाणयं ॥ गह गहत प्रेत मसाणयं ॥११॥१३३॥ डह डहत डवर डमंकयं ॥ लह लहत तेग त्रमंकयं ॥ ध्रम ध्रमत साँग धमंकयं ॥ बबकंत बीर सु बंकयं ॥१२॥१३४॥ छुटकंत बाण कमाणयं ॥ हहरंत खेत खत्राणयं ॥ डहकंत डामर डाकणी ॥ कह कहक कूकत जुग्गणी ॥१३॥१३५॥ उफटंत स्रोणत छिच्छयं ॥ बरखंत साइक तिच्छयं ॥ बबकंत बीर अनेकयं ॥ फिकरंत सिआर बिसेखयं ॥१४॥१३६॥ हरखंत स्रोणत रंगणी ॥ बिहरंत देबि अभंगणी ॥ बबकंत केहर

डोलहीं ॥ रण रंग अभंग कलोलहीं ॥१५॥१३७॥ ढम ढमत ढोल ढमक्कयं ॥ धम धमत साँग ध्रमक्कयं ॥ बह बहत क्रुद्ध क्रिपाणयं ॥ जुझंत जोध जुआणयं ॥१६॥१३८॥

दोहरा ॥

भज्जी चमू सभ दानवी सुंभ निरख निज नैण ॥ निकट बिकट भट जे हुते तिन प्रति बुलिओ बैण ॥१७॥१३९॥

नराज छंद ॥

निसुंभ सुंभ कोप कै ॥ पठिओ सु पाव रोप कै ॥ कहयो कि सीघ्र जाइयो ॥ द्रुगाहि बाँध लिआइयो ॥१८॥१४०॥ चड़्यो सु सैण सज्जि कै ॥ सुकोप सूर गज्ज कै ॥ उठे बजंत्र बाजि कै ॥ चलिओ सुरेस भाजि कै ॥१९॥१४१॥ अनंत सूर संग लै ॥ चलिओ

सु दुंदभीन दै ॥ हकार सूरमा भरे ॥
बिलोकि देवता डरे ॥२०॥१४२॥

मधुभार छंद ॥

कंपयो सुरेस ॥ बुलयो महेस ॥
किन्नो बिचार ॥ पुछे जुझार ॥२१॥१४३॥
कीजै सु मित्त्र ॥ कउने चरित्त्र ॥ जा ते
सु माइ ॥ जीतै बनाइ ॥२२॥१४४॥
सकतैं निकार ॥ भेजो अपार ॥ सत्रुन
जाइ ॥ हनिहैं रिसाइ ॥२३॥१४५॥ सोइ
काम कीन ॥ देवन प्रबीन ॥ सकतैं
निकार ॥ भेजी अपार ॥२४॥१४६॥

बिरध नराज छंद ॥

चली सकति सीघ्र सी क्रिपाण पाणि
धार कै ॥ उठे सु ग्रिध ब्रिध डउर
डाकणी डकार कै ॥ हसे सु कंक बंकयं
कबंध अंध उठही ॥ बिसेख देवतारु
बीर बाण धार बुठ्ठही ॥२५॥१४७॥

रसावल छंद ॥

सबै सकति ऐ कै ॥ चली सीस निऐ कै ॥ महा असत्र धारे ॥ महाँ बीर मारे ॥२६॥१४८॥ मुखं रकत नैणं ॥ बकै बंक बैणं । धरे असत्र पाणं ॥ कटारी क्रिपाणं ॥२७॥१४९॥ उतै दैत गाजे ॥ तुरी नाद बाजे ॥ धरे चार चरमं ॥ स्रजे क्रूर बरमं ॥२८॥१५०॥ चहूं ओर गरजे ॥ सबै देव लरजे ॥ छुटे तिच्छ तीरं ॥ कटे चउर चीरं ॥२९॥१५१॥ रसं रुद्द्र रत्ते ॥ महाँ तेज तत्ते ॥ करी बाण बरखं ॥ भरी देबि हरखं ॥३०॥१५२॥ इते देबि मारै ॥ उतै सिंघ फारै ॥ गणं गूढ़ गरजैं ॥ सबै दैत लरजैं ॥३१॥१५३॥ भई बाण बरखा ॥ गए जीति करखा ॥ सबै दुसट मारे ॥ मया संतुबारे ॥३२॥१५४॥ निसुंभं संघारिओ ॥ दलं

दैत मारिओ ॥ सबै दुसट भाजे ॥ इतै सिंघ गाजे ॥३३॥१५५॥ भई पुहप बरखा ॥ गए जीत करखा ॥ जयं संत जंपैं॥ त्रसे दैत कंपैं॥३४॥१५६॥

इति स्री बचित्र नाटके चंडी चरित्रे निसुंभ बधह पंचमों धिआइ संपूरण मसत सुभ मसतु ॥५॥ अफजू ॥

अथ सुंभ जुद्ध कथनं ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

लघू भ्रात जुझयो सुणयो सुंभ रायं ॥ सजे ससत्र असत्रं चढ़िओ चउप चायं ॥ भयो नाद उचं रहयो पूर गैणं ॥ त्रसे देवता दैत कंपधे त्रिनैणं ॥१॥१५७॥ डरयो चार बकत्रं टरयो देव राजं ॥ डिगे पब्ब सरबं स्रजे सुभ्र साजं ॥ परे हूह दै कै भरे लोह क्रोहं ॥ मनो मेरु को सातवों स्रिंग सोहं ॥२॥१५८॥ सजयो

सैण सुंभं कियो नाद उॅचं ॥ सुणे गरभणीआन के गरभ मुचं ॥ परयो लोह क्रोहं उॅठी ससत्र झारं ॥ चवी चावडा डाकणियं डकारं ॥३॥१५६॥ बहे ससत्र असत्रं कटे चरम बरमं ॥ भले कै निबाहयो भटं सुआमि धरमं ॥ उठी कूह जूहं गिरे चउर चीरं ॥ रूले तच्छ मुच्छं परी गच्छ तीरं ॥४॥१६०॥ गिरे अंकुसं बारुणं बीर खेतं ॥ नचे कंध हीणं कबंधं अचेतं ॥ उडैं ग्रिद्ध ब्रिद्धं रड़ैं कंक बंकं ॥ भका भुंक भेरी डहा डूह डंकं ॥५॥१६१॥ टका टुक्क टोपं ढका ढुक्क ढालं ॥ तछा मुच्छ तेगं बकै बिक्करालं ॥ हला चाल बीरं धमा धंमि सागं ॥ परी हाल हूलं सुणिओ लोग नागं ॥६॥१६२॥ डकी डाकणी जोगणियं बितालं ॥ नचे कंध हीणं कबंधं कपालं ॥

हसे देव सरबं रिसयो दानवेसं ॥ किधो अगनि जुआलं भयो आप भेसं ॥७॥१६३॥

दोहरा ॥

सुंभासुर जेतक असुर पठए कोप बढाइ ॥ ते देबी सोखत करे बूंद तवा की निआइ ॥८॥१६४॥

नराज छंद ॥

सु बीर सैण सज्जि कै ॥ चड़्यो सकोप गज्जि कै ॥ चलयो सु ससत्र धार कै ॥ पुकार मार मार कै ॥६॥१६५॥

संगीत मधुभार छंद ॥

कागड़दं कड़ाक ॥ तागड़दं तड़ाक ॥ सागड़दं सु बीर ॥ गागड़दं गहीर ॥१०॥१६६॥ नागड़दं निसाण ॥ जागड़दं जुआण ॥ नागड़दी निहंग ॥ पागड़दी पिलंग ॥११॥१६७॥ तागड़दी

तमक्कि ॥ लागड़दी लहक्कि ॥ कागड़दी क्रिपाण ॥ बाहैं जुआण ॥१२॥१६८॥ खागड़दी खतंग ॥ नागड़दी निहंग ॥ छागड़दी छुटंत ॥ आगड़दी उडंत ॥१३॥१६९॥ पागड़दी पवंग ॥ सागड़दी सुभंग ॥ जागड़दी जुआण ॥ झागड़दी झुझाण ॥१४॥१७०॥ झागड़दी झड़ंग ॥ कागड़दी कड़ंग ॥ तागड़दी तड़ाक ॥ चागड़दी चटाक ॥१५॥१७१॥ घागड़दी घबाक ॥ भागड़दी भभाक ॥ कागड़दी कपालि ॥ नच्ची बिक्राल ॥१६॥१७२॥

नराज छंद ॥

अनंत दुसट मारयं ॥ बिअंत सोक टारयं ॥ कमंध अंध उठियं ॥ बिसेख बाण बुट्ठीयं ॥१७॥१७३॥ कड़ाक करमुकं उधं ॥ सड़ाक सैहथी जुधं ॥

बिअंत बाण बरखयं ॥ बिसेख बीर हरखयं ॥१८॥१७४॥

संगीत नराज छंद ॥

कड़ा कड़ी क्रिपाणयं ॥ जटा जुटी जुआणयं ॥ सु बीर जागड़दं जगे ॥ लड़ाक लागड़दं पगे ॥१६॥१७५॥

रसावल छंद ॥

झमी तेग झट्टं ॥ छुरी छिप्प्र छुट्टं ॥ गुरं गुरज गट्टं ॥ पलंगं पिसट्टं ॥२०॥१७६॥ किते स्रोण चट्टं ॥ किते सीस फुटं ॥ कहूं हूह छुटं ॥ कहूं बीर उॅठं ॥२१॥१७७॥ कहूं धूरि लुटं ॥ किते मार रट्टं ॥ भणै जस्स भट्टं ॥ किते पेट फट्टं ॥२२॥१७८॥ भजे छत्रि थटं ॥ किते खून खट्टं ॥ किते दुसट दट्टं ॥ फिरे जयों हरट्टं ॥२३॥१७६॥ सजे सूर सारे ॥ महिखुआस धारे ॥ लए

खग्ग आरे ॥ महा रोह वारे ॥२४॥१८०॥ सही रूप कारे ॥ मनो सिंधु खारे ॥ कई बार गारे ॥ सु मारं उचारे ॥२५॥१८१॥ भवानी पछारे ॥ जवा जेमि जारे ॥ बडे ई लुझारे ॥ हुते हीए वारे ॥२६॥१८२॥ इकं बार टारे ॥ ठमं ठोक ठारे ॥ बली मार डारे ॥ ढमक्के ढढारे ॥२७॥१८३॥ बहे बाणिआरे ॥ किते तीर तारे ॥ लखे हाथ बारे ॥ दिवाने दिदारे ॥२८॥१८४॥ हणे भूमि पारे ॥ किते सिंघ फारे ॥ किते आपु बारे ॥ जिते दैत भारे ॥२९॥१८५॥ तिते अंत हारे ॥ बडे ई अड़िआरे ॥ खरे ई बरिआरे ॥ करूरं करारे ॥३०॥१८६॥ लपक्के ललारे ॥ अरीले अरिआरे ॥ हणे कालिका रे ॥ भज्जे रोहवारे ॥३१॥१८७॥

दोहरा ॥

इह बिधि दुसट प्रजार कै ससत्र असत्र करि लीन ॥ बाण बूंद प्रिथमे बरख सिंघ नाद पुन कीन ॥३२॥१८८॥

रसावल छंद ॥

सुणयो सुंभ रायं ॥ चड़यो चउप चायं ॥ सजे ससत्र पाणं ॥ चढ़े जंग जुआणं ॥३३॥१८९॥ लगे ढोल ढंके ॥ कमाणं कड़ंके ॥ भए नद्द नादं ॥ धुणं निर बिखादं ॥३४॥१९०॥ चमक्की क्रिपाणं ॥ हठे तेज माणं ॥ महाँ बीर हुंके ॥ सु नीसाण द्रुंके ॥३५॥१९१॥ चहूं ओर गरजे ॥ सबै देव लरजे ॥ सरं धार बरखे ॥ मया पाण परखे ॥३६॥१९२॥ चौपई ॥ जे लै ससत्रु सामुहे धए ॥ तिते निधन कहुं प्रापत भए ॥ झमकति भई

असिन की धारा ॥ भभके रुंड मुंड बिकरारा ॥३७॥१६३॥

दोहरा ॥

है गै रथ पैदल कटे बचयो न जीवत कोइ ॥ तब आपै निकसयो न्रिपति संभु करै सो होइ ॥३८॥१६४॥

चौपई ॥

सिव दूती इकि द्रुगा बुलाई ॥ कान लाग नीकै समझाई ॥ सिव कौ भेज दीजीऐ तहाँ ॥ दैत राज इसथित है जहाँ ॥३६॥१६५॥ सिव दूती जब इम सुन पावा ॥ सिवहि दूत कर उतै पठावा ॥ सिव दूती ता ते भयो नामा ॥ जानत सकल पुरख अरु बामा ॥४०॥१६६॥ सिव कहि दैत राज सुनि बाता ॥ इह बिधि कहयो तुमहु जगमाता ॥ देवन कौ दै कै ठकुराई ॥ कै माँडहु हम संग लराई

॥४१॥१९७॥ दैत राज इह बात न मानी ॥ आप चले जूझन अभिमानी ॥ गरजति कालि काल जयों जहाँ ॥ प्रापति भयो असुर पति तहाँ ॥४२॥१९८॥ चमकी तहाँ असिन की धारा ॥ नाचे भूत प्रेत बैतारा ॥ फरके अंध कबंध अचेता ॥ भिभरे भईरव भीम अनेका ॥४३॥१९९॥ तुरही ढोल नगारे बाजे ॥ भाँति भाँति जोधा रण गाजे ॥ ढढि डफ डमरु डुगडुगी घनी ॥ नाइ नफीरी जाति न गनी ॥४४॥२००॥

मधुभार छंद ॥

हुंके किकाण ॥ धुंके निसाण ॥ सज्जे सु बीर ॥ गज्जे गहीर ॥४५॥२०१॥ झुक्के निझक्क ॥ बज्जे उबक्क ॥ सज्जे सुबाह ॥ अछै उछाह ॥४६॥२०२॥ कट्टे किकाण ॥ फुट्टे

चवाण ॥ सूलं सड़ाक ॥ उॅठे कड़ाक ॥४७॥२०३॥ गज्जे जुआण ॥ बज्जे निसाण ॥ सज्जे रजेंद्र ॥ गज्जे गजेंद्र ॥४८॥२०४॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

फिरे बाजियं ताजियं इत्त उॅतं ॥ गज्जे बारुणं दारुणं राज पुत्रं ॥ बजे संख भेरी उठे संख नादं ॥ रणंकै नफीरी धुणं निर बिखादं ॥४९॥२०५॥ कड़क्के क्रिपाणं सड़क्कार सेलं ॥ उठी कूह जूहं भई रेल पेलं ॥ रुले तच्छ मुच्छं गिरे चउर चीरं ॥ कहूं हत्थ मथं कहूं बरम बीरं ॥५०॥२०६॥

रसावल छंद ॥

बली बैर रुज्झे ॥ समुह सार जुज्झे ॥ संभारे हथिआरं ॥ बकैं मार मारं ॥५१॥२०७॥ सबै ससत्र सज्जे ॥ महा

बीर गज्जे ॥ सरं ओघ छुट्टे ॥ कड़क्कार उॅठे ॥५२॥२०८॥ बज्जैं बादित्रेअं ॥ हसैं गाँध्रबेअं ॥ झंडा गड्ड जुट्टे सरं संज फुट्टे ॥५३॥२०९॥ चहूं ओर उॅठे ॥ सरं ब्रिसटि बुट्ठे ॥ करोधी करालं ॥ बकैं बिकरालं ॥५४॥२१०॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

किते कुठीअं बुठीअं ब्रिसट बाणं ॥ रणं डुलीअं बाजि खाली पलाणं ॥ जुझे जोधयं बीर देवं अदेवं ॥ सुभे ससत्र साजा मनो साँतनेवं ॥५५॥२११॥ गज्जे गज्जियं सरब सज्जे पवंगं ॥ जुद्धं जुट्टीअं जोध छुट्टे खतंगं ॥ तड़क्के तबल्लं झड़ंके क्रिपाणं ॥ सड़क्कार सेलं रणंके निसाणं ॥५६॥२१२॥ ढमा ढम्म ढोलं ढका ढुक्क ढालं ॥ गहा जूह गज्जे हयं हाल चालं ॥ सटा सट्ट

सेलं खहा खूनि खग्गं ॥ तुट्टे चरम बरमं उठे नाल अग्गं ॥५७॥२१३॥ उठे अग्गि नालं खहे खोल खग्गं ॥ निसामावसी जाणु मासाण जग्गं ॥ डकी डाकणी डामरु डउर डक्कं ॥ नचे बीर बैताल भूतं भभक्कं ॥५८॥२१४॥

बेली बिद्रम छंद ॥

सरबासत्र आवत भे जिते ॥ सभ काटि दीन दुगा तिते ॥ अरि और जेतिक डारीअं ॥ तेऊ काटि भूमि उतारीअं ॥५९॥२१५॥ सर आप काली छंडीअं ॥ सरबासत्र सत्रु बिहंडीअं ॥ ससत्र हीन जबै निहारिओ ॥ जै सबद देवन उचारिओ ॥६०॥२१६॥ नभ मद्धि बाजन बाजहीं ॥ अविलोक देव सु गाजहीं ॥ लखि देव बारं बारहीं ॥ जै सबद सरब पुकारहीं ॥६१॥२१७॥ रण

कोप कालि करालियं ॥ खट अंग पाणि उछालियं ॥ सिर सुंभ हत्थ दुछंडियं ॥ इक चोट दुसट बिहंडियं ॥६२॥२१८॥

दोहरा ॥

जिम सुंभासुर को हना अधिक कोप कै काल ॥ तयों साधन के सत्रु सभ चाबत जाहि कराल ॥६३॥२१९॥

इति स्री बचित्र नाटके चंडी चरित्रे सुंभ बधह खसटमो धिआइ संपूरणं मसतु सुभ मसतु ॥५॥ अफजू ॥

अथ जैकार सबद कथनं ॥

बेली बिद्रुम छंद ॥

जै सबद देव पुकारहीं ॥ सभ फूल फूलन डारहीं ॥ घन सार कुंकम लिआइ कै ॥ टीका दियो हरखाइ कै ॥१॥२२०॥

चौपई ॥

उसतति सबहूं करी अपारा ॥ ब्रहम

कवच को जाप उचारा ॥ संत संबूह प्रफुल्लित भए ॥ दुसट अरिसट नास हुऐ गए ॥२॥२२१॥ साधन को सुख बढे अनेका ॥ दानव दुसट न बाचा एका ॥ संत सहाइ सदा जग माई ॥ जह तह साधन होइ सहाई ॥३॥२२२॥

देवी जू की उसतति ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

नमो जोग ज्वालं धरीअं जुआलं ॥ नमो सुंभ हंती नमो क्रूर कालं ॥ नमो स्रोण बीरजारदनी धूम्र हंती ॥ नमो काल का रूप ज्वाला जयंती ॥४॥२२३॥ नमो अंबिका जंबहा जोति रूपा ॥ नमो चंड मुंडारदनी भूपि भूपा ॥ नमो चामरं चीरणी चित्र रूपं ॥ नमो परम प्रगया बिराजै अनूपं ॥५॥२२४॥ नमो परम रूपा नमो क्रूर करमा ॥ नमो राजसा

सातका परम बरमा ॥ नमो महिख दईत को अंत करणी ॥ नमो तोखणी सोखणी सरब इरणी ॥६॥२२५॥ बिड़ालाछ हंती क्रूराछ घाया ॥ दिजगि दयारदनीअं नमो जोग माया ॥ नमो भैरवी भारगवीअं भवानी ॥ नमो जोग ज्वालं धरी सरब मानी ॥७॥२२६॥ अधी उरधवी आप रूपा अपारी ॥ रमा रासटरी काम रूपा कुमारी ॥ भवी भावनी भईरवी भीम रूपा ॥ नमो हिंगुला पिंगुलायं अनूपा ॥८॥२२७॥ नमो जुद्धनी कुद्धनी क्रूर करमा ॥ महाँ बुद्धिनी सिद्धिनी सुद्ध धरमा ॥ परी पदमनी पारबती परम रूपा ॥ सिवी बासवी ब्राहमी रिद्धि कूपा ॥९॥२२८॥ म्रिड़ा मारजनी सूरतवी मोह करता ॥ परा पउसटणी पारबती दुसट हरता ॥

नमो हिंगुला पिंगुला तोतलायं ॥ नमो कारतिकयानी सिवा सीतलायं ॥१०॥२२९॥ भवी भारगवीअं नमो ससत्र पाणं ॥ नमो असत्र धरता नमो तेज माणं ॥ जया आजया चरमणी चावडायं ॥ क्रिपा काल कायं नयं निति निआयं ॥११॥२३०॥ नमो चापणी चरमणी खड़गपाणं ॥ गदा पाणिणी चक्क्रणी चित्त्र माणं ॥ नमो सूलणी सैहथी पाणि माता ॥ नमो गिआन बिगिआन की गिआन गिआता ॥१२॥२३१॥ नमो पोखणी सोखणीअं म्रिड़ाली ॥ नमो दुसट दोखारदनी रूप काली ॥ नमो जोग जुआला नमो कारतिकिआनी ॥ नमो अंबिका तोतला स्री भवानी ॥१३॥२३२॥ नमो दोख दाही नमो दुखय हरता ॥ नमो ससत्रणी

असत्रणी करम करता ॥ नमो रिसटणी पुसटणी परम जुआला ॥ नमो तारुणीअं नमो ब्रिध बाला ॥१४॥२३३॥ नमो सिंघ बाही नमो दाढ़ गाढ़ं ॥ नमो खग्ग दग्गं झमा झम बाढ़ं ॥ नमो रूढ़ गूढ़ं नमो सरब बिआपी ॥ नमो नित्त नारायणी दुसट खापी ॥१५॥२३४॥ नमो रिद्धि रूपं नमो सिद्धि करणी ॥ नमो पोखणी सोखणी सरब भरणी ॥ नमो आरजनी मारजनी कालरात्री ॥ नमो जोग ज्वालं धरी सरब दात्री ॥१६॥२३५॥ नमो परम परमेस्वरी धरम करणी ॥ नमो नित्त नाराइणी दुसट दरणी ॥ छला आछला ईसुरी जोग जुआली ॥ नमो बरमणी चरमणी क्रूर काली ॥१७॥२३६॥ नमो रेचका पूरका प्रात संधिआ ॥ जिनै मोह कै चउदहूं लोक बंधिआ ॥ नमो अंजनी

गंजनी सरब असत्रा ॥ नमो धारणी बारणी सरब ससत्रा ॥१८॥२३७॥ नमो अंजनी गंजनी दुसट गरबा ॥ नमो तोखनी सोखनी संत सरबा ॥ नमो सकतणी सूलणी खड़ग पाणी ॥ नमो तारणी कारणीअं क्रिपाणी ॥१६॥२३८॥ नमो रूप काली कपाली अनंदी ॥ नमो चंद्रणी भानवीअं गुबिंदी ॥ नमो छैल रूपा नमो दुसट दरणी ॥ नमो कारणी तारणी स्रिसटि भरणी ॥२०॥२३६॥ नमो हरखणी बरखणी ससत्र धारा ॥ नमो तारणी कारणीअं अपारा ॥ नमो जोगणी भोगणी प्रम प्रगिआ ॥ नमो देव दईतिआइणी देवि दुरगिआ ॥२१॥२४०॥ नमो घोर रूपा नमो चारु नैणा ॥ नमो सूलणी सैथणी बक्क्र बैणा ॥ नमो ब्रिधि बुद्धं करी जोग

जुआला ॥ नमो चंड मुंडी म्रिड़ा क्रूर काला ॥२२॥२४१॥ नमो दुसट पुसटारदनी छेम करणी ॥ नमो दाढ़ गाड़ा धरी दुखय हरणी ॥ नमो सासत्र बेता नमो ससत्र गामी ॥ नमो जच्छ बिदिआधरी पूरन कामी ॥२३॥२४२॥ रिपं तापणी जापणी सरब लोगा ॥ थपे थापणी खापणी सरब सोगा ॥ नमो लंकुड़ेसी नमो सकति पाणी ॥ नमो कालिका खड़ग पाणी क्रिपाणी ॥२४॥२४३॥ नमो लंकुड़ेसा नमो नागर कोटी ॥ नमो काम रूपा कमच्छिआ करोटी ॥ नमो काल रात्री कपरदी कलिआणी ॥ महाँ रिद्धणी सिद्धि दाती क्रिपाणी ॥२५॥२४४॥ नमो चतुर बाही नमो असटबाहा ॥ नमो पोखणी सरब आलम पनाहा ॥ नमो अंबिका

जंबहा कारतिकिआनी ॥ म्रिड़ाली
कपरदी नमो स्री भवानी ॥२६॥२४५॥
नमो देव अरदयारदनी दुसट हंती ॥
सिता आसिता राजक्राँती अनंती ॥
जुआला जयंती अलासी अनंदी ॥ नमो
पारब्रहमी हरी सी मुकंदी ॥२७॥२४६॥
जयंती नमो मंगला काल कायं ॥ कपाली
नमो भद्द्रकाली सिवायं ॥ दूरगायं
छिमायं नमो धात्रीएयं ॥ सुआहा
सुद्धायं नमो सीतलेयं ॥२८॥२४७॥
नमो चरबणी सरब धरमं धुजायं ॥ नमो
हिंगुला पिंगुला अंबकायं ॥ नमो दीरघ
दाढ़ा नमो सिआम बरणी ॥ नमो अंजनी
गंजनी दैत दरणी ॥२९॥२४८॥ नमो
अरध चंद्राइणी चंद्र चूड़ं ॥ नमो इंदु
उरधा नमो दाढ़ गूढ़ं ॥ ससं सेखरी
चंद्रभाला भवानी ॥ भवी भैहरी भूतराटी

क्रिपानी ॥३०॥२४९॥ कली कारणी करम करता कमच्छिआ ॥ परी पद्‌मनी पूरणी सरब इच्छिआ ॥ जया जोगनी जग्ग करता जयंती ॥ सुभा सुआमिणी स्रिसटजा सत्रु हंती ॥३१॥२५०॥ पवित्री पुनीता पुराणी परेयं ॥ प्रभी पूरणी पार ब्रहमी अजेयं ॥ अरूपं अनूपं अनामं अठामं ॥ अभीतं अजीतं महा धरम धामं ॥३२॥२५१॥ अछेदं अभेदं अकरमं सु धरमं ॥ नमो बाण पाणी धरे चरम बरमं ॥ अजेयं अभेयं निरंकार नित्तयं ॥ निरूपं निरबाणं नमित्तयं अकित्तयं ॥३३॥२५२॥ गुरी गउरजा कामगामी गुपाली ॥ बली बीरणी बावना जग्गया जुआली ॥ नमो सत्रु चरबाइणी गरब हरणी ॥ नमो तोखणी सोखणी सरब भरणी ॥३४॥२५३॥ पिलंगी पवंगी

नमो चर चितंगी ॥ नमो भावनी भूत हंता भड़िंगी ॥ नमो भीमि रूपा नोम लोक माता ॥ भवी भावनी भविखयाता बिधाता ॥३५॥२५४॥ प्रभी पूरणी परम रूपं पवित्री ॥ परी पोखणी पारब्रहमी गाइत्री ॥ जटी जुआल परचंड मुंडी चमुंडी ॥ बरं दाइणी दुसट खंडी अखंडी ॥३६॥२५५॥ सबै संतुबारी बरं बयूह दाता ॥ नमो तारणी कारणी लोक माता ॥ नमसतयं नमसतयं नमसतयं भवानी ॥ सदा राख लै मो क्रिपा कै क्रिपानी ॥३७॥२५६॥

इति स्री बचित्र नाटके चंडी चरित्रे देबी जू की उसतति बरननं सपतमो धिआइ संपूरणं मसतु सुभ मसतु ॥७॥

अफजू ॥

अथ चंडी चरित्र उसतति बरननं ॥

भुजंग प्रयात छंद ॥

भरे जोगणी पत्र चउसठ चारं ॥ चली ठाम ठामं डकारं डकारं ॥ भरे नेह गेहं गए कंक बंकं ॥ रुले सूर बीरं अहाड़ं न्रिसंकं ॥१॥२५७॥ चले नारदऊ हाथ बीना सुहाए ॥ बने बारदी डंक डउरु बजाए ॥ गिरे बाजि गाजी गज्जी बीर खेतं ॥ रुले तच्छ मुच्छं नच्चे भूत प्रेतं ॥२॥२५८॥ नच्चे बीर बैताल अद्धं कमंधं ॥ बधे बद्ध गोपाँगुलित्राण बद्धं ॥ भए साधु संबूह भीतं अभीते ॥ नमो लोक माता भले सत्रु जीते ॥३॥२५९॥ पढ़े मूढ़ या को धनं धाम बाढे ॥ सुनै सूम सोफी लरै जुद्ध गाढे ॥ जगै रैणि जोगी जपै जाप या को ॥ धरै परम जोगं लहै सिद्धिता को

॥४॥२६०॥ पड़ै याहि बिद्द्यारथी बिद्य हेतं ॥ लहै सरब सासत्रान को मद्धय चेतं ॥ जपै जोग संनयास बैराग कोई ॥ तिसै सरब पुंनयान को पुंन होई ॥५॥२६१॥

दोहरा ॥

जे जे तुमरे धिआन को नित्त उठि धिऐ हैं संत ॥ अंत लहैंगे मुकति फलु पावहिंगे भगवंत ॥६॥२६२॥

इति स्री बचित्र नाटके चंडी चरित्रे चंडी चरित्र उसतति बरनं असटमो धिआइ संपूरन मसतु सुभ मसतु ॥८॥

॥ अफजू ॥

ੴ वाहिगुरू जी की फते ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

वार स्री भगउती जी की

पातशाही १० ॥

पउड़ी ॥

प्रिथम भगौती सिमरि कै गुर नानक लई धिआइ ॥ फिरि अंगद गुर ते अमरदास रामदासै होई सहाइ ॥ अरजुन हरि गोबिंद नू सिमरौ स्री हरि राइ ॥ स्री हरि क्रिसन धिआईऐ जिसु डिठे सभ दुखु जाइ ॥ तेग बहादर सिमरीऐ घरि नउनिधि आवै धाइ ॥ सभ थाईं होइ सहाइ ॥१॥

पउड़ी ॥

खंडा प्रिथमै साजि कै जिनि सभ सैसारु उपाइआ ॥ ब्रहमा बिसनु महेस साजि कुदरती दा खेलु रचाइ बणाइआ ॥ सिंधु परबत मेदनी बिनु थंम्हा गगनु रहाइआ ॥ सिरजे दानो देवते तिन अंदरि बादु रचाइआ ॥ तै ही दुरगा साजि कै दैता दा नासु कराइआ ॥ तैथो ही बलु राम लै नालि बाणा दहसिरु घाइआ ॥ तैथो ही बलु क्रिसन लै कंसु केसी पकड़ि गिराइआ ॥ बडे बडे मुनि देवते कई जुग तिनी तनु ताइआ ॥ किनी तेरा अंतु न पाइआ ॥२॥

पउड़ी ॥

साधू सतिजुगु बीतिआ अध सीली त्रेता आइआ ॥ नच्ची कल सरोसरी कल

नारद डउरू वाइआ ॥ अभिमानु उतारन देवतिआँ महिखासुर सुंड उपाइआ ॥ जीत लए तिन देवते तिह लोकी राजु कमाइआ ॥ वड्डा बीरु अखाइकै सिर उपरि छत्रु फिराइआ ॥ दित्ता इंद्र निकाल कै तिन गिर कैलासु तकाइआ ॥ डरि कै हत्थों दानवी दिल अंदरि त्रास वधाइआ ॥ पास दुरगा दे इंदर आइआ ॥३॥

पउड़ी ॥

इकि दिहाड़े नावण आई दुरगशाह ॥ इंद्र ब्रिथा सुणाई अपणे हाल दी ॥ छीन लई ठकुराई साते दानवी ॥ लोकी तिही फिराइी दोही आपणी ॥ बैठे वाइ वधाई ते अमरावती ॥ दित्ते देव भजाई सभना राकसाँ ॥ किनै न जित्ता जाई महिखे दैत नूं ॥ तेरी साम तकाई देवी दुरगशाह ॥४॥

पउड़ी ॥

दुरगा बैण सुणंदी हस्सी हड़हड़ाइ ॥ ओही सीहु मंगाइआ राकस भख्खणा ॥ चिंता करहु न काई देवाँ नू आखिआ ॥ रोह होई मह माई राकस मारणे ॥५॥

दोहरा ॥

राकस आइे रोहले खेत भिड़न के चाइ ॥ लसकन तेगाँ बरछीआँ सूरजु नदरि न पाइ ॥६॥

पउड़ी ॥

दुहाँ कंधाराँ मुह जुड़े ढोल संख नगारे वज्जे ॥ राकस आए रोहले तरवारी बखतर सज्जे ॥ जुटे सउहें जुद्ध नूं इकि जात न जाणन भज्जे ॥ खेत अंदरि जोधे गज्जे ॥७॥

पउड़ी ॥

जंग मुसाफा बज्जिआ रण घुरे नगारे

चावले ॥ झूलन नेजे बैरकाँ नीसाण लसणि लसावले ॥ ढोल नगारे पउण दे उघण जाणु जटावले ॥ दुरगा दानो डहे रण नाद वज्जन खेत भीहावले ॥ बीर परोते बरछीएं जणु डाल चमुट्टे आवले ॥ इकि वड्ढे तेगीं तड़फन मद पीते लोटनि बावले ॥ इकि चुणि चुणि झाड़उ कढीअन रेत विच्चों सुइना डावले ॥ गदा त्रिसूलाँ बरछीआँ तीर वगन खरे उतावले ॥ जणु डसे भुजंगम सावले ॥ मर जावन बीर रुहावले ॥८॥

पउड़ी ॥

देखन चंड प्रचंड नूं रण घुरे नगारे ॥ धाए राकस रोहले चउगिरदों भारे ॥ हत्थीं तेगाँ पकड़ि कै रण भिड़े करारे ॥ कदे न नट्ठे जुद्ध ते जोधे जुज्झारे ॥ दिल विचि रोह बढाइकै मार मार

पुकारे ॥ मारे चंड प्रचंड नै बीर खेत
उतारे ॥ मारे जापन बिजुली सिर भार
मुनारे ॥९॥

पउड़ी ॥

चोट दमामे पाई दलाँ मुकाबला ॥
देवी दसत नचाई सीहण सार दी ॥ पेट
मलंदे लाई महिखे दैत नू ॥ गुरदे आँदाँ
खाई नाले रुकड़े ॥ जेही दिल विचि
आई कही सुणाइ कै ॥ चोटी जाणु
दिखाई तारे धूमकेतु ॥१०॥

पउड़ी ॥

चोटाँ पान नगारी अणीआँ
जुट्टीआँ ॥ धूह लईआँ तरवारी देवाँ
दानवी ॥ वाहन वारो वारी सूरे संघरे ॥
वगै रतु झलारी जिउं गेरू बाबुत्रा ॥
देखन बैठ अटारी नारी राकसाँ ॥ पाई
धुम सवारी दुरगा दानवी ॥११॥

पउड़ी ॥

लख नगारे वज्जण आम्हो साम्हणे ॥ राकस रणो न भज्जण रोहे रोहले ॥ सीहाँ वाँगूं गज्जण सभ्भे सूरमे ॥ तणि तणि कैबर छड्डण दुरगा साम्हणे ॥१२ ॥

पउड़ी ॥

घुरे नगारे दोहरे रण संगलीआले ॥ धूड़ि लपेटे धूहरे सिरदार जटाले ॥ उँखलीआँ नासाँ जिना मुह जापन आले ॥ धाए देवी साम्हणे बीर मुच्छलीआले ॥ सुरपति जेहे लड़ हटे बीर टले न टाले ॥ गज्जे दुरगा घेरि कै जणु घणीअर काले ॥१३॥

पउड़ी ॥

चोट पई खरचामी दलाँ मुकाबला ॥ घेर लई वरिआमी दुरगा आइकै ॥ राकस

वडे अलामी भज्ज न जाणदे ॥ अंत होए सुरगामी मारे देवताँ ॥१४॥

पउड़ी ॥

अगणित घुरे नगारे दलाँ भिड़ंदिआँ ॥ पाए महिखल भारे देवाँ दानवाँ ॥ वाहन फट्ट्ट करारे राकस रोहले ॥ जापन तेगीं आरे मिआनो धूहीआँ ॥ जोधे वडे मुनारे जापन खेत विचि ॥ देवी आप सवारे पब्बाँ जवेहणे ॥ कदे न आखन हारे धावन साम्हणे ॥ दुरगा सभ संघारे राकस खड़ग लै ॥१५॥

पउड़ी ॥

उमल लत्थे जोधे मारू बज्जिआ ॥ बद्दल जिउं महिखासुर रण विचि गज्जिआ ॥ इंदर जेहा जोधा मैथउ भज्जिआ ॥ कउ विचारी दुरगा जिन रण सज्जिआ ॥१६॥

पउड़ी ॥

बज्जे ढोल नगारे दलाँ मुकाबला ॥ तीर फिरैं रैबारे आम्हो साम्हणे ॥ अगणित बीर संघारे लगदी कैबरीं ॥ डिग्गे जाणु मुनारे मारे बिज्जु दे ॥ खुल्ली वालीं दैत अहाड़े सभ्भे सूरमे ॥ सुत्ते जाणु जटाले भंगाँ खाइकै ॥१७॥

पउड़ी ॥

दुहाँ कंधाराँ मुहि जुड़े नालि धउसाँ भारी ॥ कड़क उठिआ फौज ते वडा अहंकारी ॥ लै के चल्लिआ सूरमे नालि वडे हजारी ॥ मिआनो खंडा धूहिआ महिखासुर भारी ॥ उमल लत्थे सूरमे मार मच्ची करारी ॥ जापे चले रत्तु दे सलले जटधारी ॥१८॥

पउड़ी ॥

स्टट पई जमधाणी दलाँ

मुकाबला ॥ धूहि लई क्रिपाणी दुरगा मिआन ते ॥ चंडी राकस खाणी वाही दैत नू ॥ कोपर चूर चवाणी लथी करग लै ॥ पाखर तुरा पलाणी रड़की धरत जाइ ॥ लैंदी अघा सिधाणी सिंगाँ धउल दिआँ ॥ कूरम सिर लहलाणी दुसमन मार कै ॥ वढे गन्न तखाणी मूए खेत विचि ॥ रण विचि घती घाणी लोहू मिज्ज दी ॥ चारे जुग कहाणी चल्लगु तेग दी ॥ बिद्धण खेत विहाणी महिखे दैत नू ॥१६॥

पउड़ी ॥

*इति महिखासुर दैत मारे दुरगा आइआ ॥ चउदह लोकाँ राणी सिंघ नचाइआ ॥ मारे वीर जटाणी दल विचि अग्गले ॥ मंगण नाही पाणी दलीं हकार कै ॥ जणु करी समाइ पठाणी सुणि कै

* यह तुक पटना साहिब वाली बीड़ में नहीं है।

राग नू ॥ रत्तू दे हड़वाणी चल्ले वीर खेत ॥ पीता फुल्ल इआणी घुमन सूरमे ॥२०॥

पउड़ी ॥

होई अलोप भवानी देवाँ नूं राजु दे ॥ ईसर दी बरदानी होई जित्त दिन ॥ सुंभ निसुंभ गुमानी जनमे सूरमे ॥ इंद्र दी रजधानी तक्की जित्तणी ॥२१॥

पउड़ी ॥

इंद्र पुरी ते धावणा वड जोधीं मता पकाइआ ॥ संज पटेला पाखरा भेड़ संदा साजु बणाइआ ॥ जुंमे कटक अछूहणी असमानु गरदी छाइआ ॥ रोहि सुंभ निसुंभ सिधाइआ ॥२२॥

पउड़ी ॥

सुंभ निसुंभ अलाइआ वड जोधीं संघर वाए ॥ रोह दिखाली दित्तीआ

वरिआमी तुरे नचाए ॥ घुरे दमामे दोहरे जम बाहण जिउ अरड़ाए ॥ देउ दानो लुज्झण आए ॥२३॥

पउड़ी ॥

दानो देउ अनागी संघरु रचिआ ॥
फुल्ल खिड़े जणु बागीं बाणे जोधिआँ ॥
भूताँ इल्लाँ कागीं गोसतु भक्खिआ ॥
हुमड़ धुमड़ जागी घत्ती सूरिआँ ॥२४॥

पउड़ी ॥

सट्ट नगारे पाई दलाँ मुकाबला ॥
दित्ते देउ भगाई मिल कै राकसीं ॥
लोकीं तिही फिराई दोही आपणी ॥
दुरगा दी साम तकाई देवाँ डरदिआँ ॥
आँदी चंड चड़ाई उते राकसाँ ॥२५॥

पउड़ी ॥

आई फेर भवानी खबरी पाईआँ ॥
दैत वडे अभिमानी होए एकठे ॥ लोचन

धूम गुमानी राइ बुलाइआ ॥ जग विचि वडा दानो आप कहाइआ ॥ सट्ट पई खरचामी दुरगा लिआवणी ॥२६ ॥

पउड़ी ॥

कड़क उठी रण चंडी फउजाँ देखिकै ॥ धूहि मिआनो खंडा होई सामणे ॥ सभ्भे बीर संघारे धूमरनैण दे ॥ जणु लै कट्टे आरे दरखत बाढीआँ ॥२७॥

पउड़ी ॥

चोबी धउस बजाई दलाँ मुकाबला ॥ रोह भवानी आई उत्तै राकसाँ ॥ खब्बै दसत नचाई सीहण सार दी ॥ बहुतिआँ दे तन लाई कीती रंगुली ॥ भाईआँ मारन भाई दुरगा जाणि कै ॥ रोह होइ चलाई राकस राइ नूं ॥ जमपुर दीआ पठाई लोचन धूम नूं ॥ जापे दिती साई मारन सुंभ दी ॥२८॥

पउड़ी ॥

भंने दैत पुकारे राजे सुंभ थै ॥ लोचन धूम संघारे सणै सिपाहीआँ ॥ चुणि चुणि जोधे मारे अंदरि खेत दै ॥ जापन अंबरि तारे डिग्गन सूरमे ॥ गिरे परबत भारे मारे बिज्जु दे ॥ दैताँ दे दल हारे दहशत खाइ कै ॥ बचे सुमारे मारे रहिदे राइ थै ॥२६॥

पउड़ी ॥

रोह होइ बुलाए राकसि राइ ने ॥ बैठे मता पकाए दुरगा लिआवणी ॥ चंड अरु मुंड पठाए बहुता कटकु दै ॥ जापे छप्पर छाए बणीआ केजमा ॥ जेते राइ बुलाइ चले जुज्झ नो ॥ जणु जमपुर पकड़ चलाए सभ्भे मारने ॥३०॥

पउड़ी ॥

ढोल नगारे वाए दलाँ मुकाबला ॥

रोहि रुहेले आए उॅते राकसाँ ॥ सभनी तुरे नचाए बरछे पकड़ि कै ॥ बहुते मारि गिराए अंदरि खेत दै ॥ तीरीं छहबर लाए बुट्ठी देवताँ ॥३१॥

पउड़ी ॥

भेरी संख बजाए संघर रचिआ ॥ तणि तणि तीर चलाए दुरगा धनुख लै ॥ जिनी दसत उठाए रहे न जीवदे ॥ चंड अरु मुंड खपाए दोनो देवताँ ॥३२॥

पउड़ी ॥

सुंभ निसुंभ रिसाए मारे दैत सुणि ॥ जोधे सभ बुलाए अपणे मजलसी ॥ जिनी देउ भजाए इंद्र जेहवे ॥ तेई मार गिराए पल विचि देवताँ ॥ ओनी दसती दसति वजाए तिन्हाँ चित्त करि ॥ फिर स्रणवत बीज चलाए बीड़े राइ दे ॥ संज पटेला पाए चिलकत टोपीआँ ॥ लुज्झण

नो अरड़ाए राकस रोहले ॥ कदे न किनै हटाए जुज्झ मचाइ कै ॥ मिलि तेई दानो आए हुण संघर देखणा ॥३३॥

पउड़ी ॥

दैतीं डंड उभारी नेड़े आइ कै ॥ सिंघ करी असवारी दुरगा शोर सुणि ॥ खब्बै दसत उभारी गदा फिराइ कै ॥ सैना सभ संघारी स्रणवत बीज दी ॥ जणु मद खाइ मदारी घूमन सूरमे ॥ अगणित पाउ पसारी रुले अहाड़ विचि ॥ जापै खेड खिडारी सुत्ते फाग नूं ॥३४॥

पउड़ी ॥

स्रणवत बीज हकारे रहदे सूरमे ॥ जोधे जेडु मुनारे दिस्सन खेत विचि ॥ सभनी दसत उभारे तेगाँ धूहि कै ॥ मारे मार पुकारे आए साम्हणे ॥ संजाँ ते ठणकारे तेगीं उॅभरे ॥ घाड़ घड़नि

ठठिआरे जाणु बणाइ कै ॥३५॥

पउड़ी ॥

सट्ट पई जमधाणी दलाँ मुकाबला ॥ घूमर बरगसताणी दल विचि घतीओ ॥ सणे तुरा पलाणी डिगन सूरमे ॥ उठि उठि मंगनि पाणी घाइल घूमदे ॥ एवडु मार विहाणी उपर राकसाँ ॥ बिज्जुल जिउं झरलाणी उॅठी देवताँ ॥३६॥

पउड़ी ॥

चोबी धउस उभारी दलाँ मुकाबला ॥ सभ्भो सैना मारी पल विच दानवी ॥ दुरगा दानो मारे रोह बढाइ कै ॥ सिर विच तेग वगाई स्रणवत बीज दे ॥३७॥

पउड़ी ॥

अगणित दानो भारे होए लोहूआँ ॥

जोधे जेडु मुनारे अंदरि खेत दै ॥ दुरगा नो ललकारे आवन साम्हणे ॥ दुरगा सभ संघारे राकस आँवदे ॥ रत्तू दे परनाले तिन ते भुइ पए ॥ उठे कारणिआरे राकस हड़हड़ाइ ॥३८॥

पउड़ी ॥

धग्गाँ संगलीआलीं संघर वाइआ ॥ बरछी बंबलिआली सूरे संघरे ॥ भेड़ मचिआ बीराली दुरगा दानवीं ॥ मार मची मुहराली अंदरि खेत दै ॥ जणु नट लत्थे छालीं ढोल बजाइ कै ॥ लोहू फाथी जाली लोथीं जमधड़ी ॥ घण विचि जिउ छंछाली तेगाँ हस्सीआँ ॥ घूमरआरि सिआली बणीआँ केजमाँ ॥३९॥

पउड़ी ॥

धग्गाँ सूल बजाईआँ दलाँ मुकाबला ॥ धूहि मिआनो लईआँ

जुआनी सूरमीं ॥ स्रणवत बीज वधाईआँ अगणित सूरताँ ॥ दुरगा सउहें आईआँ रोह बढाइकै ॥ सभनी आणि वगाईआँ तेगाँ धूहि कै ॥ दुरगा सभ बचाईआँ ढाल संभाल कै ॥ देवी आप चलाईआँ तकि तकि दानवीं ॥ लोहू नालि डुबाईआँ तेगाँ नंगीआँ ॥ सारसुती जणु नहाईआँ मिलिकै देवीआँ ॥ सभ्भे मारि गिराईआँ अंदरि खेत दै ॥ तिदूं फेरि सवाईआँ होईआँ सूरताँ ॥४०॥

पउड़ी ॥

सूरीं संघर रचिआ ढोल संख नगारे वाइ कै ॥ चंडि चितारी कालिका मन बहला रोस बढाइ कै ॥ निकली मत्था फोड़ि कै जणु फते नीसाण बजाइ कै ॥ जाग सु जंमी जुद्ध नूं जरवाणा जणु मिरड़ाइ कै ॥ दल विचि घेरा घत्तिआ

जणु सींह तुरिआ गणणाइ कै ॥ आप विसूला होइआ तिहु लोकाँ ते खुणसाइ कै ॥ रोह सिधाईआ चक्रपाणि कर नंदा खड़ग उठाइ कै ॥ अगे राकस बैठे रोहले तीरीं तेगीं छहबर लाइ कै ॥ पकड़ पछाड़े राकसाँ दल दैताँ अंदरि जाइ कै ॥ बहु केसीं पकड़ पछाड़िअनि तिन अंदरि धूम रचाइ कै ॥ बडे बडे चुणि सूरमे गहि कोटी दए चलाइ कै ॥ रणि काली गुस्सा खाइ कै ॥४१ ॥

पउड़ी ॥

दुहाँ कंधाराँ मुहि जुड़े अणीआँ रत्चोईआँ ॥ धूहि क्रिपाणा तिख्खीआँ नाल लोहू धोईआँ ॥ हूराँ स्रणवत बीज नूं घति घेरि खलोईआँ ॥ लाड़ा देखन लाड़ीआँ चउगिरदै होईआँ ॥४२॥

पउड़ी ॥

चोबी धउसाँ पाईआँ दलाँ मुकाबला ॥ दसती धूहि नचाईआँ तेगाँ नंगीआँ ॥ सूरिआँ दे तन लाईआँ गोशत गिद्धीआँ ॥ बिद्धण राती आईआँ मरदाँ घोड़िआँ ॥ जोगणीआँ मिलि धाईआँ लोहू भख्खणा ॥ फउजाँ मारि हटाईआँ देवाँ दानवाँ ॥ भजदीं कथा सुणाईआँ राजे सुंभ थै ॥ भुईं न पउणै पाईआँ बूंदाँ रकत दीआँ ॥ काली खेति खपाईआँ सभ्भे सूरताँ ॥ बहुतीं सिरीं बिहाईआँ घड़ीआँ काल कीआँ ॥ जाणु न जाए माईआँ झूझे सूरमे ॥४३॥

पउड़ी ॥

सुंभ सुणी करहाली स्रणवतबीज दी ॥ रण विचि किनै न झाली दुरगा आँवदी ॥ बहुते बीर जटाली उॅठे आखि

कै ॥ चोटाँ पान तबाली जासाँ जुद्ध नूं ॥ थरि थरि प्रिथमी चाली दलाँ चड़ंदिआँ ॥ नाउ जिवे है हाली सह दरीआउ विचि ॥ धूड़ि उताहाँ घाली छड़ीं तुरंगमाँ ॥ जाणु पुकारु चाली धरती इंद्र थै ॥४४॥

पउड़ी ॥

आहर मिलिआ आहरीआँ सैण सूरिआँ साजी ॥ चले सउहें दुरगसाह जणु काबै हाजी ॥ तीरीं तेगीं जमधड़ीं रणि वंडी भाजी ॥ इकि घाइल घूमन सूरमे जणु मकतब काजी ॥ इकि बीर परोते बरछीइें जिउ झुक पउन निवाजी ॥ इकि दुरगा सउहे खुनस कै खुनसाइन ताजी ॥ इकि धावन दुरगा सामणे जिउ भुखिआए पाजी ॥ कदे न रज्जे जुज्झ ते रजि होए राजी ॥४५॥

पउड़ी ॥

बज्जे संगलीआले संघर डोहरे ॥ डहे जु खेत जटाले हाठाँ जोड़िकै ॥ नेजे बंबलीआले दिस्सन ओरड़े ॥ चल्ले जाणु जटाले नावण गंग नू ॥४६॥

पउड़ी ॥

दुरगा अतै दानवीं सूल होईआँ कंगाँ ॥ वाछड़ घत्ती सूरिआँ विच खेत खतंगाँ ॥ धूहि क्रिपाणा तिख्खीआँ बढ लाहनि अंगाँ ॥ पहिलाँ दलाँ मिलंदिआँ भेड़ पइआ निहंगाँ ॥४७॥

पउड़ी ॥

ओरड़ि फउजाँ आईआँ बीर चढ़े कंधारी ॥ सड़कि मिआनो कढीआँ तिखीआँ तरवारी ॥ कड़कि उठे रण मच्चिआ वड्डे हंकारी ॥ सिर धड़ बाहाँ गंनले फुल जेहे बारी ॥ जापे कट्टे

बाढीआँ रुख चंदन आरी ॥४८॥

पउड़ी ॥

दुहाँ कंधाराँ मुहि जुड़े जाँ सट पई खरवार कउ ॥ *तणि तणि कैबर दुरगशाह तकि मारे भले जुझार कउ ॥ पैदल मारे हाथीआँ संगि रथ गिरे असवार कउ ॥ सोहन संजाँ बागड़ाँ जणु लग्गे फुल्ल अनार कउ ॥ गुस्से आई कालिका हथ सजे लै तलवार कउ ॥ एदू पारउ ओत पार **हणि राकसि कई हजार कउ ॥ जिण इक्का रही कंधार कउ ॥ सद रहमत तेरे वार कउ ॥४९ ॥

पउड़ी ॥

दुहाँ कंधाराँ मुहि जुड़े सट्ट पई जमधाण कउ ॥ तद खिंग निसुंभ नचाइआ डालि उॅपरि बरगसताण कउ ॥

* पाः – तकि तकि, ** पाः – हरिनाकश

फड़ी बिलंद मगाइसु फुरमाइस करि मुलतान कउ ॥ गुस्से आई सामणे रणि अंदरि घत्तण घाण कउ ॥ अगै तेग वगाई दुरगशाह बढि *बही निसुंभ पलाण कउ ॥ रड़की जाइ कै धरत कउ बढि पाखर बढि किकाण कउ ॥ बीर पलाणो डिग्गिआ करि सिजदा सुंभ सुजाण कउ ॥ शाबाश सलोणे खान कउ ॥ सदा शाबाश तेरे ताण कउ ॥ तारीफाँ पान चबान कउ ॥ सद रहमत कैफाँ खान कउ ॥ सद रहमत तुरे नचाण कउ ॥५०॥

पउड़ी ॥

दुरगा अतै दानवी गह संघरि कत्थे ॥ ओरड़ उठे सूरमे आ डाहे मत्थे ॥ कट्ट तुफंगीं कैबरीं दलु गाहि निकत्थे ॥ देखन जंग फरेसते असमानो लत्थे ॥५१॥

* पाः – सुंभन बही

पउड़ी ॥

दुहाँ कंधाराँ मुह जुड़े दल घुरे नगारे ॥ ओरड़ि आए सूरमे सरदार रणिआरे ॥ लै के तेगाँ बरछीआँ हथिआर उभारे ॥ टोप पटेला पाखराँ गलि संज सवारे ॥ लै के बरछी दुरगशाह बहु दानव मारे ॥ चड़े रथीं गज घोड़िईं मारि भुइं ते डारे ॥ जाणु हलवाई सीख नाल विंन्हि वड़े उतारे ॥५२॥

पउड़ी ॥

दुहाँ कंधाराँ मुहि जुड़े नालि धउसाँ भारी ॥ लई भगउती दुरगशाह वरजागन भारी ॥ लाई राजे सुंभ नो रतु पीऐ पिआरी ॥ सुंभ पलाणो डिगिआ उपमा बीचारी ॥ डुब्ब रत्तू नालहु निक्कली बरछी दो धारी ॥ जाणु रजादी उतरी पैन्हि सूही सारी ॥५३॥

पउड़ी ॥

दुरगा अतै दानवी भेड़ पइआ सबाहीं ॥ ससत्र पजूते दुरगशाह गह सभनी बाहीं ॥ सुंभ निसुंभ संघारिआ बत जेहे शाहीं ॥ फउजाँ राकसिआरीआँ देख रोवनि धाहीं ॥ मुहि कड़ूचे घाह दे छडि घोड़े राहीं ॥ भजदे होए मारीअनि मुड़ि झाकन नाहीं ॥५४॥

पउड़ी ॥

सुंभ निसुंभ पठाइआ जम दे धाम नो ॥ इंद्र सद्द बुलाइआ राज अभिखेक नो ॥ सिर परि छत्र फिराइआ राजे इंद्र दै ॥ चउदह लोकाँ छाइआ जसु जग मात दा ॥ दुरगा पाठ बणाइआ सभे पउड़ीआँ ॥ फेरि न जूनी आइआ जिनि इहु गाइआ ॥५५॥

ੴ वाहिगुरू जी की फतहि ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

स्री मुखवाक पातशाही १० ॥

भगउती जी का छंद छक्का पहिला ॥ नमो उग्रदंती अनंती स्वैया ॥ नमो जोग जोगेस्वरी जोग मैया ॥ नमो केहरी बाहनी सत्रु हंती ॥ नमो सारदा ब्रहम विदिआ पढ़ंती ॥ नमो रिद्धि दा सिद्धि दा बुधि दैनी ॥ नमो काल के काल कउ काल छैनी ॥ नमो काल अजाल है हेर तेरो ॥ नमो तीन हू लोक कीनो अहेरो ॥ नमो जोति ज्वाला तुमै बेद गावै ॥ सुरासुर रिखीस्वर नहीं भेद

पावै ॥ तुही जोग जोगतण तुही खड़ग
धारे ॥ तुही जै करंती असुर गहि पछारे ॥
तुही जोगणी खप्पर भरणी अदोखं ॥
रकत बीज के प्रान कौ पकड़ि सोखं ॥
तुही जल थले परबते गिरि निवासी ॥
तुही सभ घटन मो निरालम प्रकासी ॥
तुही दुसट दाहिन तुही सरब पाली ॥
तुही ब्रिछ पुहिपा तुही आप माली ॥
तुही विस्व भरणी तुही जग प्रकासी ॥
तुही अलख बरणी तुही भू अकासी ॥
नमो जालपा देवि दुरगे भवानी ॥ तिहू
लोक नवखंड में तुम प्रधानी ॥ अटल
छत्र धरणी तुही आदि देवं ॥ सकल मुनि
जनाँ तोहि निसि दिन सरेवं ॥ तुही काल
अकाल की जोति छाजै ॥ सदा जै सदा
जै सदा जै बिराजै ॥ यही दास माँगै
क्रिपा सिंधु कीजै ॥ स्वयं ब्रहम की भगत

सरबत्त्र दीजै ॥ तुही जागती जोति ज्वाला सरूपं ॥ तुही जग सकल महि रमंती अनूपं ॥ महाँ मूड़ हउं दास दासन तिहारा ॥ पकड़ बाँह भउजल करहु बेग पारा ॥ फतहि डंक बाजै क्रिपा यौ करीजै ॥ यही बारता दास की नित सुणीजै ॥ करहु हुकम अपना सभै दुसट घाऊं ॥ तुरक हिंद का सकल झगरा मिटाऊं ॥ अगम सूर बीरे उठहि सिंघ जोधा ॥ पकड़ तुरक गन कउ करैं वै निरोधा ॥ सकल जगत मो खालसा पंथ गाजै ॥ जगै धरम हिंदुक तुरक दुंद भाजै ॥ जपउ जाप एकै हरे हरि अकालं ॥ ह्वै तब दुनीआँ सभ छिनिक मै निहालं ॥ सुणहु तुम भवानी हमन की पुकारे ॥ करहु दास पर मिहर अपरं अपारे ॥

दोहरा ॥

द्वार तुमारे ठाढ हउं इक बरु दीजै मोहि ॥ पंथ चलै तब जगत मै दुसट खपावउं तोहि ॥

भगवती छंद दूजा ॥२॥

नमो कालिका काल रूपी क्रिपानी ॥ नमो सुंभ निसुंभ नासनि भवानी ॥ नमो चंड अर मुंड संघारकारी ॥ नमो रकतबीजान के प्राणहारी ॥ नमो वेद विद्या नमो जगय रूपा ॥ नमो अंजनी पूरनी भूप भूपा ॥ नमो जै अनंती भद्र काली अबाहं ॥ नमो भगवती तेजवंती अढाहं ॥ नमो सकति रूपण अगंमण अडोला ॥ नमो खड़ग धारण अछेदण अतोला ॥ नमो गरब गंजन सिरी जोग माया ॥ सभै थक रहे मरम किनहूं न पाया ॥ तुही जल अगनि पवन तूं हूर

नूरा ॥ तुही जोति उडगन तुही चंद सूरा ॥ तुही खे चरा भू चरा जोध बीरे ॥ तुही रच्छनी स्रिसटि रूपनि गहीरे ॥ तुही जगत जननी अनंती अकालं ॥ तुही अंन दैनी सभन को समालं ॥ तुही खंड ब्रहमंड भूमं सरूपी ॥ तुही बिशन सिव ब्रहम इंद्रा अनूपी ॥ तुही सीतला तोतला बाक बानी ॥ नमो चंडिका मंगला स्री भवानी ॥ नही तुम बिना कोइ रच्छक हमारा ॥ तुही आदि कुआरि देवी अपारा ॥ तुही देवकी क्रिसन माता कहायं ॥ तुही नैणा देवी अलख जग सहायं ॥ तही थंभ सिउ निकस नरसिंघ होई ॥ उदर हरनाखस का नखहु कर परोई ॥ तुही कच्छ हुइ दैत मधु कीट जारे ॥ तुही होइ बैराह हिरनाछय मारे ॥ तुही होइ बावन महाँ छल दिखायो ॥

पकड़ राजे बल को पतालै पठायो ॥
तुही होइ परसराम जग महि प्रकासी ॥
सकल छत्रीअन कउ करै छै बिनासी ॥
तुही फिर भई रामचंद्रं अपारा ॥ पकड़
लंक सउ दैत रावन पछारा ॥ तुही
मुकति दाइणि सदा सुभ करंती ॥ तुही
सूर बलबीर दुसटण दहंती ॥ तुही
राधिका रुकमणी तूं कुसल्लिआ ॥ तुही
अंजनी रेणुका तूं अहल्लिआ ॥ तुही
भरण पोखण सभन पर क्रिपाली ॥
करहु मोहि मुकता कटहु भरम जाली ॥
नमो दुख हरंती अनंदत सरूपा ॥ अपन
दास पर मिहर कीजै अनूपा ॥

दोहरा ॥

दास जान कर आपना किरपा कीजै
मोहि ॥ इहै बेनती दास की सुणहु
भवानी तोहि ॥

भगवती छंद तीजा ॥३॥

तुही कलप ब्रिछण तुही काम धैना ॥ तुही असट सिधण तुही नूर नैना ॥ तुही सुरग पाताल बैकुंठ धरणी ॥ तुही पाप खंडन उदर जगत भरणी ॥ तुही ब्रहमणी बेद पाठणि सवित्री ॥ तुही धरमणी करण कारण पवित्री ॥ तुही गौरजा पारबती जोग धरणं ॥ तुही लच्छमी अलख रूपी अवरणं ॥ तुही सभ जगत कउ उपावै छकावै ॥ तुही बहुड़ आपे छिनिक मउ खपावै ॥ तुही भगत करतार की सकति राणी ॥ तुही हरि सिमर कर भई जोग धयाणी ॥ अगम खेल तुमरा कहा को बखानै ॥ तुही भेद अपना अपुन आप जानै ॥ सगल ढूंढि थाके लखयो किछ न भेदा ॥ तुही इसुरी दुख बिनासन

अछेदा ॥ करहु मिहर अपुनी चरन धूरि पावउँ ॥ तुमन द्वार पर सीस अपना घसावउँ ॥ यही दान माँगउँ करहु जै हमारी ॥ सभै दुसट दैता खपै छिन मझारी ॥ तुही डाकणी साकणी सूर बीरे ॥ तुही रूप नाराइणी हरि सरीरे ॥ तुही अलख दुरगा जगत करन हारी ॥ सकल छोड कर ओट पकड़ी तिहारी ॥ तुही मच्छ हुइ सिंधु भीतरि खिलंती ॥ तुही दैत संखासुरै कउ दलंती ॥ तुही क्रिसन होइ कंस केसी खपायो ॥ तुमन मल्ल चंडूर गहि कर उडायो ॥ जगन नाथ हुइ दैत गयासुर बिडारे ॥ तुही निहकलंकी भई खड़ग धारे ॥ तुही दैत किलकासुरे कउ संघरणी ॥ तुही सभ जुगण बीच अवतार धरणी ॥ जुगो जुग सकल खेल तुमही रचायो ॥ तुमन खेल

का भेद किनहूँ न पायो ॥ तुही असट दुरगे भवानी अकालँ ॥ तुही सकल ब्रहमंड ऊपर दयालं ॥ तुमन कुदरती खेल कीनो अपारा ॥ तुमन तेज सउ कोट रवि ससि उजारा ॥ तुही निज वजीरण प्रभू दर सुहंती ॥ तुही निसि दिना जाप हरि हरि जपंती ॥ निरंजन पुरख शाह शाहन अपारे ॥ तुही सकति ह्वै निकट वरती मुरारे ॥ सुणहु दास की बेनती हरि भवानी ॥ दइआ धारि मुहि लाज राखहु निदानी ॥

दोहरा ॥

दानो मारे रोहिले देव बचाए तोहि ॥ सिंघ तुमारो रण गजै हाँक न झालसि कोइ ॥

भगवती छंद चौथा ॥४॥

तुही जोति ज्वालामुखी होइ

दिखानी ॥ परबत फोड़ लाटाँ अगनि जग मगानी ॥ तुही हरण भरणी तुही जगत माए ॥ तुही सरब ठौरन रही आप छाए ॥ तुही उतभुजा सेतजा सुख निधानी ॥ तुही अंडजा जेरजा चतुर बानी ॥ तुही तीर तरवार काती कटारी ॥ तुही संख पदमण गदा चक्र धारी ॥ तुही तोप बंदूक गोला चलंती ॥ तुही कोट गढ़ कउ धमक सिउ उडंती ॥ तुही बड अजीतण सकल दोख हरणी ॥ तुही हरि अडोलण अगम खेल करणी ॥ तुही अति बलिसटण चतरभुज भवानी ॥ तुमन सरब दुसटा कीए मार फानी ॥ तुही गुपत परगट सभन मो खिलंती ॥ तुही सुंभ महिखासुरै कउ दलंती ॥ तुही जगतमंडण दइआवंत भारी ॥ सकल सिध मुनि जन लए तै उबारी ॥ लखै

नाहि कोऊ अजब खेल तेरा ॥ तुही धरणि धर कै करहि फिर निबेरा ॥ तुही बिजुल होइ गगन चढ़ झिलमिलानी ॥ तुमन चरन पर सुरति हमरी लगानी ॥ तुही अलख करतारणी शिव सरूपा ॥ तुही घट घटे देवि दुरगे अनूपा ॥ तुही है सभन बीच सभ सौ निराली ॥ तुही सभ जगत की करहि प्रतिपाली ॥ तुही खास भगतण हरे हरि जपंती ॥ तुही हरि चरण पर अपुन सिर धरंती ॥ तुही हरि क्रिपा सिउ अगम रूप होई ॥ सभै पच मुए पार पावत न कोई ॥ तुही सूर बलवंतणी गुण गहीरे ॥ तुमन द्वार घुर हैं अनाहद नफीरे ॥ निरंजन सरूपा तुही आदि राणी ॥ तुही जोग बिद्या तुही ब्रहम बाणी ॥ निरंजन प्रभू नाथ कादर मुरारे ॥ तहाँ तू खड़ी कुदरती रूप

धारे ॥ तुही अंभके शकति दुरगे भवानी ॥ तुमन कुदरती जोति घटि घटि समानी ॥ धरनि पवन आकाश कुदरति सरूपा ॥ तुही कुदरती अलख देवी अनूपा ॥ नही भाख साकउ महिमा तुहारी ॥ लखयो नाहि किनहूं तुमन अंतु पारी ॥ यही दास तुमरा चरन धूरि पावै ॥ तुमन द्वार ठाढा सदा धुनि लगावै ॥

दोहरा ॥

मुख पसारे कालिका दैत चबावै दाँत ॥ पंथ चलावै जगत मै जुध करहि तब शाँति ॥

भगवती छंद पंजवाँ ॥५॥

नमो देविसा कुंभरी हिंगुलाजा ॥ तुही सभ जगत के करहि सिध काजा ॥ तुही अलख ज्वाला कमच्छिआ परधानी ॥

तुमन जस सकल जगत कर है बखानी ॥ तुही हरि निरंकार ठाकुर जपंती ॥ तुही राछसन कउ पकड़ कर दहंती ॥ हमन बैरीअन कउ पकड़ि घात कीजै ॥ तबै दास गोबिंद का मन पतीजै ॥ तुही आस पूरन जगत गुर भवानी ॥ छत्र छीन मुगलन करहु बेग फानी ॥ सकल हिंदु सिउ तुरक दुसटा बिदारहु ॥ धरम की धुजा कउ जगत मै झुलारहु ॥ दुहूं पंथ मैं कपट विद्या चलानी ॥ बहुड़ तीसरा पंथ कीजै परधानी ॥ जो उपजै मरै ताहि सिमरन न कीजै ॥ अटल पुरख अकाल का नाम लीजै ॥ मड़ी गोर देवल मसीताँ गिरायं ॥ तुही एक अकाल हरि हरि जपायं ॥ मिटहि बेद सासत्र अठारहि पुराना ॥ मिटै बाँग सलवात सुंनति कुराना ॥

सकल स्रिसटि इक बरन हुइ कर भुलानी ॥ धरम नेम की जुगति किनहूँ न जानी ॥ कठिन दुंद वरतै जगत महि गुबारा ॥ दया धार कर मोहि लीजै उबारा ॥ तुही कुदरते सकति दुरगे भवानी ॥ तुही जगत माता सकल बिधि निधानी ॥ तुही बिआस गोरख अगसतं कबीरे ॥ तुही रिखि मुनीसर तुही गौंस पीरे ॥ निरंजन पुरख कउ सदा तू धिआवै ॥ प्रभू द्वार ठाढी वजीरन कहावै ॥ नही तुम बिना कोई दूसर हजूरे ॥ तुही अलखणी होइ रही जगत पूरे ॥ अपुन जान कर मोहि लीजै बचाई ॥ असुर पापीअन मार देवहु उडाई ॥ सकल जगत कउ सुख बसावहु अनंदा ॥ तुही दरद मेटनि स्री हरि मुकंदा ॥ यही देह आगिआ तुरकन

गहि खपाऊं ॥ गऊ घात का दोख जग सिउं मिटाऊं ॥ छत्र तखत मुगलन करहुं मार दूरे ॥ घुरहि तब जगत महि फतह धरम तूरे ॥ तुमन दर खड़ा दास कर है पुकारा ॥ तुरकन मेट कीजै जगत महि उजारा ॥ तबहि गीत मंगल फतहि के सुनाऊं ॥ तुमन कउ सिमर दूख सगले मिटाऊं ॥

दोहरा ॥

किरपा कीजै दास पर कुंट निवाऊं चार ॥ नाम तिहारो जो जपै भए सिंधु भव पार ॥

भगवती छंद छीवाँ ॥६॥

नमो कसट हरणी दुरगा सकति माए ॥ सभै दुसट दानो पकड़ तै खपाए ॥ तुमन भवन त्रै लोक पुरि महि बिराजै ॥ तहाँ नूर तुमरा अगम रूप

छाजै ॥ तुही धौल गिरि कोट काँगड़ बसंती ॥ तुही अछल अनाथ देवन अनंती ॥ रटौं निस दिना जाप तुमरा भवानी ॥ तुमन चरन मो प्रीति हमरी लगानी ॥ करहु हरि भवानी जगत की संभारे ॥ हमन दुसट दोखी सभन होहिं छारे ॥ सदा सरबदा चरण तुमरे धिआऊं ॥ तुमन मिहर सिउं दुसट सगले खपाऊं ॥ यही आस पूरन करहु तुम हमारी ॥ मिटै कसट गऊअन छुटै खेद भारी ॥ फतह सतिगुरू की जगत सिउं बुलाऊं ॥ सभन कउ सबद वाहि वाहि द्रिड़ाऊं ॥ करहु खालसा पंथ तीसर प्रवेसा ॥ जगहि सिंघ जोधे धरहि नील भेसा ॥ सकल राछसन कउ पकड़ वै खपावै ॥ सभै जगत सिउ धुनि फ़तहि की बुलावै ॥ तुही सारदा बेद गायण

सुरसती ॥ तुही देवि दुरगे निरंजन परसती ॥ यही बेनती खास हमरी सुणीजै ॥ असुर मार कर रच्छ गऊअन करीजै ॥ तुही सिधि नवनिधि कउ भरणहारी ॥ तुही अंन दायण सकल जग भिखारी ॥ तुही रिखि बसिसटे तुही है दुबासा ॥ तुही जमदगनि संत गोतम प्रकासा ॥ तुही कालके असुर संघार करणी ॥ तुही सेवकन पर सदा मिहर धरणी ॥ कहाँ लौ बखानों तुमन गति अपारे ॥ तुही जालपा अलख रूपण मुरारे ॥ तुही हरि हरे हरि हरे हरि भवानी ॥ निरंजन पुरख पर भई तूं कुरबानी ॥ यही देहि बर मोहि सतिगुर धिआऊं ॥ असुर जीत कर धरम नउबत बजाऊं ॥ मिटहि सभ जग सिउं तुरकन दुंद सोरा ॥ बचहि संत सेवक खपहि

दुसट चोरा ॥ सभै स्रिसटि परजा सुखी होइ बिराजै ॥ मिटै दूख संताप आनंद गाजै ॥ न छाडउं कहूं दुसट असुरन निसानी ॥ चलै सभ जगत महि धरम की कहानी ॥ छत्र धारीअन कउ करहु बेग नासा ॥ अपन दास का देखीअहु तब तमासा ॥

दोहरा ॥

तब खड़ग तमासा देखीऐ हरि दुरगे अबिनास ॥ पकड़ तेग दुसटन हतूं करहु धरम प्रकास ॥१॥ हरि भगत भगौती तिसै की जो रण धीर धरेइ ॥ तिहि अंग संग तुम लाग रहु जो पाछै पग न धरेइ ॥२॥

चौपई ॥

खट छंद भगवती महाँ पुनीते ॥ तिस पठवत उपजत परतीते ॥ इउं

निसि बासुर दुरगे गुन गायं ॥ तहि सहिजे अटल अमर पद पायं ॥ यहि खसटक छंद संपूरन भयो ॥ तिस उचरत सगला भ्रम गयो ॥ हरि अलख ईसरी भई क्रिपालं ॥ तिन दास आपना कीओ निहालं ॥ दुख रोग सोग भै मिटे कलेसा ॥ बहु सुख उपजे अनद प्रवेसा ॥ इत बिधि दुरगे किरपा धारी ॥ तिह अपन दास कउ लीआ उबारी ॥

इति स्री गोबिंद सिंघ विरचिते

स्री भगवती छंद खशटकं समापतं

मसतु सुभ मसतु ॥

बारह माहा

माँझ महला ५ घरु ४

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

किरति करम के वीछुड़े करि किरपा मेलहु राम ॥ चारि कुंट दह दिस भ्रमे थकि आए प्रभ की साम ॥ धेनु दुधै ते बाहरी कितै न आवै काम ॥ जल बिनु साख कुमलावती उपजहि नाही दाम ॥ हरि नाह न मिलीऐ साजनै कत पाईऐ बिसराम ॥ जितु घरि हरि कंतु न प्रगटई भठि नगर से ग्राम ॥ स्रब सीगार तंबोल रस सणु देही सभ खाम ॥ प्रभ सुआमी कंत विहूणीआ मीत सजण सभि जाम ॥

नानक की बेनंतीआ करि किरपा दीजै नामु ॥ हरि मेलहु सुआमी संगि प्रभ जिस का निहचल धाम ॥१॥

चेति गोविंदु अराधीऐ होवै अनंदु घणा ॥ संत जना मिलि पाईऐ रसना नामु भणा ॥ जिनि पाइआ प्रभु आपणा आए तिसहि गणा ॥ इकु खिनु तिसु बिनु जीवणा बिरथा जनमु जणा ॥ जलि थलि महीअलि पूरिआ रविआ विचि वणा ॥ सो प्रभु चिति न आवई कितड़ा दुखु गणा ॥ जिनी राविआ सो प्रभू तिंना भागु मणा ॥ हरि दरसन कंउ मनु लोचदा नानक पिआस मना ॥ चेति मिलाए सो प्रभू तिस कै पाइ लगा ॥२॥

वैसाखि धीरनि किउ वाढीआ जिना प्रेम बिछोहु ॥ हरि साजनु पुरखु विसारि कै लगी माइआ धोहु ॥ पुत्र कलत्र न

संगि धना हरि अविनासी ओहु ॥ पलचि पलचि सगली मुई झूठै धंधै मोहु ॥ इकसु हरि के नाम बिनु अगै लईअहि खोहि ॥ दयु विसारि विगुचणा प्रभ बिनु अवरु न कोइ ॥ प्रीतम चरणी जो लगे तिन की निरमल सोइ ॥ नानक की प्रभ बेनती प्रभ मिलहु परापति होइ ॥ वैसाखु सुहावा ताँ लगै जा संतु भेटै हरि सोइ ॥३॥

हरि जेठि जुड़ंदा लोड़ीऐ जिसु अगै सभि निवंनि ॥ हरि सजण दावणि लगिआ किसै न देई बंनि ॥ माणक मोती नामु प्रभ उन लगै नाही संनि ॥ रंग सभे नाराइणै जेते मनि भावंनि ॥ जो हरि लोड़े सो करे सोई जीअ करंनि ॥ जो प्रभि कीते आपणे सेई कहीअहि धंनि ॥ आपण लीआ जे मिलै विछुड़ि

किउ रोवंनि ॥ साधू संगु परापते नानक रंग माणंनि ॥ हरि जेठु रंगीला तिसु धणी जिस कै भागु मथंनि ॥४॥

आसाड़ु तपंदा तिसु लगै हरि नाहु न जिंना पासि ॥ जगजीवन पुरखु तिआगि कै माणस संदी आस ॥ दुयै भाइ विगुचीऐ गलि पईसु जम की फास ॥ जेहा बीजै सो लुणै मथै जो लिखिआसु ॥ रैणि विहाणी पछुताणी उठि चली गई निरास ॥ जिन कौ साधू भेटीऐ सो दरगह होइ खलासु ॥ करि किरपा प्रभ आपणी तेरे दरसन होइ पिआस ॥ प्रभ तुधु बिनु दूजा को नही नानक की अरदासि ॥ आसाड़ु सुहंदा तिसु लगै जिसु मनि हरि चरण निवास ॥५॥

सावणि सरसी कामणी चरन कमल

सिउ पिआरु ॥ मनु तनु रता सच रंगि इको नामु अधारु ॥ बिखिआ रंग कूड़ाविआ दिसनि सभे छारु ॥ हरि अंम्रित बूंद सुहावणी मिलि साधू पीवणहारु ॥ वणु तिणु प्रभ संगि मउलिआ संम्रथ पुरख अपारु ॥ हरि मिलणै नो मनु लोचदा करमि मिलावणहारु ॥ जिनी सखीए प्रभु पाइआ हंउ तिन कै सद बलिहार ॥ नानक हरि जी मइआ करि सबदि सवारणहारु ॥ सावणु तिना सुहागणी जिन राम नामु उरि हारु ॥६॥

भादुइ भरमि भुलाणीआ दूजै लगा हेतु ॥ लख सीगार बणाइआ कारजि नाही केतु ॥ जितु दिनि देह बिनससी तितु वेलै कहसनि प्रेतु ॥ पकड़ि चलाइनि दूत जम किसै न देनी भेतु ॥

छडि खड़ोते खिनै माहि जिन सिउ लगा हेतु ॥ हथ मरोड़ै तनु कपे सिआहहु होआ सेतु ॥ जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ॥ नानक प्रभ सरणागती चरण बोहिथ प्रभ देतु ॥ से भादुइ नरकि न पाईअहि गुरु रखण वाला हेतु ॥७॥

असुनि प्रेम उमाहड़ा किउ मिलीऐ हरि जाइ ॥ मनि तनि पिआस दरसन घणी कोई आणि मिलावै माइ ॥ संत सहाई प्रेम के हउ तिन कै लागा पाइ ॥ विणु प्रभ किउ सुखु पाईऐ दूजी नाही जाइ ॥ जिंन्ही चाखिआ प्रेम रसु से त्रिपति रहे आघाइ ॥ आपु तिआगि बिनती करहि लेहु प्रभू लड़ि लाइ ॥ जो हरि कंति मिलाईआ सि विछुड़ि कतहि न जाइ ॥ प्रभ विणु दूजा को नही नानक

हरि सरणाइ ॥ असू सुखी वसंदीआ जिना मइआ हरि राइ ॥८॥

कतिकि करम कमावणे दोसु न काहू जोगु ॥ परमेसर ते भुलिआँ विआपनि सभे रोग ॥ वेमुख होए राम ते लगनि जनम विजोग ॥ खिन महि कउड़े होइ गए जितड़े माइआ भोग ॥ विचु न कोई करि सकै किस थै रोवहि रोज ॥ कीता किछू न होवई लिखिआ धुरि संजोग ॥ वडभागी मेरा प्रभु मिलै ताँ उतरहि सभि बिओग ॥ नानक कउ प्रभ राखि लेहि मेरे साहिब बंदी मोच ॥ कतिक होवै साधसंगु बिनसहि सभे सोच ॥९॥

मंघिरि माहि सोहंदीआ हरि पिर संगि बैठड़ीआह ॥ तिन की सोभा किआ गणी जि साहिबि मेलड़ीआह ॥ तनु मनु मउलिआ राम सिउ संगि साध

सहेलड़ीआह ॥ साध जना ते बाहरी से रहनि इकेलड़ीआह ॥ तिन दुखु न कबहू उतरै से जम कै वसि पड़ीआह ॥ जिनी राविआ प्रभु आपणा से दिसनि नित खड़ीआह ॥ रतन जवेहर लाल हरि कंठि तिना जड़ीआह ॥ नानक बाँछै धूड़ि तिन प्रभ सरणी दरि पड़ीआह ॥ मंघिरि प्रभु आराधणा बहुड़ि न जनमड़ीआह ॥१०॥

पोखि तुखारु न विआपई कंठि मिलिआ हरि नाहु ॥ मनु बेधिआ चरनारबिंद दरसनि लगड़ा साहु ॥ ओट गोविंद गोपाल राइ सेवा सुआमी लाहु ॥ बिखिआ पोहि न सकई मिलि साधू गुण गाहु ॥ जह ते उपजी तह मिली सची प्रीति समाहु ॥ करु गहि लीनी पारब्रहमि बहुड़ि न विछुड़ीआहु ॥ बारि जाउ लख बेरीआ हरि सजणु अगम अगाहु ॥ सरम

पई नाराइणै नानक दरि पईआहु ॥
पोखु सोहंदा सरब सुख जिसु बखसे
वेपरवाहु ॥११॥

माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि
इसनानु ॥ हरि का नामु धिआइ सुणि
सभना नो करि दानु ॥ जनम करम मलु
उतरै मन ते जाइ गुमानु ॥ कामि करोधि
न मोहीऐ बिनसै लोभु सुआनु ॥ सचै
मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥
अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ
परवानु ॥ जिस नो देवै दइआ करि सोई
पुरखु सुजानु ॥ जिना मिलिआ प्रभु
आपणा नानक तिन कुरबानु ॥ माघि
सुचे से कांढीअहि जिन पूरा गुरु
मिहरवानु ॥१२॥

फलगुणि अनंद उपारजना हरि
सजण प्रगटे आइ ॥ संत सहाई राम के

करि किरपा दीआ मिलाइ ॥ सेज सुहावी सरब सुख हुणि दुखा नाही जाइ ॥ इछ पुनी वडभागणी वरु पाइआ हरि राइ ॥ मिलि सहीआ मंगलु गावही गीत गोविंद अलाइ ॥ हरि जेहा अवरु न दिसई कोई दूजा लवै न लाइ ॥ हलतु पलतु सवारिओनु निहचल दितीअनु जाइ ॥ संसार सागर ते रखिअनु बहुड़ि न जनमै धाइ ॥ जिहवा एक अनेक गुण तरे नानक चरणी पाइ ॥ फलगुणि नित सलाहीऐ जिस नो तिलु न तमाइ ॥१३॥

जिनि जिनि नामु धिआइआ तिन के काज सरे ॥ हरि गुरु पूरा आराधिआ दरगह सचि खरे ॥ सरब सुखा निधि चरण हरि भउजलु बिखमु तरे ॥ प्रेम भगति तिन पाईआ बिखिआ नाहि जरे ॥ कूड़ गए दुबिधा नसी पूरन सचि भरे ॥

पारब्रहमु प्रभु सेवदे मन अंदरि एकु धरे ॥ माह दिवस मूरत भले जिस कउ नदरि करे ॥ नानकु मंगै दरस दानु किरपा करहु हरे ॥१४॥१॥

ੴ वाहिगुरू जी की फतह ॥
अथ स्री ससत्र नाम माला
पुराण लिखयते
स्री भगउती जी सहाइ ॥
पातसाही १०

दोहरा ॥

साँग सरोही सैफ असि तीर तुपक तरवार ॥ सत्राँतक कवचाँतकर करीऐ रच्छ हमार ॥१॥

असि क्रिपान धारा धरी सैफ सूल जमदाढ ॥ कवचाँतक सत्राँतकर तेग तीर धरबाढ ॥२॥

असि क्रिपान खंडो खड़ग तुपक

तबर अरु तीर ॥ सैफ सरोही सैहथी यहै हमारै पीर ॥३॥

तीर तुही सैथी तुही तुही तबर तरवार ॥ नाम तिहारो जो जपै भए सिंधु भव पार ॥४॥

काल तुही काली तुही तुही तेग अरु तीर ॥ तुही निसानी जीत की आजु तुही जगबीर ॥५॥

तुही सूल सैथी तबर तूं निखंग अरु बान ॥ तुही कटारी सेल सभ तुमही करद क्रिपान ॥६॥

ससत्र असत्र तुमही सिपर तुमही कवच निखंग ॥ कवचाँतक तुम ही बने तुम बिआपक सरबंग ॥७॥

स्री तूं सभ कारन तुही तूं बिद्या को सार ॥ तुम सभ को उपराजही तुम ही लेहु उबार ॥८॥

तुम ही दिन रजनी तुही तुम ही जीअन उपाइ ॥ कउतक हेरन के नमित तिन मो बाद बढाइ ॥९॥

असि क्रिपान खंडो खड़ग सैफ तेग तरवार ॥ रच्छ करो हमरी सदा कवचाँतक करवार ॥१०॥

तुही कटारी दाढ़ जम तूं बिछूओ अरु बान ॥ तो पति पद जे लीजीऐ रच्छ दास मुहि जान ॥११॥

बाँक बज्ज्र बिछूओ तुही तुही तबर तरवार ॥ तुही कटारी सैहथी करीऐ रच्छ हमारि ॥१२॥

तुम ही गुरज तुम ही गदा तुम ही तीर तुफंग ॥ दास जान मोरी सदा रच्छ करो सरबंग ॥१३॥

छुरी कलम रिपु करद भन खंजर बुगदा नाइ ॥ अरध रिजक सभ जगत

को मुहि तुम लेहु बचाइ ॥१४॥

प्रिथम उपावहु जगत तुम तुम ही पन्थ बनाइ ॥ आप तुम ही झगरा करो तुम ही करो सहाइ ॥१५॥

मच्छ कच्छ बाराह तुम तुम बावन अवतार ॥ नार सिंघ बऊधा तुही तुही जगत को सार ॥१६॥

तुही राम स्री क्रिशन तुम तुही बिसन को रूप ॥ तुही प्रजा सभ जगत की तुही आप ही भूप ॥१७॥

तुही बिप्र छत्री तुही तुही रंक अरु राउ ॥ साम दाम अरु डंड तूं तुम ही भेद उपाउ ॥१८॥

सीस तुही काया तुही तैं प्रानी के प्रान ॥ तैं बिद्या जग बकत्र हुइ करे बेद बखयान ॥१९॥

बिसिख बान धनुखाग्र भन सर

कैबर जिह नाम ॥ तीर खतंग ततारचो
सदा करो मम काम ॥२०॥

तैणीरालै सत्रु अरि म्रिगअंतक ससि
बान ॥ तुम बैरिन प्रथमै हनौ बहुरो बजै
क्रिपान ॥२१॥

तुम पाटस पासी परस परम सिंधु
की खान ॥ ते जग के राजा भए दीअ
तव जिह बरदान ॥२२॥

सीस सत्रु अरियारि असि खंडो
खड़ग क्रिपान ॥ सत्रु सुरेसर तुम कियो
भगत आपुनो जान ॥२३॥

जमधर जमदाड़ा जबर जोधाँतक
जिह नाइ ॥ लूट कूट लीजत तिनै जे
बिन बाँधे जाइ ॥२४॥

बाँक बज्ज्र बिछूओ बिसिखि बिरह
बान सभ रूप ॥ जिन को तुम किरपा
करी भए जगत के भूप ॥२५॥

सससत्रेसर समराँतकर सिप्परा अरु समसेर ॥ मुकत जाल जम के भए जिनै कहयो इक बेर ॥२६॥

सैफ सरोही सत्रु अरि सारंगारि जिह नाम ॥ सदा हमारे चित बसो सदा करो मम काम ॥२७॥

इति स्री नाम माला पुराणे स्री भगउती उसतति प्रिथम धिआइ समापत मसतु सुभ मसतु ॥१॥

सवैया छंद

पाप संबूह बिनासन कउ कलिकी अवतार कहावहगे ॥ तुरकच्छि तुरंग सपच्छ बडो कर काढि क्रिपाण कपावहगे ॥ निकसे जिम केहरि परबत ते तस सोभ दिवालय पावहगे ॥ भल भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥१॥

रूप अनूप सरूप महा लखि देव अदेव लजावहगे ॥ अरि मार सुधार कै टार घने बहुरौ कलि धरम चलावहगे ॥ सभ साध उबार लैहैं कर दै दुख आँच न लागन पावहगे ॥ भल भाग भया इह

संभल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥२॥

दानव मार अपार बडे रण जीति निसान बजावहगे ॥ खल टार हजार करोर किते कलिकी कलि क्रित बढावहगे ॥ प्रगटे जित ही तित धरम दिसा लख पापन पुंज परावहगे ॥ भल भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥३॥

छीन महा दिज दीन सदा लखि दीन दिआल रिसावहगे ॥ खग काढ अभंग निसंग हठी रण रंग तुरंग नचावहगे ॥ रिपु जीत अजीत अभीत बडे अवनी पै सबै जसु गावहगे ॥ भल भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे॥४॥

सेस सुरेस महेस गनेस निसेस भले

जसु गावहगे ॥ गण भूत परेत पिसाच परी जय सद्द निनद्द सुनावहगे ॥ नर नारद तुंबर किंनर जच्छ सु बीन प्रबीन बजावहगे ॥ भल भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥५॥

ताल म्रिदंग मुचंग उपंग सुरंग से नाद सुनावहगे ॥ डफ बार तरंग रबाब तुरी रणि संख असंख बजावहगे ॥ गण दुंदभि ढोलन घोर घनी सुनि सत्रु सभै मुरछावहगे ॥ भल भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मम्दिर आवहगे ॥६॥

तीर तुफंग कमान सुरंग दुरंग निखंग सुहावहगे ॥ बरछी अरु बैरख बाण धुजा पट बात लगे फहरावहगे ॥ गण जच्छ भुजंग सु किंनर सिद्ध प्रसिद्ध सबै जसु गावहगे ॥ भल भाग भया इह

संभल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥७॥

कउच क्रिपान कटारि कमान सुरंग निखंग छकावहगे ॥ बरछी अरु ढाल गदा परसो कर सूल त्रिसूल भ्रमावहगे ॥ अति क्रुद्धत ह्वै रण मूरधन मो सर ओघ प्रओघ चलावहगे ॥ भल भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥८॥

तेज प्रचंड अखंड महाँ छबि दुजन देखि परावहगे ॥ जिम पउन प्रचंड बहै पतूआ सब आपन ही उड जावहगे ॥ बढि है जित ही तित धरम दिसा कहूं पाप न ढूढत पावहगे ॥ भल भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥६॥

छूटत बान कमाननि के रण छाडि

भटवा भहरावहगे ॥ गण बीर बिताल कराल प्रभा रण मूरधन मधि सुहावहगे ॥ गण सिध प्रसिध सम्रिधि सनै करि उचाइ कै क्रित सुनावहगे ॥ भल भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥१०॥

रूप अनूप सरूप महाँ अंग देखि अनंग लजावहगे ॥ भव भूत भविख भवान सदा सभ ठउर सभै ठहरावहगे ॥ भव भार अपार निवारन कौ कलिकी अवतार कहावहगे ॥ भल भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥११॥

भूमि को भार उतार बडे बड आछ बडी छब पावहगे ॥ खल टार जुझार बरिआर हठी घन घोखन जिउ घहरावहगे ॥ कल नारद भूत पिसाच

परी जै पत्र धरत्र सुनावहगे ॥ भल भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥१२॥

झार क्रिपान जुझार बडे रण मध महा छबि पावहगे ॥ धरि लुत्थ पलुत्थ बिथार घणी घन की घट जिउ घहरावहगे ॥ चतुरानन रुद्र चराचर जे जय सद्द निनद्द सुनावहगे ॥ भल भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥१३॥

तार प्रमान उचान धुजा लख देव अदेव त्रसावहगे ॥ कलगी गज गाह गदा बरछी गहि पाण क्रिपाण भ्रमावहगे ॥ जग पाप संबूह बिनासन कउ कलिकी कलि ध्रम चलावहगे ॥ भल भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥१४॥

पान क्रिपान अजानु भुजा रणि रूप महान दिखावहगे ॥ प्रितिमान सुजान अप्रमान प्रभा लख बिओम बिवान लजावहगे ॥ गण भूत पिसाच परेत परी मिलि जीत कै गीत गवावहगे ॥ भल भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥१५॥

बाजत डंक अतंक समै रण रंग तुरंग नचावहगे ॥ कसि बान कमान गदा बरछी कर सूल त्रिसूल भ्रमावहगे ॥ गण देव अदेव पिसाच परी रण देख सबै रहसावहगे ॥ भल भाग भया इह संभल के हरि जू हरि मंदिर आवहगे ॥१६॥

सूही महला ४ ॥

हरि पहिलड़ी लाव परविरती करम द्रिड़ाइआ बलि राम जीउ ॥ बाणी ब्रहमा वेदु धरमु द्रिड़हु पाप तजाइआ बलि राम जीउ ॥ धरमु द्रिड़हु हरि नामु धिआवहु सिम्रिति नामु द्रिड़ाइआ ॥ सतिगुरु गुरु पूरा आराधहु सभि किलविख पाप गवाइआ ॥ सहज अनंदु होआ वडभागी मनि हरि हरि मीठा लाइआ ॥ जनु कहै नानकु लाव पहिली आरंभु काजु रचाइआ ॥१॥

हरि दूजड़ी लाव सतिगुरु पुरखु मिलाइआ बलि राम जीउ ॥ निरभउ भै

मनु होइ हउमै मैलु गवाइआ बलि राम जीउ ॥ निरमलु भउ पाइआ हरि गुण गाइआ हरि वेखै रामु हदूरे ॥ हरि आतम रामु पसारिआ सुआमी सरब रहिआ भरपूरे ॥ अंतरि बाहरि हरि प्रभु एको मिलि हरि जन मंगल गाए ॥ जन नानक दूजी लाव चलाई अनहद सबद वजाए ॥२॥

हरि तीजड़ी लाव मनि चाउ भइआ बैरागीआ बलि राम जीउ ॥ संत जना हरि मेलु हरि पाइआ वडभागीआ बलि राम जीउ ॥ निरमलु हरि पाइआ हरि गुण गाइआ मुखि बोली हरि बाणी ॥ संत जना वड भागी पाइआ हरि कथीऐ अकथ कहाणी ॥ हिरदै हरि हरि हरि धुनि उपजी हरि जपीऐ मसतकि भागु जीउ ॥ जनु नानकु बोले तीजी लावै हरि

उपजै मनि बैरागु जीउ ॥३॥

हरि चउथड़ी लाव मनि सहजु भइआ हरि पाइआ बलि राम जीउ ॥ गुरमुखि मिलिआ सुभाइ हरि मनि तनि मीठा लाइआ बलि राम जीउ ॥ हरि मीठा लाइआ मेरे प्रभ भाइआ अनदिनु हरि लिव लाई ॥ मन चिंदिआ फलु पाइआ सुआमी हरि नामि वजी वाधाई ॥ हरि प्रभि ठाकुरि काजु रचाइआ धन हिरदै नामि विगासी ॥ जनु नानकु बोले चउथी लावै हरि पाइआ प्रभु अविनासी ॥४॥२॥

रामकली की वार

राइ बलवंडि तथा सतै डूमि आखी

ੴ सतिगुरू प्रसादि ॥

नाउ करता कादरु करे किउ बोलु होवै जोखीवदै ॥ दे गुना सति भैण भराव है पारंगति दान पड़ीवदै ॥ नानकि राजु चलाइआ सचु कोटु सताणी नीव दै ॥ लहणे धरिओनु छतु सिरि करि सिफती अंम्रित पीवदै ॥ मति गुर आतम देव दी खड़गि जोरि पराकुइ जीअ दै ॥ गुरि चेले रहरासि कीई नानकि सलामति थीवदै ॥ सहि टिका दितोसु जीवदै ॥१॥

लहणे दी फेराईऐ नानका दोही खटीऐ ॥ जोति ओहा जुगति साइ सहि काइआ फेरि पलटीऐ ॥ झुलै सु छतु निरंजनी मलि तखतु बैठा गुर हटीऐ ॥ करहि जि गुर फुरमाइआ सिल जोगु अलूणी चटीऐ ॥ लंगरु चलै गुर सबदि हरि तोटि न आवी खटीऐ ॥ खरचे दिति खसंम दी आप खहदी खैरि दबटीऐ ॥ होवै सिफति खसंम दी नूरु अरसहु कुरसहु झटीऐ ॥ तुधु डिठे सचे पातिसाह मलु जनम जनम दी कटीऐ ॥ सचु जि गुरि फुरमाइआ किउ एदू बोलहु हटीऐ ॥ पुत्री कउलु न पालिओ करि पीरहु कंन्ह मुरटीऐ ॥ दिलि खोटै आकी फिरन्हि बंन्हि भारु उचाइनि छटीऐ ॥ जिनि आखी सोई करे जिनि कीती तिनै थटीऐ ॥ कउण हारे किनि उवटीऐ ॥२॥

जिनि कीती सो मंनणा को सालु जिवाहे साली ॥ धरम राइ है देवता लै गला करे दलाली ॥ सतिगुरु आखै सचा करे सा बात होवै दरहाली ॥ गुर अंगद दी दोही फिरी सचु करतै बंधि बहाली ॥ नानकु काइआ पलटु करि मलि तखतु बैठा सै डाली ॥ दरु सेवे उमति खड़ी मसकलै होइ जंगाली ॥ दरि दरवेसु खसंम दै नाइ सचै बाणी लाली ॥ बलवंड खीवी नेक जन जिसु बहुती छाउ पत्राली ॥ लंगरि दउलति वंडीऐ रसु अंम्रित खीरि घिआली ॥ गुरसिखा के मुख उजले मनमुख थीए पराली ॥ पए कबूलु खसंम नालि जाँ घाल मरदी घाली ॥ माता खीवी सहु सोइ जिनि गोइ उठाली ॥३॥

होरिओं गंग वहाईऐ दुनिआई आखै

कि किउन ॥ नानक ईसरि जगनाथि उच हदी वैणु विरिकिओनु ॥ माधाणा परबतु करि नेत्रि बासकु सबदि रिड़किओनु ॥ चउदह रतन निकालिओनु करि आवा गउणु चिलकिओनु ॥ कुदरति अहि वेखालीअनु जिणि ऐवड पिड ठिणकिओनु ॥ लहणे धरिओनु छत्रु सिरि असमानि किआड़ा छिकिओनु ॥ जोति समाणी जोति माहि आपु आपै सेती मिकिओनु ॥ सिखाँ पुत्राँ घोखिकै सभ उमति वेखहु जि किओनु ॥ जाँ सुधोसु ताँ लहणा टिकिओनु ॥४॥

फेरि वसाइआ फेरुआणि सतिगुरि खाडूरु ॥ जपु तपु संजमु नालि तुधि होरु मुचु गरूरु ॥ लबु विणाहे माणसा जिउ पाणी बूरु ॥ वर्हिऐ दरगह गुरू की कुदरती नूरु ॥ जितु सु हाथि ना

लभई तूं ओहु ठरूरु ॥ नउ निधि नामु निधान है तुधु विचि भरपूरु ॥ निंदा तेरी जो करे सो वंञै चूरु ॥ नेड़ै दिसै मात लोक तुधु सुझै दूरु ॥ फेरि वसाइआ फेरुआणि सतिगुरि खाडूरु ॥५॥

सो टिका सो बैहणा सोई दीबाणु ॥ पियू दादे जेविहा पोता परवाणु ॥ जिनि बासकु नेत्रै घतिआ करि नेही ताणु ॥ जिनि समुंदु विरोलिआ करि मेरु मधाणु ॥ चउदह रतन निकालिअनु कीतोनु चानाणु ॥ घोड़ा कीतो सहज दा जतु कीओ पलाणु ॥ धणखु चड़ाइओ सत दा जस हंदा बाणु ॥ कलि विचि धू अंधार सा चड़िआ रै भाणु ॥ सतहु खेतु जमाइओ सतहु छावाणु ॥ नित रसोई तेरीऐ घिउ मैदा खाणु ॥ चारे कुंडा सुझीओसु मन महि सबद परवाणु ॥

आवा गउणु निवारिओ करि नदरि नीसाणु ॥ अउतरिआ अउतारु लै सो पुरख सुजाणु ॥ झखड़ि वाउ न डोलई परबतु मेराणु ॥ जाणै बिरथा जीअ की जाणी हू जाणु ॥ किआ सालाही सचे पातिसाह जाँ तू सुघड़ सुजाणु ॥ दानु जि सतिगुर भावसी सो सते दाणु ॥ नानक हंदा छत्रु सिरि उमति हैराणु ॥ सो टिका सो बैहणा सोई दीबाणु ॥ पियू दादे जेविहा पोत्रा परवाणु ॥६॥

धंनु धंनु रामदास गुरु जिनि सिरिआ तिनै सवारिआ ॥ पूरी होई करामाति आपि सिरजणहारै धारिआ ॥ सिखी अतै संगती पारब्रहमु करि नमसकारिआ ॥ अटलु अथाहु अतोलु तूं तेरा अंत ना पारावारिआ ॥ जिन्ही तूं सेविआ भाउ करि से तुधु पारि उतारिआ ॥ लबु लोभु

काम‍ु क्रोधु मोहु मारि कढे तुधु सपरवारिआ ॥ धंनु तेरा थानु है सचु तेरा पैसकारिआ ॥ नानकु तू लहणा तू है गुरु अमरु तू वीचारिआ ॥ गुरु डिठा ताँ मनु साधारिआ ॥७॥

चारे जागे चहु जुगी पंचाइणु आपे होआ ॥ आपीन्है आपु साजिओनु आपे ही थंमि् खलोआ ॥ आपे पटी कलम आपि आपि लिखणहारा होआ ॥ सभ उमति आवण जावणी आपे ही नवा निरोआ ॥ तखति बैठा अरजन गुरू सतिगुरु का खिवै चंदोआ ॥ उगवणहु तै आथवणहु चहु चकी कीअनु लोआ ॥ जिन्ही गुरू न सेविओ मनमुखा पइआ मोआ ॥ दूणी चउणी करामाति सचे का सचा ढोआ ॥ चारे जागे चहु जुगी पंचाइणु आपे होआ ॥८॥१॥

रामकली सदु

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

जगि दाता सोइ भगति वछलु तिहु लोइ जीउ ॥ गुर सबद समावए अवरु न जाणै कोइ जीउ ॥ अवरो न जाणहि सबदि गुर कै एकु नामु धिआवहे ॥ परसादि नानक गुरू अंगद परम पदवी पावहे ॥ आइआ हकारा चलण वारा हरि राम नामि समाइआ ॥ जगि अमरु अटलु अतोलु ठाकुरु भगति ते हरि पाइआ ॥१॥

हरि भाणा गुर भाइआ गुरु जावै हरि प्रभ पासि जीउ ॥ सतिगुरु करे हरि पहि

बेनती मेरी पैज रखहु अरदासि जीउ ॥ पैज राखहु हरि जनह केरी हरि देहु नामु निरंजनो ॥ अंति चलदिआ होइ बेली जमदूत कालु निखंजनो ॥ सतिगुरू की बेनती पाई हरि प्रभि सुणी अरदासि जीउ ॥ हरि धारि किरपा सतिगुरु मिलाइआ धनु धनु कहै साबासि जीउ ॥२॥

मेरे सिख सुणहु पुत भाईहो मेरै हरि भाणा आउ मै पासि जीउ ॥ हरि भाणा गुर भाइआ मेरा हरि प्रभु करे साबासि जीउ ॥ भगतु सतिगुरु पुरखु सोई जिसु हरि प्रभ भाणा भावए ॥ आनंद अनहद वजहि वाजे हरि आपि गलि मेलावए ॥ तुसी पुत भाई परवारु मेरा मनि वेखहु करि निरजासि जीउ ॥ धुरि लिखिआ परवाणा फिरै नाही गुरु जाइ हरि प्रभ पासि जीउ ॥३॥

सतिगुरि भाणै आपणै बहि परवारु सदाइआ ॥ मत मै पिछै कोई रोवसी सो मै मूलि न भाइआ ॥ मितु पैझै मितु बिगसै जिसु मित की पैज भावए ॥ तुसी वीचारि देखहु पुत भाई हरि सतिगुरू पैनावए ॥ सतिगुरू परतखि होदै बहि राजु आपि टिकाइआ ॥ सभि सिख बंधप पुत भाई रामदास पैरी पाइआ ॥४॥

अंते सतिगुरु बोलिआ मै पिछै कीरतनु करिअहु निरबाणु जीउ ॥ केसो गोपाल पंडित सदिअहु हरि हरि कथा पड़हि पुराणु जीउ ॥ हरि कथा पड़ीऐ हरि नामु सुणीऐ बेबाणु हरि रंगु गुर भावए ॥ पिंडु पतलि किरिआ दीवा फुल हरि सरि पावए ॥ हरि भाइआ सतिगुरु बोलिआ हरि मिलिआ पुरखु सुजाणु

जीउ ॥ रामदास सोढी तिलकु दीआ गुर सबद सचु नीसाणु जीउ ॥५॥

सतिगुरु पुरखु जि बोलिआ गुरसिखा मंनि लई रजाइ जीउ ॥ मोहरी पुतु सनमुखु होइआ रामदासै पैरी पाइ जीउ ॥ सभ पवै पैरी सतिगुरू केरी जिथै गुरू आपु रखिआ ॥ कोई करि बखीली निवै नाही फिरि सतिगुरू आणि निवाइआ ॥ हरि गुरहि भाणा दीई वडिआई धुरि लिखिआ लेखु रजाइ जीउ ॥ कहै सुंदरु सुणहु संतहु सभु जगतु पैरी पाइ जीउ ॥६॥१॥

बसंत की वार महलु ५

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

हरि का नामु धिआइ कै होहु हरिआ भाई ॥ करमि लिखंतै पाईऐ इह रुति सुहाई ॥ वणु त्रिणु त्रिभवणु मउलिआ अंम्रित फलु पाई ॥ मिलि साधू सुखु ऊपजै लथी सभ छाई ॥ नानकु सिमरै एकु नामु फिरि बहुड़ि न धाई ॥१॥

पंजे बधे महाबली करि सचा ढोआ ॥ आपणे चरण जपाइअनु विचि दयु खड़ोआ ॥ रोग सोग सभि मिटि गए नित नवा निरोआ ॥ दिनु रैणि नामु धिआइदा फिरि पाइ न मोआ ॥ जिस

ते उपजिआ नानका सोई फिरि होआ ॥२॥

किथहु उपजै कह रहै कह माहि समावै ॥ जीअ जंत सभि खसम के कउणु कीमति पावै ॥ कहनि धिआइनि सुणनि नित से भगत सुहावै ॥ अगमु अगोचरु साहिबो दूसरु लवै न लावै ॥ सचु पूरै गुरि उपदेसिआ नानकु सुणावै ॥३॥१॥

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सलोक महला ९ ॥

गुन गोबिंद गाइओ नही जनमु अकारथ कीनु ॥ कहु नानक हरि भजु मना जिह बिधि जल कउ मीनु ॥१॥

बिखिअन सिउ काहे रचिओ निमख न होहि उदासु ॥ कहु नानक भजु हरि मना परै न जम की फास ॥२॥

तरनापो इउ ही गइओ लीओ जरा तनु जीति ॥ कहु नानक भजु हरि मना अउध जातु है बीति ॥३॥

बिरधि भइओ सूझै नही कालु पहूचिओ आनि ॥ कहु नानक नर बावरे

किउ न भजै भगवानु ॥४॥

धनु दारा संपति सगल जिनि अपुनी करि मानि ॥ इन मै कछु संगी नही नानक साची जानि ॥५॥

पतित उधारन भै हरन हरि अनाथ के नाथ ॥ कहु नानक तिह जानीऐ सदा बसतु तुम साथि ॥६॥

तनु धनु जिह तो कउ दीओ ताँ सिउ नेहु न कीन ॥ कहु नानक नर बावरे अब किउ डोलत दीन ॥७॥

तनु धनु संपै सुख दीओ अरु जिह नीके धाम ॥ कहु नानक सुनु रे मना सिमरत काहि न रामु ॥८॥

सभ सुख दाता रामु है दूसर नाहिन कोइ ॥ कहु नानक सुनि रे मना तिह सिमरत गति होइ ॥९॥

जिह सिमरत गति पाईऐ तिह भजु

रे तै मीत ॥ कहु नानक सुनु रे मना अउध घटत है नीत ॥१०॥

पाँच तत को तनु रचिओ जानहु चतुर सुजान ॥ जिह ते उपजिओ नानका लीन ताहि मै मानु ॥११॥

घट घट मै हरि जू बसै संतन कहिओ पुकारि ॥ कहु नानक तिह भजु मना भउ निधि उतरहि पारि ॥१२॥

सुखु दुखु जिह परसै नही लोभु मोहु अभिमानु ॥ कहु नानक सुनु रे मना सो मूरति भगवान ॥१३॥

उसतति निंदिआ नाहि जिहि कंचन लोह समानि ॥ कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥१४॥

हरखु सोगु जा कै नही बैरी मीत समानि ॥ कहु नानक सुनि रे मना मुकति ताहि तै जानि ॥१५॥

भै काहू कउ देत नहि नहि भै मानत आन ॥ कहु नानक सुनि रे मना गिआनी ताहि बखानि ॥१६॥

जिहि बिखिआ सगली तजी लीओ भेख बैराग ॥ कहु नानक सुनु रे मना तिह नर माथै भागु ॥१७॥

जिहि माइआ ममता तजी सभ ते भइओ उदासु ॥ कहु नानक सुनु रे मना तिह घटि ब्रहम निवासु ॥१८॥

जिहि प्रानी हउमै तजी करता रामु पछानि ॥ कहु नानक वहु मुकति नरु इह मन साची मानु ॥१९॥

भै नासन दुरमति हरन कलि मै हरि को नामु ॥ निसि दिनु जो नानक भजै सफल होहि तिह काम ॥२०॥

जिहबा गुन गोबिंद भजहु करन सुनहु हरि नामु ॥ कहु नानक सुनि रे

मना परहि न जम कै धाम ॥२१॥

जो प्रानी ममता तजै लोभ मोह अहंकार ॥ कहु नानक आपन तरै अउरन लेत उधार ॥२२॥

जिउ सुपना अरु पेखना ऐसे जग कउ जानि ॥ इन मै कछु साचो नही नानक बिनु भगवान ॥२३॥

निसि दिनु माइआ कारने प्रानी डोलत नीत ॥ कोटन मै नानक कोऊ नाराइनु जिह चीति ॥२४॥

जैसे जल ते बुदबुदा उपजै बिनसै नीत ॥ जग रचना तैसे रची कहु नानक सुनि मीत ॥२५॥

प्रानी कछू न चेतई मदि माइआ कै अंधु ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन परत ताहि जम फंध ॥२६॥

जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम

की लेह ॥ कहु नानक सुनि रे मना दुरलभ मानुख देह ॥२७॥

माइआ कारनि धावही मूरख लोग अजान ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन बिरथा जनमु सिरान ॥२८॥

जो प्रानी निसि दिनु भजै रूप राम तिह जानु ॥ हरि जन हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥२९॥

मनु माइआ मै फधि रहिओ बिसरिओ गोबिंद नामु ॥ कहु नानक बिनु हरि भजन जीवन कउने काम ॥३०॥

प्रानी रामु न चेतई मदि माइआ कै अंधु ॥ कहु नानक हरि भजन बिनु परत ताहि जम फंध ॥३१॥

सुख मै बहु संगी भए दुख मै संगि न कोइ ॥ कहु नानक हरि भजु मना

अंति सहाई होइ ॥३२॥

जनम जनम भरमत फिरिओ मिटिओ न जम को त्रासु ॥ कहु नानक हरि भजु मना निरभै पावहि बासु ॥३३॥

जतन बहुतु मै करि रहिओ मिटिओ न मन को मानु ॥ दुरमति सिउ नानक फधिओ राखि लेहु भगवान ॥३४॥

बाल जुआनी अरु बिरधि फुनि तीनि अवसथा जानि ॥ कहु नानक हरि भजन बिनु बिरथा सभ ही मानु ॥३५॥

करणो हुतो सु ना कीओ परिओ लोभ कै फंध ॥ नानक समिओ रमि गइओ अब किउ रोवत अंध ॥३६॥

मनु माइआ मै रमि रहिओ निकसत नाहिन मीत ॥ नानक मूरति चित्र जिउ छाडित नाहिन भीति ॥३७॥

नर चाहत कछु अउर अउरै की अउरै

भई ॥ चितवत रहिओ ठगउर नानक फासी गलि परी ॥३८॥

जतन बहुत सुख के कीऐ दुख को कीओ न कोइ ॥ कहु नानक सुनि रे मना हरि भावै सो होइ ॥३९॥

जगतु भिखारी फिरतु है सभ को दाता रामु ॥ कहु नानक मन सिमरु तिह पूरन होवहि काम ॥४०॥

झूठै मानु कहा करै जगु सुपने जिउ जानु ॥ इन मै कछु तेरो नही नानक कहिओ बखानि ॥४१॥

गरबु करतु है देह को बिनसै छिन मै मीत ॥ जिहि प्रानी हरि जसु कहिओ नानक तिहि जगु जीति ॥४२॥

जिह घटि सिमरनु राम को सो नरु मुकता जानु ॥ तिहि नर हरि अंतरु नही नानक साची मानु ॥४३॥

एक भगति भगवान जिह प्रानी कै नाहि मनि ॥ जैसे सूकर सुआन नानक मानो ताहि तनु ॥४४॥

सुआमी को ग्रिहु जिउ सदा सुआन तजत नही नित ॥ नानक इह बिधि हरि भजउ इक मनि हुइ इकि चिति ॥४५॥

तीरथ बरत अरु दान करि मन मै धरै गुमानु ॥ नानक निहफल जात तिह जिउ कुंचर इसनानु ॥४६॥

सिरु कंपिओ पग डगमगे नैन जोति ते हीन ॥ कहु नानक इह बिधि भई तऊ न हरि रसि लीन ॥४७॥

निज करि देखिओ जगतु मै को काहू को नाहि ॥ नानक थिरु हरि भगति है तिह राखो मन माहि ॥४८॥

जग रचना सभ झूठ है जानि लेहु रे मीत ॥ कहि नानक थिरु ना रहै जिउ

बालू की भीति ॥४९॥

राम गइओ रावनु गइओ जा कउ बहु परवारु ॥ कहु नानक थिरु कछु नही सुपने जिउ संसारु ॥५०॥

चिंता ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइ ॥ इहु मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइ ॥५१॥

जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु कै कालि ॥ नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जंजाल ॥५२॥

दोहरा ॥

बलु छुटकिओ बंधन परे कछू न होत उपाइ ॥ कहु नानक अब ओट हरि गज जिउ होहु सहाइ ॥५३॥

बलु होआ बंधन छुटे सभु किछु होत उपाइ ॥ नानक सभु किछु तुमरै हाथ मै तुम ही होत सहाइ ॥५४॥

संग सखा सभि तजि गए कोऊ न निबहिओ साथि ॥ कहु नानक इह बिपति मै टेक एक रघुनाथ ॥५५॥

नामु रहिओ साधू रहिओ रहिओ गुरु गोबिंदु ॥ कहु नानक इह जगत मै किन जपिओ गुर मंतु ॥५६॥

राम नामु उर मै गहिओ जा कै सम नही कोइ ॥ जिह सिमरत संकट मिटै दरसु तुहारो होइ ॥५७॥१॥

मुंदावणी महला ५

थाल विचि तिंनि वसतू पईओ सतु संतोखु वीचारो ॥ अंम्रित नामु ठाकुर का पइओ जिस का सभसु अधारो ॥ जे को खावै जे को भुंचै तिस का होइ उधारो ॥ एह वसतु तजी नह जाई नित नित रखु उरि धारो ॥ तम संसारु चरन लगि तरीऐ सभु नानक ब्रहम पसारो ॥१॥

सलोक महला ५ ॥

तेरा कीता जातो नाही मैनो जोगु कीतोई ॥ मै निरगुणिआरे को गुणु नाही आपे तरसु पइओई ॥ तरसु पइआ मिहरामति होई सतिगुरु सजणु मिलिआ ॥ नानक नामु मिलै ताँ जीवाँ तनु मनु थीवै हरिआ ॥१॥

ੴ सतिगुर प्रसादि

राग माला ॥

राग एक संगि पंच बरंगन ॥ संगि अलापहि आठउ नंदन ॥ प्रथम राग भैरउ वै करही ॥ पंच रागनी संगि उचरही ॥ प्रथम भैरवी बिलावली ॥ पुंनिआकी गावहि बंगली ॥ पुनि असलेखी की भई बारी ॥ ए भैरउ की पाचउ नारी ॥ पंचम हरख दिसाख सुनावहि ॥ बंगालम मधु माधव गावहि ॥१॥

ललत बिलावल गावही अपुनी अपुनी भाँति ॥ असट पुत्र भैरव के गावहि गाइन पात्र ॥१॥

दुतीआ मालकउसक आलापहि ॥ संगि रागनी पाचउ थापहि ॥ गोंडकरी अरु देवगंधारी ॥ गंधारी सीहुती उचारी ॥ धनासरी ए पाचउ गाई ॥ माल राग कउसक संगि लाई ॥ मारू मसतअंग मेवारा ॥ प्रबलचंड कउसक उभारा ॥ खउखट अउ भउरानद गाए ॥ असट मालकउसक संगि लाए ॥१॥

पुनि आइअउ हिंडोलु पंच नारि संगि असट सुत ॥ उठहि तान कलोल गाइन तार मिलावही ॥१॥

तेलंगी देवकरी आई ॥ बसंती संदूर सुहाई ॥ सरस अहीरी लै भारजा ॥ संगि लाई पाँचउ आरजा ॥ सुरमानंद भासकर आए ॥ चंद्रबिंब मंगलन सुहाए ॥ सरसबान अउ आहि बिनोदा ॥ गावहि

सरस बसंत कमोदा ॥ असट पुत्र मै कहे सवारी ॥ पुनि आई दीपक की बारी ॥१॥

कछेली पटमंजरी टोडी कही अलापि ॥ कामोदी अउ गूजरी संगि दीपक के थापि ॥१॥

कालंका कुंतल अउ रामा ॥ कमलकुसम चंपक के नामा ॥ गउरा अउ कानरा कल्याना ॥ असट पत्र दीपक के जाना ॥१॥

सभ मिलि सिरीराग वै गावहि ॥ पाँचउ संगि बरंगन लावहि ॥ बैरारी करनाटी धरी ॥ गवरी गावहि आसावरी ॥ तिह पाछै सिंधवी अलापी ॥ सिरी राग सिउ पाँचउ थापी ॥१॥

सालू सारग सागरा अउर गोंड गंभीर ॥ असट पुत्र स्रीराग के गुंड कुंभ हमीर ॥१॥

खसटम मेघ राग वै गावहि ॥ पाँचउ संगि बरंगन लावहि ॥ सोरठि गोंड मलारी धुनी ॥ पुनि गावहि आसा गुनगुनी ॥ ऊचै सुरि सूहउ पुनि कीनी ॥ मेघ राग सिउ पाँचउ चीनी ॥१॥

बैराधर गजधर केदारा ॥ जबलीधर नट अउ जलधारा ॥ पुनि गावहि संकर अउ सिआमा ॥ मेघ राग पुत्रन के नामा ॥१॥

खसट राग उनि गाए संगि रागनी तीस ॥ सभै पुत्र रागंन के अठारह दस बीस ॥१॥१॥

हिकायत बाहरवीं

ੴ वाहिगुरू जी की फ़तह ॥

रज़ा बख़्श बजशिंदए बे शुमार ॥ रिहाई दिहो पाक परवरदगार ॥१॥ रहीमो करीमो मकीनो मकाँ ॥ अज़ीमो फ़हीमो ज़मीनो ज़माँ ॥२॥ शुनीदम सुख़न कोह कैबर अज़ीम ॥ कि अफगाँ यके बूद ओ जा रहीम ॥३॥ यके बानूए बूद ओ हम चु माह ॥ कुनद दीदनश रिशत ग़रदन ज़ि शाह ॥४॥ दो अबरू चु अबरे बहाराँ कुनद ॥ ब मियगाँ चु अज़ तीर बाराँ कुनद ॥५॥ रुख़े चूं ख़लासी दिहद माह राँ ॥ बहारे

गुलिसताँ दिहद् शाह राँ ॥६॥ ब अबरू कमाने शुदा नाज़नीं ॥ ब चशमश ज़नद् कैबरै कहर गीं ॥७॥ ब मसती दिहद् हम चुनी रूइ मसत ॥ गुलिसताँ कुनद् बूम शोरीद दसत ॥८॥ खुशे खुश जमालो कमालो हुसन ॥ ब सूरत जवानसत फ़िकरे कुहन ॥६॥ यके हसन ख़ाँ बूद् ए जा फ़गाँ ॥ ब दानश हमी बूद् अकलश जवाँ ॥१०॥ कुनद् दोसती बा हमह यक दिगर ॥ कि लैली व मजनूं ख़िज़ल गशत सर ॥११॥ चु बा यक दिगर हम चुनी गशत मसत ॥ चु पा अज़ रकाबो इना रफ़त दसत ॥१२॥ तलब करद ओ ख़ानए ख़िलवते ॥ मियाँ आमदश जो बदन शहवते ॥१३॥ हमीं जुफ़त खुरदंद दु से चार माह ॥ ख़बर करद जो दुशमने निज़द

शाह ॥१४॥ ब हैरत दराँमद फ़गाने रहीम ॥ कशीदन यके तेग़ गरराँ अज़ीम ॥१५॥ चु खबरश रसीदे कि आमद शौहर ॥ हुमाँ यार खुद रा बिज़द तेग़ सर ॥१६॥ हमहि गोशतो देग़ अंदर निहाद ॥ मसालय बिअंदाख़्त आतश बिदाद ॥१७॥ शौहर रा खुरानीद बाकी बिमाँद ॥ हमह नौकराँ रा ज़िआफ़्त कुनाद ॥१८॥ चु खुश ग़शत शौहर न दीदश चु नर ॥ ब कुशताँ कसे रा कि दादश ख़बर ॥१९॥ बिदिह साकीया सागरे सबज़ गूं ॥ कि मारा बकारसत जंग अंदरूं ॥२०॥ लबा लब बकुन दम बदम नोश कुन ॥ ग़मे हर दु आलम फ़रामोश कुन ॥२१॥१२॥

अरदास

ੴ

वाहिगुरू जी की फतहि ॥

स्री भगउती जी सहाइ ॥

पातशाही १२ ॥

प्रिथम भगौती सिमरि कै गुर नानक लई धिआइ ॥ फिरि अंगद गुर ते अमरदास रामदासै होई सहाइ ॥ अरजुन हरि गोबिंद नू सिमरौ स्री हरि राइ ॥ स्री हरि क्रिसन धिआईऐ जिसु डिठे सभ दुखु जाइ ॥ तेग बहादर सिमरीऐ घरि नउनिधि आवै धाइ सभ थाईं होइ सहाइ ॥ दसम पातशाह स्री गुरू गोबिंद सिंघ जी सभ थाईं होइ

सहाइ ॥ स्री सतिगुरू बालक सिंघ जी सिमरीऐ जिन मारग दीआ बताइ ॥ अकाल पुरख अंतरजामी स्री सतिगुरू राम सिंघ जी जिन जम ते लीआ छडाइ ॥ जोति का जामा स्री सतिगुरू हरी सिंघ जी सिमरीऐ जिन टुट्टी लई मिलाइ ॥ अटट्ल प्रतापी स्री सतिगुरू प्रताप सिंघ जी सिमरीऐ जिन कलिजुग विच सुच सोध नाम बाणी दा प्रवाह दित्ता चलाइ ॥ सरब कला समरत्थ स्री सतिगुरू जगजीत सिंघ जी सिमरीऐ जनम मरन दुख जाए ॥ स्री सतिगुरू जी सभ थाईं होहु सहाइ ॥

गुरू जी के चार साहिबज़ादे पंज पिआरे चाली मुकते बेअन्त शहीदाँ दी कमाई वल धिआन धर के आप जी दा पवित्तर नाम चित आवै ॥

सतिगुरू जी पातशाह ! असीं सदा भुलणहार हाँ, आप सदा बखशिंद हो, दरों घरों सिक्खी सिदक बखशो, बेमुख हो के ना मरीइे ॥ धरती ते धरम वरताओ महाँ मलेछ दा नास करो, संत खालसे दा प्रकाश करो ॥ गऊ गरीब दे कशट नूं दूर करो, कुल स्रिशटी आप जी दा नाम जपे कोई दुखीआ रहे ना ॥ जो तै गुरू रूप धार के हुकमु दित्ता है ग्रंथ साहिब मै, सो तू आपणा हुकम सदा ई मनाईं ॥

स्री सतिगुरू राम सिंघ सच्चे पातशाह जी आप जी दे चरनाँ विच प्रारथना है साडा धरम बणिआ रहे।

दीनाबंधू सतिगुरू सच्चे पातशाह आप जी दी क्रिपा नाल आप दीआँ पिआरीआँ संगताँ ने इकत्तर हो के

पवित्तर नाम दा सिमरन कीता है आप जी दे दरशन नमित्त, दर परवान होवे ॥ दरशनाँ दी दात बखशणी--*

न विसरीं न विसारीं, रक्ख लै बखश लै देह करके देहु दीदार स्री सतिगुरू राम सिंघ जी नाम चढ़दी कला तेरे भाणे सरबत दा भला ॥

जो बोले सो निहाल सति स्री अकाल ॥

---

* अरदास जिस मनोरथ वासते होवे उस बारे शबद इथे आखे जाण।